# हिन्दीप्रदीप।

## मासिक पत्र।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै॥

१ ~~अगस्त~~ सितंबर सन् १८८५ } { जिल्द ९ संख्या १

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ९
संख्या १

१ सितम्बर
सन १८८५ ई०

## । हमारा नवम बर्ष ।

नव बारिद समान श्री सच्चिदानन्द घन की सरस कृपा दृष्टि की वृष्टि से पर्णकाम हे। आज हम नवम बर्ष में प्रवेश करते हैं—एक वह दिन भी था कि चार सज्जन सहायकों की सहायता पाय हमने अपना जन्म लाभ किया—जब कि इस क्षण भंगुर जीवन मे एक दिन का बीमा कोई नहीं उठा सक्ता तो यह कब संभव था कि हम अपने आधुनिक सहयोगियों के बीच अपने को पुराना समझ चिरन्तन अथवा पुरातन होने का घमण्ड कर सकेंगे? इस ८ बर्ष तक बराबर भांत २ का राम रसरा गाते २ हमे कोई ऐसा लाभ तो न हुआ जिसे प्रगट कर सुनाते पर एक प्रकर का अनुभव अलबत्ता होता गया जिस्से खरे खोटे की परख अब हम भर पूर कर सक्ते हैं—हमने अपने देश का चारो खूंट थहा कर देख लिया कि भाषा के सच्चे अनुरागी और अपने लोगों के कल्याण मे बाधा पहुंचाने वाले बिघ्न राज की महा बीभत्स दानवी सेना के साथ अपना सब कुछ गवांय डटकर संग्राम करने वाले कहां २ और कैजन हैं—ऐसे सरलभाव के लोग बिरल हैं इस्का हमे कुछ भी खेद नहीं है पछतावा और दुःख तो उन मत्सरी और दांभिकों की कुटिलता पर होता है जो ऐसे कामों को समाज मे अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का द्वार समझ

उन मे प्रवृत्त होरहे हैं ऐसेही घृणित लोगों से घिन करते और बड़ी कोमलता पूर्वक हमारी दशा पर तर्स खाय हमारे एक बड़े अनुरागी मित्र ने हमे एक लेख दिया है जिसे हम प्रेरित के स्तम्भ से उठाय अपने पाठकों के अवलोकनार्थ यहां पर रखते हैं —

सम्पादक महाशय

मैने हिन्दी लिखने वालों और हिन्दी पत्र सम्पादकों के बारे मे कुछ लिखा है आशा है आप इसे अवश्य छाप देंगे — मै जो कुछ लिखा चाहता हूं उसे आप यह मत समझिये कि दुश्मनी की राह से लिखा है क्योंकि दुश्मनी तो अपने प्रबल शत्रु को पीड़ा देने से होती है ईश्वर की कृपा से हिन्दी के तो अभी वे दिन आयेही नहीं कि यह किसी की आंखों मे खटके खटकना कैसा इतनी पुष्टता भी तो हम इस्मे नहीं देखते कि किसी महापुरुषार्थी दयालु करावलम्ब दाता की आंख मे इसने अब तक जगह पाया हो इसलिये मै अपने टूटे फूटे लेख मे जो कुछ प्रगट करताहूं उसे मैत्रीही भाव से पूर्ण मानिये— "सत्यम् ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्नब्रूयात्सत्यम• प्रियम्" इस कहावत के विरुद्ध सच्ची बात के कहने मे जो कुछ पारुष्य और रुखाई आजाती है वह दोष हमारे लेख मे चाहो हो। पर यह सोच आप मुझे क्षमाही करेंगे कि मेरा उद्यम केवल इतना ही है कि मे अपनों {क्योंकि मैने भी हिन्दी लेख के पीछे थोड़ा समय सत्यानाश किया है और सिर्फ खयाली पोलाव नहीं बरन अपने निज के अनुभाव से कुछ कहसक्ता हूं} और अपने समान दूसरे लोगों की दशा का सुस्पष्ट विवरण कर दिखाऊं ॥

समाचार पत्र वह चीज़ है जो सब देशों में सर्व साधारण ही को सहायता और सहानुभूति का भूखा रहता है सर्वसाधारण के लिये वह लिखा जाता है और सर्वसाधारण से सहायता की भी आशा रखता है परन्तु कई कारणों से हिंदी समाचारपत्रों की कुछ ऐसी

दशा है जिस्पर दुःख ही प्रगट कर ते बन आता है - पहले तो यही देखिये कि हिन्दी पत्रों का चलाना बड़ी भारी स्वार्थहानि और आत्म त्याग की शर्त्त पर है जिसे सोच बड़े वड़े उद्यमी और साहसी भी एक वार हिचक उठैंगें खैर अगर किसी अच्छे हिंदी समाचारपत्र को किसी के हाथ से चलते देखें तो अवश्य निश्चय कर लेना चाहिये कि आदि में उस्के सम्पादक ने थोड़ी या बहुत निज की हानि सहा होगा——लोग समझते होंगे कि उस्मे जो प्रवृत्त हैं वे अपने परिश्रम का पुरा प्रतिफल पाते होंगे तब तो ऐसे कठिन काम मे लगे रहैं परन्तु जहां तक मुझे अनुभव है हिन्दी लेखक और हिन्दी पत्र सम्पादकों को रोते और झीखते ही पाया ! मानलीजिये एक संपादक महाशय किसी आपत्ति में फसगये तो आशा की जा सक्ती है कि दूसरे उनके सम्पादक भाई उन्हें सहारा और तस्कीन देने की हालत में हों - सो यह कहां — ऐसे दो आदमी जब इकट्ठे होंगे तो अपना दुःख गा चलेंगे मानो इस बात की शर्त्त लगी है कि अपने दुःख के किस्से कौन अधिक और देर तक बखान सक्ता है सहारा देना कोसों दूर रहेगा तस्कीन पास न फटकने पावेगी किंतु एक दूसरे के दुःख की दशा को पुष्ट ही करता जायगा — अब बतलाइये यह कभी मन में धंस सक्ता है कि उन के दुःख के किस्से झूंठ और बनावट हैं ? कभी नहीं——

तब इस्का कारण क्या कि जिनको जिनको इस उत्तम काम में लगे देखा उनको प्रायः सहायता शून्य ही पाया ? क्या देश में विद्या फैलाने का काम लोग अधम समझते हैं ? नहीं ऐसा तो कोई न समझेगा — तब क्या ऐसी नीयत लोगों की है कि जो आदमी पत्रद्वारा औरों को शिक्षा देने या लोगों के दिल बहलाव के काम में लगा हो उस्का दिल तोड़ देना चाहिये ? नहीं २ ऐसा भी नहीं है — वरन ज़वानी जमा खर्च क

हां तक चल सक्ता है कोई छोटे से छोटा मनुष्य भी कभी पीछे न हटेगा — तब क्या कारण कि एक सुयोग्य सम्पादक सहायता पाने का पात्र भी हो कर सहारा नहीं पाता ?

महाशय इन प्रश्नों के उत्तर से मै आप का क्यों कर सन्तोष करूं-अजी साहब सहायता क्या मुहका कौर है कि झट अपने मुह से निकाल आप के मुह में भर दे — दान की रीति पर सहायता देने वाले लोग जो आप से उस दान का बदला पाने की उम्मेद के बिना भी पत्र सम्पादकों का दिल बढ़ाने वाले है वे तो शायद आप के देश में हुई नहीं - ऐसे लोग पहले इस्के कि आप को सहारा पहुंचावें अवश्य आशा को जाती है कि रसिक होंगे अर्थात् आप की मिहनत की क़दर समझें और आपके लिखित विषयों का रस पावें — अच्छा तो यह आशा रखना कि हिन्दी के क़दर दान उन प्रान्तों मे निकलेंगे जहां हिन्दी नहीं बोली जाती सर्वथा भूल है अर्थात् यह मन का लड्डू खाना कि बङ्गाल बम्बई आदि प्रान्तों के समाचार पत्रों के बदले आप के हिंदी के पत्र कभी काम आविंगे यह उन प्रांतों में असंभवित बात है — बंगाल के पत्र आप के देश मे चाहो भले ही जगह पावें किन्तु हिन्दी पत्रों की अभी वह दशा नहीं आई कि बंगाल वालों के मन मे पैठ सकें तो इस लिये ज़रूरी हुआ कि आप अपने ही देश में ग्राहकों के ढूंढने का हौसिला करें - सो आप के देश मे तीन प्रकार की जुदी २ भाषा बोलने वाले लोग हैं — हिंदी उर्दू और बंगला — पर बंगला बोलने वाले केवल अपनी जन्म भूमि के बदल देने से अपनी रुचि भी बदलें यह कभी सम्भव नहीं है फिर उन की निज की भाषा मे जब एक से एक चढ़बढ़ के रोचक विषय मौजूद हैं तो क्यों आप की भाषा की क़दर करें ? उर्दू वालों का चर्चा ही छोड़ देना चाहिये अब रहे केवल ठेंठ हिंदी

वाले उन में आप के उच्च श्रेणी वालों की शिक्षा और झुकावट अधिकतर उर्दू ही को अच्छा समझने की ओर है तात्पर्य यह कि कचहरी की भाषा उर्दू होने का इतना असर है और पुराने लोगों के खयाल ऐसे हैं कि अभी उनके मन में यह आयाही नहीं कि हिंदी मे भी पढ़ने लायक विषय हैं या होसक्ते हैं मध्यम श्रेणी के लोगों को इतना सुबीता नहीं कि हिन्दी लेखकों को भरपूर सहायता पहुंचा सकें परन्तु जैसा और सब देशों में देखा गया है भारत वर्ष में भी इसी मध्यम श्रेणी के लोग बिद्या, उत्साह, देश हितैषिता में औरों से अच्छेही हैं — पत्रों की भी जो कुछ सहायता होती है तो इन्हीं लोगों के द्वारा परन्तु इस मध्यम श्रेणी में बहुत ही थोड़े ऐसे हैं जो हिन्दी पत्रों की क़दर करें और जिन्में हिन्दी के उत्तम लेख का रस फैला है) तात्पर्य इस सब लिखने का यह कि पत्रों की अधिक सहायता की आशा ही आपको रखना फुजूल है पर उत्साह भङ्ग करने वाले इस नतीजा निकालने के लिये आप मुझे कोसियेगा नहीं।

अब यदि कोई कहे कि "थपोड़ी दोनों हाथों बजती है आपका तो पत्रही किसी काम का नहीं आप सहायता क्या चाहते हैं"— तो इस्के उत्तर में यह भी सोचना चाहिये कि पत्र उमदा उन्हीं की मदद से हो सक्ते हैं जिन्मे बिद्या है हमारी यहां की प्रधान बिद्या संस्कृत के बिद्वानों को पहले तो बूटीही घोटने से छुट्टी नहीं छुट्टी भी मिली तो उनके दिमाग पर उसी बूटी ने वह घटा टोप अंधकार छा दिया है कि समाचार पत्र क्या चीज़ है या इस शब्द का अर्थ ही क्या है इतना उस गाढ़ तम अंधकार पूरित मस्तिष्क में पैठने के लिये अभी ५० वर्ष चाहिये — रहे केवल हिन्दी नागरी जानने वाले — स्पष्ट है ऐसे लोग केवल रसज्ञान के बलसे जो कुछ लिख सकैं सो लिखैं बिद्या की पुष्ट

ता से जैसा कुछ गांभीर्य लेख में आना चाहिये सो तो उनमें हई नहीं ।

अब एक तीसरे तरह के लिखने वाले भी हैं—हम गलती करते हैं—हैं नहीं—बरन होना चाहिये—होते तो फिर क्या था ! खैर इस तीसरे तरह के लोगों ने अपनी मातृ भूमि मे रहकर विदेशी भाषा मे पूर्ण अधिकार प्राप्त किया है अर्थात् हमारे यहां के अण्डर ग्राज्युएट और ग्रेज्युएट जिन्होने प्रारंभही से यही शिक्षा पाया है कि देशोन्नति क्या वस्तु है देशी भाषा की तरक्की कैसे होती है वर्षों तक कालेजों में रहकर किताबें जो उन्होंने पढ़ा है वह ऐसे ही लोगों की बनाई है जिन्होंने अपने देश के साहित्य की पूरी भलाई की है— यहां पर ज़रा "अपने" इस शब्द पर ध्यान दीजिये क्योंकि बिलायत के अब वे दिन गये जब कि वहां के विद्वान् बिदेशी भाषा अर्थात् लाटिन ग्रीक आदि की भलाई चाहनेथे और वेही बिद्या असिल बिद्या समझी जाती थीं—इस लिये ऐसे लोगों का नमूना देख कर यदि अंगरेज़ी के साहित्य की भी ओर ग्राजुएट लोगों की झुकावट हो तो उसे भी हम भूल कहेंगे पर महा खेद और अत्यन्त लज्जा की बात तो यह है कि वे ऐसे मुर्द: दिल हैं कि उधर भी उनकी कुछ ऐसी रुचि नहीं पाई जाती जिस्से हम आशा कर सक्के कि एक जगह जो कुछ उन्होंने सीख रक्खा है उसे अपन दूसरे और अत्यन्त प्रिय, और समीपवर्ती कामो मे लगावें गे इस लिये हिन्दी सम्पादकों का यह आशा करना कि ऐसे महापुरुष उनके काम आवेंगे इस्से बढ़ कर दूसरी और कौनसी भूल होगी ?

हिन्दी के रसिकों का अभाव हम आप को अच्छी तरह दिखला चुके तो अब बतलाइये समाचार पत्र किस्के बल चलें ? यह जो हर तरह की न्यूनता का पहाड़ है उस्का सब बोझ सहायशून्य, दीनातिदीन, एकाकी हिन्दी

सम्पादकों ही के कन्धे पर क्या रक्खा जाय था ? अजी साहब प्रश्न के ढंग पर आप हमसे पूछ क्या रहे हैं यों कहिये कि बदिलोजान वे इस बोझ को खुद उठाये हुये हैं—धन्य हैं ये और धन्य है इनके कलेजे को—अपने उद्यम के महत्व से न डरना यद्यपि बड़े उत्साही लोगों का काम है पर उस उद्यम के महत्व को एक बार जांच लेना और तौल लेना भी तो बुद्धिमत्ता से शून्य नहीं है—यद्यपि अपने साथियों के उत्साह भंग का इससे बड़ा डर है पर ठीक २ बात को आंख पसार देख लेने से लाभही है और इस देखने का भी सारांश यही है कि जो हो गया उसके लिये कौन रोये, और वर्तमान दशा से कौन निराश हो, ईश्वर ने ऐसे समय या समाज मे होना आपके बांट मे छोड़ दिया है और ऐसी प्राकृतिक न्यूनता से आप को घेर दिया है कि आगे को भी जल्दी इसका कुछ प्रतिफल पाने की संभावनाही नहीं हो सकी तब इस दशा मे हिन्दी लेखकों के लिये कुछ भी ढाढस देने की बात है तो केवल इतनीही कि समाज को बड़े जंजालों से मुक्त कर सुधार ने मे वे भी अणुमात्र सहायता दे रहे हैं और इसी को अपने लिये बड़ा भारी सहारा। और इज्जत। और बदला मान अपने कर्तव्य से नहीं हटते और गीता के इस भगवद्वाक्य पर अमल किये बैठे हैं "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ! ॥

## म्युनिसिपलिटी का दफतर हिन्दी मे क्यों न हो।

बिचार करने से ध्यान मे यही आता है कि म्युनिसिपल वा लोकल बोर्ड का काम जो कुछ है वह सब रियाया का है जिसे सर्कार आज तक आप खुद करती रही पर अब वह प्रजा के हाथ मे सौंप दिया ग-

या है — इस्का कुल काम जैसा रुपया वसूल करना जमा घटाना बढ़ाना मेम्बरों की अदल बदल इत्यादि सब कमेटी की राय से हो- ता है — इस म्युनिसिपलिटी की जान चुंगी है जिस्के देने वाले मु- ख्य कर महाजन दूकान दार और सौदागर हैं जिन के बही खाते बी- जक चिट्ठी पत्री आदि सब हिन्दी ही में होते हैं तब उर्दू अक्षर जो किसी हाल में प्रजा के वर्ताव में नहीं आते इस लिये साधारण प्र- जा के वे अक्षर किसी तरह नहीं कहे जा सक्ते क्यों म्युनिसिपालिटी के दफ़तर को सब ओर से आक्रमण किये हैं ? — यदि यह कहा जाय कि अदालत में उर्दू है इस लिये यावत दफ़तर मानो ऊंट की नकेल समान सब एकही डोरी मे बंधे रहना चाहिये—तब इस का उत्तर तो यही हो सक्ता है कि अदालत सर्कार का दफ़तर है सर्कार चाहो दो सींग अपने मा थे पर जमा ले हमे क्यापड़ी जो मने करने जांय हमारा कुछ दावा है — हमारा निज हक्क हमें क्यों न दिला मिले — जो कहो म्युनि सिपलिटी के मेम्बर अपना दफ् तर हिन्दी में रखलें उन्हें कौन मना किये है — हां सच है परंतु उन पर तो हाकिमों की खुशाम द भूतिनी इस क़दर सवार है कि कभी हिम्मत नहीं पड़ती कि बिना उनका इशारा पाये अपनी ओर से कुछ कर सकें या कह सुन सकें फिर सच तो यों है कि इलेक्शन के समय लोग जो म्युनिसिपल क मिशनर होने के लिये दिलोजान से कोशिश करते हैं सो समाज में अपनी प्रतिष्ठा और बात बढ़ाने को न कि सर्व साधारण के हित के खयाल से विशेष उनका लक्ष्य हाकिमों की रज़ामन्दी की ओर है नहीं तो क्यों सिबिल लाइन की सड़कों पर कैसी सफाई और तरावट रह ती है वही हिन्दुस्तानी महल्लों की सड़ी और गन्दी गलियों में चल ते घिन उपजती है — ऐसे २ कितने दुख रोने हैं कहांतक इस सियापे को गाते रहैं सारांश यही

है कि हमारे मेम्बरों के होश हवास दुरुस्त नहीं रहते इस्से सर्कार ही से निवेदन करते हैं कि वह हम लोगों की ओर अपनी सरस कृपा दृष्टि पूर्वक जो न्याय हो सो करै—उर्दू अक्षरों के कारण चुंगी का महसूल देना अथवा फेर लेना ब्योपारियों के लिये कितना कष्ट दायी होता है और कभी २ को तो महा अन्याय भी होता है ६ महीने के लग भग हुए होंगे सुनते हैं इस इलाहाबाद चुंगी आफिस का एक मोहर्रिर इस कसूर मे मौकूफ कर दिया गया कि घी का महसूल ले कर खरों के महसूल की रसीद दी—वह घी की गाड़ी नाके पर रोकी गई और महसूल की रसीद मांगी तब ब्योपारी ने रसीद दिखलाई उस्मे महसूल खरी के हिसाब का था नाके वाले ने पूछा घी लाद खरी का महसूल देते हो—ब्योपारी ने कहा मैंतो ३) कुछ आने दे आया हूं नाके वाले ने कहा इस रसीद मे महसूल बहुत कम है—अन्त को तहकीकात हुई और रसीद देने वाले ने अपनी रोटी गवांई—ऐसे २ कितने अन्याय होते होंगे एक खुल गया तब सब ने जाना हिन्दी अक्षरों मे दफ्तर होने से हम प्रश्न कर सक्ते हैं ऐसे २ अन्याय कभी न होंगे—इस विषय का विचार सम्पादक समाज की ओर से किया जाय और सब सम्पादक एक मन हो अपनी २ लेखनी को काम मे लावें तो क्या यह प्रयास कभी निष्फल हो!

## ।स्थानीयअधिकारियों से निवेदन।

इस वर्ष रामलीला और मोहर्रम साथही आपड़ा है इस लिये हम आपने स्थानीय अधिकारी कर्मचारियों से सविनय निवेदन करते हैं कि दंगा फसाद से हम लोगों को बचाने के लिये खूब चौकसी करें—हमारे मुसल्मान भाइयों को इस देश मे इतने दिन रहते बीतगये कितनों को तो

कम से कम पचास पीढ़ी यहीं बीती होंगी और हिन्दू मुसल्मांनो मे इतना खिल्त मिल्त हो गया कि कितनी बात उनकी हम लोगों ने इख़्तियार कर अपने को अर्द्धय वन हो जाने की शरम को भी जली जलो दे बैटे—वैसा ही मुसल्मांनो ने भी बहुत से तौर तरीके रीति रस्म रहन सहन हिन्दुओं के कबूल कर लिये यहां तक कि इस बृहत् भारत के दहिने अंग हिन्दू समझे जांय तो मुसल्मांनो को उसी के बाये अंग होने मे कुछ सन्देह बाकी न रहा परन्तु बर्षों क्या बरन युगों के बाद जब कभी ऐसा मौका आ पड़ता है तब ये दोनो आपस का बदला चुकाने मे नहीं चूकते पर नहीं चूकते जो कहो इस्मे हिन्दू ही सर्वथा दोषी हैं तो निस्तेज निःसत्व जिनकी रक्त संबाहिनी शिराओं के किसी हिस्से मे जोश और गर्मी बाकी न रहगई किस माथे सिर उठा सक्ते हैं खटका केवल उसी ओर से है इस्से हमारे हाकिमो को चाहिये कि उस ओर से अच्छी तरह सावधान रहें और उस्के लिये जो कुछ उचित प्रबन्ध समझा जाय अभी ही से उस्का इन्तिजाम शुरू कर दें।

# हिमालय बर्णन

"उत्तर दिशि नगराज" अटल छबि सहित बिराजत। लसत स्वेत सिर मुकुट झलक हिम सोभा भाजत ॥ १ ॥ बदन देश सबिशेष कनक आभा आभासत। अधोभाग की श्याम बर्ण छबि हृदय हुलासत २ स्वेत पीत संग श्याम धार अनुगत सम अन्तर। सोहत त्रिगुण त्रिदेव त्रिजग प्रति भास निरन्तर ॥ ३ ॥ बिलसत सो तिहुं काल त्रिबिध भ्रुटि रेख अनूपम। भारत बर्ष विशाल भाल भूषित त्रिपुंड्र सम ॥ ४ ॥ उज्जल ऊंचे शिखर दूर देशन लों चमकत। परत भानु की किरन प्रात सुवरन सम दमकत ॥ ५ ॥ लता पुहुप बन राजि सदा ऋतुराज सुहावत। हरी भरी डहडही बृक्ष माला मन भावत ॥ ६ ॥ कोकिल कीर कदम्ब अम्ब चढि गान सुनावत। श्यामा चारु सुगीत मधुर सुर पुनि पुनि गावत। देव दार की डार कहूं

लांगूल हिलावत ॥ ७ ॥ कहुं मर्कट को कटक बेग सों तरु तरु धावत ॥ ८ ॥ बिकसित नित नव कुसुम तरुण तरु मुकलित बौरत । अलबेले अलिवृन्द कलिन के ढिग ढिग भौंरत ॥ ६ ॥ झरना जहं तहं झरत करत कल छर छर जल रव । पियत जीव सो अंबु अमृत उपमा हिम सम्भव ॥ १० ॥ पवन शीत अति सुखद बुझावत बहु बिधि तापा । बादर दरसत परसत बरसत आपहि आपा ॥ ११ ॥ गंगा गोमुख स्रवत कहे को सोभा ताकी । बरनै जन्मस्थली बहुरि अथवा यमुना की ॥ १२ ॥ सतलज व्यास चिनाव प्रभृति पंजाब पंचजल । सरयू आदि अनेकन नदियन को निसर्ग थल ॥ १३ पृष्ठ भाग रमणीक रुचिर राजत रावण ह्रद । ग्रहण करत निज देह सिंधु अरु ब्रह्मपुत्र नद ॥ १४ ॥ हरिद्वार केदार बदरिकाश्रम की सोभा लखि ऐसो को मनुज जासु मन कबहुं न लोभा ॥ १५ ॥ पुनि देखिय काश्मीर देश नेपाल तराई । शिकम और भूटान राज्य आसाम लगाई ॥ १६ ॥ दक्षिण भुज अफ़ग़ान राज मस्तक सों भेटत । बाम बाहु सों ब्रह्मा के कच भार समेटत ॥ १७ ॥ जो समर्थ बलवान सुभाव हि सों उदार मन । देत अभय बरदान मान युत निज आश्रित गन ॥ १८ ॥ आर्यावर्त्त पुनीत ललकि हिय भरि आलिंगत गङ्गा यमुना अश्रु प्रेम प्रगटत हृदयङ्गत ॥ १६ ॥ दूरे दूरे ग्राम अधिक अन्तर सों सोहत । रूपवती पर्वती सती युवती मन मोहत ॥ २० ॥ अगनित पर्व्वत खण्ड चहूं दिशि देत दिखाई । सिर परसत आकाश चरण पाताल छुवाई ॥ २१ ॥ सोहत सुन्दर खेतपांति तर ऊपर छाई । मानहु बिधि पट हरित स्वर्ग सोपान बिछाई गहरे गहरे गर्त्त खड्ग दीरघ गहराई । शब्द करत हो घोर प्रतिध्वनि देय सुनाई ॥ २३ ॥ तहां निपट निश्शंक बन्य पशु सुखसों बिचरत । करत केलि कल्लोल मुदित आनन्दित बिहरत ॥ २४ ॥ कहुं ईन्धन को ढेर सिद्ध आवास जनावत । कहूं समाधिस्थित योगी की गुहा सुहावत ॥ २५ ॥ बिबिध बिलक्षण दृश्य, सृष्टि सुखमा सुख मण्डल । नन्दन बन अनुरूप भूमि अभिनय रंगस्थल २६ प्रकृति परम चातुर्य, अनूपम आश्चर्यालय । श्रीधर दृग छकि रहत "अटल छबि" निरखि हिमालय ॥ २७ ॥

# आदमियोंमेंईंट या पत्थर और गारा।

समाज या देश को लाभ पहुंचाने के लिये दो तरह के आदमियों का होना सदा आवश्यक है—एक का नाम दिल्लगी के तौर पर लोगों ने ईंट या पत्थर रक्खा है दूसरों का गारा—अर्थात् संशोधन की नीयत से समाज मे किसी तरह का आन्दोलन करने वालों मे एक तो वे हैं जिनके कन्धे पर भांत २ की तकलीफ तरद्दुद और बदनामी का बोझ रक्खा हुआ है—नक्कू बनने की पदवी केवल ऐसोंही के लिये निश्चय की गई है—जो नये लोगों को अपनी ओर खीचने का बीड़ा उठाये हैं—बाहर वाले जो उनकी राय के विरुद्ध हैं उनसे टक्कर खाना और लड़ना भी उन्ही को सौंपा गया है—ईश्वर के कोप से अपने साथियों की बौछार व्यंग्य अथवा कटूक्ति भी उन्ही को सहना पड़ता है फिर भी अपने कर्त्तव्य कर्म का देखना भालना और जहां कहीं से बिगड़ने लगे तत्काल उसको सुधारने की उपाय सोचना—और इस सामाजिक आन्दोलन महा वृक्ष मे संशोधन रूप अमृत फल को पैदावारी देख कर भी जो घमण्ड मे फूल नहीं उठते कि यह सब केवल मेरेही बाहु बल के सहारे से हुआ है ऐसे लोगों का नाम जैसा हमने ऊपर कहा ईंट या पत्थर है—पाठक जन इन नाम करणों पर हंसिये नहीं बरन टुक ध्यान देकर सोचिये तो आपसे आप उसका अर्थ आपको खुल जाय गा॥

यदि आप यह कहैं कि "समाज का काम तो सदा से ऐसे ही लोगों के चलाये चला है—समाज मे जो कुछ भलाई हुई और आगे को होने कि आशा है वह केवल ऐसों ही के परिश्रम का परिपाक है"—कदाचित् आप यह कहैं "और दूसरे तरह के लोग तो हो ही नहीं सक्ते जो समाज की कुछ भलाई कर सकैं क्योंकि वास्तव

मे भलाई आप जिसे कहैंगे वह तो दंभ और पाखण्ड से उतनी अलग है जैसा दिन रात से तो फिर वे किस तरह के लोग होंगे जो सच्चे लोगों से [जिनका वर्णन आपने ऊपर लिखा है] भिन्न भी हों और फिर भी समाज को ठीक २ भलाई पहुंचावें ? हमें तो ऐसे लोगों का होना ही कुछ असंभव सा जान पड़ता है"——पर ध्यान देकर सोचिये तो यह भी बात खुल जाय गी कि अपनी समाज की भलाई करने को सदा और सब जगह केवल दर्जे ही के लोग (अर्थात् जिन्हें हमने ईंट के स्थान में रक्खा है) मुस्तैद मिलें यह भी तो असंभव है—इसीसे हमने ऐसे लोगों की उपमा ईंट और गारे की दी है जैसा मकान बनाने या दीवाल खड़ी करने के लिये दो चीजों की जुरूरत है एक तो ईंट दूसरे गारा क्योंकि ईंट के जोड़ने के लिये कुछ चाहिये नहीं तो खाली ईंट रखते जाइयेगा तो दीवाल गिर पड़ैगी इसलिये समाज संशोधन संबन्धी आन्दोलन के द्वारा देश की भलाई कर डालना बिना उन लोगों के मेल के जिनका नाम हमने गारा रक्खा है कभी होही नहीं सक्ता-तो ऐसे लोग वे हैं जिनको हम न बनावट से चलने वाले कह सक्ते हैं न पूरी २ तरह पर सच्ची रास्ते पर चलने वाले—न हम यही कह सक्ते हैं कि समाज का ऐसे लोगों से कुछ भी उपकार नहीं हो सक्ता और न यही कह सक्ते हैं कि समाज में जो कुछ भलाई हुई वह सब इन्हीं लोगों की करतूत है — न हम यही कह सक्ते हैं कि ऐसे लोगों का कम होना अच्छा है न यही कि ऐसों की संख्या का बढ़ना ही समाज का कल्याण कारी है — न यही बात हमारे मन मे आती है कि बिना ऐसों की सहायता के समाज का काम चल जायगा और न यही कि समाज की उन्नति के ऐसे लोग बिघ्न रूप हैं तब फिर ये कौन लोग हैं जो अधिक

भलाई भी नहीं कर सक्ते तो भी बिना उनके कोई छोटी सी भलाई का होना भी दुस्साध्य है ?

समाज के सम्बन्ध मे यह एक सा धारण नियम है कि समाज मे उन्हीं की चलती है और उन्ही का रोब जमता है जो दृढ़ता पूर्बक समाज पर अपना साम्राज्य अपने हाथोंम डाले हुए हैं जंगल मे भी देखिये तो शेरही का रोब जमता है गीदड़ का नहीं—क्यों ऐसा है इसे चाहो आप प्रकृति की भूल कहैं या ईश्व रीय नियमों का अन्याय मानें अ थवा न्याव आप को सब अधिकार है—परन्तु समाज वह पाठशा- ला है जो मान और गौरव रूपी पारितोषिक केवल उसी छात्र को देती है जो पूर्ण रीति से उत्तीर्ण हु आ है इस्की जांच करना समाज का काम नही है कि फलाना उम्मेदवार गरीब है या उस्के माता पिता क्ले- श में रहे या वह खुद बीमार था इत्यादि इससे वह पीछे रहा इस वास्ते समाज के आंख में गौरव पाने योग्य वेही मनुष्य होंगे जो दृढ़ रीति से अपने अधिकार को पकड़े हैं — यह खियाल रहे कि हम उस मज़बूती की तारीफ़ नही करते है जिस्से एक हिस्सा समाज का दूसरे पर अन्याय का बर्त्ताव करता है—ऐसा अन्याययुक्त गौरव कभी श्लाघनीय नहीं हो सक्ता।

अब यह भी सोचना चाहिये अपने भरसक समज में घट कर पद कोई नहीं स्वीकार किया चाहता इस लिये ये दूसरे दर्जे के लोग [जिन को हम गारा कहते हैं— और जिन्को सहायता की भी समाज में अत्यन्त आवश्यकता है) वे हैं जिन के ऊपर पहिले दर्जे के लोग { अर्थात् ईंट } सब तरह पर अपना जादू चलाते हैं और जिन्ही के अधिक संख्या के कारण किसी प्रकार के आन्दोलन में पुष्टता पहुंचती है – पर ये इतने प्रबल नही हैं कि अपने मानसिक शक्ति और बुद्धि बैभव द्वारा सामाजिक हलचलों में स्वयं अग्रणी बनें – पर इतनी मानसिक शक्ति की प्रबलता तो अवश्य रखते

हैं कि अव्वल दर्जे के लोगों के आशय की क़दर कर सकें और यथा शक्ति उनके साथ रह कर उनकी सहायता करने में कभी पीछे न हटें — क्योंकि एक तीसरे दर्जे के लोग भी तो हैं जिन को हम तलछट या उसी दीवाल का लोना कहें तो ठीक होगा और खेद की बात है कि जिनकी संख्या सब से अधिक है बरन उन दोनों की संख्या से दशगुनी है — ऐसे लोगों से सहायता की कौन आशा है बल्कि पहिले दोनों तरह के लोगों के अनुष्ठान में कुछ उपद्रव या विघ्न न करें तो ईश्वर की बड़ी कृपा समझनी चाहिये — खैर अगर पहिले दर्जे के लोगों को गाड़ी की उपमा दीजिये तो इस दूसरे दर्जे वालों को पहिया कहना तो जुरूर ही है अर्थात् पहिले दर्जे के लोगों का उठाया या चलाया हुआ उद्यम इन्हीं दूसरे दर्जे वाले लोगों के सहारे चलता है — यद्यपि इस दूसरे दर्जे के लोगों मे हम उतना बुद्धि का तीखापन या मानसिक शक्ति की प्रबलता नहीं पाते जितना कि पहले दर्जे के लोगों मे है और न ऐसे लोग कभी किसी समाज संशोधन के नेव डालने वाले हुये हैं किन्तु गतानुगतक न्याय का अनुसरण करते हुये बुद्धि बैभव मे बढ़े हुये लोगों के उठाये हुये बोझ को सम्हाल ने वाले सदा मे यही होते आये सो इसे भी कुछ कम पुरुषार्थ न समझना चाहिये — "आसिंधु गामिनि पितुर्वचन प्रबाहे क्षिप्रा कथानुघटनाय मयापि बाणी" बाण कवि के पुत्र की इस उक्ति पर चलने वाले इस दूसरी श्रेणी वालो की हम एक तरह पर प्रशंसा ही समझते हैं ।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि इन मध्यम श्रेणी वालों में बुद्धि का तीखापन उतना नहीं है — और माना भी कि किसी २ में अधिक बुद्धि बैभव का प्रकाश हो गया तो जैसा कि उत्कृष्ट ज्योति से प्रकाश तो होता है पर और दूसरी २ छोटी रोशनियों को

दबादेता है—और जैसा कि बड़े वृक्ष के नीचे छोटे वृक्षों के लिये पृथिवी को पोषणता शक्ति बाकी हो नहीं रहती यही प्राकृतिक नियम समाज संशोधन के सम्बन्ध में भी लगता है—अगर इस विभाग के सिर पर कोई बड़ा संशोधक है तो स्पष्ट है कि छोटे लोगों को सिर उठाने की जगह बाकी ही नहीं है—हमारा मतलब यह है— देखना चाहिये कि बिलायत के लोग अपने देश की भलाई किस ढंग पर करते हैं—केवल यही नहीं है कि वहां के लोग अपने देश की भलाई पर अधिक ध्यान रखते हैं किन्तु यह भी है कि नये २ साहसी लोगों को अलग २ नये २ रास्ते अपने जौहर देखला कर मुल्क की तरक्की करने को हैं—और गो कि हम मानते हैं कि हमारे हिन्दुस्तानी समाज मे बिलायत की समाज के बनिस्बत कहीं ज्यादा जरूरत है पर समाज पुष्टता को अभी केवल बाल्य अवस्था होने के कारण हमारे हिन्दुस्तानी समाज मे संशोधन के उतने रास्ते न खुले हैं और न खुल सक्ते हैं—

एक उदाहरण लीजिये—बिना यत के केवल उस बिभाग को लीजिये जिस्में लोग किताबों या अखबारों के जरीये से मुल्क को फायदा पहुचाते हैं— अलग २ अपने २ ढंग की तो जो किताबें छपती हैं वे तो हई हैं उन एक तरह की किताबों को देखिये जिन के श्रेणी ( सीरीज़ ) की संख्या हजारों होगी अखबारों को देखिये तो हर पेशे वालों के अलग ० अखबार— लोहारों के अलग खेतिहरों के अलग ईंट बनाने वालों के अलग, चाह वालों के अलग— (यहां तक कि खपड़ा छाने वाले भी खपड़ा छाते हुये अखबार पढ़ते हैं)— लड़कों के वास्ते अलग, लड़कियों के वास्ते अलग, औरतों के वास्ते सैकड़ों अलग इत्यादि इत्यादि ।

अगर बिलायती चीजों के अन्धाधुन्ध बयान से हमने देश

भक्त हिन्दी रसिकों के चित्त को किंचित दुःखदिया हो तो हम उनसे क्षमा मांगते हैं—हमारा आशय केवल इस बात के दिखलाने पर था कि भिन्न २ रास्ते खुल जाने से मेहनत का विभाग हो जाता है—और देश को बहुत ज्यादा फ़ायदा पहुंचने की आशा है—और समाज में जो लोग गारे का काम दे रहे हैं अगर ईंट का काम देते तो और अच्छा होता।

## हिन्द! हिन्द!! हिन्द!!!

न जानिये इस दो हर्फी लबज़ में क्या लुफ्त है, क्या मज़ा है, क्या जादू है, क्या जन्तर है, क्या मन्तर है, क्या ताक़त है, क्या आफत है, क्या शैतनी रग-बत है, क्या हैवानी वहशत है, क्या इलाही रहमत है, क्या बला और बलवा है, क्या जोश है, क्या पागल पन है, जो सारा जहान इस्पर कुर्बान है—सारी खलक की इस्के वास्ते हलक में जान है—जिन्नात व इन्सान व परिस्तान व तुर्किस्तान ईरान व अर्बिस्तान व फरङ्गिस्तान व अफगानिस्तान तमाम इस्के इश्क में हैरान व परेशान है—सिवा उनके जिनका जिगहरी इन दो हर्फों से बना है अर्थात् हिन्दू जिसे देखिये हाय हिन्द हाय हिन्द कह कह हाथ मला करता है—ज़र खेज़ हिन्द—लब रेज़ हिंद ऐश आमेज़ हिन्द – अज़ीब हिंद लज़ीज़ हिन्द – प्यारे हिन्द – आंखों के तारे हिन्द – हमारे पोस प्यारे हिन्द – डियर हिन्द स्वीट हिन्द – बहिश्त हिन्द– चमन हिन्द—गुलशन हिन्द – रौशन हिन्द – सोशन हिन्द – गुल हिन्द – गुलरू हिन्द – जिगर हिन्द – दिल हिन्द – दिलबर हिन्द – जान हिन्द – तेरे बिना दुनिया बीरान हिंद। लडूंगा – मारूंगा – अपने को निसार करूंगा पर तेरा दीदार हासिल करूंगा – हिन्द तुझ बि

न ज़िन्दगी ख्वार हिंद – "आओ गले लग जाओ सनम इतना न सताओ रे" इश्क़ हिंद मुश्क़ हिंद तुही सिर्फ मर सब्ज़ हिंद – हाय हिंद – हाय हिंद – बस इसी धुन में सैकड़ों रोते हैं और मुफ्त में जान खोते हैं पर यह हिंद कोई ऐसी चिड़िया नहीं है जो हर एक बहेलिये के हाथ में आजाय – यह जिसकी असल में थी उसी की अखीर में होगी ॥

## पढ़ैं पत्थर अकिल पर आपकी समझै तो क्या समझै

हम यह पूछते हैं कि हमारे देश के सातो जात के लोगों को जो ऊंचे दरज़े की शिक्षा दी गई और नित दी जाती है उस्से उनको क्या लाभ हुआ आलिम फाजिल होकर उन्होंने क्या किया ? —बनिया बक्काल बढ़ई लुहार तेली भुंजवा आदि सब जाति और कौम के लोगों मे एकसां जो तालीम की धारा बहाई गई तो इस्से लाभ क्या हुआ ? वाह साहब आपकी कैसी मति मारी गई है ज़रा अपनी अकिल को चराह गाह से लौटा लाइये—इन सब लोगों ने आपकी समझ मे कुछ किया ही नहीं ? बारिस्टरी वकालत डि–कलट्टरी तहसीलदारी थानेदारी मुहर्रिरी केरानीगीरी आदि बड़े २ ओहदे पाना क्या आपकी समझ मे कुछ हई नहीं ? फिर सब लोग पढ़ २ बनियों ने डंडी तराज़ू तोलने से छुटकारा पाया—कि-सान लोग पढ़ कर खेती करने हल चलाने की मेहनत से बचे लुहार को धौकनी और हथौड़े से छुट्टी हुई — जुलाहों को अपना तानावाना दूर फेंक बिलायती बढ़िया कपड़ा पहिनने का मौका मिला बिना हाथ पांव हिलाये ज़िन्दगी के सब ऐश औ आराम के सामान मुहैया रहते अपने २ पेशों की पैरवी कर कौन बलामे

पड़े फिर बाबू कहाना सैकड़ों आदमियों के ऊपर हुकूमत करना क्या कुछ बात ही नहीं है—माना हमने कि अंगरेज़ी पढ़ने से हृदय की आंख खुल जाती है पर हमारे देश मे इस्का कुछ उलटा ही परिणाम हुआ—यहां उनके हिये की रही सही जो कुछ बची थी वह भी फूट गई नहीं तो क्या कारण समर्थ असमर्थ छोटे बड़े पढ़ कर सब अंगरेज़ी नौकरी ही की ओर झुकते है यह किसी को नहीं सूझता कि उनके बाप दादों का पेशा जिस्से पीढी दर पीढ़ी बराबर उन्हें पेट भर रोटी खाने को मिलती आई उसे छोड़ कर सब के सब नौकरी ही की ओर दौड़ें गे तो उनके कदीमी पेशों का क्या हाल हो गा? हज़रत आपकी अक़िल ज़ुरूर सड़ गई ज़रा उसे बरैली की हवा खिला लाइये यह सरासर आपकी नादानी है जो फ़रमा रहे हैं कि यहां के पेशों का क्या हाल हो गा! टुक सोचिये तो सही भांत २ की दस्तकारी के पेशों को अपने टिकने के लिये बिलायत से बढ़ कर स्वर्गभूमि दूसरी कहां मिल सक्ती हैं—सिवा इस्के अगर पढ़े लिखे लोग हर तरह के पेशों मे लग जांयगे तो सर्कार को अपने काम के लिये क्लार्क कौड़ी मे कोड़ियों के भाव से कैसे मिलें गे फिर बेजान दस्तकारी की चीज़ों के ब नस्बत पढ़े लिखे जानवरों का भाव सस्ता होना मुल्क को ज्यादा फ़ैज़ पहुंचाना है॥

## । हम होते तब न ।

हम राजा होते तो कानून के संकड़े से देश भर को जकड़ देते और इतना टैक्स लगाते कि लोगों के चिथरे उड़ा देते हर एक बहाने अपना पेट भरते किसी के पास एक कपर्दिका न छोड़ रखते अगस्त्य और वृकोदर के उदर से भी दस गुना उदर कर लेते

"सर्व देवमयो नृपः" सिद्धान्त ही है तब क्या जहां और जिस काम मे देखो केवल हमी हम रहते—श्वेत और कृष्ण का मुकाबिला आपड़ता तो श्वेत को निहाल कर देते कृष्ण टका से मुंह ताकते रहजाते—पर क्या करें हम होते तब न ॥

राजा के कृपा पात्र होते बड़े से बड़े खिताब का पुछल्ला लगाय स्थानीय कर्मचारियों को खुश रखना अपना प्रधान कर्तव्य समझते जब कभी प्रजा या देश के कोई नफा या नुकसान की कोई बात आ पड़ती तो जिधर उन कर्मचारियों का रुख पाते उधर ही झुकपड़ते—म्युनिसिपल कमिश्नर होते और सफाई की देख भाल हमारे जिम्मे होती तो नगर भर में खुनी नारी जारी कर देते—शहर के कोतवाल होते । तो वह येश करते कि नवाब को भी ख्वाब में नसीब न होता—हमारी सौम्य मूर्ति बदमाशों को सदा सुखदायी रहती भले मानुषों के लिये अलबत्ता काशी के काल भैरव समान यास बर्दुक होते—पर क्या करें हम होते तब न ॥

चौबा पण्डित होते तो वह पोपुलीला बिस्तारते कि राम लीला या कृष्ण लीला हमारी लीला के आगे फीकी पड़ जाती अक्षर शाइस्तगी य शऊर से कोसों दूर हटे रहते—क्या सुआ मैना हैं जो पढ़ें तभी क़दर हो जो लियाक़त या बिद्या ही पर कदरदानी आंटिका तो हमारा यह भारी भरखं मोटा शरीर किस काम आवेगा—इन दिनों के नव शिक्षित अंगरेज़ी पढ़ २ किस्तान हो गये हमे बृथा ही नाम रखते हैं—उन्हें बकने दो हम उनकी कब सुनते हैं हमे तो बं भोला देनो जून भांग का गोला भेजता रहता बूढ़े बैल के समान पड़े २ पागुर किया करते । पर क्या करैं हम होते तब न ॥

गवर्नमेंट स्कूल के मास्टर

होते झूंठी सच्ची आंय बांय शांय किताब बनाय चौगुना दाम लड़कों से चार्ज करते उनकी तालीम पर तो कम ध्यान रखते केवल हाय पैसा हाय पैसा दिन रात किया करते मन मानी नबड़ धोंधों मचा रखते कोई कहने सुनने वाला था ! । पर क्या करें हम होते तब न !

दूकानदार होते महा मूंज़ी मक्खी चूस बने रहते खब्ज अखब्ज का विचार छोड़ एक २ कौड़ी दांत से थाम्भते किसी को एक पैसा न देते सर्वस्व हमो गटक बैठते कवि की उक्ति के पूरे अनुयायी बनते ॥

## कवित्त

"दाता घर जाती तो क़दर तेरी जानी जाती सूम घर आई है बधाई तू बजाव री । खानि तहखाने सेहखाने मे निवास कर होय न उदास चित्त चौगुनो बढ़ाव री । खैहौं न खवैहौं मर जैहौं तो सिखाय जैहौं नातिन अरु पन्तिन को आपनो सुभाव री । जियत मे कौड़ी एक देहौं न फ़कीरन को सूम कहै संपत से बैठ गीत गाव री" ॥

अन्न के रोज़ गारी होते दिन रात काल मनाया करते—ज़मीदार होते गरीब किसानों को पेर डालते—कचहरी के अमले होते बीबी उर्दू की खैर मनाते गोसाईं होते गोपियों मे कान्ह बन प्रिय शिष्याओं का काम केलि के द्वारा मनोर्थ पूरा कर उन्हें कृत्त कृत्य कर देते—राम फटाका धारी होते मालपूआ छकते और दिन रात भांग कूटा करते—मन्दिर के मुखिया पुजारी या कथक्कड़ व्यास होते कितनी मृगनयनी विहङ्गियों को कटाक्ष पात के फन्दे मे ऐसा फसा रखते कि क्या ताक़त जो टह छोड़ कहीं अन्यत्र बहक कर जाने पाती—यह तो सब होता जब हम होते तब न—अपना कुछ बश है

अच्छा हुआ जो गधे को नाखून न दिया गया ॥

# कलयुग ककहरा

ब्राह्मण से

लड़कपन में बहुतों ने कक्का का काम करत कुछ देर न कीजे इत्यादि पढ़ा होगा पर अब पुराने ढङ्ग का चलन नहीं रहा इससे हम पढ़ावें सो पढ़ो ॥

कक्का का करम धरम सब दूर बहेय । खख्खा खा खुले खजाने होटल खेय । गग्गा गा गोरों आसा भेष बनेय । घग्घा घा घरके धान पसार मिलेय । चच्चा चा चुरुट धरे बाजार चबेय ॥ छच्छा छा छलबल करि छुप २ छिलेय । जज्जा जा जुआ नहीं जूड़ी फेकवेय । झझ्झा झा झगड़ा कर धर्मी कहवेय ॥ टट्टा टा टेबिल पर खाना चुनवेय । ठठ्ठा ठा ठाढ़े मूतत शरम न खेय ॥ डड्डा डा डगर चलत भुइं खोदत रहिय । ढढ्ढा ढा ढोंग रचे बिन बात न कहिय ॥ तत्ता ता ता कोटा उच्चारण कीजे । थत्था था थाती धरी हजम कर लीजे ॥ दद्दा दा दान नहीं पर चन्दा दीजे । धद्धा धा धरम के नाते ऐसा कीजे !!! ॥ नन्ना ना नाम नागरी केर मिटेय । पप्पा पा पंडित जी को पोप बनेय ॥ फफ्फा फा मित्र देश को कभी न करिय । बब्बा बा बड़ों का नाम फु लिशचेप धरिय ॥ भभ्भा भा भाई २ नित उठि लरिय । मम्मा मा मात पिता को लातन मरिय ॥ यय्या या यारों की भी हंसी उड़ेय । ररा रा राम नाम से मुंह बिजुकेय ॥ लल्ला ला लेडी जी की सेवा कीजे । वव्वा वा वाही पन में तन तजि दीजे ॥ सस्सा सा साहब की ठोकर तक सहिय । हह्हा हा हिन्दू माच से ऐंठे रहिय ॥ अअ्आ आ अखबारों के दाम न दीजे । ईईई

है ईश्वर का भी ठट्ठा कीजे ॥ उउऊ ऊ उरदू हिततन मन धन दीजे ॥ ग्यग य यकी सीडी का जप कीजे ॥ यह प्रताप गुरु की पट्टी पढ़ रक्खो भला !!! ॥

## । जगनिठुराई ।

। सखिरी रीति बैरिनि भई ।

प्रीति मान मृजाद की बिधि मूल सों मिटि गई ॥ निरपराधिनि बालि का लघु वयस मृदु लरिकई । ब्याहि, रांड़ बनाइये यह कौन सी सुघड़ई ॥ जन्म भर चिय देह जारत काम बल कठिनई । निब प्रान सताइवे में कहु कहा ठकुरई ॥ स्वार्थ प्रिय पाषाण सो हिय निपट शठ निर्दई । भयो आर्य अनार्य भारत कुमति मन में ठई ॥ होय छिन छिन छीन तन सहि आपदा नित नई । मूढ़ सर्वस खोय निज हित सीख निक न लई ॥ बाल विधवा शाप वश यह भूमि पाप का मई । होत दुःख अपार सजनी देखि जग निठुरई ॥

## । प्रास ।

सावन था उन्नीस सौ सम्वत् और बयालिस १९४२ ज्यादा था । कृष्ण पंचमी ॥ वार सनीचर सांझ तलक का वादा था । वादा पूरा कर के अपना रिश्ते उलफत तोड़ दिया । छोड़ बखेड़ा जहां का सारा दुनिया से मुंह मोड़ लिया ।

चलो सवारी ज्ञान गुरू की चेले भी सब साथ हुये ।
बजा नकारा बेनी जी तक योग करम सब स्वर्थ हुये ।
बड़े धूम से लोग उठाये जय जय करते जाते थे ।
खूब ठाट से चढ़े सिंहासन आप बैठ मुसक्याते थे ।
तारीफ करे कोइ क्या इन की ये औला मौला साहब थे ।
उस खालिक कादिर मुतलक के ये सादिक नादिर नायब थे ।
तीस ३० बर्ष से प्राग राज में आसन आप बिछाये थे ।
गूदर में ज्यों हीरा रहते तैसे आप समाये थे ।
हिर्स हवा को छोड़ दिया था सबकी कफनी डाले थे ।
मस्त रहे अलमस्त सदा से इन के ढङ्ग निराले थे ।
अलग थलक थे दुनिया से नहिं काम किसी से रखते थे ।
जिस रङ्ग में जामा रङ्गा था वह रङ्ग नहीं दिखलाते थे ।
रहे छिपाये अपने को वो "मन लबड़ूरी" बकते थे ।
"खाकी अक्किल छोड़ दिया था दर को आक्किल गाते थे" ।
काम क्रोध अरु लोभ मोह इन बिषयों से वो न्यारे थे ।
नहीं वासना तन मे तनको वली खुदा के प्यारे थे ।
मकसूद मुराद उमेद सबी वो सब को सब कुच देते थे ।
ऋद्धि सिद्धि सब भरी थी उनमें आतम दर्शी ज्ञानी थे ।
वो पूरे रह बर जग के थे नहि रखते अपना सानी थे ।
जिस ज्ञान में उन का नेह लगा वह ज्ञान उन्हें खुश आता था ।
पण्डित आलिम फाज़िल मुल्ला मरम कोई नहि पाता था ।
अपराध छिमा कर सेवक का महादेव की बिनती सुनलीजि ।
जो जो मनसा मेरी है सब उन को पूरी कर दीजे ।

मूल्य अग्रिम ३।=) पीछे देने से ४।=)

। दिनकर प्रकाश ।

यह मासिक पत्र लखनऊ बाबूराम दास बर्मा के प्रवन्ध से मुद्रित होता है— सामयिक बिषयीं की समालोचना इस्मे अपने ढङ्ग पर अच्छी लिखी जाती है— हमारी राय है इस्मे से समाचारावली का कालम निकाल दियो जाय मूल्य अग्रिम १॥)

। कान्यकुब्ज प्रकाश ।

लखनऊ से पं० बलभद्र मिश्र द्वारा प्रकाशित कान्यकुब्जों का हित साधन इस मासिक पत्र का उद्देश्य है हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं हमारे संपादक महाशय अपने उद्योग मे कृतकार्य हों मूल्य अग्रिम बार्षिक १।)

ब्राह्मण—ब्राह्मण—ब्राह्मण—

स्वर्गबासी बाबू श्रीहरिश्चन्द्र के न रहने पर यदिउनके बांके लेख की छटा का स्वाद चीखा चहो तो इस पत्र के अवश्य ग्राहक बनो यह कानपूर से पं० प्रतापनारायण मिश्रद्वारा प्रकाशित होता है मूल्य अग्रिम बार्षिक १।)—

। हिं० प्र० सम्बन्धी नियम ।

---

१ स्कूल के छात्रों को अग्रिम आधे मूल्य १॥≡) पर यह पत्र दिया जायगा ।

२ जो महाशय ५ ग्राहक करा देंगे उन्हे १ कापी मुफ्त दी जायगी ।

३ इस पत्र में जो बिषय क्रमशः की रीति पर कई नम्बरों में छपे हैं या छपेंगे वे बिषय पुस्तकाकार हो अलग छपने वाले हैं-इस बर्ष से जो लोग अग्रिम मूल्य देकर ग्राहक होंगे उनको उन सबकी १ कापी सेंतमे दी जायगी ।

४ इश्तिहार या बिज्ञापन की छपवाई प्रति पंक्ति १ आना ली जायगी ।

५ अपरिचित नये ग्राहकों को सिवा नमूने की कापी के बिना अग्रिम मूल्य के यह पत्र न दिया जायगा ।

## । देश का सुख किस बात पर निर्भर रहै ॥

इस असार संसार में सुख क्या वस्तु है इसका ते करना कदाचित् महा दुर्घट है क्योंकि ते करने वाले बहुधा वे नहीं है जो अपने निज के अनुभव से आप कोठीक २ बता सकें कि संसार मे सुख यही है — तो निश्चय हुआ कि इस्मे मत भेद का होना अपरिहार्य है — दूसरे यह कि ते करने वाले एकही ढंग पर ते नहीं करते । क्योंकि मनुष्य मात्र की ज़िन्दगी एक तरह पर नहीं कटती — एक समय के रहने वालों की ज़िन्दगी एक तरह पर नहीं बीतती न एक समाज मे रहने वालों का जीवन एकही ढंग पर अन्ततक निभ जाता है — विचार कर देखिये तो एक आदमी के खुद खयालात एक तरह पर नहीं चलते — संभव है जिस्को लड़कपन मे वह सुख मानता था उसी को जवानी मे बाल बुद्धि मानने लगता है अथवा लड़कपन और जवानी में जिसे उसने सुख मान रक्खा था उसीको बुढ़ापे मे गदहपचीसी अपरिणाम दर्शिता और मूर्खता मानने लगता है — दो दूर देश वाले एकही बात को अपने २ लिये सुख प्राप्ति का वसीला नहीं मानते — एकही देश के रहने वाले दो समय मे सुख क्या वस्तु है और उस्को कैसे पकड़ रखना चाहिये इस विषय मे अपनी २ राय बदल डालते हैं — एकही तरह की शिक्षा जुदी २ राय वालों पर जुदा २ असर पैदा करती है और उनके मन की कल्पनायें जो एकही बात पर लोग गढ़ लेते हैं चोर जार अनूचान न्याय की भांति कभी एक को दूसरे के साथ जोड़ नहीं खातीं क्योंकि अच्छे रास्ते का अर्थ लोगों ने अपने बुद्धि के अनुसार भिन्न २ रीतें पर समझा है — एक २ आदमियों का अलग २ जैसा यह

खयाली पोलाव पकता है सो तो हुई है अब समूह के समूह का सुख जब आप विचार करने लगें गे तब आप को उसे नियम बद्ध माननाही पड़ेगा क्योंकि समूह या सर्व साधारण के सम्बन्ध मे कोई बात उच्छृंखल होही नहीं सक्ती इस लिये प्रजानुशासन की एक प्रणाली जिस्से एक तरह की प्रजा सुख पारही हैं वह यदि दूसरे तरह की प्रजा पर लगाई जाय तो उनका रोआं २ कष्ट पावेगा एक ढंग पर शासन करने वाला एक राजा जो एक प्रकार की प्रजा पर राज्य कर रहा है दूसरे जगह की प्रजा का शासन करने का भार उस्के हाथ मे दे दिया जाय तो शायद बलवा हो जाने का डर है — एक ढंग पर लिखी हुई किताबें जो एक समय के आदमियोंके मन क्या बरन आत्मा तक को आश्वासन देती थीं दूसरे समय के लोगों को उन्ही पुस्तकों का लेख रूखा नीरस और पुराकालि मलूम होता है-

अंगरेज़ी शिक्षा के ढंग पर गुण दोष विवेचन करने वाले जिन्मे संस्कृत शिक्षा का फल छूतक नहीं गया हिन्दुस्तान के पुराने ऋषियों के तपस्या के फलों को आव देखने से भी बत्तर मानते है और कहते हैं यह महा मुसब तो दिन हो मे। बरंच कितने संस्कृत शिक्षा वाले जो अंगरेज़ी शिक्षा के कारण उत्पन्न बुराइयों को देख २ पीड़ित और चकित हो रहे हैं सोचते हैं कि इस प्रकार की शिक्षा आदमी को जानवर कर डालती है — एक समय मे सुख की चरम सीमा और सभ्यता यह समझी जाती थी कि जितनी दूर आप संसार के पचड़ों से दूर रह सकिये और एक दर्शन क्या बल्कि छहो दर्शन के अनुशीलन के बल से आप प्रपञ्चात्मक संसार की प्रधान कारण उस अजेय माया को लात मार सकिये तो आपने बड़ा काम किया — तरक्की और उन्नति आध्यात्मिक विषयों

ही की बारीकियों का नाम था — ऋषियों के आश्रमों को आप युनिवरसिटी समझिये आध्यात्म शिक्षा को सूक्ष्म से सूक्ष्म कर डालने का जिस्का मुख्य उद्देश्य था — आज कल देखिये तो उन आश्रमो का नाम निशान तक नही है और उस पुरानी समझ के उन्मूलन ही पर लोगों की कमर कसी है — रेल तार स्टीम और बिजली की चमत्कारी शक्तियों के फन्दों से जितनाही आप दुनिया के कीचड़ों मे फसिये और दूसरों को फंसाइये उतनाही तारीफ है आत्मा संबन्धी विषयों को जिली देने को कौन कहे आत्मा खुद ऐसे भारी खड्ढ मे ढकेला गया कि कहीं उस्का गन्ध तक मिलना दुर्घट होता जाता है — यहां तक कि उस्का नाम लेना भी छोटे बुद्धि वालों का लक्षण रक्खा गया है अपने जीवन के लिये कुछ क़ायदा मुक़र्रर करना और अपनी ज़िंदगी मे रहनुमाई के वास्ते सोच विचार कुछ बातों को अच्छा ते करना इस्से बढ़ कर मनुष्य के लिये दूसरी कोई उचित और भारी बात नहीं है—जहां तक अपनी बुद्धि दौड़ सके मनुष्य अपने लिये पूर्ण सुखकी दशा क्या है— इस्को निश्चय कर ले तो फिर क्या बाकी बचा जिस्पर हम बड़ो देर से उलझे हैं वह बात तै हो गई— क्योंकि इसी विषय पर अच्छे, बुरे, छोटे, बड़े, अमीर, गरीब, अंगरेज़ी वाले, संस्कृत वाले, सब का मतलब एकसां है और इसी सुख के तै करने मे वह जंजाल बढ़ा हुआ है वह ज़ोर शोर का तूफान उठरहा है कि आदमी की अकिल काम नहीं करती इस लिये यही सिद्धान्त मन मे बैठता है कि किसी दूसरे को समझा देना कि तुम्हारे लिये यही रस्ता सुख का है अगर असंभव नहीं तो अति दुर्घट है— तो एक २ आदमी के लिये सुख का रास्ता अलग २ क्या है इस प्रश्न की मी-

मांसा छोड़ हम अपने लिये सब से बढ़कर सुख यही मानते हैं कि इस बारे मे कुछ न कहें और एक ऐसे विषय को लें जिस्पर सभों के एक मत होने की बिशेष आशा है ॥

कुछ ऐसा मालूम होता है कि सांसारिक मनुष्यों के लिये हर एक देश मे सुख का एकही सरल मार्ग है चाहे वह देश हिंदुस्तान हो चाहो चीन हो चाहो बिलायत हो चाहो अमरिका हो वे लोग जिनसे देश का अधिक अंश बरन संपूर्ण देश का देश बसा हुआ है उनके लिये सब कहीं सुख वह बस्तु है जो उन की बर्तमान दशा से उन्हें आगे बढ़ावे—अर्थात् आत्मा संबन्धी सुख जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म दार्श-निकों के सिद्धान्तों का सारांश है और मानसिक आल्हाद जो कि तीक्ष्ण से तीक्ष्ण रसों से पूर्ण बि-द्याभ्यास का फल है ये दोनो तो किनारे रहें—देश का अर्थात् उस देश के समग्र जन समूह का आराम तो सदा शारीरिक बातों से संबन्ध रक्खेगा—चैन और आराम और आसायश इन्की ज़रूरत तमाम मुल्क को ऋषियों और फिलासफरों के वक्त मे जैसी थी ज्योंही अब भी है—तो यह नियम कि मुल्क के एक हिस्से को दूसरे हिस्से की मेहनत और रोज़गार की ज़रू-रत है यह सिद्धान्त जैसा अब सच्च और जितना अंगरेज़ी प्रजा पर सुघटित है हम समझते हैं कि महाराज दिलीप रघु और रामचन्द्र की प्रजाओं पर भी उत-नाही सुघटित था क्योंकि यह तो वह दृढ़ नियम है जिस्के बिना देश मे समाज की गठन होही नहीं सक्ती और न एक देश के सब लोग एक साथ रह सक्ते हैं—इस लिये देश मे सुख और आराम बढ़ाने वाली चीजों के माने सदा एक होंगे—भेद केव-ल इतनाही होगा कि किसी समय मे केवल दोचार तरह से आरा-म बढ़ सक्ता होगा तो कालान्तरे

होने से तरह २ के व्यवसाय और रोजगारों के बहुतात से सैकड़ों तरह से आराम और सुख की बढ़ती हो सक्ती है गी—इसलिये भिन्न २ समय के शासन कर्त्ताओं का उद्देश्य यही होना चाहिये कि अपनी प्रजा के सुख को बढ़ाने मे जहां तक हो सके सहाय करें ।

यदि यह संभव हो कि देश के देश को शारीरिक सुख से भी बढ़कर एक ऊंचे दर्जे का सुख पहुंच सक्ता है तो हम उस सुख के पहुंचाने की संभावना केवल उस देश की सुनीति शिक्षा की दशा (Moral condition) पर निर्भर मानेगे—बुरे मुसल्मान बादशाहों का तो कुछ चर्चाही नही है अच्छे बादशाह अक्बर आदि के समय मे भी प्रजा की सुनीति शिक्षा की दशा से कहां तक सुख बढ़ सक्ता है इसके पहचानिहा वाले कम थे इसलिये यद्यपि हिन्दू मुसल्मानों मे मेल मिलाप बढ़ाने को उन्हेंाने बड़ी फिकिर किया पर देश को सुनीति जैसी अपने पहले पाया था वैसी ही छोड़ गये—बिचारिये तो यह उस प्रकारका सुख है जिस्के आगे इन दिनों की सभ्यता के चरम सीमा का सुख जो रेल, तार, आदि के प्रचार से प्राप्त हुआ कुछ हई नहीं—अंगरेज लोग मुक्तकंठ इस बात को स्वीकार करते हैं कि स्वर्ग बासी राजराजेश्वरी के पति प्रिन्स कान्सर्ट ने अपनी प्रजा मे इस सुख के फैलाने में बड़ा प्रयत्न किया—स्त्री और पुरुष दोनों की सुनीति संबन्धी बातों मे कुछ २ भलाई का अदल बदल किया—हम यह नहीं कहते कि आज कल बिलायत के जितने नीतिज्ञ हैं सब इन सिद्धान्तों पर जैसा चाहिये वैसा आरूढ़ हैं किन्तु कोई २ उन्मे से ऐसे भी हैं जो इन सिद्धांतों को अच्छी तरह समझे हैं और उनको अपने चाल चलन मे निबाहते भी हैं—उन्मे से एक ब्राइट साहब भी हैं जिन्के स्पेच का कुछ थोड़ा सा भाग हम यहां पर उद्धृत करते हैं :—

"I believe there is no permanent greatness for a nation unless it is based upon morality. I care not for military glory, but I care for the condition of the people amongst whom I dwell. Crowns, coronets, mitres, military display and the pomp of war are, in my view, all trifles light as air and not worth consideration, unless with these you can have a fair measure of comfort, content and happiness among the great body of the people. Great temples, palaces, baronial castles and stately mansions——they do not make a nation. A nation in every country dwells in a cottage and unless the light of your constitution shines there, unless the beauty of your legislation and the excellence of your states—manship are printed there in the feeling and condition of the people—depend upon it that you have yet to learn truly the duties of Government."

## लालच का घोड़ा

कोई गिना सक्ता है कि लालच के वशीभूत हो मनुष्य क्या क्या नहीं कर डालता! पोथियां की पोथियां लिख जांय पेज के पेज भर जांय यदि कोई उन कर्मों की उन अनर्थों को उन पापों की गणना करने बैठे जो धन या धरती स्त्री या अधिकार पाने के लालच में इस कालके कीड़े मनुष्य से बन पड़ते हैं आंख पसार कर भूगोल के चारों कोनों को देखिये कोई भाग कोई देश कोई जाति ऐसी न पाइयेगा जहां इस शैतानी बला का जल्वा न चमचमा रहा हो सच है अगर हम लोगों में लालच न होता तो देवता और मनुष्य में अन्तर ही क्या रह जाता- और हम को पूरा विश्वास होता है कि हमारे पूर्व पुरुष —— निर्जन बन निवासी मुनि जन —— केवल

इसी के दमन के कारण देवताओं से भी कई सीढ़ी ऊपर चढ़ गये थे उनके समय में लालच एक ऐसा अवगुण था कि जिसमें पाया जाता उसको नराधम कहके पुकारते थे और सज्जनमण्डली की आंखों में वह बड़ा निन्दित और पतित समझा जाता था क्योंकि जितने घोर पातक और कुकर्म प्राय: लालच की प्रेरणा से बन पड़ते हैं उतने और कारणों से नहीं होते लालची के लिये मा बाप भाई बहिन बेटा बेटी मित्र बन्धु गुरु मान प्रतिष्ठा न्याय धर्म आदि तो मानो अलीक है कुछ है ही नहीं अथवा यदि कुछ हैं भी तो उनका महत्व तभी तक है जब तक वे लालच की जाज्वल्यमान महा वेदी की सीमा के बाहर हैं पर घेरे के भीतर पहुंचते ही द्रव्य शाकल्य और यज्ञ पशुओं मे उनकी भी गिनती हो जाती है। इस लालच के होम से कुछ नहीं बच सका — लालचियों का मंत्र ही यह है कि लालच रूपे भगवति चंडि प्रेते प्रचण्ड दुर्दमने सर्वस्वाव प्रीत्यर्थं स्व धा स्वाहा, लालची का जो कुछ है सब लालच ही मे ग्रथित रहता है — लालच ही इसका गुरु है लालच ही पिता साधारण घोड़ों के सवार तो घोड़े की बाग अपने हाथ मे रखते हैं पर जो लालच के घोड़े पर चढ़ते हैं उनकी बाग उलटी घोड़े के काबू मे रहती है — जिधर को घोड़े ने बाग मोड़ी उधरही दौड़ना पड़ा — और यद्यपि प्राय: यह लालच का घोड़ा बहुत से सवारों को ऐसी खाई मे गेर देता है जहां से उन्हें उनके सातपुरखे भी नहीं निकाल सक्ते पर फिर भी तअज्जुब है कि शौकीन लोग उसपर बग़ैर चढ़की किये नहीं रहते —

परन्तु इस कलियुग के काल मे देखने मे आया है कि जिन लोगों ने लालच की परिस्तिश की है वे अक्सर बड़े २ मर्तबों को पहुंचगये हैं — भिखारी से राजे हो गये गदहों से सिविलाइज्ड सिटिज़न् होगये जंगली वहशियों

के सारी दुनियां में शाइस्तगी की नाक बनगये और न जाने क्या २ से क्या २ होगये कहां तक गिनाया जाय——पर जनाब यह गुमान ख़ाब में भी न रखिये कि लोग इन मर्तबों पर लालच के बे लगाम घोड़े पर सवार होके दाख़िल हुए नहीं—यही तो उन्हों ने बड़ी भारी होशयारी की अगर दूसरों की तरह घोड़े की नंगी पीठ पर चढ़ बैठते तो न मालूम किस दोज़ख़ में जहन्नुम रसीदा होते—

लालच कोई ऐसा जानवर नहीं है जिसे बिलकुल छूना भी न चाहिये बरन यह वह बेराकी घोड़ा है कि अगर ज़रूरी साज़ के के साथ सवारी में लाया जाय तो आस्मानी फ़रिश्तों को फ़लक की सैर में क्या लुत्फ़ आता है जो यह तुम को दिखाये—देखो आंख खोल कर यूरप ने लालच के घोड़े को किस तैयारी से सजाया है अक़्लमन्दी की लगाम जिसमें साहस के सूत और सलाह की सूई से मक़्सद के कलाबत्तूं पर जो बढ़िया काम हुआ है अगर देखियेगा हैरत खाके घोड़े के क़दमों को चूमने लगियेगा—फिर घोड़े के सिर पर जो वह विद्या का चमकीला सफ़ेद टीका जगमगा रहा है उसकी तरफ़ ज़रा सावधानी से देखियेगा क्योंकि अगर आंधेरी में आकर मूर्छा खागये तो किसी का ज़िम्मा नहीं—अब ज़रा ख़यालों की सजावट पर निगाह ले जाइये—वाह क्या गुथावट है जिन २ मक़्सदों को पूरा करने के लिये यूरप ने कमर बांधी सब वे सभी हर तरह की जवाहिरात में जड़ कर गुंथ दिये गये हैं आप एक २ को गिना लीजिये देखिये क्या चमक है क्या दमक है क्या सुथरापन क्या आबी की और क्या अव्वल दरजे की कारीगरी है—अब लीजिये ज़ीन कहिया स्वदेशप्रेम की झलझलाती हुई वह मख़मल कि जिसके आगे असली धूप छांह भी नक़ली धूप छांह नज़र आये जिसपर स्वजाति

संग" के सलमा सितारे कुदरती सितारों को हवा खिला रहे—"पग फूं बाबूजी या थ रो साज डो किशो यामें झालर तो को लटके ना? क्या सेठ साहूकारों या राजाओं के चढ़ने का घोड़ा है जो उसपर १० मन सोने का लहंगा लटकता हो — यूरप वालों को ढोली ढाली पोशाक का शौक़ हो नहीं—जीन इस चुस्ती से जमी हुई कि चाहो सवार भले ही गिर पड़े पर वह खिसकने भी न पावे रिकाब हज़ार बार पीढ़ी हुई चाला की को फ़ौलाद की बनाई गई जिसके ऊपर अगर इन्द्र का वज्र भी गिरे तो उलटे उसी के टूक टूक उड़ जायें फिर जो सवार का हाल सुनियेगा तो न मालूम किस हालत को पहुंचिये गा इसका वृत्तान्त कुछ विस्तार से कहना चाहिये।

कोई १००० साल का ज़माना गुज़रा एक षोड़शी वर्षिया नव यौवना जिसे यह वर दान था कि अगर पूरी परवरिश पाती रहे तो हमेशा नौ जवान बनी रहे भारतवर्ष से रूठ कर या डर कर या न मालूम किस कारन से पश्चिम की तरफ़ भाग गयी भारत वर्षियों ने इस पर कुछ परवा न की भागी हुई स्त्री को न ढूंढ़ा न खोजा न और कुछ उसके मिलने का उपाय किया वह तरुणी ईरान तूरान तुर्किस्तान आदि देशों में थोड़े २ दिन काल क्षेप कर योरुप में पहुंची अभी तक तो वह कुमारी थी पर योरुप की हवा लगते ही वहां की आब हवा पर मोहित हो और उससे शादी करली। शादी के दो ही तीन साल बाद सन्तान भी उत्पन्न होने लगी ... पर यह सन्तान कुछ साधारण मनुष्यों की नाईं एक २ या दो २ करके नहीं हुई सैकड़े हजारों एक २ बार में निकल पड़े पर जब यह बढ़ी

तो समाय कहां इसलिये उसकी जननी ने जिस्का नाम हमें अब याद आया (एकता) था अपने कान के मैल से दिव्य शक्ति द्वारा एक अश्वानन असुर पैदा किया जिस्को लालिच लालच करके पुकारने लगे और अपने बड़े बेटे से बोली "ले यह जीन है यह लगाम है ये बूट हैं यह ज़िरह बक्तर है और यह घोड़ा है इस तमाम साज के साथ सवार हो घोड़े की बाग जिस तरफ़ को मोड़ेगा चाहे हज़ारों शैतानों की पलटनें क्यों न सामने आओ घोड़ा रुकने का नहीं और यह भी ले ऐसा कहके एक चश्मा अपने बेटे के हाथ दिया और कहा यह दूरंदेशी की दूर्बीन है इस्के दोनों आईनों को तो दोनों आंखों पर लगाना पर ये रेशमी डोरे जो इस्के बांधने को लगे हैं अपने कानों और पीठ के ऊपर से ले जाकर घोड़े की दुम में बांध देना देख भूलियो नहीं इस रस्सी और दूरबीन के जरिये से तू अपने दुश्मन और मतलब का आगा पीछा सब देख सकेगा और इसी के बल से तीनों लोकों में गति भी प्राप्त करेगा आकाश के अर्थ तू बिमान बनावेगा पाताल के लिये बिबिध नौका तय्यार करेगा यह दूरदर्शिता का यन्त्र असल में मैं भारत बर्ष से चुरा लाई हूं वहां इस पर अनेक ग्रन्थ हैं जिन्में इस्को लगाने की सैकड़ों बिधि लिखी हैं पर अभी तो इसे यों ही इस्तिअमाल कर पीछे से वे सब ग्रंथ भी आप से आप तेरे पास आजायंगे इतना कहके एक चाबुक भी उसे दिया और बतलाया कि जभी घोड़ा चलने में देर करे तभी उस्के चूतड़ में एक लड़ दिया करना, यह चाबुक इसी घोड़े की छोटी बहन हविश के चमड़े का बना हुआ है और इस्का नाम केटोनाइन्टेल हविश

है बाद इस्के एक और हथियार निकाला और बोली इसे बड़ी सावधानी से बरतना यह राइफ़िल है मैं यह इसलिये देती हूं कि जब तू अपनी मातृभूमि से हज़ारों कोस पर दूर २ के बेगाने देशों में जायगा तो वहां जंगली जानवरों से ज़रूर काम पड़ेगा जिन्से इस्की मदद बिना बचना मुशकिल है देख इस हथियार की मुहरी पर क्या लिखा है (गर ज़रूरत बुवद रवा बाशद) इस महा मन्त्र को कंठ करले और कभी मत भूल बस अब जा दुनिया में तेरी कहीं भी शिकस्त न होगी यह मेरा बर दान है परन्तु देख तुझे मेरी क़सम है कहीं जाइयो पर अपनी जननी पकता वे। न भूलियो और पुत्र तू सब से पहले ज़रूर भारत बर्ष में ही जाइयो क्योंकि मेरे यहां आजाने से उस स्वर्ग तुल्य पावन देश में बड़ा दुन्द मच रहा है

… कहूं मैं एक बार उन से रूठ कर चली आई और यहां बिबाह कर लिया नहीं तो उनके न ढूंढ़ने पर भी मैं स्वदेश को लौट जाती पर अब किस मुंह से जाऊं (और आंसू गेर दिये) हाय धिक्कार मेरे स्व भाव पर जिन्हों ने मेरा हज़ारों बरसों तक लालन पालन किया उनको मैं इस निठुराई से छोड़ आऊं पर क्या बश है करम लिखो ना मिटै करो कोई लाखों चतुराई बेटा आज कल वे मेरे प्यारे भारत बासी बड़ी बिपत्ति में पड़े हैं ईरान आदि देशों के म्लेच्छों ने उन्से देश छीन कर उनकी बड़ी दुर्गति की है उनके धर्म पर हाथ डालते हैं मन्दिरों को तोड़ कर उनके स्थानों में मसजिदें उठाते हैं अनेक प्रकार की बिद्या की जो पुस्तकें पाते हैं जला देते हैं पतिब्रताओं के ब्रत भंग करने लगते हैं हाय एक मेरे ही न होने से चित्तौड़

गढ़ में दो बार रानियों ने म- लेच्छों के अनर्थ से बचने के अर्थ अपने शरीरों को दग्ध कर दिया परन्तु धन्य वे स्त्रियां बेटा भारतवर्ष में अभी ऐसी पति व्रता स्त्री हैं जो पति के मुख देखे बिन जल तक ग्रहण नहीं करती ऐसी ही सती स्त्रियों के प्रभाव से अभी त्रैलोक्य भी स्थित है बेटा भारत बासियों का तू शीघ्रही बिपत्ति से उद्धार कर वहां आज कल ऐसा द्वन्द है कि भाई भाई कटे मरते हैं इस राइफिल से तो तू म्लेच्छों को बिजय करना और इस चाबुक के बल से इतर उत्पातियों को परास्त कर सब देश में शान्ति पूर्वक अपना बैभव फैलाना पर देख चाबुक का बर्ताव सोचकर करना भारत वासियों को मेरी याद ज़रूर दिलाना और कहना कि अगर उन्हें कुछ उज़र न हो तो मैं एक बार अपनी प्यारी प्राचीन भूमि में हो आऊं (और आंसू फिर टपका दिये)

इस्पर पुत्र से भी कब रहा जा सक्ता था कंठ भर आया गद्गद होगया चरणों में टोपी रख कहने लगा मैया मैं चाहे जहां जाऊं चाहे लंका छोड़ पलंका और सिंगल द्वीप में भी पहुंच जाऊं पर तेरी यह वात्सल्य मय मूर्ति मेरे हृदय कोटर से पल मात्र को भी न्यारी नहीं होने की और मैया चाहे मैं स्वर्ग को भी जीत लूं फिर भी इस तेरे दिये हुए ज़ीन से न उतरूंगा। अभी देख तो सही कितने अल्प काल में तीनों लोकों की बसुधा लाकर तेरी गोदी में रखता हूं और भारत बासियों के बिषय में जो कुछ तैंने कहा है ठीक उसी तरह करूंगा पुत्र यश मस्तु और अप- नी माता के चरण चूम कर एकता रानी का बीर पुत्र झट अपने सुसज्जित घोड़े पर सवार हो भूलोक के बिजयार्थ प्रस्थित हुआ।

श्रीधर पाठक

# सरस कविता
## (श्रीधर पाठक कृत)

---

## भारत श्री (प्रवासिनी)

जय जय जगमगित जोति भारत भुवि श्री उदोति कोटि चंद मन्द होत जग उजासिनी । निरखत उपजत बिनोद उमगत आनँद पयोद सज्जन गन मन कमोद बन विकासिनी । बिद्याऽमृत मय मयूख पीवत छकि जात भूख उलहत उर ज्ञान रूख सुख प्रकासिनी । करि करि भारत बिहार अद्भुत रँग रूप धारि सम्पदा अधार अब युरूप बासिनी ॥ स्फूर्जित नख कान्त रेख चरन अरुनिमा विशेख झलकनि पलकनि निमेख भानु भासिनी । अंचल चंचलित रङ्ग झलमल झलमलित अङ्ग सुखमा तरलित तरङ्ग चारु हासिनी ॥ मंजुल मनि बन्ध चोन मौक्तिक लर हार लोल लटकत लोलक अमोल काम शासिनी । उन्नत अति उरज ऊप बिलखत लखि त्रिविध भूप रति अवनति कर अनूप रूप रासिनी ॥ नन्दन नन्दन विलास बरसन आनन्दरासि यूरप भय ताप नासि हिय हुलासिनी । भारत सहि चिर बियोग आरत गत राग भोग श्रीधर सुधि भोजि तासु सोग नासिनी ॥ १० ॥

## कजली-(संस्कृत)

अभिनव कुसुम लता रमणीयं चल सखि वृन्दावन कुंजम् ।<br>
पाण्डुर पुष्प रेणु कण मण्डित मत्त मधुप गुंजम् ॥<br>
नव दल ताल तमाल बाल तृण मृदु मृणाल मुंजम् ।<br>
श्रीधर शुककूजित गुण हरि मिलनाशा सुख पुंजम् ॥ १ ॥

हरि हरि आनेतुं नव नीरं चल सखि कालिन्दी तीरम् ।
पिक सारिका समाकुल मंजुल बंजुल बानीरम् ॥
मालतिका लतिका अलिविलोलन शील सुखद समीरम् ।
कृष्ण कृष्ण कल नाम कलन पर श्रीधरैक कीरम् ॥ २ ॥

## तथा-(भाषा)

यमुना तीर कदम की छैयां झूलत राधा नन्द किशोर ।
परसत देह नेह नव सरसत बरसत प्रेम अथोर ॥
झूमत झुकत झटक झोटा लगि भेटत लपटि बहोर ॥
खग मृग छबि अवलोकि किलोलत बोलत दादुर मोर ॥
श्रीधरहूपै क्यों न होय वह सरस कृपा दृग कोर ॥ ३ ॥
हरि संग डारि डारि गल बहियां झूलत बरसाने की नारि ॥
प्रेमा नन्द मगन मतवारी सुधि बुधि सकल बिसारि ॥
बारि आलिङ्ग प्रेम रस भीजत अंचल अलक उघारि ।
टूटे बोल हिडोल उठावत रुकि रुकि अङ्ग संवारि ।
श्रीधर ललित जुगल छबि ऊपर वारत तन मन वारि ॥ ४ ॥

जै जग तारिनि अधम उधारिनि सुर धुनि जै जै श्री गंगे ।
हिम गिर गुहा बिदारि बारि बिस्तारित निज अंगे ।
अधिक अथाह प्रवाह प्रबल जल धवल धार संगे ।
मकर ग्राह अवगाह पवन चल तरल तर तरंगे ।
श्रीधर पाप कलाप शमन कृत शमन मान भंगे ।

## कबित्त (कृष्ण जन्मोत्सव)

ए हो सखि आज यह बजत बधाई कहां नौवत की घोर सुनि परि यत वार वार। क्यों मन फूले से भले वे फिरत गोप करें दधि कांद कीच कुंकुम डार डार। श्रीधर जु सुघर सयानी सब गोप नारि सजत सजावत क्यों खरिकन झार झार

कौन काज गोकुल में इतिक अनन्द आज तोरण पताका क्यों फहरति द्वार द्वार ॥ १ ॥

आज क्यों गोकुलगलीन अलबेली नारि सखी औ सहेली संगहेली करति हैं। गोरस गुलाल लाल मिलि मिलि मलत गाल बोगे सीवाल ग्वाल लाजन धरति हैं। पुलकित अंग अंग गावति हैं संग संग अधिक उमंग रंग रुचि मन भरति है। श्रीधर जु इतिक उछाह अवगाहन के कारन की थाह कछू समुझि न परति हैं

## - मान लीला का पद -

ठाढ़े हरि द्वारि प्यारी छाड़ो यह मान ।
दरसन मिलन चाह चितवन के जाचक क्षुधित समान ॥
राधा नाम रटत व्याकुल ह्वै करत तिहारो ध्यान ।
मानत तुम्हें आपनो सरबस तन मन जीवन प्रान ॥
पहली प्रीति रीति जो राखो सो अपने जिय आन ।
आदर देहु भेंटि भुज श्रीधर हरि अपने प्रिय जान ॥

## प्रेरित

सम्पादक महाशय—

आप के पत्र के गत अङ्क में एक अनोखा प्रश्न देख बड़ा अचरज हुआ — यदि आप केवल अपनी इच्छा ही प्रगट करते कि म्युनिसिपलिटी का दफ्तर हिंदी में होना चाहिये तो कुछ अचरज की बात न थी बहुत होता लोग आप पर स्वार्थ परता का दोष आरोपित करते हम सब लोग समझ लेते कि आप अपना ही पेट भरा चाहते हैं और अपने पत्र की बिक्री बढ़जाने का प्रयत्न कर रहे हैं — परन्तु इस प्रकार के प्रश्न से महाशय आप का कोई खास मतलब हो सो तो नहीं देखते यदि यह कहा जाय कि आप इसका भेद नहीं जानते तो भी आश्चर्य

है कि आपके प्रदीप के प्रकाश से ऐसे २ भेद खुलजाते हैं जिनका वर्णन करना कठिन है और यह ज़रासी बात आपके ध्यान में न आवे- हां! हां! अब जाना कदाचित् इस व्यावहारिक सूत्र का चारितार्थ्य आप इसी स्थान में किया चाहते हैं कि "चिराग तले अंधेरा" क्योंकि आप पण्डित हो सूक्ष्मही पर आपकी दृष्टि रहती है कहां तक शास्त्रार्थ करें केवल आप के प्रश्न का उत्तर देनाही बस है—महाशय इस्का उत्तर तो बहुत कठिन नहीं है पर ताज़ीरात हिंद के चिमटे की दाब से मुंह खुलनाही दुर्घट हो रहा है महाराज अब मैं आप के प्रश्न का उत्तर देता हूं आप सचेत हो सुनिये मैंने तो पहिले ही निवेदन कर दिया कि मुंह नहीं खुलता इसलिये सूत्रही सूत्र कहूंगा आप पण्डित हई हो समझ जाइयेगा और आवश्यक हो तो उस्की वृत्ति भी किसी शिष्य से कहियेगा बन जायगी।

लो सुनिये उर्दू के आगे हिन्दी कुब्जा का क्या रुतबा है कहां भांत २ की तराश खराश बड़े शान गुमान में भरी बीबी उर्दू कहां मस२ में बोदा पन फबकता हुआ मैली भद्दी मैली कुचैली हिन्दी कहां उर्दू एक छोड़ बहत्तर अर्थ गहे कहां हिन्दी एकहू न कहे जिसे हिन्दी एक कौड़ी कहे उसे उर्दू एक घोड़ी बांचे हड्डी नहीं टूटी का तर्जुमा बीबी उर्दू हड्डी तीन टूटी करें फिर आप अपने प्रदीप ही में लिख चुके हैं घी का महसूल ले खरी का लिख दिया सो क्यों भूल गये इन सब धार रवाइयों से हमारे अमलों को क्या कोई फायदा नहीं है! हिन्दी होने से इस तरह के गुल छर्रे कैसे उड़ेंगे न जानिये आपके दिमाग में कहां की सूझकी

पंच रही है कि वकील मुख़्तार अमले पुलिस म्युनिसिपलिटी आदि कम काजी लोगों से सदा रूखेही रहते हो, उर्दू के गुणों से अजान हो भट्टी हिन्दी के पीछे पड़ नाहक खफा होते हो सरकारी तनखाह तो रोज़मर्रे के खर्च को भी पूरी नहीं है और आपकी हिन्दी के सहारे न कभी ऊपर की कोई आमदनी हो सक्ती है तब बतला इये क्योंकर काम चले—न जानिये आप को कैसी भोंडी अकिल है कि आप उन जानवरों के पीछे तो जान दिये डालते हो जो न पीन आने न काफ और जो पढ़े लिखे बड़े मुंशी कहाते हैं उन की ज़रा भी कदर आप के जीमे नहीं समाती।

हिन्दी के होने से सब से बड़ी हानि यह है कि म्युनिसिपलटी का सब भेद खुल जायगा आमदनी घट जायगी आनरेरी में जिम टेटी उठ जायगी म्युनिसिपलटी के कायदे हिन्दी में हुये तो सब जंगली जागवर बनिया बक्काल तेली तमोली आदि चट्ट जान जांयगे कि कहां कूरा फेकना चाहिये दिशा बाधा की निवृत्ति के लिये कहां जाना चाहिये तब जमादार साहब का रोब क्योंकर कायम रह सकेगा हिन्दी में दफ्तर होगया तब फिर क्या— अपनी कलम अपना हाथ ज़रा ज़रा सी बातों में दरखास्तों के ढेर लगेंगे और कितना काम बढ़ जायगा—अभी तो उर्दू की बेदलगी है बिना चार आने पैसे गांठ से खोले दरख़ास्त नहीं लिखी जा सक्ती फारसीखां की भरपूर क़दर है हिन्दी होने से उन बेचारों की मिट्टी खराब हो जायगी— इत्यादि अनेक आपत्ति हिन्दी होने में जान पड़ती है इससे महाराज कृपा कीजिये क्यों एक नई दुनिया रच नया साका चलाया चाहते हो।

एक सुर्वजन हितैषी।

## ।कापी राइट बिल।

इस्में सन्देह नहीं यह कापी राइट बिल लिटन राज्य का अमिट धव्वा प्रेस ऐक्ट की छोटी बहन पैदा होने वाली है इस्के जन्म दाता ऐंगलो इंडियन प्रेस हैं और उन्ही लोगों का आपस की लाग डांट हम सब नेटिव प्रेस के माथे बिसायंगी——उन्हीं ऐंग लोइंडियन प्रेस की खातिरदारी के प्रयोजन से हम सब हिन्दुस्तानी पत्रों को लंगड़ा कर छोड़ने में श्रीमान् लार्ड डफरिन साहब ने कौन सा न्याय सोचा है देश भाषा के पत्र पढ़ने वाले सर्वथा उस दरजे के लोगों से भिन्न हैं जो अंगरेज़ी पत्रों के पढ़ने वाले हैं माना कि ये तार की खबरों को २४ घंटे के भीतर छाप देंगे तो इस्मे अंगरेज़ी पत्रों की कौन सी हानि है उनकी ग्राहक श्रेणी किसी तरह कम नहीं हो सक्ती क्योंकि हमारे देश भाषा के रसिकों को अंगरेज़ी से तो कोई सरोकारही नहीं है —— बिशेषकर हम हिन्दी पत्र वालों को यह बिल सच २ काल रूप हो कितनो को निगल बैठेगी न हिन्दी के अभी ऐसे दिन आये हैं कि कोई अच्छा दैनिक पत्र इस्में प्रकाशित किया जाय और न आगे को जल्दी होने की संभावना है —— दूसरे इस बिल का वसूल है कि जिन लोगों ने रोज़गार के ढंग पर बहुत सा रुपया खर्च कर रूटर आदि के द्वारा नये माल की भांत टटकी खबरें नित्य मंगाते हैं उन्हें २४ घंटे के भीतर दूसरा कोई छाप देगा तो उनको उस रोज़गार में घाटा सहना पड़ेगा सो भी यहां नहीं है हम लोग तो लाभ की कौन कहे अपनी निज की हानि सहकर पत्रों को किसी तरह पर चला रहे हैं और किसी तरह पर

कुटिल भाव न रख जी से यही चाहते हैं कि इस्के द्वारा प्रजा और सरकार दोनों का हित साधन करें तब सरकार कृपा कर देशी पर्चों को इस बिल के पंजे में न छोड़े यह बिल कानून की जाय तो इस्का असर केवल अंगरेज़ी पर्चों ही पर रहे

## । बुद्धिमानो का अनुभव ।

जानना वही जिस जानकारी से ईश्वर जाना जाय या जिस्के जानने से फिर कुछ जानना बाकी न रहे।

जाना वही कि फिर न आना हो।

दान वही जो साथ सन्मान के हो।

प्रीति वही जो साथ प्रतीति के हो।

नीति वही जिस्में अनीति की गन्ध भी न हो।

जीत वही जिस्से मन जीता जाय।

नाम — रामनाम — धाम परन्धाम — काम — अपना काम — दाम — गांठ का दाम। वे काम का काम — देश की भलाई वाला काम बुरी बला ईश्वर न करे कोई इस बला में फसे दीन और दुनिया दोनों से दूर गुज़रे।

बल — बाहुबल — जल — वर्षा का जल — फल — उद्योग का फल — मल — खट मल अथवा मोटे. मल।

बिसवा बन्दर अगिन जल कुटनी कटक कलार ये दस होहिं न आपने सूजी सुआ सुनार।

सदा न फूले तोरई सदा न सावन होय। सदा न जोबन थिर रहै सदा न जीवै कोय।

लुकमान हकीम से किसी ने पूछा भाई अच्छा या दोस्त? लुकमान ने जबाब दिया भाई तभी अच्छा कि दोस्त हो।

## लोकोक्ति

खाना शिराकत रहना फराकत।

तांबा देखे चेतना मुंह देखे ब्योहार।
रूप रोवे भाग खाय।
ढीले रिजकहाने मौत।
न रम्य माहार्य मपेक्ष ते गुणं।
जिस्का खाइये उस्का गाइये।
ज्यों तेली के बैल को घरही कोस पचास।
सांझ के मुरदे को कब तक रोइये।
किये न जाय कहे जाय।
एकै घर में दो मता कलियुग का ब्योहार। खसम चले हैं द्वारिका मेहरी शाह मदार।
क्या मोदी की चाकरी क्या बालू की भीत। क्या बादल की छांहरी क्या ओछे की प्रीत।
घुमची अपने रंग बावरी।
बारह बर्ष को बेद क्या।
मा भठियारी पूत फतेह खां।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।
जिस पतली में खाय उसी में छेद करै।
मार के पीछे सवांर।
फूटी सहैं आंची न सहै।
कालकालीपा गया भुगय आज कालीपा देखी आय।
पांडे जी पछतांयगे वही चने की खांयगे।
पांडे की पड़ाइन खोटी एक चना की सोलह रोटी।
नौसौ चूहे खाय बिल्ली हज्ज को चली।
मन की मन ही रही।
राम राम जपना पराया माल अपना।
सिर का मुड़ाना ओलों का पड़ना।
मरे चले सजे सूक।
नरकों में ठेलिं ठेला।

---

दुर्लक्ष्य चिन्हा महतांहि वृत्तिः।
मुह्यन्ते ऽहि कृत्येषु संभ्रम ध्वनितं मनः।
सद्वाप कृष्टे महतां नसङ्गतं भवन्ति गोमायुसखान दन्तिनः।
गुण जैनोच्छाय बिरुद्ध बुद्धयः प्रकृत्य मित्राहि सतां मसाधवः।
अयात पूर्वा परिवाद गोचरं सतांहि वाणी गुण मेव भाषते।
सुदुर्लभा सर्व मनो रमा गिरः।

सुदुर्ग्रहान्त: करणाहि साधव: ।
संवृणोति खलु दोष मज्ञता ।
नतथा कृतवेदिनां करिष्य न्प्रिय
ता मेतियथा कृतावदान: ।
परम लाभ मरातिं भंग माहु: ।
बिमलं कलुषी भवच्च चेत: कथय
त्येव हितैषिणं रिपुम्बा ।
अगिरा ते पिन्थोहि बलाहप्रल्ह्वा
दते मन: ।
सुलभारम्यता लोके दुर्लभंहि गुणा
र्जनम् ।
असन्मैचोहि दोषाय कूलच्छ येव
सेवित ।
श.त्त वैकल्यनम्रस्य नि:सारत्वा
ल्लघीयस: । जन्मिनो मान हीन
स्य तृणास्यच समागति: ।
नहि प्रियं प्रवक्तु मिच्छान्ति मृषा
हितैषिण: ।
हितं मनो हारिच दुर्लभं वच: ।
समुन्नयन्भूति मनार्य संगमा द्वरं
बिरोधो पिस मं महात्मभि: ।
लघयन्खलु तेजसा जगन्न महा निच्छ
ति भूति मन्यत: ।
अभि भूति भया दसूनत: सुख
मुज्झन्ति न धाम मानिन: ।
प्रकृति: खलुसा महीयस: सहते
नान्य समुन्नतिं यत. ।
असाधुयोगाहि जयान्तार.य:
प्रमाथिनीनां विपदां पदानि ।
प्रकर्षतंत्राहि रणे जय श्रो: ।
गुणा: षियत्वे थिकृता नसंस्त व: ।
नहीङ्गितज्ञो ऽवसरे ऽवसीदति ।
यह सब उक्ति अर्थान्तर न्यास
महा कवि भारवि के हैं —— दूसरे
अंक में आहर्ष माघ और कालिदास
के लिखें गे ।

## राम लीला और
## । मुहर्रम ।

इन दो बिपक्ष दलवालों के
मेलों का इन्तिजाम यहां जहां
तक सुनने में आया उस्से मुस-
ल्मान असन्तुष्ट से जान पड़ते हैं
हम अपने सुयोग्य मेजिसटरेट
साहब को सूचित करते हैं कि

अपने मेजिसटरेटी के अधिकार को इस मौके पर भरपूर काम में लावें और किसी की गीदड़ भभकी मे न आय जैसा उचित और न्याय हो वैसा ही कार रवाई कर ने में सदा सन्नद्ध रहें — हमारा यह मतलब किसी तरह पर नहीं है कि हिंदुओं का पक्ष ले बिरुद्ध दल वालों की किसी बात मे हक तलफी की जाय किंतु इस बात का अवश्य ख्याल रहे कि यह भी और व्याघ्र का मुकाबिला है कहीं ऐसा न हो कि गो सरकारी शक्ति ग़ाम के भरोसे खड़ी २ पागुर करती रहजाय और व्याघ्र आकर उस्को आक्रमण करले ।

## । भारतोदय ।

इस पत्र का उदय कानपुर शुभ चिन्तक प्रेस से बाबू सीताराम के द्वारा प्रति दिन होता है हिंदी मे अब तक दैनिक पत्र कोई न था यह पहिला है यदि चल निकले मूल्य वार्षिक मे डाक व्यय ७) ॥

## सदाचार मार्तण्ड

यह मासिक पत्र जैपुर से उदित हुआ है उस्की दो संख्या हमारे पास आई हैं पृथ्वी पर के यावत् धर्मों से हिंदू धर्म्म की उत्कृष्टता प्रगट कर देखाना इस्का उद्देश्य है पं० बालचन्द्र शास्त्री द्वारा प्रकाशित और मुद्रित होता है ।

## पावस प्रमोद

बाबू — नांनक चन्द मुखा नन्द शाद कानू गो सदर तहसीली मथुरा कृत संग्रहीत — यह पावस सम्बन्धी दोहा कवित्त सबैया बरवा लावनी गज़ल आदि का संग्रह ग्रन्थ है — कोई २ संग्रह इसमें के उत्तम भी हैं परन्तु इससे भाषा की क्या उन्नति है सच तो यों है कि नज़्म अर्थात् कविता की हमारी भाषा में किसी तरह कभी नहीं और न आधुनिक कविता प्राचीन कविता से उत्कृष्ट हो सक्ती है — भाषा की उन्नति अंगरेज़ी की भांत गद्य लेख के द्वारा अलब

ना संभव है सो वैसे न लिखने वाले देश मे अब तक हुए न उनके लेख को बड़े चाव से पढ़ने ही वाले हैं —— हां कैसे हमारे देश के उत्कृष्ट शिक्षा पाये लोगों को बंग देश के समान इस ओर रुचिही न ठहरी मध्यम शिक्षा वालों की जहां तक बुद्धि और जैसा उनका पठन पाठन हुआ है उतना करते हैं उत्कृष्ट शिक्षा जब लिखने वालों ही मे नहीं है तब उनके लेख में वे उत्कृष्ट विषय क्यों कर आसक्ते हैं और सबों को छोड़ हम पहले अपने एडिटरों ही को लेते हैं बतलाइये किसी भाषा या विषय के पूर्ण विद्वान् आप के यहां के जन हैं! कुसूर माफ इन एडिटरों का पोलापन प्रगट करने में सिवा सब से बुराई प्राप्त करने के लाभ क्या है — पत्र चला कर नया थाका झाड़ने का होसिला बहुतों को है पर अपनी योग्यता पर किसी की दृष्टि नहीं जाती और पत्र न चलने पर शिकायत अलबत्ता किया करते हैं उन से पूछना चाहिये साहब आप के पत्र में पढ़ने लायक कोई बात भी रहती है क्या समझ उसे कोई खरीदे मसल है आंख पत्र नहीं कजरउटा नौ २ पढ़ने वाले एक नहीं पत्र प्रति वर्ष दो चार निकल बरसाती जुगनू की भांति थोड़े दिन चमक बिलाय गये— समलोचना का काम भी बड़ाही टेढ़ा आन पड़ता है अपनी ठीक २ सम्मति लिखो तो लोग नाराज होते हैं चुनी चुना बन नहीं पड़ती है कुम्हार की अम्मी हरवाई तू हमसे क्यों कर दूर हो खैर सून सरसि मरवा हो बेलकी भला ऐसी पुस्तकों और पत्रों से भी कुछ तो हिंदी को लाभ हुई है — मूल्य इस पुस्तक का (।=) है

## ।सटीकसुश्रुतसंहिता।

।जो अब तक प्रकाशित नहीं हुई।

आयुर्वेद की चरकसंहिता के

अनुवाद और चिकित्सा सम्मिलनी सम्पादक प्रसिद्ध कविराज श्रीयुत बाबू अविनाशचन्द्र कविरत्न और कविराज चन्द्रकुमार कविभूषण कर्तृक संशोधित और प्रकाशित।

यह सब कोई जानते हैं कि आयुर्वेद के चिकित्साशास्त्र में चरक और सुश्रुत ये दोनों सब से प्रधान ग्रन्थ हैं। अस्त्र चिकित्सा, शरीर तत्त्व और स्वास्थ्य विज्ञान प्रभृति साधारण के जानने के निय म सुश्रुत ग्रन्थ में जिस प्रकार उत्तमता से वर्णन किये हैं इस से क्या डाक्टर क्या वैद्य और गृहस्थ सब को यह खरीद के अवश्य पढ़ना चाहिये। सुश्रुत ग्रन्थ डल्लनाचार्य कृत निबन्ध संग्रह नाम टीका और मूल संस्कृतभाषा में देवनागरी अक्षर और उत्तम कागज में फी महीना ४ फार्म अर्थात् ३२ पृष्ठ में प्रकाशित होना शुरू हुआ है। १ली और २ री ३ री संख्या प्रकाशित हो चुकी है इस का अग्रिम मूल्य में डाक महसूल समेत ३।=) अगाऊ लिया जायगा।

"कागज और छापा उत्तम है और टीका भी बम्बई और काशी आदि कई स्थानों से मङ्गवा और उनको मिला के बहुत शोध के छापी गई है। इस के छपवाने में ढाकी के जमीन्दार राय सुरेन्द्रनाथ चौधरी नें धन से सहायता की है। वास्तव में यदि जमीन्दार और राजा महाराज ऐसी २ बातों में सहायता करने लगें तो संस्कृत के अपूर्व ग्रन्थ कि जो हिन्दू लोगों के आलस और बेपरवाही से नष्ट होते चले जाते हैं उनका उद्धार हो जावे।" भारतमित्र।

---

अग्रिम मूल्य ३।=)
पीछे देने से ४।=)॥

। हिं॰ द॰ सम्बन्धी नियम ।

---

१ स्कूल के छात्रों को अग्रिम आधे मूल्य (॥=) पर यह पत्र दिया जायगा ।

२ जो महाशय ५ ग्राहक करा देंगे उन्हें १ कापी मुफ्त दी जायगी ।

३ इस पत्र में जो विषय क्रमशः की रीति पर कई नम्बरों में छपे हैं या छपेंगे वे विषय पुस्तकाकार हो अलग छपने वाले हैं-इस वर्ष के जो लोग अग्रिम मूल्य देकर ग्राहक होंगे उनको उन पुस्तकों की १ कापी सेंतमें दी जायगी ।

४ इश्तिहार या विज्ञापन की छपवाई प्रति पंक्ति १ आना ली जायगी ।

५ अपरिचित नये ग्राहकों को लिया नमूने की कापी के बिना अग्रिम मूल्य के यह पत्र न दिया जायगा ।

# हिन्दीप्रदीप।

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

---

हर महीने की पहिली को छपता है।

---

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरे ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

---

१ नवम्बर सन् १८८५ } { जिल्द ९ संख्या ३

---

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ८
संख्या ३

नवम्बर १८८५

# हिन्दी की अपूर्णता

सोच की बात है कि हिन्दी अभी तक उस बिलक्षण सुन्दरता अभिरामता के सुख दर्शन से नितान्त वंचित है जो कि निज देश के अथवा बिदेशीय पुरुष रत्नों की जीवित अवस्था का यथार्थ चित्र उतारने से किसी भाषा को प्राप्त होता है वह गांभीर्य वह गौरव वह उज्वलता वह निकाई जो उक्त प्रकार के आभूषणों से भाषा को मिलती है शोक है कि हमारी प्यारी हिन्दी को अब तक न दी गई- सच पूछिये तो हिन्दी के पक्षपातियों की योग्यता मे यह एक बड़ा लांछन है कि जिस अवस्था मे वे सर्वतोभावेन इस पर अपनी ममता स्थापन कर इसे इतना लाड़ लड़ाते हैं उस्को उन आवश्यकताओं को नहीं देखते जिनके बिना उस्का सम्पूर्ण धारी रही शोभा शून्य हो रहा है— शृंगार रसप्रधान काव्य किस्से कहानियां चुटकुले इत्यादि से तो हिन्दी सदा से पूर्ण रही चली आई फिर शृंगार रस से तो यह इतनी लदी हुई है कि अब ऐसी कबिता और लेख से घिन उपजती है पर फिर भी जो कोई अपनी योग्यता प्रगट किया चाहते हैं तो उसी वंशी वाले और बरसाने वाली का आश्रय ढूंढते हैं जिस क्षेत्र को सूर तुलसी आदि

कबिबरों ने बड़े परिश्रम और सुघराई से जोत बो और सींच कर एक बार उत्तम २ फल फूलों से खचा खच परिपूर्ण कर दिया है उसी खेत मे आज कल के हिन्दी लेखक बड़े अभिमान के साथ अपनी घिसी हुई बुद्धि के कुण्ठित यंत्र को लगाते तनिक नहीं संकुचाते — समझमेंही नहीं आता कि इस मार्ग का अव लम्बनकर हिन्दी को वे सुमेर के किस शिखर पर चढ़ादेंगे— जिस अंग पर दुहरे तिहरे आभरण लदे हैं उस अंग पर उसी प्रकार के और आभरण लाद देने से शोभा को बिगाड़ देने के अति रिक्त क्या अधिकाई बढ़ा दीजियेगा जहां पीड़ा है वहीं औषधि लगानी चाहिये—जब प्यास लगी हुई है तो भोजन से शान्ति नहीं हो सक्ती—गर्मी के दिनों मे शाल दुशाले लाद लेने से कभी सुख और आराम नहीं पहुंच सक्ता—हमारी हिन्दी प्राचीन रीति के शृंगार की कबिता की भूखी नहीं है बरन इस नबीन काल में नबीन रीति के बिबिध गद्य रूपी अमृत की प्यासी है— एक तो यही हमारा बड़ा असौभाग्य है कि देश का अधिक अंश अश्लील शृंगार पूर्ण उर्दू की शायरी पर लट्टू है। जन-खा बन बैठा माशूक के रुखसारे और कमर की मुशाबेहत छोड़ दूसरा कोई बिषय हमारे लेखकों के चित्त मे स्थानही नहीं पाता उस पर हिन्दी में भी उन्हीं सब दोषों के संचार की जड़ न काटी गई तो सब सत्यानाश मिलजाने मे क्या कसर बाकी रही— हम हिन्दी काव्यों के बिरुद्ध नहीं है पर शृंगार रस इस भाषा में बहुतात से है अन्य रसों की अल्पता बहुत कमी है काशी के भूषण स्वरूप बाबूहरिश्चन्द्र सरीखे दो एक पुरुष रत्नों ने इस कसर को अपने भरसक मिटाया भी था पर बिद्यमान हिन्दी लेखकों मे अब क्या कोई ऐसे नहीं हैं जो

इस असर को पूरी करें यदि हैं तो इससे अधिक लज्जा का विषय उनके लिये और क्या होगा कि सामर्थ होने पर भी उस सामर्थ्य को ठीक स्थान मे नहीं लगाते अब पद्य रचना को अलग रख गद्य की समालोचना भी करनी उचित है—याद रहे कि किसी भाषा की पुष्टता जिस्पर देश का सच्चा अभ्युत्यान निर्भर है अधिक तर गद्यही के द्वारा संभव है क्योंकि जितनी स्वतंत्रता के साथ गद्य में किसी बिषय का बिशेष व्युत्पादन हो सक्ता है पद्य मे किसी तरह पर नहीं— जिस सरलता के साथ गद्य सर्व साधारण की समझ मे आ सक्ता है उतना पद्य नहीं इसलिये पद्य की आपेक्षा गद्य से कार्य साधन की आशा कहीं अधिक है— बालकों की तोतरी बोली से लेकर वृद्ध की अन्तिम अवस्था तक मनुष्य मात्र के काम मे यही आता है कैसा कोई आशुकवि क्यों न हो घड़ी दो घड़ी से अधिक अपनी साधारण बात चीत पद्य मे वह भी न कर सके गा—तब क्या आश्चर्य नहीं है कि गद्य की ओर हिन्दी वालों की इतनी कम झुकावट है कि अब तक हमारी भाषा मे आदर देने के योग्य गद्य के उतने ग्रन्थ भी नहीं हैं कि हम उन्हें उंगलियों पर गिन सकें—हिन्दी मे ऐसा कोई इतिहास नहीं जिसे इतिहास कह सकें— ऐसे कोई वैज्ञानिक बिषयक ग्रन्थ नहीं किससे हम अपनी भाषा मे बिज्ञान के अभिमानी बने— ऐसे उपन्यास नहीं जिनकी हम यूरोप के नोवेलों से तुलना करें—दार्शनिक बिषयों पर ऐसे अनोखे लेख नहीं जिन्से हम अपने को दर्शन के पारंगत कहें— कोई भी तो ऐसे ग्रन्थ नहीं जिनसे हिन्दी को हम माननीय भषा कहने मे कभी न संकुचांय— योरुप की भषा मे देखिये इति-

हास—भूगोल—खगोल—भौतिक बिद्या—पदार्थ विद्या—बिज्ञान—दर्शन — नाटक — उपन्यास — समुद्र यात्रा — देशयात्रा डयरी — जीवन चरित्र — इत्यादि इत्यादि अनेक और अनन्त रूपों से गद्य का मान और सत्कार बढ़ा रहे हैं — हमारी हिन्दी मे यातो नाटक हई नहीं है भी तो उन्हें उत्तम कहने मे हमारे मन को बहुत कुछ आगा पीछा होता है — दो एक इधर उधर से जे.ड़े टूटे फूटे उपन्यास अथवा किस्से कहानियों की किताबें — थोड़े से शिक्षा सं'बन्धी थोड़े से धर्म सम्बन्धो इतिहास सम्बन्धो ग्रन्थ अलबत्ता मिलें गे और अब लोगों ने आगे को भाड़ों के याद रखने लायक नापित स्तोत्र रेलवे स्तोत्र आदि स्तोत्रों का तार जमा दिया है — बस यही हिन्दी भाषा के भांडार का वैभव यही गौरव और यही सर्वस्व है — हमे हिन्दी की इस दीन दशा पर कुछ हर्ष या बिषाद न होता अगर हम देखते हिन्दी पर ममता रखने वालों मे इसकी वृद्धि करने की योग्यता न हो तो परन्तु बे योग्य पुरुष कौन है देश के किस कोने मे बसते हैं इसके लिये बहुत दूर जाने की कुछ आवश्यकता नहो है हर साल कालेजों से इतने ग्रेज्युएट तैयार होकर निकलते हैं क्या उन्में से दो चार भी ऐसी योग्यता नही रखते कि हिन्दी के गद्य को वह सहायता पहुचावें जिसकी वह इतनी भूखी हो रही है — ये लोग हर तरह की विद्या और हर तरह के बिज्ञान के पारङ्गत होते है और भाषा को पुष्टता पहुंचाने वाला इस समय का जैसा कुछ क्रम है, उससे भी भर पूर जानकार हैं यदि ये चाहते तो अवश्य उस कमी को पूरी कर देते जिसके लिये हम इतनी देर से कह रहे हैं — बंग भाषा जो इन दिनों उन्नति के शिखर

पर चढ़ रहा है सो क्या बिना इन ऊंचे दरजे की शिक्षा पाये हुओं की सहायता ही के ! आज दिन जो उसमें साप्ताहिक तथा मासिक उत्तम से उत्तम पत्र निकलते हैं या उत्तम से उत्तम नाटक उपन्यास या दूसरे विषय के ग्रन्थ रचे गये हैं वे सब ऐसेही लोगों की उच्च शिक्षा का फल है यं – ईश्वर चन्द्र विद्या सागर माइकेल मधुसूदन बंकिं चन्द्र प्रभृति किस श्रेणी के लोग हैं ! हमारे हिन्दी रसिकों की भांत वे भी ज़रासा गूं गां कर पण्डितंमन्य बन वंशीवट बिहारी बृषभानुलली तथा जनक दुलारी के अश्लील शृंगारके मर्मज्ञ होते तो कभी संभव था कि वंग भाषा यूरोप की भाषाओं के साथ होड़ और हिस्का करने का साहस बांध सक्ती – उच्च शिक्षा वाले बंग देश के बिद्वान् अंगरेज़ी मे कोई आर्टिकिल या उत्तम लेख लिखने मे अपनी कुछ तारीफ नहीं समझते जैसा अपनी निज भाषा मे – येही लोग वैसे उत्तम लेख लिखते हैं और वेही उन पुस्तकों की क़दर कर खरीदते भी हैं जिसमे लिखने वाले का उत्साह बढ़े – हमारे देश के लोगों के समान सङ्कीर्ण हृदय स्वार्थ लौलीन और बद्ध मुष्टि वे भी होते तो कभी वंग भाषा इस दशा को न पहुंचती – हम पुरुष रत्न के जीवन चरित्र का चर्चा ऊपर कर चुके हैं उत्तम होता यदि हमारे लेखकों मे कोई उस अमूल्य रत्न हरिश्चन्द्र के जीवन बृत्तान्त के लिखने का साहस बांधते – हमारा प्रयोजन चन्द्रास्त या उनकी गोलोक यात्रा का सा प्रस्ताव से नहीं है किन्तु हरिश्चन्द्र क्या थे क्या उनमें गुण दोष थे सब ठीक २ और सच्चा २ हाल रहे !

श्रीधर पाठक

# मुहाविरे

कोड़ी — गाढ़ी मेहनत की —

घोड़ो — हिमायत को —

पगड़ी — फजीलत की —

रोटी — दान्त काटी —

बेटी — व्याही बरी —

नकल — परवाने की —

साथ — चोली दामन का —

बल — नाक मुंह का —

सौदा — पट जाने का —

शरीक — घुएं का —

मेला — मिलने का —

परोस — दर्द शरीकी का —

दोस्ती — रिफाकत की —

महाजनी — साख की —

डिगना — नीयत का —

काटना — काल का —

तवंगरी — जी की —

बुजुरगी — अकिल की —

चलना — नाम का — पेट का —

लगना — आंख का —

जमना — तबीयत का —

मोड़ना — मुंह का —

चढ़ना — निगाह पर का —

मारना — भांजी का —

आब — मोती की —

चश्म — तोते की —

खाना — गम का —

कूटना — हाथ का —

लेना — नाम भगवान का —

देना — उधार का —

स्याही — दिल की —

कालिमा — कलङ्क की। अयश की

पलटना — किस्मत का —

फूटना — भाग का —

मोटना — पेट का —

फिरना — काल चक्र का —

किरना — दांत का —

वृत्ति — आकाशी —

चरखा — रांडों का —

हाकिमी — गरम की —

बनियई — नरम की —

आढ़त — धरम की —

खेती — करम की —

रोशनी — नई तालीम की —
ठिरं — मुसल्मानों की —
फूट — हिंदुओं की —
प्रताप — अङ्गरेज़ों का —

## लोकोक्ति

माल छूटे साथ न छूटे।
नयना वही सराहिये जिन नयनन में लाज। बड़े भये अरु विष भरे आवें कौने काज॥
नादान बात करे दाना कयास करे।
ओस के चाटे प्यास नहीं बुझती।
दाता की नाव पहाड़ चढ़े।
दाता दे भण्डारी का पेट फटे।
थकके पहाड़ फेड़े घर की सिल।
राख पत्त। रखाव पत्त।
जब तक जीना तब तक सीना।
सौ सोनार की एक लोहार की।
गुज़र गई गुज़रान क्या झोंपड़ी क्या मैदान।
ऊधो बन आये की बात।
ढाक के तीन पात।
आशिकी और खाला जी का घर।
नाच न आवे आंगन टेढ़।
क्या नंगी नहाय क्या निचोड़े।
कलियुग का व्योहार मारे भाई जिलावे यार।
आम के आम गुठली के दाम।
जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ।
जिस्की लाठी उस्की भैंस।
जिस्की देग उसी की डेग।
जुलहे धुनिये टोपी बाट। गये बजाजी बारह बाट।
जूठा खाय मीठे की लालच।
जाहिबिधातादाहिनेसबदाहिनेताहि।
जान न पहिचान बड़ी बी सलाम।
मान न मान मैं तेरा मेहमान।
सुनिये सब की कहिये किसी की नहीं
जाति पांति पूंछै नहिं कोय हरि को भजै सो हरि का होय।
जाकोजौन सुभावजाय नहिजोसे।
बाह्मनकूकर नाऊजातिदेखगुर्राऊ।
जग में जीवतही को नाता।
जहांराजरजेरहांभीखक्यामांगना।
जहां आसा तहां बासा।
चोर चोर मौसिआवरा भाई।

चोर के घर छिछोर ।

घड़ी में घर जले अढ़ाई घरी भद्रा ।

: त्यजन्त्यसूञ्शर्म च मानिनो वरं त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम् ।

कुभोगमाप्नोति न भाग्यभाग्जनः ।

हृदि गभीरे हृदि चावगाढ़े कुर्वन्ति कार्याणि वतर हि सन्तः ।

पित्तेन दूने रसने सितापि तिक्तायते ।

पिपासुता शान्तिमुपैति वारिजा न जातु दुग्धान्मधुनोऽधिकादपि ।

अपां हि तृप्ताय न वारिधारा स्वादुः सुगन्धिः स्वदते तुषारा ।

गुरूपदेशं प्रतिभेव तीक्ष्णा प्रतीक्षते जातु न कालमार्तिः ।

कर्मकः स्वकृतमत्र न भुङ्क्ते ।

यावदर्हं करणं किल साधोः प्रत्यवायधुतये न गुणाय ।

आकरः स्वपरभूरि कथानां प्रायशो हि सुहृदः सहवासः ।

तं धिगस्तु कलयन्नपि वाञ्छामर्थिवागवसरं सहते यः ।

आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।

दुर्जया हि विषया विदुषापि ।

भिन्नस्पृहाणामपि चार्थमर्थे द्विष्टत्वमिष्टत्वमपथ्यवस्थम् ।

वरं गुणोऽल्पे वैफल्यमसह्यशल्यं गुणाधिके वस्तुनि मौनिता चेत् ।

द्विषन्मुखेऽपि स्वदते स्तुतिर्या यन्मिष्टता नेष्टमुखे प्रमेया ।

विवेकधारा शतधौतमन्तः सतां न कामः कलुषं करोति ।

नामापि जागर्ति हि यत्र यत्रावसानस्तं कलमः सहन्ते ।

अकाञ्चनेऽकिंचन नायिकाङ्गे किमारकूटा भगिनी न नम्रिः ।

मृणालतन्तुच्छिदुरा सतीस्थितिर्लवादपि त्रुट्यति चापलात्किल ।

घनाम्बुना राजपथे हि पिच्छिले क्वचिद्बुधैरप्यपथेन गम्यते ।

न्यायमुपेक्षते हि कः ।

चकास्ति योग्येन हि योग्यसङ्गमः ।

सुरप्रतीक्षित विभावनमेव वाचः ।

देवा हि नान्यद्वितरन्ति किन्तु प्रसद्य ते साधुधियं ददन्ते ।

तत्कर्म पुरुषः कुर्याद्येनान्ते सुखमेधते ।

यह सब उक्ति कविकुल तिलक श्रीहर्ष की हैं ।

## थोथे प्रयत्न ।

हमारे कलिवचन सुधा सम्पादक जो झूठी २ तारीफों से मेडराज महाशय को सदेह स्वर्ग मे बैठा दिया चाहते हैं सो यह निरा थोथा प्रयत्न और व्यर्थ का उद्यम है क्योंकि अब पश्चिमोत्तर के वे दिन न रहे कि राजा जी अन्धों मे काने की भांत योग्यता वक्तृत्व शक्ति और विद्या आदि मे असम समझे जाते अब नई सृष्टि वालों मे एक से एक बढ़ बढ़ कर ऐसे सुयोग्य तैयार हुए हैं जिनके आगे राजा जी की लियाकत पसंगे मे भी नहीं है दूसरे इलबर्टबिल के महा आन्दोलन मे इनकी स्वार्थ परता और कपट का सब भेद खुलगया सम्पादक जी अब आपकी झूठी तारीफों से कुछ नहीं होना है इस्से आपका यह नितान्त थोथा प्रयत्न समझा जाता है !

दूसरा थोथा प्रयत्न सरकार पर अपना रोब जमाने को मुसलमानों की गीदड़ भपकी—हमारे मुसलमान भाइयों ने चाहा था कि इस साल मे हर्रम मे अकड़ाई और गीदड़ भपकी से सरकार पर गालिब आय हिन्दुओं को मन मानता पहले की भांत सताते रहें सो ऐसा चूके कि सबों का प्रयत्न थोथा रहा हिन्दू अपनी अधिनाई और मिधाई के कारण हर तरह पर राम लील मे हर एक जगह सर सब्ज़ रहे मुसलमान जोश मे आय सर्वथा अकृत कार्य रहे और सरकार की निगाह मे हल्के जंच गये !

इन्ही थोथे प्रयत्नों मे हिन्दुस्तानियों को क्रिस्तान बनाने के लिये पादरी साहब के हर तरहके जुल और चाल हैं—ब्रह्म समाज आर्य समाज थिओसोफी सोस-

रियो जिसे देखते हैं सब इसा इयोंही के खण्डन करने और दबाने में ज़ोर दे रहे हैं—पर बेहयाई या धुनबांध के किसी काम को करना कहैं तो इसेही कि चाहो कोई इनकी सुनो या न सुनो चाहो इनका कोई कितना ही अपमान करै उद्यम और कोशिश यहां तक थोथी होती रहै कि सालों साल में भी कहीं एक नया क्रिस्तान होता न सुन पड़े किन्तु पादरी साहब अपने थोथे प्रयत्न से नहीं चूकते— रसिक पाठक इस निठाले में ऐसे एक सड़े और फीके लेख के द्वारा आपको प्रसन्न रखना भी हमारा महा थोथा प्रयत्न है पर क्या करैं जो कुछ हो सका आपंथ किया एक बार ऐसही सही !

---

दासोऽहंकोशलेन्द्रस्य रामस्या क्लिष्टकर्मणः । मरावणसहस्रंमे युद्धे प्रतिबलंभवेत् ॥

हमारे कोशलेन्द्र राज राज महा राज बीर धुरीण रघुबंश मुकुट मणि श्रीराम चन्द्र प्रभुवर का ऐसाही प्रताप है कि जिस प्रताप की ज्वाला मे विघ्नकारी विप-क्षियों की भीड़ की भीड़ शलभ तुल्य हो सक्ती हैं ॥ कोटिन यो धा क्या करैं जो सहाय रघुबीर ऊपर का वाक्य रामभक्त अग्रगण्य श्री हनूमान जी का है ॥ मैं कोशलेन्द्र राम का दास हूं तब एक रावण क्या हज़ार रा-वण भी मिलकर मेरा सामना क-रने की हिम्मत नहीं बांध सक्ते यह कौन नहीं जानता कि ये यवन हमारे सदा के प्रतिपक्षी प्रबलवैरी हैं जिन्होंने हमारे देश का दलन कर हमे इस दशा को पहुंचा दिया उन यवनों का अब कि वार इस प्रकार छार होना केवल कोशलेन्द्र की कृपाही हम कहैंगे—अथवा घट २ का साक्षी सर्वान्तर्यामी प्रत्येक जीवों का काम देख तदनुसार फल देने वाला

क्या यह नहीं जानता कि यहां शुद्ध भाव अकुटिल हृदय से केवल अपने कार्यकी सिद्धि चाहते थे—हमारे विपक्षियो आप सदा के लिये इस बात को ध्यान मे रखिये कि यहां कोई कोढ़े की बलिया न था कि आप के ज़रा अंगुली देखाने से कुम्हला जाता किन्तु भले लोगों का यह सुभा वही होता है कि खल जन कि-तनोही खलता करैं आप अपनी चिर परिचित सरल परि पाटी के विरुद्ध होतेही नहीं यह हमारे न्याय वीर योग्यातियोग्य मेजिस्ट्रेट मिस्टर पोर्टर की अ-गाध बुद्धि और दृढ़ता की तारीफ है जो इस बात को चट्ट चीन्ह गये कि शुद्ध भाव किस्का है और कुटिलाई भरा हुआ निरा हठ और कट्टर पन किधर है फिर न केवल चीन्हही गये वरन लोगों की हज़ार२ बन्दर घुड़की पर भी अपने स्थिर अध्यवसाय और दृढ़ निश्चय से तिल मात्र अलग न हटे—अस्तु न्यायकारी श्रीमान पोर्टर साहब की मुस्तैदी और सुप्रबन्ध से जिसके लिये लोगों की बरसों पहले से भांत २ की खि-चरी पक रही थी वे सब रामलीला और मोहर्रम के बड़े नाज़ुक दिन यहां निर्विघ्न और शान्ति के साथ बीत गये—गवर्नमेंट के आर्डर को सिर और माथों पर रख हिन्दुओं ने अपना मेला और तेह वार बदस्तूर और खातिरखाह किया और पोर्टर साहब पर रोम २ से निहाल होरहे हैं—आर पार गवंई गांव दिहातों मे मोहर्रम भी निर्विघ्न और बदस्तूर हुआ केवल शहर मे थोड़े से तअस्सुबी मुसल्मानों ने जिद्द और गफलत मे आकर अपना तेहवार न किया तो इसमे श्रीमान् पोर्टर साहब का क्या कुसूर है उक्त साहब उनके साथ भी हर तरह पर मुस्तैद थे और पीछे से पछताय लजाय दो चार लोगों ने जो किया उनके अ-लम आदि का भी उत्तम प्रबन्ध

कर दिया गया—इस सब का अनेक अनेक धन्यवाद प्रथम हम अपने सुयेग्य मेजिस्ट्रेट साहब को देते हैं और फिर लाला जगन्नारायण लाला रामचरण लाल लाला दुर्गाप्रसाद लाला दयाल दास प्रभृति लीला के कई एक अगुआओं को देते हैं जो ऐसे नाज़ुक वक्त में दोचन्द उत्साह और मुस्तैदी के साथ रामलीला के कृत्य में तत्पर और सन्नद्ध रहे निरापद में तो सभी जनखों की भांत बड़े गाज़ीमर्द बनते हैं जब कसौटी में कसने के समय मर्दई और सरदारी ज़ाहिर करे उसी के बाहुबल की प्रशंसा है और उसी का नाम पुरुषार्थी है—इस राम लीला का मुख्य फायदा और उद्देश्यही यह है कि आर्य मत विरोधियों के मुकाबिले अपनी क़ौमियत और जातीयताभिमान को दिली जान से भर पूर निबाहता रहे !

## मुसल्मानों के हित की

हम को इसका बड़ा शोक है कि मुसल्मानों ने अपनी मज़हबी रस्म इस हठ के साथ इस साल बन्द रक्खी उनको यह गुमान कभी न रखना चाहिये कि ताज़ियादारी न होने से हिन्दुओं को कमाल खुशी हासिल हुई होगी अगर यह यकीन उनको है तो इस्से ज़ियादा दूसरी बात ग़लती और ग़म की नहीं—मुसल्मानों को इस किस्म के क्या बरन सभी मौक़ों पर जहां कि उनसे और हिन्दुओं से लग बट का मुआमिला आन पड़ता है (और इस बदले हुए ज़माने में ऐसा कौनसा मौका है जिस्में भारत वर्ष की इन दो कौमों को परस्पर काम नहीं पड़ता ?)

याद रखना चाहिये कि अब हिन्दू और मुसल्मानों के बीच उस तफ़ावत और फरक का निर्वाह नहीं होसक्ता जो कि किसी ज़माने में रहा था। उस पुराने रुआब और दबदबे को ख्वाब की बातों में दाखिल करदेना वाजिब है और समझना चाहिये कि यद्यपि हिन्दुस्तान मुल्क वही है हिन्दू भी वेही हैं परन्तु मुसल्मान अब वह नहीं हैं जो अलाउद्दीन खिलजी या मुहम्मद तुग़लक़ सरीखे बादशाहों के वक्त में इस देश में रौनक अफ़रोज़ थे। जहां पहलेमुसल्मानों को मनमानते अत्याचार और ऐश करने को पबलिक रोड थी वहां अब एक न्याय प्रिया अंगरेज़ी गवर्नमेंट का घंटा पथ शोभित हो रहा है यद्यपि यह देश अभी उसी सूर्य से नित्य प्रकाश पाता है जिस्की प्रभा से औरंगजेब के ज़माने वाले नेत्रों को सफल करते थे वेही प्राकृतिक लैम्प अब भी इस स्थल में जलते हैं जिनके द्वारा उस गये हुए ज़माने के तमाशे नज़र आते थे परन्तु रंग शाला का रंग रूप अब बिल्कुल बदल गया उन पर्दे और सीन के देखने की उमेद अब मुसल्मान न करें जिन्हें वे मुग़लानी थियेटर में देखा करते थे॥ वरन इस नाजुक समय में जब कि भेड़िया और भेड़ो को एक जगह पानी पीने का मसला प्रत्यक्ष चरितार्थ देखने में आता है — भेड़िये और भेड़े अगर आप से आपही एक मांद में रहना सीखलें तो इससे बढ़ कर और कौन सा काम सुलह और मज़बूती का हो सक्ता है!

हिन्दुओं को समझना चाहिये (और बहुत से हिन्दू समझते हैं) कि मुसल्मानों की हिजो में अपने ही भाइयों की हिजो है और मुसल्मान भी हिन्दुओं की हिजो को अपनीही हंसी समझें अफ़सोस है कि बहुत थोड़े मुसल्मान शायद इस बात को जानते हैं कि एकही लब्ज़ हिन्दुस्तानी

था । नेटिव । हिन्दू मुसल्मान दोनों को सूचित करता है हमदोनों के बैरी यूरेशियन् किरानीजब कभी Hateful nigger शब्द का इस्तिअमाल करते हैं तो उसके मानी से मुसल्मानों को अलग नहीं छेंक देते—फिर जब कभी कोई अत्याचार गवर्न्मेंट के कर्मचारियें के हाथ से देश पर अन पड़ता है तो दोनोंही कोमों को मुज़िर होना है—इसलियेबिचारशील हो सब बातों की ऊंचनीच भली भांति तोल कर मुसल्मानों को चाहिये कि हिन्दुओं के साथ बैर भाव को अब सदा के लिये तिलांजलि देना हर तरह पर मुनासिब समझें— मुल्क एक मालिक एक तो प्रजा को भी एक हो कर रहना चाहिये ।

—

## ॥ सूर्य्योदय ॥

—

पुराने क—व—सु—हे

देखो सूर्य्य का उदय हो गया अहा ! इसकी शोभा इस समय ऐसी दिखाई पड़ती है मानो अन्धकार को जीतने को दिन ने यह गोला मारा है अथवा प्रकाश का यह पिंड है वा आकाश का यह कोई बड़ा लाल कमल खिला है वा लोगों के शुभाशुभ कर्म्म की खराद का यह चक्र है अथवा चन्द्रमा के रथ का पहिया है घिसने से लाल हो गया है अथवा काल के निर्लिप होने को सोगन्द खाने का यह तपाया हुआ लोहे का गोला है अथवा उस बड़े आतिशबाज़ का जिसने रात को अद्भुत गजसितारा छोड़ा था यह दिन का गुब्बारा है वा यह एक लाल व्योमयान (बेलून)

है जो समय को लय इधर उधर फिरा करता है वा संसारियों को दिन के काम पर जो अनुराग है यह उस का समूह है या रात को सुख पाने वाली दिन को बियोगिनी होने वाली स्त्रियों की वियोगाग्नि का कुंड है वा पुर्व्व दिशा का माणिक्य का सीसफूल है वा काल खिलाड़ी का यह लाल पतङ्ग है वा समय रेल की आगमन सूचक यह आगे की लाल लालटेन है वा उस बाजीगर का यह भी एक खेल है कि अधर में एक लाल झाड़ रोशन कर दिया है वा काल रूपी यह कोई बड़ा गृद्ध है जो जगत को खाता चला जाता है वा उस बड़े टकसाल की यह एक अशरफी है जो चंद्रमा ऐसे रुपये से भी दाम में सोलहगुनी है वा समय रूपी च-लान की पेटी पर यह लाह की मोहर है वा आकाश रूपी दि-गम्बर का भीख मांगने का यह तांबे का कटोरा है वा यह जग-त के चित्त रूपी शीशे के मटके में वृत्ति रूप मदिरा भरी हुई है वा अंधेरे से लड़ने वाले चंद्रमा वीर की यह खून भरी ढाल है, वा दिशा कामिनी का यह सोने का कर्नफूल है, वा उसका लीला कदम्ब है वा उसके खेलने का लाल गेंद है वा सेनि का मख-मली मलतकिया है वा उसके हाथ का नारंगी का फल है वा उसके सिर का सिन्दूर का बिन्दु है वा ज्योतिषिओं के बुद्धि की घुड़दौड़ का सीमा चिन्ह है वा ये कितना भी गिना किए हाथ कुछ न लगा उसी का यह विन्दु है वा रात दिन के तोलने का यह तराजू का पलड़ा है वा म-जीठ का कुंड है वा लाल पत्थर का गुम्मज़ है वा काल का चक्र है वा बेला लता का यह पक्की मिट्टी का थाबला है वा जगत के शिर का छत्र है वा काल महाराज की सूरजमुखी है वा रात के सब तारों का लड्डु है वा को-

मोदकी गदा के ऊपर का टूटा हुआ गोला है वा संसार के सिर की यह लट्टू दार पगड़ी है वा उस हठीले बालक के खेल की यह चकई है जो उसकी आज्ञा- रूपी डोर पर ऊंची नीची हुआ करती है वा जगत को जगाने का नगाड़ा है वा सब को उठते शकुन होने की यह सामने दिशा की लाल हथेली है या उस कर्म्म काण्डी का यह अग्निकुण्ड है जिसमें नित्य वह जगत की आयु होम करता है वा उस मङ्गल मूर्त्ति की यह मङ्गला आरती है वा उस दरबार के गजर देने की यह घड़ी है वा कोई लाल आरसी सामने खड़ी है या उस परम प्रकाशित भवन का एक मोखा है वा उस रसिया का यह पान का सन्तोषा है वा सूर्य्य वंशियों के अभिमान की गठरी है वा श्रीमहाराज रामचंद्र के प्रताप का पुंज है वा आकाश सरोवर का यह लाल कछुवा है वा किरनों की जाल फैलाने वाला कोई मछुवा है वा जगत को मृगतृष्णा भ्रम के जादू में फंसाने का छूमन्तर का पिटारा है वा उस कबूतर बाज़ का सुरखा लक्का कबूतर है वा उस दिन दूलह की बरात का पंजशाखा है वा सम्वत जलाने वाली होली है वा संसार का सिरमौर है वा जगत पर दयाल के अपार अनुराग का यह एक किनका है या लोगों के बुरे भले कामों के लाल बही पर लेखा लगने की यह दावात है वा उस के दरबार के शिखर का कलस है या समय की आंच में जगत पकाने का पैजावा है या वह उस भाड़ का मुंह है जिसका संसार लावा है या हो- नहार की सवारी का बनाती चक डोल है या संसार का पानी खींचनेवाला डोल है या उस काल कसाई की दूकान का यह मांस का लोंदा है या टिकुंवार का रंगीन हौदा है या उस

ब्योपारी का यह भी एक बट खरा है जिसका संसार सौदा है या भाग्यरूपीस्टाम्प की यह लाल मुहर है वा भोग के लिये फिरने का बिमान है वा काल को इस संसार रूपी रणभूमि की नदी का फेन है वा काल सर्प का फन है वा समय से मतवाले हाथी का घंटा है वा जगत जालसाज का मन है इसी से सारा टंटा है वा लोगों की बुद्धिरूपी सरस्वती का कुण्ड है वा काल कबन्ध का मुण्ड है वा आकाश दर्पण में यह भूगोल का प्रतिबिम्ब है वा चंद्रमा का बड़ा भाई है वा केसर के रङ्ग का फुहारा है वा किसी देवऋषि का गेरूआ कमण्डल है या भगोल में जहां लाखों ग्रह पड़े हैं वहां एक यह भी छोटा मोटा लाल मण्डल है या शिशुमार नकुन का यह नेच है वा संसार वृच्छ का दोहद है वा पूर्व्व दिशा सोहागिन का सिंधोरा है वा शकुन का नारियल का गोला है जो रोली में बोरा है वा लोक का दीप है वा सर्बदा फेशन बदलने वाले काल की चक्करदार टोपी है या सच पूछो तो उसकी जेबी घड़ी बरंच धरमघड़ी है वा नीले के तखती पर एक चुन्नी जड़ी है वा उच्चाटन का यह कोई यंत्र है वा गायत्री का मूर्त्तिमान मंत्र है वा नभ का मुकुट है वा आलोक की खान है वा जगत पीसने की चक्की है वा कपट नाटक सूत्रधार का यह भी कोई गोल मटोल लाल चिहरा है या उस खिलाड़ी की शतरंज का कोई सुर्ख मुहरा है वा कोई मोटा ताजा बन्दर है या मिंहदी से डाढ़ी रंगे कोई मुगल मुछन्दर है॥

——:०:——

# हमारे देश का बनिज क्यों नहीं बढ़ता।

क्या हमें रुपये की कमी है ! या यथोचित उद्यम करना हमे नहीं आता ! या किफायत सारी जो बनिज की बुनियाद है सो हममें नहीं है ! या हमारी पुंजी हल्की और ओछी है ! तब क्यों हमारे देश का व्योपार घटता सा जान पड़ता है ! हम समझते हैं इन सब ऊपर कही बातों मे हम कभी दूसरे से कम नहीं हैं सच पूछिये तो इस खिउटा होअन पर भी कि न जानिये कितना रुपया भिन्न २ द्वार से प्रतिवर्ष बिलायत ढोआ चला जाता है फिर भी हमारे यहां की धरती की उपजाऊ शक्ति के आगे वह नुकसान मालूम नहीं पड़ता सच तो यों है कि इंगलेंड आदि बहुतेरे देश ऐसे हैं जो केवल अपने अपरिमित वाणिज्यही के कारण रंजे पुजे हैं और वहां के रहने वाले लाल गुलाल बन रहे हैं यदि उनकी जहाज़ों समुद्र मे चलना बन्दकर दी जांय अथवा हिन्दुस्तान के साथ उनका लेन देन किसी कारण बश रुक रहे तो निश्चय जानिये लोग भूखों मरने लगें क्योंकि जितनी आबादी वहां की है उस कदर क्या बल्कि बिल्कुल उपजाउ शक्ति उस देश की पृथ्वी मे नहीं है खाली रुप- साही रुपया रहा जिसको हवस इनमे प्रलय पयोधिके समान उमड़ी चली आती है उसी रुपये को अलबत्ता चबा चबा कर दिन बितावें —हमारी भारतीय प्रजा अपने मुंह मियां मिट्ठूकी भांत अपने को आर्य - भारत को स्वर्ग भूमि से भी बढ़ कर—पुण्यक्षेत्र कर्म भूमि आदि लम्बी चौड़ी तारीफों से लादे देते हैं उस सब का यही कारण से कि इन्हें यो-

ड़ेही परिश्रम मे धरती की उपजाऊ शक्ति के कारण भर पूर खाने पीने और चैन से रहने का मौका मिला बेफिक्री में बड़े २ दर्शन और फिलासोफी बैठे २ बूका किये—मसल है कितनी दिल्ली सूनो तो नौ लाख घोड़े भरे हैं इस बिगड़े ज़माने मे भी ऐसे २ धनी साहूकार करोड़पती यहां मौजूद हैं कि यूरोप के फ्रान्स इङ्गलेंड सरीखे दोही एक देश अब भी हमसे रुपये मे चढ़ेबढ़े होंगे—तो सिद्ध हुआ कि रुपये को कमी हमे किसी तरह पर नहीं है—अब उद्यम को देखते हैं तो हमारे माड़वारी उसमे भी किसी से कम नहीं हैं चीन और इङ्गलेंड तक रोज़गार का नाका छेके हुये हैं आकृति इनकी महा मर्कट की सी बोली पिशाच की सी पहनाव ओढ़ाव रहन सहन ऐसा भट्टा कि मिलान करने से कदाचित हिन्दुस्तान भर में किसी दूसरी जाति के लोगों का ऐसा भट्टा न निकलेगा अकिल इतनी भोंडी कि जिस्की तारीफ नहीं हो सक्ती पर एक उद्यम गुण इनमे इतना प्रबल है कि कौम की कौम धनी पाच जैसी इनकी है वैसी दूसरी इस देश मे न पाइयेगा—अब किफायतसारी को लीजिये तो स्पंज की खासियत हमारेही देश के वणिकों की है हमे तो कुछ ऐसीही भ्यासती है कि मारे किफायत सारी के हौसिले की बलन्दी जो ब्योपार की जान है सो इनमे होनेही नहीं पाती ब्याज के घाटे की डर से आगे बढ़ते संकुचाते हैं—यों वे काम रुपया चाहो गंजियों मे भरा हुआ रक्खा रहे कभो उस रुपये के ब्याज का परता न फैलावेंगे पर किसी काम मे जब उसे लगाना चाहेंगे तो दमड़ी २ को कटौती काट लेंगे किफायत सारी का नाको मे दम कर डालेंगे—तात्पर्य यह कि जिस ढर्रे पर हमारे यहां का

ब्योपार ढुलक रहा है वह ढंग ही कुछ ऐसा घिचलोना और घिनौना सा है कि अब उस ढंग पर चलने से उस प्रकार का ब्योपार नहीं बढ़ सक्ता जिस्से हम अपने देश की दौलत का बढ़ना कह सक्ते हैं — बिदेशी बणिजों के संपर्क के कारण अब ब्यापार का ढङ्गही कुछ और होगया नये सिविलाइज़ सुसभ्य देशों के साथ ब्योपार करने को नये २ सिविलाइज़्ड ढंग भी होने चाहिये उन ढंगों को हमारे वर्तमान मूर्ख अपढ़ महाजन या सौदागर जो कि सिवा ऊपरी दिखावट की बातों के अपने बाणिज्य के मर्म को मुतलक नहीं जानते किस तरह समझ या चला सक्ते हैं ! योरोप के महाजनों में किसी को मूर्ख न सुना जहां कि लोगों को जितनी अधिक संपत्ति होगी उतनीही अधिक सुशिक्षा का संचार उस घराने मे पाया जाता है— यह तो हमारेही यहां की कुछ ऐसी बिगड़ी आब हवा है कि रुपया पाकर गोबर गनेस न हुये तो मानों नाकही कटी कुल और खान दान की बातही मे बट्टा लगा—यूरोप के सुशिक्षित ब्योपारी तमाम दुनियां की तिज़ारत का कील कांटा खूब तोले रहते हैं और अन्य देश के साथ किस प्रकार का ब्योपार करने मे खातिर खाह फ़ायदा उठ सक्ता है दिन रात इसी बिचार मे लगे रहते हैं—हमारे देश मे पढ़े लिखे सुशिक्षित भी २०) की नौकरी को गनीमत मानते हैं रोज़गार मे रुपये पैसे की झोंझट सहने से — जो पेशा उनके बाप दादों के समय से होता आया है पढ़ लिख कर उसे भी छोड़ नौकरीही की ओर झुक पड़ते हैं और बिदेशियों की डांट डपट और लात को महाप्रसाद समान मानलेते हैं— तात्पर्य यह कि बे पढ़े मूर्खों को समझाने से कुछ लाभ की भी आशा है पर इन पढ़े मूर्खों को कौन समझावे ब्रह्मा की भी तो न सुनेंगे ऐसीही ऐसी कितनी बात हैं जिससे हमारे देश के ब्योपार का

मूलोच्छेद हो रहा है जिसे प्रसङ्ग पाय हम दूसरे अङ्क में फिर लिखेंगे !

---

## हांथी दांत साफ करने की युक्ति

---

हांथी दांत की जितनी वस्तु बनती हैं हवा मे खुली रहने से उन पर पीला पन छा जाता है उनके साफ करने को पहले झावें की बुकनी को पानी मे मिलाकर उसपर यदि फून दार वस्तु हो तो ब्रुस से नहीं तो हाथ से लगा दो और किसी शीशे के बरतन से ढांप धूप मे रख दो और यदि कुछ पीला पन बाकी रहजाय तो फिर ऐसाही करो गन्धक के धूएं से भी हाथी दांत साफ हो सक्ता है गन्धक का एक टुकड़ा आग मे डाल दो जब धुआं निकलने लगे तब जो चीज़ तुम साफ किया चाहते हो उसे पानी मे भिगो दो और गन्धक के धुएं पर उसे दिखलाओ खूब साफ हो जायगा !

---

## नकली हांथी दांत

सरेस माही ( isinglass ) ब्रेंडी मे भिगो दो जब गल जाय तब अंडे के छिलके की बुकनी कपड़ छान की हुई उसमें मिला दो जब जैसी चीज़ बनाना चाहो वैसे सांचे मे गरमागरम ढाललो और जम जाने पर सांचे को खोल लो— हांथी दांत की चीजों मे और इसमें कुछ भी अन्तर न जान पड़ेगा— बिलायत मे इस नकली हांथी दांत की सेकड़ों चीजें बन कर यहां आती हैं !

## लकड़ी का आग्नेयत्व कम कर देने की युक्ति

लकड़ी को तूतिया और फिटकरी के पानी में तर करने से उसमें का आग्नेयत्व जाता रहता है – इस लकड़ी की सन्दूकें बनाई जांय तो उसमें जो कागद वग़ैरह रक्खे जांयगे उनके जलने का बहुत कम भय रहता है आधसेर फिटकरी और आधसेर तूतिया चारसेर गरम पानी मे गला डालो तब एक मन गरम अथवा ठंढे पानी मे उसे छोड़ दो जिस लकड़ी की सन्दूक बनवाया चाहो उसके टुकड़ों को उसी पानी मे भिगो दो अकसर देवदार की लकड़ी अच्छी होती है चार पांच दिन पानी मे पड़ी रहने के बाद सुखाकर तब लकड़ी काममे लाई जाय – यह लकड़ी आग मे न जलेगी – इसका उदाहरण बिलायत के पार्लियामेंट मे मौजूद है – एक समय बिलायत मे एक मकान मे आग लगी बहुत से असबाब जल गये परन्तु जो काग़ज उस लकड़ी के संदूक मे रक्खे हुये थे नहीं जले !

---

## सिल्ली बनाने की युक्ति ।

पानी में धोया और साफ किया हुआ बालू ३ भाग और लाख एक भाग — पहले लाख को किसी बर्तन मे गलाओ और गलजाने

पर स्वच्छ बालू उसमे गेर दोनो को अच्छी तरह मिलाकर एक टिन करले। और टिन वा लोहे के सांचे में उसे दवा रक्खो — बालू की जगह कुरुम पत्थर की बुकनी भी काम में आसक्ती है यह सिल्लो छूरी या छूरा या इसी तरह की दूसरी चीज़ों पर सान रखने के लिये अत्यन्त उपयोगी है !

## पीपा या बालटी का टपकना बन्द करने की युक्ति

चूना और लोहेका मुरचा अलग २ आग में लाल कर ठंढा होने पर कपड़ छान कर डालो दोनो को मिलाय शीशी में काग लगा बन्द कर रखदो जब जोड़ना हो तो पानी में उसे घोल छेद पर लगा दो कभी न टपकेगा ।

## नौसो चूहे खाय बीबी हज्ज को चली ।

ऊपर की कहावत हमारे प्रभुवर अंगरेज़ो को सभ्यता का पूरा नमूना है — मिसे सच्च फ्रीज़ नाम की एक बड़ी धनाढ्य स्त्री लन्दन नगर में रहती है — पादरियों के मिशन और अनाथालय इत्यादि को बहुत सा धन दिया करती थी इसलिये वह बड़ी धार्मिक प्रसिद्ध थी - अब कुछ दिन हुए उसके गुप्त चरित्र प्रगट हुए तो मालूम हुआ कि वह एक कुटिनी है और लन्दन के पश्चिम भाग में वे स्त्रओं के कई एक चकले बसा रक्खे हैं और उन्हीं चकलों के आबाद करने को लन्दन के

अच्छे कुलीन दीन धन हीन लोगों की रूपवती कन्याओं को बड़े क्रूर और घृणित उपायों से भुल दे फसाया करती थी - पैल मैल गज़ट के संपादक ने देशोपकार की बुद्धि से हाल में इंगलेंड के धन वान् कुलीन और उच्च पद के लोगों के जघन्य नीच कर्मों को छाप कर सर्व साधारण को जो बिदित कि या है उससे ज्ञात होता है कि य ह मिसेस ज्यफ्रीज़ उन कुलीन धन वान् लोगों की दूती है और इसी दूती के पेशे से उसने इतनी संप त्ति और धन जोड़ा था जिस्के प्रभा व से वह अब तक धर्मात्मा और परो पकारिणी कहलाई - इस कुट नी की निंद्य और घिनौनी कथा से हम को पुरा निश्चय होता है कि पाप संचित धन से उदार और धर्मिष्ट बनना कुछ कठिन काम न हीं है - मिसेस ज्यफ्रीज के भैया बन्धु यहां भारत बर्ष में भी कई एक बसते हैं जो लोग उनके भेद को नही जानते वे सचमुच उनके द भ पर मोहित हो अनुयायी बन बैतालिक और बन्दीजन की भांत उनकी स्तुति करते हैं ऐसों की लीलायें अद्भुत और अनेक प्रका र की हैं श्मसान का डोम तो चाहो किसी को चिता भूमि का कर छोड़ भी दे परये अपने दांत पर किसी को जब चढ़ा लेते हैं कभी नहीं छोड़ते धन्य इनके साहस और हिम्मत को।

। एक कूर्मा चलीय।

अग्रीम देने से ३।≈)
पीछे देने से ४।≈)

---

## श्री हिन्दी प्रदीप का उद्देश

---

**श्री** हरि पद रज कृपा देश दुर्दशा सुधारन ।

**हिं** दू गन मन गुहा महा तम तोम निवारन ॥

**दी** प देश नव नेह नेह भरि भरि तहं बारन ।

**प्र** बलित उर्दू मुख कवलित हिन्दी उद्धारन ॥

**दी** न प्रजा दुख हरन नागरी बरन प्रचारन ।

**प** रपद गत आरत भारत की आपद टारन ॥

**का** व्यकला कौशल्य शिल्प विद्यादि उधारन ।

**उत्** तम उत्तम विषय देश भाषा सञ्चारन ॥

**दे** श काल नियमानुसार मारग पग धारन ।

**श** ताब्दि निज उद्देश शेष लों पूरन कारन ॥

---

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप समथिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ दिसम्बर सन् १८८५ | जिल्द ८ संख्या ४

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

# ॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ८ | संख्या ४ } { १ दिसम्बर सन् १८८५ ई०

—:०:—

## सिबिलियन क्या हैं ॥

—:०:—

आप को इन के कपट नाटक का अभिनय देखते सालहां साल श-ताब्दी की शताब्दी बीत गई इतना भी न जान सके कि ये सिबि-लियन क्या हैं ! लो हमसे सुनो ये श्वेत द्वीप निवासी हंस नहीं २ बगुले या सुफ़ेद रंग के जहाज़ी कौवे हैं ऊपरी सफ़ाई और चमक दमक से देखने वाले के मन में भांत २ की शङ्का उठती है कि ये क्षिस मानस के मराल या राज हंस हैं क्षीर नीर का बिवेक करना ये खूब जानते होंगे मोती चुगना इनका आहार है दुर्भिक्ष कर पीड़ित इस देश में इनको कहां इतना मोती चुगने को मिलता हो-

गा ! ऐसीर अनेक कल्पनायें मन मे उठा कीं चिरकाल तक इनके पास जाने की हिम्मत न हो सकी किसी तरह भय और गौरव के परदे को नज़र के सामने से हटाय समीप जाकर देखा तो सब उसी शव तुल्य दुर्भिक्ष कर पीड़ित भारत की अन्तर्मज्जा नोच २ खाने के लिये सब ओर से कांव २ कर रहे हैं । अथवा गवर्नमेंट के ये लाड़िले सन्तान हैं जिनकी नाज़बरदारी उठाते २ इंडिया गवर्नमेंट खुक्ख होती जाती है— अथवा ये मेम साहब के चरण परिचारक उनके खेलने की गुड़ियायें या नचाने की कठपुतली हैं—अथवा ये ब्रिटिश राज्य शासन महास्टीमर की इंजिन हैं जिसके एक २ रेज़े पुरज़े गवर्नर जेनरल सेलेकर ज्वंट और असिसटंट तक को समझ लीजिये—अथवा गरीब हिन्दुस्तानियों के स्पलीन रोग दूरकरने को महा बैद्य हैं जिनके एक बार के मुष्टि प्रहार से जन्म भर का पिलही रोग जड़ पेड़ से दूर हो रोगी को सीधी सुरपुर की राह का पाहुना बना देता है अथवा ये जाकेट धारी कोई जांयट हैं जिन के चरन प्रहार से शेष का अशेष फणा मण्डल कम्पमान हो भारी भूडोल की शङ्का उपजाता है क्रोध युक्त जिनके ईषत् कटाक्ष पात मात्र से हमारे यहां के बड़े २ शूर सामन्त थर थर कापने लगते हैं जिनकी किंचित् कृपा दृष्टि के प्रसाद से रङ्क राजा और राई पर्बत बन सक्ता है—अथवा पायोनियर इङ्गलिशमेन सरीखे पत्रों के ये परम पूज्य देवता हैं क्षीण पुण्य हो जाने पर देव लोक से ढकेल दिये गये हैं—अथवा कोट पतलून वाली उन्नीसवीं सदी की नई सभ्यता के प्रचार करने को गुरूगुंठ या आचार्य बन हम सब अर्द्ध शिक्षित असभ्य नेटिवों को सभ्यता सिखलाने को

यहां आये हैं—हम वड़े से बड़ा इमतिहान पासकर भी उस लायक नही समझे जा सक्ते जैसा कम्पिटिशन वाले इमतिहान की बदोलत इनकी जाति का १८ बर्ष का एक छोकड़ा हमारे यहां के टोडर मल सरीखे अगाध बुद्धि वाले मुन्तज़िम बूढ़ी ढाढ़ी लिये बैठे २ हाथ मलते हैं निरालंडूरा छोकड़ा ज़िले भर का स्याह सुफैद करने वाला हकिम बन जाता है—ब्रिटिशआर्न सबजेक्ट गौराङ्ग श्वेत द्वीप निवासी ऐंगलो इंडियनआदि इनके बिविध नामगुणकर्महैं—कहिये अव समझ मे आया कि ये सिविलियन क्या हैं ॥

# लार्ड रिपन से लार्ड डफरिन साहब के शासन में बड़ा अन्तर है

—:०:—

हमारे सुयोग्य सहयोगी सम्पादक सार सुधा निधि ने अपने हाल के एक अङ्क मे इस बिषय की बहुत अच्छी समालोचना की है-सच सच लार्ड रिपन हमारे लिये आम थे तो लार्ड डफरिन इमली हैं—उक्तलाट साहब की दो एक बार की स्पीचों का सारांश जो सोचिये तो यही मन में आता है कि हिन्दुस्तानी की इनके जीमे कुछ कदर या चाह नहीं है—यद्यपि रिपन साहब हमसे जुदा होने के समय बहुत कुछ दिलासा हमे दे गये थे कि जो महाशय हमारे बाद आते हैं वे तुम्हारे महोपकारी होंगे हम लोग इसी भरोसे मे बैठे थे पर यहां आसार कुछ और के तैारही नज़र आते मालूम होते हैं—जो हो—लार्ड रिपन साहब के निस्वत

खिलाफत वालों का चाहे जैसा खयाल जमा हो पर हम लोग तो इनका नाम लेतेही रोम रोम से निहाल होते हैं लार्ड डफरिन के लिये हम लोगों को इतनी सहानुभूति हो या नहीं इस में सन्देह है – सच है यश भी बड़े भाग्य से मिलता है – काश्मीर राज्य मे रेज़ीडेंट स्थापित करने से बेगम भूपाल के पति को पदच्युत कर एक अंगरेज़ को उस रियासत का मंत्री नियत करने से रशिया के मुकाबिले दबकर बिल्ली बन जाने और निरापराधी ब्रह्मा देश को हस्त गत करते देख हमारे उक्त सम्पादक मन मे सश ङ्कित से हो पूछते हैं क्या ४० बर्ष के उपरान्त डालहौसी का समय फिर आगया ! हम कहते हैं केवल डालहौसी ही का समय नहीं किन्तु लिटन और डालहौसी दोनों का समय याद आता है क्योंकि इस कापी राइट बिल के आन्दोलन का भी तो यही प्रयोजन है कि पत्र सम्पादकों की स्वतंत्रता मे कुछ न कुछ बाधा डाली जाय – इन्ही सब बातों पर ध्यान देने से मन मे यही समाती है कि रिपन से लार्डडफरिन साहब के शासन मे बड़ा अन्तर है लार्ड लिटन ने दिल्ली मे धूम धाम का दरबार कर हमारे रजवाड़ों को निष्किंचन कर डाला ये खुद घूम घूम कर राजाओं का असंख्य धन आगत स्वागत की तैय्यारी में व्यर्थ बर बाद करा रहे हैं – क्या इससे अधिक कोई दूसरी बात से गवर्नमेंट की क्षुद्रता प्रकाशित हो सक्ती है कि रशियन लोगों ने ललकार कर पंजदेह ले लिया खारतूम मे जेनरल गारडन को वहशी हबशियों ने ऐसा निगल लिया कि उक्त जेनरल की लाशतक का कुछ पता न लगा वहां हमारी गवर्नमेंट का कुछ भी बस न चला

कोई काररवाई न हो सकी बह्मा बेचारे को कमज़ोर पाय जाय घर दाबा – यदि यही हाल है तो हमारे नेटिब राजाओं को सुचेत रहना चाहिये क्योंकि डालहौसी की अन्यक्सेशन पालिसी को फिर सरकार काम मे लाया चाहती है क्या मालूम शनि की दृष्टि किधर जा पड़े अभी तो हमे उक्त लाट साहब के साथ चार बर्ष काटना है देखें तब तक मे कौन कौन सी दुर्घटना का जन्म होता है – निश्चय हो गया कि हमारे बर्त्तमान गवर्नर जेनरल ऐंगलो इंडियन के बड़े भारी दोस्त सहायक ओर मुरव्वी हैं ओर जो उन सङ्कीर्ण हृदय ऐंगलो इंडियन का यार होगा वह हमारे लिये कब भलाई सोच सकता है – हम समझते हैं बह्मा को हस्तगत करने की चेष्टा भी इसी प्रयोजन से है कि इतना बड़ा देश अपने आधीन हो जायगा तो वहां हमारे भाई बन्धु अंगरेज़ों को बनिज ब्योपार तथा नौकरी चाकरी के लिये बड़ा भारी मैदान मिलेगा ब्रह्मा देश अंगरेज़ी राज्य मे मिलजाने से हिन्दुस्तान को कोई लाभ नही है तब हम क्यों इस बात को स्वीकार न करें कि सरकार की सरासर बे इन्साफी है कि बम्बई के सौदागरों की एक कम्पनी का पक्ष कर ब्यर्थ एक निर्बल पर अपना बल प्रगट किया जाता है बहादुरी ओर मर्दानगी तब थी कि काबुल ओर रशिया पर इसी तेज़ी के साथ झुकते सो वहां तो मेउं मेउं ओर यहां शेर की झपट राज नैतिक चतुराई इसी का नाम है ॥

——:०:——

# मालटा का नीबू

—:o:—

इस नीबू की जन्म भूमि मालटा टापू जो इटली के पास है वहां यह वहुतात से फलता है यहां के नीबू से यह दो गुना बड़ा होता है ठीक जैसा यहां का शरबती नीबू होता है पर ऊपर का छिकला इस नीबू के छिकले से बहुत मोटा होता है—महक इस्की बड़ी मीठी होती है पर रस इसका महा खट्टा होताहै—माल्टा में यह बहुत जल्द बढ़ता है और फलता है हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त में इसकी खेती बड़ी सुगमता से हो सक्ती है इसका फायदा योरोप के लोगों को कुछ २ मालूम था और दवा की तरह काम में लाया जाता था पर डाक्टर लोगों ने बियाने औषध के सम्बन्ध में इसका उपकार और अपकार दोनो को भरपूर जांच कर निश्चय किया कि इस नीबू में बड़े २ फायदे हैं—शहर इटावे में इसकी बड़ी खेती होती है—इस फल के सेवन से जो लाभ है उसे डाकृरों ने यों लिखा हैं—कैसा ही जीर्ण ज्वर हो इसके ३ दिन के सेवन में छूटने लगता है सन्निपात ज्वर की भी महा औषधी है इसके और भी वहुत लाभ कारी गुणो को खोज डाकृर लोग कर रहे हैं—इसे सुरक्षित रखने के लिये इसका शरबत बना लेना चाहिये क्योंकि सब ऋतु में ताज़ा फल नहीं मिल सक्ता—यह जाड़े के दिनो में फलता है इसके रस में नमक डाल कर भी रख सक्ते हैं पर नमकीन रस में उतना गुण नही है जितना शरवत में है जब हरा नीबू न मिल

सके तो ४ माशे इस अरक को छटांक पानी में घोल कर पिला दे और नीबू निम्न लिखित रीति से रोगी को दे—एक मालटा नीबू को मे छिलके के टुकड़े २ कर एक मिट्टी के बर्तन में डेढपाव पानी में आग पर जोशदे पाव भर पानी जल जाने पर उतार ले और रात भर ओस में रक्खा रहने दे भोर को कपड़े में छान रोगी को दो बार कर पिला दे—यह अरक प्राय: सब प्रकार के ज्वरों को फायदा पहुचाता है परन्तु जो ज्वर खांसी लिये हैं उस्मे कम फायदा करैगा ॥

# बड़े लाट साहब का हिन्दुस्तानी रियासतों में दौरा

—:o:—

हम नहीं समझते इस्मे कौन सा सरकार का या हमारा बड़ा लाभ सोंचा गया है कि बड़े लाट साहब प्रति बर्ष छोटी या बड़ी रियासतों में दौरा कर आगत स्वागत की तैयारियों में लाखों रुपया रियासत का खर्च करवा दिया करैं हमारे यहां के रजवाड़ों का योंही क्या फिज़ूल खर्च कम रहता है जो बारी २ दूसरे तीसरे बर्ष बाद एक भारी टैक्स या जज़िया उनसे उगाहा जाता है—जो यह कहा जाय कि लाट साहब उन २ रियासतों में घूम २ वहां का मुल्की इन्तिज़ाम कैसा है प्रजा वहां की किस तरह पर शासित होती हैं इस सब की देख भाल करते होंगे तो इसका पता सरकार को लाट साहब के दौरे से नहीं लग सक्ता—

लाट साहब जहांही गये वहांही मानो स्वर्ग से इन्द्र बरुण कुबेर उतर कर आये हों प्रजा पर चाहो जैसी बीतती हो रियासत में चाहो जैसी बद इन्तिज़ामी हो अपनी २ राजधानी को सूना पोती कवर को भांत सज धज कर उन्हे देखानाही पड़ता है भीतर २ उन की रियासत के क्या हो रहा है इसका पता क्योंकर लग सक्ता है—फिर इन दिनों समाचार पत्रों का जो ज़ोर है कि कहीं एक पत्ता भी खड़का कि ये लोग ले उड़े बिना प्रयासही प्रत्येक रियासत का सब हाल सरकार को घर बैठे मालूम हो सक्ता है तब दौरा करने की क्या आवश्यकता है और सब के ऊपर तो यह है कि अंगरेज़ी राज्य की प्रजा से रजवाड़ों की प्रजा बहुत अच्छी दशा में और खुश खुर्रम हैं—हमने रियासतों की रिआयों को कभी किसी तरह की शिकायत करते न सुना अंगरेज़ी राज्य की नई अभ्यता और रिफाइम मेंट उनमे नहीं पैठा बला से उन्हे इसकी चाह भी नहीं है हमो लोग इस सभ्यता को लेकर क्या सुख उठाया एक फूहर मसल है ( पेट करे कांव२ मांग मागे टिकुली ) लाट साहब को ऐसीही दीनानुकम्पा मंजूर है तो दिहातों मे घूम २ कर देखें वुभुक्षित ग्रामीणों की क्या दशा है किस तरह पर उनका कालक्षेप होता है पहले घर में दिया जलाय तब मसजिद में जलाना चाहिये ॥

—:०:—

# उल्का पतन।

——:०:——

२० नवम्बर को रात में आकाश से अनगिनत तारे टूटते हुये दिखाई दिये सांझ से आधी रात तक तो इनके टूटने का बड़ाही ज़ोर रहा — हमारे आर्य शास्त्रों मे इस अद्भुत दृश्य को उल्कापात कहते हैं और अंगरेज़ी मे उल्का को मीटियर या शूटिङ्ग स्टार कहते हैं। वाराही संहिता आदि फलित ग्रन्थों मे उल्का के कई एक नाम और लक्षण लिखे हैं परंतु वह सब उल्का पात के शुभा शुभ फल के सम्बन्ध मे लिखा गया है उल्का क्या है और क्यों देखाई देती हैं इसका हेतु कुछ नही बतलाया — यूरोप के बिद्वान् खगोल बिदोंने इसका बहुत कुछ अनुसन्धान किया है यद्यपि इस अद्भुत दृश्य plincmenon का उन्हें भी अब तक ठीक २ पता नहीं लगा फिर भी उल्का क्या हैं और क्यों गिरती हैं इसकी बहुत दूर तक खोज की है। संभव है कि केतु या दूसरे बड़े ग्रह जो बहुधा दूसरे ग्रह से टक्कर खाकर चूर २ हो जाते हैं या सूर्य के समीप पहुंच जाने से भस्म हो सूर्य मण्डल मे गिर जाते हैं ये उल्का ये उन्हीं ग्रहों के चूर या टुकड़े हैं जो हमारी पृथ्वी पर गिरते हुये देख पड़ते हैं — सन् १८६६ ई० मे १३ नवेम्बर को रात के समय इङ्गलेंड मे एक बड़ा उदय दर्शन उल्काओं का हुआ कई घण्टे तक संपूर्ण आकाश जिस्के प्रकाश से दीप्त रहा यहां तक कि

उल्का पतन बन्द हो जाने पर भी देर तक प्रकाश की धारा बनी रही ग्रीनिच की प्रसिद्ध नक्षत्र शाला में ६ सहस्र उल्का गिनी गईं इस्के ३३ वर्ष पहले उसी रात को उत्तर अमेरिका वालों को इसी प्रकार की उल्काओं की अनीक दृष्टि गोचर हुई ऐसा उदय और भयावना उल्का पात पहले कभी नहीं मनुष्य की स्मृति पथा रूढ़ हुआ था – एक खगोल बिद ने लिखा है कि इसमे वहुत से टूट ते हुये तारे शुक्र से भी बड़े और चंद्रमा के आधे जान पड़े और ६ घण्टे में २४०,००० तारे टूटते हुये गिने गये सूक्ष्म परीक्षा से यह भी जाना गया कि वे सब एकही स्थान से आये थे और हमा रे वायुमंडल से जो ५० मील के लग भग पृथ्वी के चारों ओर है कुछ सम्बन्ध नहीं रखते थे अर्थात् ५० मील के अन्तर्गत नहीं थे किन्तु उसके बाहर से जहां तारागण चक्कर करते हैं और नक्षत्र सूर्य की प्रदक्षिणा मे निरवच्छिन्न प्रवृत्त रहते हैं उस स्थान से उनका आग मन हुआ ये उल्कायें यद्यपि हमारे वायुमण्डल के बाहर से चलीं परन्तु जब तक वायु मण्डल मे उनका प्रवेश नहीं हुआ तब तक हमा री दृष्टि पथ से अन्तर्हित रहीं जिस्से स्पष्ट हुआ कि ये उल्का केवल छोटे २ नक्षत्रों के समवाय से उत्पन्न हुई थीं और अपने मार्ग मे पृथ्वी से उनका सङ्घट्ट होगया था अर्थात् अत्यंत सूक्ष्म नक्षत्रों का झुण्ड सूर्य की परिक्रमा करने में हमारे वायुमण्डल में हो के जाता था उसी का दर्शन उस रात को अमेरिका मे हुआ – अब उसी प्रकार की उल्काओंकि सेना का दर्शन ठीक ३३ वर्ष पीछे इङ्गलैण्डमें जब हुआ तो खगोलज्ञों ने यह निश्चय किया कि और नक्षत्रों की भांति उल्का भी नक्षत्र हैं अण्डाकार उनका क्रान्तिवृत्त अर्थात् चलने का मार्ग है

और ३३¼ वर्ष में ये एक बार सूर्य की परिक्रमा कर आती हैं इन की धारा एक अरब पचास मील लम्बी चालीस ४० लाख मील चौड़ी और १२ लाख मील के मोटाई जानी गई है उल्का इतने अन्तर पर होती हैं कि दो २ के बीच सौ २ मील का अन्तर कहा जा सक्ता है गति इन उल्का ओं की ३० मील फी सेकेण्ड अनुमान की गई है — ऊपर लिख आये हैं कि हमारी पृथ्वी के चारो ओर एक प्रकार का वायुमण्डल है ये उल्काये जब उस वायु मण्डल के भीतर प्रवेश करती हैं तो जैसा लोहे की गाड़ी की पहिआ रगड़ खाते २ धिक उठती है उसी तरह वायुमण्डल से अपनी अत्यंत वेग गति के कारण रगड़ खाय उल्काये भी धिक उठती हैं और जैसा यह एक प्राकृतिक नियम है कि पदार्थ गरमीकी चरम सीमा को पहुंचता है तो उसमे प्रकाश उत्पन्न हो जाता है इस नियम के अनुसार लोहा आदि कई एक धातु जिनसे उल्काये बनी हैं अत्युष्ण हो प्रकाशमय पिण्ड देख पड़ते हैं होते २ पिघल कर भाफ के आकार में इस्का बहुत सा हिस्सा परिणत हो जाता है यही कारण है कि उल्का पतन के साथही बड़ा प्रकाश चारों ओर थोड़ी देर के लिये छाया रहता है — आग की चिनगारी के समान कोई २ उल्का तो तौल मे केवल दो ग्रेन अर्थात एक रत्ती के लग भग होती हैं— गन्धक-फाश्फोरस कारवान टिन लोहा तांबा शीशा निकिल मेगनीशियम सोडियम आदि कई प्रकार की धातु इसमे अब तक प्रगट की गई हैं इन मे लोहा सबसे अधिक रहता है कभी को पृथ्वी की वेग गति के कारण उल्काओं की गति का वेग कुछ रुक या टूट सा जाता है तब हमारे वायुमण्डल में उल्काओं की इतनी रगड़

नहीं होती कि जिस्से उस दरजे को गरमी पैदा हो सके जो पदार्थों को पिघला कर भाफ कर सके तब ढोके के ढोके एक साथ कई मील तक इन उल्काओं के गिरा करते हैं कभी को इस प्रकार के ढोकों के गिरने समय बड़ा प्रकाश और शब्द सुनाई देता है १८५८ की १४ नवम्बर को न्यूजरसी टापू पर दिन में ऐसाही एक बड़ा ढोंका आ गिरा जिस्के गिरने के समय इतना शब्द हुआ मानो हज़ारों तोप एकही साथ किसी ने छुटा दिया हो — १८०३ में अप्रैल महीने मे फ्रांस के नारमण्डी इलाके मे दो बजे दिन को उल्का पात के पहले बड़ा शब्द सुन पड़ा तब एक बड़ी भारी उल्का आकाश मे देख पड़ी थोड़ी देर बाद २००० छोटे २ टुकड़े पत्थरों के गिरते हुये देख पड़े जो इतने गरम थे कि छूने से हाथ जलता था ६ मील की चोड़ाई और ९ मील की लम्बाई में ये पत्थर गिरे उनमे एक पत्थर बहुत बड़ा था — ऐसाही एक बार आस्ट्रिया देश के हंगरी सूबे में १८६६ की ९ जून को एक पत्थर इतना बड़ा गिरा जो तोल मे ७ मन का था और १००० छोटे २ टुकड़े गिरे — हम लोगों में जो बिजली का लोहा प्रसिद्ध में वह यही लोहा है जो बड़ा स्वच्छ और निखालिस लोहा होता है इस लोहे की तलवार बहुत अच्छी बनती है बहुधा उल्कायें नवम्बर मास मे अधिक गिरती हैं इस्से इन उल्काओं को अङ्गरेजी मे। नोविम्बर शवर। नवम्बर महीने की झड़ी भी कहते हैं — इस आशय को पहले एक बार हम छाप चुके हैं हाल मे उल्का पात होने पर इसे सामयिक समझ फिर रख दिया पाठक जन हमें क्षमा करेंगे।

——:०:——

# । क्या वेश्या शहर की आवादी का एक हिस्सा नहीं हैं ।

—:०:—

किस सभ्य देश मे वेश्या नहीं हैं और ये कब न थीं मृच्छ॰ कटिक मालविकाग्निमित्र प्रभृति नाटकों में बसन्त सेना जो उस नाटक की मुख्य नायिका है कौन थी अथवा जाने दीजिये स्वर्ग में तिलोत्तमा उर्बशी प्रभृति कौन हैं पुराणवाले जो लोगों को धर्म पथ और सुमार्ग में लगाने का बाना बांधे हुये हैं वे भी इन पर लट्टू हो रहे हैं तब वेसिर पैर की यह अकथ कहनी क॰ हने का क्या प्रयोजन है यह क्योंकर संभव हैं कि जब एक शह र की मनुष्य संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती जाती है तब एक भा ग उस शहर की आवादी या रौनक का उजाड़ कर दिया जाय — भला और बुरा पाप और पुण्य का सनातन से साथ चला आया है बल्कि सच पूछिये तौ दो विरुद्ध धर्मावलम्बियों में जब तक एक विरुद्ध धर्मावलम्बी का दूसरे के साथ मुकाबिला न आन पड़े तब तक उस भलाई का जौहर क्योंकर खुल सक्ता है ( विकार हेतौ सति विक्रियंते येषां न चेतांसि त एव धीराः ) काठ का पुतला रुप ये वाला सूम है किस लिये जैसी उस की कमाई है वैसे में जाती है तब हमे व्यर्थ खेद प्रकाश करने का मौका क्या है भला किसी तरह पर रुपये वाले सूमड़े को रुपया खोने की चाट भी तो पड़े — रंडि

यों को नौ सौ हजार की महीने में आमदनी की कौन कहे अङ्गरेजी शिक्षा के प्रताप से जैसा इन दिनों ये भूखों मरतो हैं और इन की बे कदरी है वैसा दूसरे पेशे वालों की नहीं है अच्छे पढ़े लिखे लोगों की मण्डली में ये कभो आदर नहीं पाती वाजिबो तो यों है कि पण्डित और पतुरिया इन दोनों पर इस बदले हुये ज़माने में छिप कली सवार है — रण्डियां दूसरों की बहू बेटियों को फुसलाया करती हैं यह भो निरी अनर्गल बात है इस अङ्गरेज़ी राज्य में इस २ तरह की अन्धेर होने की कभो सम्भावनाही नहीं हो सक्ती — पत्र सम्पाद कों का यह काम है कि जो बात जैसी हो उसे यथार्थ और यथा स्थित चित्र में उरेह कर लोगों को प्रगट करे वे बुनियाद बात पर बड़ी भारी इमारत खड़ो कर देने से लाभ क्या हम तो किसी भले आद मियो के महल्ले में इस प्रकार के अखाड़े नहीं देखते और जिनके परोस में ऐसे अखाड़े हों भी उन्हें आपही भले आदमी कहिये — आप क्या चाहते हैं कि लाटसाहब कमिश्नर अथवा कलक्टर वेश्या ओं को पकड़ २ काले पानी रवाना करदें अथवा ब्लैकहोल में उन्हें बन्द कर छोड़ें गवर्नमेंट को बजरिये कानून इस किसम का इख्ति यार कहां है — लाटसाहब तक तो आप चिल्ला गये और इस बात पर ध्यान न दिया कि आप के यहां के रुपये वाले हजारों रुपये जान बूझ कर ऐसे मकानों में लगाते हैं कि जिन्में वेश्यायें टिकें और दोगुनी चौगुनी किराये की आमदनी बढ़े — इसमें सन्देह नहीं शहर की रौनक और आबादी के बढ़ने के साथही साथ वेश्यायें भी अवश्य बढ़ैंगी न इस्की इलाज म्युनिसिपलिटी कुछकर सक्ती है न गवर्नमेण्ट के हाथ में इस्का कुछ उपाय है तब

यह व्यर्थ का आप का दांत का किरना है किरिये - शेष मे सम्पादक जो से निवेदन है कि इस्का उत्तर जो कुछ लिखें तो कोमल शब्दों में लिखें गरमी में आय जामे के बाहर न हो पड़ें हम तो ऐसे २ बिषयों की समालोचना करना अपनी सुयोग्य लेख नो का कर्त्तव्य कर्म नहीं समझते पर क्या करें अपने दो एक प्रेमी मित्रों के अनुरोध से अब कि बार करनाही पड़ा ।

## बर्म्मावालों को क्या कहना चाहिये

—:०:—

ये बर्म्मावाले मनुष्य हैं अथवा कुत्ता बिल्ली से भी हीन कोई क्षुद्र पशु विशेष हैं जो बिना ज़रा भी सींग पूछ हिलाये अंगरेजी शासन के बशी भूत होगये—हम लोग तो अपनेही को अत्यन्त क्षीण हीन दुर्बल और निःसत्व समझे हुये थे किन्तु ये बर्म्मा देश निवासी हमसे भी अधिक निष्पुरुषार्थी मालूम होते हैं—माना कि उनका राजा थीबा महा अत्याचारी और प्रजा को दुखदाई था तौ भी स्वत्वाभिमान कौमीजोश भी तो कोई चीज़ है जिस्से वे सर्वथा शून्यही हैं— खेद का विषय है कि युगान युग का यह एक स्वच्छन्द राज्य ब्रिटिश सिंह का पल भर मे पलक भांजते २ ग्रास होगया हमें विशेष पश्चात्ताप इस बात का है कि हमारे पार्श्ववर्त्ती देश हमसे भी अधिक गये बीते हैं—जिस श्वर्णपाद महाराज के राज्य में यह एक आम दस्तूर है कि अपने राजा को प्रजा पैर

नहीं देखाती उन्हें अंगरेजी सेना का एक साधारण अफसर सामने बूट खट २ कर १० मिनिट मे कैद कर लिया किसी से कुछ न बन पड़ी दीप्तिमान प्रताप इसेही कहते हैं ॥

## । डेढ़ बकाइन मियां बाग तले ।

—:०:—

हमारे सम्पादक जी स्वामी सहजानन्द सरस्वती को बीच मे छोड़ आर्य समाज पर बुरी तरह मुह आये हैं — आप के मित्रगणों के साथ शठस्य शठ्यं करना उचितही था जान पड़ता है मित्रगण जिज्ञासू होकर नहीं गये थे किन्तु सहजानन्द को ठट्ठों मे उड़ा ने गये थे — यह दुनियां एक सरांय है इसमें न जानिये कौन किस रंग मे रंगा फिरता है आप को क्या प्रयोजन जो एक न एक आदमी से भिड़ खड़े होते हैं — आर्य समाज मे जो उपदेश होता है और जो कुछ आर्य समाज ने किया वह आप अकेले इस ज़िद्दी मिज़ाज के साथ दस बार जन्म लेकर नहीं कर सक्ते — यह किसे मालूम नहीं है कि ब्राह्म समाज आर्य समाज थियोसोफी तीनोंने हमारे देश मे नये इसाई होने के स्रोत पर डांढ लगा दी है । दादूनान्किक कबीर सब अपने २ समय मे बड़े माहात्मा और सुयोग्य हुये हैं उन महात्माओं की निन्दा आपही के मुह से शोभा देती है — यह क्या कि आप जो करें सो काम अच्छा दूसरा कोई कुछ करता हो तो उस पर दंश और ताना — आर्यों की करतूत और

पुरुषार्थ का कहां तक कोई होड़ करेगा आर्यों ने न जानिये कितने समाज पाठशाले और अनाथालय स्थापित कर दिये हैं आठ दस कोदन लड़कों का एक दफा आप ने चारी कर रक्खा है उस पर इतना नाज़ यह सब आडम्बर आपही से करते बन पड़े हम आप से भिड़ा नहीं चाहते किन्तु आप को चिताते हैं इन बातों से देश को तथा आप को कोई लाभ नहीं है न समाचार पत्रों का यह कर्तव्य कर्म है आगे आप की इच्छा ॥

## । लोकोक्ति ।

## । महा कबिमाघ से उधृत ।

—:०:—

श्रुतेरबे:चालयितुंक्षमेतक:दपातमस्काशद्मलोमसंनभ: ॥

सदा भिमानेक धनाहि मानिन: ॥

सतीव योषित्प्रकृति: सुनिश्चला पुमांस मभ्येति भवान्तरेष्वपि ॥

जात सारो पिखलवेक: सन्दिग्धे कार्य वस्तुनि ॥

महीयांस: प्रकृत्या मित भाषिण: ॥

कथापि खलु पापानां मल मश्रेयसे यत: ॥

क्रिया सम भिहारेण बिराध्यन्तं क्षमेत्तक: ॥

वद्ध मूलस्य मूलंहि महद्वैर तरो: स्त्रिय ॥

विधाय बैरं सामर्षे नरोरी य उदासते । प्रक्षिप्यो दर्चिषं कक्षे सेरतेते भिमारुतं ॥

अन्यदा भूषणं पुंसां क्षमालज्जेव योषित: । पराक्रम: परिभवे वैयात्यं सुरतेष्विव ॥

माजीवन्यः पराबज्ञा दुःखदग्धेपि जीवति । तस्या जननि रेवास्तु जननी क्लेश कारिणः ॥

पादा हतं यदुत्थाय मूर्द्धान मधिरोहति । स्वस्था देवाप मानेपि देहिनस्तद्वरं रजः ॥

असम्पादयतः कंचि दर्थं जाति क्रिया गुणैः । यदृच्छा शब्द वत्पुंसः संज्ञायै नाम केवलं ॥

तुल्ये ऽपराधे स्वर्भानु र्भानु मन्तं चिरेणयः । हिमांशु माशु ग्रसते तन्मृदिन्मः स्फुटं फलं ॥

अङ्का ऽधिरो पित मृगश्चन्द्रमा मृगलांछनः । केशरी निष्ठुरः क्षिप्त मृग यूथो मृगा धिपः ॥

सर्वः स्वार्थं समीहते ॥

अनुज्झितार्थ सम्बन्धः प्रबन्धो दुरुदाहरः ॥

आरभेते ऽल्पमे वाज्ञाः कामंव्यग्राभवन्तिच । महा रंभाः कृत धिय स्तिष्ठन्तिच निरा कुलाः ॥

उपाय मास्थितस्यापिनश्यन्त्यर्थाः प्रमादतः । हन्तिनो पायग्रस्तो ऽपिशयालु र्मृगयु र्मृगान् ॥

मृदुव्यबहितं तेजो भोक्तु मर्थो न्प्रकल्पते । प्रदीपः स्नेह मादत्ते दशया भ्यन्तर स्थया ॥

अयथा वलमारंभो निदानं क्षय सम्पदः ॥

बृहत्सहायाः कार्यान्तं क्षोदीया नपि गच्छति । संभूया म्भोधि मभ्येति महा नद्या नगापगा ॥

महात्मन्तो ऽनुगृहणन्ति भज मानान् रिपूनपि । सपत्नीः प्रापयत्यब्धिं सिन्धवो नग निम्नगाः ॥

क्षणे २ यन्नवतां विधत्तेतदेव रूपं रमणीयतायाः ॥

सर्वः प्रियः खलु भवत्यनुरूप चेष्टः ॥

नान्यस्य गन्धमपि मान मृतः सहन्ते ॥

शास्त्रं हि निश्चित धियः क्वन सिद्धि मेति ॥

मन्दो ऽपिनाम न महा नव गृह्य साध्यः ॥

परि भवो ऽरि भवो हिसुदुः सहः ॥

न परिचयो मलिनात्मनां प्रधानं ॥

औचित्यं गणयति को विशेष कामः ॥

उद्वृत्तः कइव सुखाबहः परेषाम् ॥

लघवःप्रकटी भवन्ति मलिनाश्रयतः ॥

दर्धाति ध्रुब क्रमशएव न तुद्युति शालिनो ऽपि सहसो पचयं ॥

महतां हिसर्ब मथवाजनातिगम् ॥

प्रभुचित्त मेव हिजनो ऽनु बर्तते ॥

अनुहुंकुरुते घन ध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केशरी ॥

प्रति कूलता मुप गते हिविधौ विफलत्व मेति बहुसाधनता । अव-

लम्बनाय दिन भर्तु रभू न्नपतिष्यतः कर सहस्र मपि ॥

सहजा न्धदृशः स्वदुर्नये पर दोषेक्षण दिव्य चक्षुषः । स्वगुणोच्च गि-

री मुनि व्रताः पर बर्ण ग्रहणे ष्वसाधवः ॥

जितरोष रया महा धियः सपदि क्रोध जितो लघुर्जनः । विजिते न

जितस्य दुर्मते र्मतिमद्भिः सह का विरोधिता ॥

—:०:—

## । जादू की स्याही ।

तूतिया और नौसादर दोनों के बराबर हिस्से को पानी मे घोल कर यदि कागज़ पर लिखा जाय तो पहले न देख पड़ेगा परन्तु ज़रा सा आंच दिखाने से पीले रङ्ग के अक्षर देख पड़ें गे । छटांक गन्धक के तेजाब को एक बोतल पानी मे मिला के खूब हिलाओ जब ठंढा हो जाय क्योंकि गन्धक का तेजाब मिलाने से पानी गरम हो जाता है तब उस्से लिखने से पहले यही मालम होगा मानों कुछ लिखाही नहीं परन्तु आंच दिखाने पर ऐसे काले अक्षर उपटें गे जैसा ब्लूब्लेक स्याही से लिखने पर उपटते हैं।

छटांक ब्राज़ीली लकड़ी डेढ़ सेर सिरका मे आग पर चढ़ा दो और चलाते जाओ जब आधा सिरका जल जाय तो उतार लो और उस्मे छटांक फिटरी को बुकनी छोड़ दो बड़ी सुन्दर लाल रङ्ग की स्याही तैयार हो जाय गो ।

## —मजलिस हैवानात—

अब के तो जनाब हमने खूब ही सैर की—खूब ही घूमे जिन्नात के पादशाह हज़रत सुलेमान ने हम को एक परी के पर नोंच कर बख्श दिये थे जिनके ज़रिये से आस्मान की राहको एक ही हफ्ते में दुनिया का दौरा कर डाला ० दौरे से लौट कर काले पानी में होता हुआ अपने बतन को आ रहा था कि रास्ते में एक अजीब माजरा देखने में आया—मुल्क बङ्गाल के पूरब की तरफ़ एक बड़ा भारी दल दल और जङ्गल है—जिस्को सुन्दर बन पुकारते हैं—उस्के ऐन बीच में देखता क्या हूं कि कई मील के घेरे में कोई अनगिनत खेमें खड़े हुये हैं क़रीब जा कर देखा तो एक बड़ा भारी शहर बसा हुआ है

जिस्की रौनक़ और इमारतों के आगे लंडन, पेरिस और कलकत्ता तो निरे बच्चों के खेल से मालूम देते थे—ओह हो क्या ही सफ़ाई और क्या ही आराइश कि वल्लाह वल्लाह – सिर्फ़ एक बात से आप उस शहर की खूब सूरती और ज़ेबाइश का क़यास कर सक्ते हैं कि उस्की गली कूचों और सड़कों पर फ़र्श सब्ज़ ज़मुर्रद का बिछा हुआ था ० और हर एक खेमे के आगे एक २ बाग़चा जिस्के दर्मियान एक स्फटिक का तालाब जिस्में पानी की जगह इतर भरा हुआ जिसकी महक से अंडमान आइलेंड तक हवा में खुश बू छाई हुई थी—मगर अगर हर एक चीज़ का बयान करने बैठेंगे तो हमारी आपकी दोनों की ज़िन्दगी ही ख़राब जायगी – इस्से मतलब ही की बातें सुनानी चाहिये यानी वह बातें जिन्हें आप की कुन्द अक़ल झट पट समझ सक्ती है –

। जिस वक़्त हम इस खेमों के शहर के पास पहुंचे सूरज बहुत देर के छिप चुके थे ० लेकिन जवाहिरात की दमक से वहां दोपहर से भी ज़ियादा उज्याला हो रहा था – हमें शहर के देखने का बड़ा शौक़ बढ़ा – झट हज़रत सुलेमान की सिखाई बिद्या के ज़ोर से मक्खी बन दाख़िल हुए – हम को तीन खेमे बहुत बड़े नज़र आये – उन्मे से दो में तयारी तो बहुत ही बढ़ कर थी । पर खाली थे – तीसरे के गिर्द अंपोड के चार दर्वाज़ों पर दो २ बुलडोग कुत्ते सन्तरियों की तरह इधर से उधर टहल रहे थे – लेकिन हमें कुछ रोक ही न सक्ते थे – भीतर जाकर देखा कि बंगले के १०८ स्वर्णमय दरवाज़ों मेंसे किसी पर चीते । किसी पर भेड़िये । कहीं तेंदुए । कहीं चरख़ । कहीं लोमड़ी

कही बनबिलाव । ग़रज़ यह कि हर क़िस्म के दरिन्द जानवर बड़े ग़ुरूर और होशयारी के साथ चहलक़दमी करते हुए पहरा दे रहे हैं — सच समझिये उस स्वर्ग तुल्य नगर के भीतर और ऐसे रमणीक बितान पर इन भयानक जन्तुओं के देखने से जो आश्चर्ययुक्त भय हुआ उस्का केवल अनुभव ही हो सक्ता है — अगर मैं आदमी की शकल में होता तो न जाने के २ ज़र्रे मेरे बदन के हर एक जानवर के हिस्से में आते ! लेकिन मैं निर्भय सीधा डेरे के अन्दर घुस कर क्या अचंभा देखता हूं कि एक ख़ालिस पुखराज के चौड़े कोचपर एक शेर सो रहा है — देखते ही सन्नाटा हो गया — पर मैं तो मक्खी था — झट उड़ कर बाहर हुआ और एक गली में पहुंचा — गलियां क्या थी इन्द्र पुरी के बाज़ार थे — लेकिन उन देव योग्य खेमों में भेड़ें । बकरी । बिल्ली चूहे । गधे । खच्चर । घोड़े । ऊंट । गाय । बैल । नीलगाय । भैंसे । हिरन । गोह । कहांतक गिनाया जाय । हर क़िस्म के जानवर चैन के साथ ऐश में मशग़ूल थे — सैर करते २ मैं एक तालाब के पास पहुंचा तो देखता हूं कि एक पेड़ की घनी डालियों में से कोई जानवर लाल २ आखें चमका रहा है — क़रीब जाके ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि एक बहुत पुराना घुग्घू छुपा हुआ बैठा है — मैं समझ गया कि रोशनी अधिक होने से यह बिचारा यहां से उड़ नहीं सक्ता — और सोचा कि इसके साथ मित्रता करने से इस अद्भुत स्थान का सब हाल मिल जायगा — इसी लिये उसी की बोली में कहने लगा — "ऐ बुज़ुर्ग घुग्घू हम तुम को इस रोशनी की जगह से निकाल सक्ते हैं अगर तुम हमें जो कुछ

हम पूछें ठीक २ बतला देने का वादा करो—यह सुन कर पहले तो घुग्घू चौंका, पर थोड़ी देर में (वादा किया इसशर्त्त पर कि तुम हमें इस चका चौंध से बिल्कुल बाहर निकाल दो (मैंने कहा) अच्छा मैं मक्खी हूं मुझे अपनी पीठ पर बैठा के जिधर मैं कहूं तू उधरही को उड़ चल—मैं उसकी पीठ पर सवार हो दक्खिन की ओर जो चला तो देखता हूं कि एक लोहे के लट्ठों के घेरे में सैकड़ों हाथी बंधे हुये हैं—और बीच में एक सफ़ेद हाथी बंधा है जिसके आस पास कई एक छोटे बड़े और भी सफ़ेद हाथी खड़े हैं—मैं देख भौचक रह गया—और उल्लू से पूछा ये [illegible] यहां इतने क्यों इकट्ठे हैं? उल्लू—क्या तुम नहीं जानते शेर [illegible] ह ने पूरब के तमाम जानवरों को फ़तह कर आज दर्बार किया था जिसमें तमाम दुनिया के चौपाये बुलाये गये थे॥

मैं—लेकिन और जानवरों को तो ठहरने के लिये ऐसे २ उमदा डेरे दिये गये—हाथी बिचारों को क्यों एक हाते में बन्द कर दिया॥

उ०—मालूम होता है तुम को कुछ हाल दुनियां का नहीं मालूम सब जानवरों को फ़तह करने के बाद अबकी साल शाहनशाह ने हाथियों को शिकस्त किया है—यह सफ़ेद हाथी इनका राजा है जिसे कि शाह ने मय उसके खान्दान के कैद कर लिया है॥

मैं—मगर तू कहता है कि दुनियां के सब जानवरों को निमंत्रण दिया है—लेकिन बहुत से जानवर हम को यहां नहीं दिखाई देते मसलन न तो कोई रीछ है न दुम्मा या पहाड़ी बैल?

उ०—अजी शेर ने तो इन को भी बुलाया था वरन उनके लिये तो दो बड़े २ बंगले अपने पास सजाये थे—पर आये ही नहीं॥

में — क्यों ?

उ०—क्योंकि उन को० + ∷+∷+∷+∷+∷+∷+∷+∷+∷+∷+

इतने में एक हाथी ने ऊंची सूंड़ करके ऐसी चिंघाड़ मारी कि न वहां उल्लू और न हम०—हम तो असल में अपनी चारपाई में थे — इतने में सबेरे के ६ की आवाज सुन पड़ी — सब खतम ॥

—:०:—

## विज्ञापन

—:०:—



हिं० प्र० का मूल्य अग्रिम बार्षिक ३।≠)

पीछे देने से ४।≠)

प्रयाग प्रेस में मुद्रित हुआ

## श्री हिन्दी प्रदीप का उद्देश

---

**श्री** हरि पद रज कृपा देश दुर्दशा सुधारन ।
**हि** दू गन मन गुहा महा तम तोम निवारन ॥
**दी** प देश नव नेह नेह भरि भरि तहं बारन ।
**प्र** बलित उर्दू मुख कवलित हिन्दी उद्धारन ॥
**दी** न प्रजा दुख हरन नागरी करन प्रचारन ।
**प** रपद गत आरत भारत की आपद टारन ॥
**का** व्यकला कौशल्य शिल्प विद्यादि उचारन ।
**उत्** तम उत्तम विषय देश भाषा सञ्चारन ॥
**दे** श काल नियमानुसार मारग पग धारन ।
**श** तविधि निज उद्देश शेष लों पूरन कारन ॥

---

# हिन्दीप्रदीप।

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप समथिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जनवरी सन् १८८६ } { ज़िल्द ९ संख्या ५

इलाहाबाद
पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ९ संख्या ५ | १ जनवरी सन् १८८६ ई०

# ॥ आशा ॥

—:०:—

हमारे यहां काम को मनसिज कहा है—यदि मनसिज शब्द का अर्थ केवल इतनाही लिया जाय कि मन के उत्पन्न हुये भाव तो हमारे जान आशा से बढ़ कर मीठा फल देने वाली हृदय की बिविध दशाओं में से दूसरी नहीं हो सक्ती—यद्यपि हमारे यहां कबियों ने स्मर की दश दशा माना है किन्तु उस रास्ते को छोड़ मोटे ढंग पर ध्यान दीजिये और मान लीजिये कि काम या तो उस पशुबुद्धि रूपी मोहान्धकार का नाम है जो मनुष्य के लज्जा नम्रता आदि गुणों की मीठी रोशनी का नाश कर देता है और इस दशा में मनुष्य के जाति मात्र का कलङ्क है या कामही को हम संसार के सब संभव असंभव प्यार मात्र का नमूना मान लें तब भी यह नहीं कह सकते कि काम के इन दो रूपों का जो हमने नाम लिया है उसके पाश में उतने लोग फंसे हों जितने लोग कि स्वेच्छया आनन्द पुर्व्वक अपने को आशा के पाश में बांधते हैं—इस तरह

से भी देखिये तो काम एक रोग है जिसके चाहो थोड़े से सुख भी हों पर उसके रोगी उसकी दवा अन्यत्र ही ढूंढ़ते हैं और आशा को देखिये तो स्वयं एक ऐसे बड़े भारी रोग की दवा है कि जिसकी दूसरी दवा सोचना असंभव है और वह रोग नैराश्य है कि जिससे दारुणतर क्लेश की दशा मनुष्य के चित्त के लिये होही नहीं सक्ती इस वास्ते यह जो हमारे यहां की कहावत है कि 'आशाहि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखं, यह बात हमारे समझ में नहीं आती है- यदि सोचिये कि बर्षके भिन्न २ मौसमों के तरह मनुष्य के हृदय में भी तरह २ की दशाओं का दौरा हुआ करता है और ग्रीष्म बर्षा और शिशिर एक से एक बढ़ कर दुखदाई ऋतु मौजूद हैं तो यही कहना पड़ेगा कि नैराश्य के विकट शीतकाल के रात्रि के बाद आ-शाही रूपी ऋतुराज के सूर्य्य का उदय होता है—हृदय को यदि प्रमोदउद्यान कहिये तो उसका पूर्ण सुख आशाही रूपी बसन्त ऋतु में है—

क्या ईश्वर की महिमा इस में नहीं देखी जाती कि दुखी से दुखी जनों का सर्व्वस्व चले जाने पर भी आशा से उनका साथ नहीं छूटता। यदि मान और प्रतिष्ठा वह रत्न है जिसको उसके भक्त धन के चले जाने पर भी गांठ बांधे रहते हैं तो सोचिये कि वह कितनी प्रिय वस्तु होगी, जो दैवात् प्रतिष्ठा भंग होने पर भी मनुष्य के हृदय को ढारस और आराम देती है—आशा को यदि मनुष्य के जीवन रूपी नौका का लंगर कहैं तो ठीक होगा क्योंकि जैसा बड़े से बड़े तूफान में जहाज़ लंगर के सहारे से स्थिर और सुरक्षित रहता है वैसाही मनुष्य भी अपने जीवन में घोर बिपदाओं

को झेलता हुआ आशा के सहारे से स्थिर और निश्चलमन रहता है—खेयाल कीजिये किसी माहान्प्रबन्ध का कुल बोझ उठाने वाले को अपने कृतकार्य्य होने के लिये आशा से बढ़कर पुश्तपनाही देने वाला और कौन है ?—मनुष्य के जीवन में कितनाहो बड़ा से बड़ा काम क्यों नहो उसके करने की शक्ति मात्र का उद्भव या प्रसवभूमि यदि इस आशाही को कहें तो कुछ अनुचित नहोगा क्यों-कि किसी बड़े आरंभ में आशासे बढ़कर बुद्धिमता की अनुमति देने वाला और कौन मंत्री होगा—मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को बुद्धिमानों ने बिबिध भावनाओं के अभिनय की केवल रङ्गभूमि माना है—परदे के पीछे धीरे से वह शब्द बतलादेने वाला कि जिससे हम चाहो जो पात्र बने हो और चाहो जिस रस प्रधान नाटक का अभिनय अपने चरित्र द्वारा हम करते हों उसमें दृढ़ता पूर्व्वक लगे रहने को इस आशा के अतिरिक्त दूसरा और कौन प्राम्पटर है ? और यदि संसार को भिन्न २ कलह की रणभूमि मानें तो उस अप-रिहार्य्य रणभूमि के घायलों के घाव पर मलहम रखने वाला जर्राह आशाही को कहना चाहिये—

जिस किसी ने संसार में किसी बात का यत्न न किया हो और किसी बस्तु की खोज में अपने को न डाला हो उससे बढ़कर व्यर्थ और नारस जीवन किसका होगा ? जब यह बात है तो यह भी बतलाइये कि किसी प्रकार के प्रयत्न मात्र की जान आशा को छोड़ किसी दूसरे को आप बतला सक्ते हैं ? क्योंकि कैसे संभवहै कि आदमी किसी प्रिय बस्तु की प्राप्ति के प्रयत्न में लगा हो और आशा से उसका हृदय शून्य हो ? किसी काम के अभिलषित परिणाम में अमृत का गुण भर देना यह शक्ति सेवाय आशा के और किस में

है ? संसार में जो कुछ भलाई हुई है या होगी उस सब का मूल सदा प्रयत्न है और इस प्रयत्न को जान आशा है—

क्या झूठी भी आशा से किसी को कुछ दुःख हो सक्ता है ! क्या झूठी आशा से नैराश्य अच्छा है ! नहीं नहीं—सच पूछिये तो ऐसी कोई बस्तु संसार में हई नहीं जिसमे नैराश्य अच्छा हो। बल्कि नैराश्य से बढ़कर बुरी दशा मन के वास्ते कोई नहीं है—यदि आशा केवल मृगतृष्णाही है तो बिल्कुल उम्मैद टूट जाने से तोभी अच्छोही है—अगर सोचिये कि इस आशा रूपी प्रबल बायुने हृदय रूपी सागर में कितनी दूर तक की तरङ्गें उठाया है तो कहीं उन तरंगों की अवधि नज़र न आवेगी—संसार मात्र इस आशा की रस्सी से कसा हुआ है इसे हम कई तरह पर साबित कर चुके अब आगे चलिये स्वर्ग और बैकुण्ठ क्या है। मनुष्य के हृदय में भांत २ की लालसा और आकांक्षा का केवल साक्षी मात्र—वास्तव मे स्वर्ग है या नहीं इसका तर्क बितर्क इस समय यहां हम नहीं करते कहने का तात्पर्य केवल इतनाही है कि स्वर्ग शब्द की सत्ता ही मनुष्य के लिये प्रबल आशा का सुबूत है क्यों कि जब इस बात को सोच कर चित्त दुखी होता है कि अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा ठीक न्याय चाहिये वैसा इस संसार मे हम नहीं देखते तो उसी बुद्धि को स्वर्ग के सुखों के द्वारा समझाने वाला आशा को छोड़ और कौन गुरु है—आशाही एक हमारा ऐसा सच्चा सुहृद् है जो लड़कपन से अन्तकाल तक साथ देता है और आशाही के द्वारा उत्पन्न वे भाव हैं जो हमको मरने के बाद की दशा के भी सोचने को ढीठ करते हैं ॥

हमको कुछ ऐसा मालूम होता है कि अपने मे आशा की

दृढ़ता चाहनाही मनुष्य के हृदय की प्राकृतिक दशा है—ध्यान दे कर सोचिये तो नैराश्य के काल मनुष्य के जीवन मे केवल क्षणिक हैं—नैराश्य के भाव मन मे उदय हे तेही चट्ट आशा का अवलम्ब मिल जाता है यदि पहले के समान सुखपूर्व्वक नहीं तो नये सिरे से आदमी जिन्दगी शुरू करता है "कितने समय के लिये आदमी नैराश्य को जी मे जगह देता है और कितनी जल्द फिर उसको निकाल कर बाहर फेंक देता है" सिर्फ यही बात इसका पक्का सुबूत है कि प्राकृतिक हित मनुष्य का आशाही मे है—आशा वह पुष्टई है जिसे खाकर जो काम कीजिये शिथिलता और आलस्य पास न फटकने पावेगी क्योंकि यह असंभव है कि आशा मन मे हो फिर भी आदमी हाथों से थाम सिर नीचा कर रंज मे बैठा रहे आशा की उत्तेजना यदि मन मे भरी है तो ऐसी कातर दशा आनेही न पावेगी—इससे यदि आशाही को आदमी ज़िन्दगी का बड़ा भारी फर्ज माने तो कुछ अनुचित नहीं है क्योंकि हम देखते हैं कि आशाही के विद्यमान रहने पर हम अपने सब फर्जों को पूरी २ तौर पर अदा कर सक्ते हैं पर इसी के साथही एक बात और ध्यान देने योग्य है वह यह है कि सामान्य आशा को अपने जीवन की दृढ़ता के लिये अपना साथी रखना और बात है और किसी एक बात की प्राप्ति की आशा पर अपने जीवन भर के सुख का निर्भर होना मानना दूसरी बातहै—पहले रास्ते पर चलने से चाहो जीवनमें हमे सुख का सामना हो या दुःखका हम दोनों मे एकसां दृढ़ हैं किन्तु दूसरे रास्ते पर चलने में यह चूक होगी कि हमने जिस आशा पर अपना बिल्कुल सुख छोड़ रक्खा था वह आशा यदि टूट गई तो हमारी हानि ही हानि है कहने का तात्पर्य यह कि जहां ईश्वर ने बहुत

से रास्ते मनुष्य की प्रकृति को दृढ़, सहन शील, और भिलन कारने के खोले हैं उन रास्तों में आशाही पर चल कर शनैः शनैः अपना कार्य सिद्ध करने को हम सब मे मुख्य कहेंगे—इस कारण मनुष्य को अपनी भलाई के लिये आशा से बढ़कर और क्या हो सक्ता है—और मित्र गणों को भी यदि उनको आवश्यकता हो तो आशा से बढ़कर और कौन भेंट दी जा सक्ती है। यदि अन्तकाल मे चिकित्सक आशाही के द्वारा रोगी को प्राण दान तक कर सक्ता है तो इससे बढ़कर गुण आप किस चीज़ मे पाइयेगा—सारांश यह कि इस संसार मे अपनी और दूसरे की भलाई का एक आधार मात्र आशाही है और परलोक तो हमने जैसा ऊपर कहा आशा का रूपही है—अब अपनी दशा को हम जब देखते हैं तो सब ओर से सहायशून्य दीन और अभागिनी हिन्दी के रसिक अपने को पाते हैं तो बतलाइये कि यदि यह न आशा होती कि इसके भी कदाचित् कभी तो दिन बहुरैंगे तो हम या हमारे समान दूसरे लोगों को इस ज़िन्दगी में क्या मीठा था जिस भरोसे कुछ भी सुख की आशा रखते—अस्तु हम भी यही आशा करते हैं कि यह लेख आप लोगों को कुछ न कुछ रोचक हुआ होगा—

## । भारत के दुर्दिन पूर्ण रीति से आ गये ।

—:०:—

लीजिये महाराणी का प्रोक्लेमेशन आज्ञा पत्र प्रकाश कर दिया गया कि बह्मा अंगरेज़ी शासन मे मिला लिया जाय—अब अनेक

सेशनपालिसी के पुन: प्रचार मे कुछ भी सन्देह बाकी न रहा—लार्ड डफरिन साहब वहां को ऐसा निगल बैठे कि डकार तक न आई हमारे उत्तर दक्खिन की कई एक रियासत पर भी टक टकी लगी हुई है ईश्वरही रक्षक है—यह भी न हुआ कि बर्मा सीलोन के समान सीधा इंगलेंड से सम्बन्ध रखता किन्तु यहांही के वाइसराय के आधीन रहा तो हमारेही समान दास बनकर उसे भी रहना पड़ेगा—अभी तक तो कलियुग का प्रथमही चरण रहा अब दूसरे चरण का आरंभ जानिये क्योंकि पार्लियामेंट महा सभा से वहां अब कोई आप का हितैषी न रहा नयेकन्सरवेटिव दल मे अब कि बार चुने २ हिन्दुस्तान के विपक्षी नियत हुये हैं तब हमारी भलाई की आशा उनसे क्यों कर हो सक्ती है+|∺ चार दिन की चांदनी फिर अंधियारा पाख+⁞⁞ लार्ड रिपन का समय चार दिन के लिये यहां सतयुग आ बर्त गया अब फिर वही अन्धेर की अन्धेरी रात मे टटोलते फिरिये ॥

## । अजान की हित की इच्छा भी ।
## अनहित है ।

अबोधिप्रहत हमारे अजान सम्पादक जी महाजनो पर बड़ा क्षोह और मैत्री भाव प्रकाश करते हुये सलाह देते हैं कि महाजन लोग अपनी २ बही रजिसटरी करा लें जिसमे बने महाजन और असली महाजनो मे विविध हो जाय हम कहते हैं केवल इतनेही से असली महाजनो की परख न होगी जो वास्तव मे महाजन हों वे अपनी २ पगड़ी पर एक कलँगी या सुरखाब का पर खोंस लें और गले में एक घंटी टांगलें ताकि नांदिया बैल के समान जब

वे चलें तो घंटी बजती चले हम नहीं जानते सम्पादक जी को क्या मंजूर है कि खुराफत अनर्गल बातों पर अपना गधाह्ह ख़याल दौड़ाय सब ओर से चौका लगा रहे हैं—सोचकी बात है कि जब हम सब लोग इस बात के प्रयत्न मे लगे हैं कि हम जहां तक हो सरकार के चंगुल से छुट अपने हर एक काम मे आज़ाद और स्वच्छन्द हों वहां इनकी थोथी अकिल यह सलाह देती है कि जिस बात मे तुह्मारी सनातन से साख बंध रही है और हज़ारों लाखों का लेन देन केवल साख पर चल रहा है महाजनो की वह बही बिना रजिसटरी के रद्दी और अप्रमाणिक ठहरे जिसे कुछ भी समझ है वह सम्पादक की बिशाल बुद्धि पर तरस खायगा—माना कि कोई २ बेइमान महाजन गड़बड़ बही रखते हैं तो क्या एक के कारण समूहके समूह की बातमें बट्टा लगे और महाजन मात्र ऐसे बेइमान समझे जांयकि जब तक बही रजिसटर्ड न हो उनका लिखना पढ़ना हिसाब किताब सब झूठा—पहले तो इतना साहस करना कोई सहज बात नहींहै कि झूठा जमा खर्च कर सफ़ेदी पर स्याही चढ़ालें जिसे हम लोगोंमें महा अधर्म और पाप समझते हैं तब जो कोई इतना साहस कर गुज़रेगा वह अपने किये का फल भुगते गा सदा के लिये बेइमान ठहरगया जाय गा और सरकार से दंडभागी होगा—फिर अदालत में इस प्रकार की बेइमानी छिप कहां सकी है सिवा बही के और २ सबूत भी तो हैं न्याय शील सरकार की इसमें अत्यन्त प्रशंसा है कि हज़ारों का स्टैम्प वाले दस्तावेज़ों की जो बात और प्रतिष्ठा वही प्रतिष्ठा हमारे महाजनो की बही की है जिसे हमारे सम्पादक खाक में मिलाया चाहते हैं धन्य है—क्या देशो पकार की ओर तबियत गड़ रही है ॥

# क्या प्रयाग अब भी तीर्थ राज है!

पुराणों मे इस स्थान को तीर्थराज कहा है माना कि किसी समय यहां कुछ ऐसी बातें रही भी हों जिसके कारण इसको राजा की पदवी दी गई परन्तु अब इस नगर की बर्तमान दशा देख और यहां की सामयिक बातों पर ध्यान कर क्यों लोग इसका नाम नहीं बदल डालते ! और कोई ऐसा नाम धरते जिस से इस शहर की आज काल्ह की हालत ज़ाहिर हो और जो देशी बिदेशी दोनों की इच्छा और रुचि के अनुसार हो और जिस नामोच्चारण के साथही सुनने वाले को यहां का सब रङ्ग ढङ्ग चट्ट प्रगट हो जाय—केवल दो महा नदियों के सङ्गम के अतिरिक्त कौन सी ऐसी बात यहां है जिस से यह तीर्थ राज बनता है दूर क्यों जाइये अपने समीप ही के काशी मथुरा आदि दो एक तीर्थों को देखिये जहां बारहो महीने नहीं तो कार्तिक आदि महीनों मे आधी रात के बाद से घाटों के किनारे और एक से एक गुप्त मन्दिरों मे कैसे जमघटे रहते हैं कि मानों लक्ष्मी एक बारगी फटी पड़ती हैं मथुरा वृन्दा बन सरीखे रङ्गीले तीर्थों मे जो रहते हैं उनका तो कुछ पूछना ही नहीं ( ऐन्द्रं पदं भूमिगतोऽपि भुंक्ते ) जो एक बार हो आये हैं वे जन्म भर वहां के सुखों को नहीं

भूलते और दूसरे दूसरे ऐसे ही मन्दिरों मे हज़ारों लाखों रुपये रोज़ का जहां पर नाला वह रहा है वहां का और क्या परिणाम होना है ईश्वर ( भोज्यं भोजन शक्तिश्च ) बनाये रहे जिस की बदौलत हज़ारों यार लोगों के सुख के सब सामान इकट्ठा हैं— अब बतलाइये महा रूखे और फीके इस तीर्थराज मे वे सब सुख कभी स्वप्न मे भी आप को मिल सक्ते हैं बल्कि और और पुरी और तीर्थों का मुकाबिला कीजिये तो रघुबंश के सोलहवे सर्ग का यह श्लोक याद आता है—

निशासु भास्वत् कल नूपुराणां यः सञ्चरो भूदभिसारिकाणाम् । नदन्मुखोल्काबिचितामिषाभिः सम्बाह्यते राजपथः शिवाभिः ॥

अब यदि आप यह कहिये (जिस प्रकार के रसिकों का हाल आप ने ऊपर लिखा है वे नखसे सिख तक रजो गुण के पिण्ड हैं ऐसे लोगों की तबियत से और सच्चो चोखी धर्म सम्बन्धी बातों से क्या सरोकार जिसे वास्तव से हिन्दू धर्म कहते हैं उसे यदि इस प्रयाग में ढूंढ़िये तो मन मानता पाइये-गा)— हम कहते हैं अंगरेज़ियत की बघार उस का भी नाम निशान यहां से मिटाये देती है ॥

दिल्ली जो न मालूम के सौ वर्ष लों मुसल्मानों की राजधानी थी अथवा आगरा ऐसे शहरों को लीजिये जिस पर मुसल्मान बाद-

शाहों की पूरी कृपादृष्टि रहती थी तब भी आप यह न पाइयेगा कि मुसल्मानी रङ्ग मे ये शहर इतना रङ्गगये जितना इलाहाबाद को आप अङ्गरेज़ी रङ्ग मे डुबा हुआ पाइयेगा—अधिक नहीं पांच ही साल वर्ष जो लोग बाहर रहे हैं और जब फिर कर यहां आये हैं तो यहांकारङ्ग ढङ्ग देख चकित से हो गये हैं और अङ्गरेज़ियतको बढ़ती ही हुई पाया है::—मुसल्मानी बातों का चाहो कितना ही ज़ोर किसी समय रहा हो पर भारत बर्ष के दिल से उन बातों की घृणा कभी नहीं गई क्या पढ़ा क्या बे पढ़ा सब के जी मे म्लेच्छों से घृणा पूरी पूरी बनी रही—यह हम नहीं कहते कि आज कल्ह के हिन्दू सब इसाई हुये जाते हैं पर उनके रहन, सहन, और ख़यालात पर अङ्गरेज़ियत का वह असर हो रहा है कि बहुत जल्द न जानिये क्या से क्या हो गया है और आगे न जानिये क्या होगा ॥

एक वह दिन था कि ( तीर्थेस्मिन् देहत्यागं करोतियः, तस्या-त्मघात दोषो न प्राप्नुयात् ईप्सितान्यपि ) "सिता सिते सरिते यत्र सङ्गते तत्रा प्लुतासो दिवमुत्पतन्ति इत्यादि बचनों पर लोग पूरी भक्ति रखते थे पर जब से अंगरेज़ी राज्य आया तबसे इस के अत्याचार के कारण वे सब बातें लोगों के जी से जाती रहीं-अस्तु यहां तक भी कुछ हर्ज नहीं फिर भी यहां आतेही लोग सीधे त्रिवेणी तीर जा कर मुण्डन कराते थे+चलिये इसी मे आज

कल के देश और काल के अनुसार जितना पुण्य होना चाहिये होता ही था परन्तु जब अंगरेज़ियत ने तबियत ही को गुलाम बना डाला तब तो लाचारी है+ स्टेशन ही पर से लोग किलनर होटल की बू बास सूंघते और मेमों की वज़ेदारी देखते हुये शहर के भीतर पैठे—ऐन मुहाने पर पहले आप को मछली बाजार मिलेगी जहां से कच्ची मांस की दुर्गन्धि का भपका आप के नासिका रन्ध्रों भारता हुआ आसपास की वायु को बिमल और स्वच्छ कर रहा है+वही काशी आदि तीर्थ स्थान मे घसिये गङ्गा के उसी पार से घाट किनारे के सुवर्णघटित मन्दिर पहाड़ से खड़े दिखाई देंगे और जब तक वहां के देवताओं का हीरा पन्ना मोती आदिमणियों का शृङ्गार होता जाता है तब तक और किसी बहाने न सही तो सैर ही के लिये लोग वहां जाते रहेंगे=इस दरिद्र प्रयाग मे सो भी नहीं है कि इसी बहाने यह लोगों पर अपनी तीर्थता झलकावे=और शहरों मे देवताओं के दर्शन अथवा तीर्थस्नान को निमित मान कर जो मेले होते हैं उन मे और और बातों का सहारा पाय दिन दिन तरक्की देखी जाती है यहां के माघ मेले मे वह सरकारी अत्याचार और धींग धींगा है कि मेले की हैसीयत दिन दिन घटती ही जाती है=और और तीर्थों मे ब्रह्म भोज और भण्डारे अथवा न्योत चला करते हैं यहां पार साल से मेले के बिसर्जन मे पुलिस सब इन्सपेकूर की कृपा से ऐन सितासित के सङ्गम पर अङ्गरेज़ी लेडी और हुक्कामों की मद्य मांस द्वारा तृप्ति का आरंभ किया

गया आशा अब कि बार उनकी दावत पारसालसेभी चढ़बढ़ कर हो अस्तु पारलौकिक देवताओं के प्रसन्न रखने का उपाय न बन पड़े तो इसी लोक के जो देवता हैं उन्हीं के खुश रखने का सही—जब इसे पूरा तीर्थत्वाभिमान था उस समय महात्मा भारद्वाज सरीखे तपोधन महामुनि जिस भूमि को अपने इतस्ततः सञ्चरण से चिह्नित करते प्रति पद जहां की रेणुको पादन्यास द्वारा पवित्रित करते थे उन उन स्थानों में अंगरेज़ी बंगलो के बन जाने से लेडी महामाया और श्वेताङ्ग महर्षि अब स्वेच्छा विहार करते हैं-और और तीर्थ और क्षेत्रों में विद्वान् ब्राह्मण और सन्यासियों की मण्डली एकत्र हो ब्रह्म और आत्मा का सूक्ष्म विचार किया करते हैं यहां अंगरेज़ी बातों की झूठी कमेटियों का अलबत्ता चोसिला बढ़ रहा है और ऐसी कमेटियों की संख्या भी प्रति वर्ष अधिक होती जाती है दस पांच लोमड़े इकट्ठे हो गये बड़े २ प्रोपोजल पास हुये बड़ी २ राय दी गई तालियां-पिटी अन्त में बूट खट खट करते चंपत हुये टांय टांय फिस – जो लोग कि पश्चिमोत्तर के और २ शहरों में घूमे है और वहां के लोगों की तबियत जानते हैं उनसे पूछिये तो यही कहेंगे कि इस शहर की दशांश भी और २ शहरों में अंगरेज़ियत नहीं है – इलाहाबाद में देखने लायक क्या, किला, कम्पनी बाग, म्योमेरियल म्योर कालेज हाईकोर्ट, लाइब्रेरी इत्यादि २ अर्थात् दो चार दस अंगरेज़ी इमारतें – यह नगर किसी प्रकार

के वाणिज्य का मध्य भाग नहीं है न किसी प्रकार की दस्तका-रीही में यहां के लोग निपुण हैं — दस पांच बड़ी २ अंगरेज़ी सौदागरों की दुकान अलबत्ता यहां हैं उन्हीं का जो कुछ वाणिज्य हो सो है। जो दिन दुपहर लोगों को उल्लू बनाय एक एक के दस पुजाय मन मानता वस्त्र मोचन करते हैं — वे स्थान इलाहाबाद में कौन हैं जहां जातेही चित्त प्रसन्न होजाता है। यहां के इंगलिश क्वार्टरस अर्थात् अंगरेज़ी बस्ती जिस के जोड़ की बस्ती किसी दूसरे शहर में न होगी — लिखने का तात्पर्य यह कि बाहर से भीतर से तन से मन से इलाहाबाद अंगरेज़ी रङ्ग में डूबा हुआ है फिर जो यह तीर्थराज होने का दावा करता है सो किस माथे। अब वे दिन लद गये अब इसको तीर्थ राजता का घमण्ड बिलकुल व्यर्थ है घमण्ड क्या ईश्वर ने इसे तीन नदियां दी हैं उनमें से किसी एक में इस को लज्जित हो डूब मरना चाहिये जिसमें तीर्थता का नाम निशान भी इस भूमि में न बाकी रहे तब अलबत्ता कह सक्ते हैं कि इलाहाबाद ने जबसे केनिङ्गटन नाम पाया तब से बड़ी तरक्की की है॥

—:०:—

## । होन हार इनकं टैक्स ।

लार्ड डफरिन साहब की करतूतों मे इस नये टैक्स का जन्म भी है—हम पूछते हैं यह टैक्स क्यों लगाया जाता है जिस

ओहदे पर चार सिविलियन हैं वहां एक कम कर दिया जाय बिलायती कपड़े जो मेनचेष्टर से बन कर आते हैं उन पर जो महसूल उठा दिया गया है फिर बहाल कर दिया जाय—बलासे हम लोग मंहगा हो कपड़ा पहनेंगे और यह नया ढकोसला जो दिल्ली मे बड़ी भारी कवायद होने वाली है बन्द कर दी जाय इन बातों के करने से इतने रुपयों की बचत होगी कि सरकार को जो घाटा है सो भी पुर जाय गा और बहुत कुछ बचत होगी यह क्या कि अपना नुकसान ज़रा सा भी न होने पावे हमारी मुट्ठी कुंचे तो कुंचे—फिर इतना बड़ा मुल्क बर्म्मा गप्प कर लिया गया घाटा अभी पुरा ही नहीं सच है ( लाभाल्लोभः प्रवर्त्तते ) इस सब अन्धेर और अन्याय का परिणाम अच्छा नहीं दीखता जब कि रूस हिन्दुस्तान के दरवाजे पर विकराल रूप से गरज रहा है ऐसे नाजुक समय मे प्रजा का मन मुठी मे कर रखना चाहिये न कि अत्याचार के एक एक शिगूफे खिला करते हैं ईश्वर ही कुशल करे—जो हो हाड़ मांस तक चाब लिया गया अब यह देश इस लायक न रहा कि ऐसे ऐसे टेक्सों का बोझ सह्माल सके इस का होन हार परिणाम बहुत बुरा है आगे सरकार की इच्छा ॥

—:०:—

## । इङ्गलैण्ड और भारत ।

इंगलैंड—भारत हमारे सन्तान तुह्मारी आरत दूर करने को कितना क्लेश उठाते हैं इस का अहसान तुम मानते हो कि नहीं ?

भारत—तुह्मारे सन्तान यहां आकर स्वर्ग सुख का

अनुभव करते हैं जब तक रहते हैं हमारी नस नस का लहू चूसते रहते हैं और जाती समय रंक के राजा बन जहाजों रुपया भर कर ले जाते हैं तब यहसान किस बात का है ॥

बहू—ऐं ऐं ऐं भारत तुम सा कृतघ्नी भी दूसरा न होगा अरे हम तुम्हारे शिक्षा गुरू हैं हमनें तुम्हें आंख दी तुम्हें समझ दी रूस ऐसे प्रबल शत्रुओं से तुम्हें बचाने की फिकिर मे दिन रात रहते हैं इस का कुछ यहसान ही नहीं है ॥

भारत—हा हा हा—( हसता हुआ ) चालांकी की बोल चाल इसी का नाम है रूस की जो आप फिकिर कर रहे है उस का हम पर क्या यहसान आप अपना बचाव न कीजिये हम आप की दी हुई समझ लेकर ओढ़ैं या बिछावें—तुम्हारी यह समझदारी ऐसा मन हूस पैरा लेकर हमारे यहां आई कि हम दाम दाम मुहताज हो गये अन्न बस्त्र के लिये भी तरस रहे हैं सब ओर से हमे पंजे मे कसे हुये हो ज़रा भी ढीलने नहीं देते ऊपर से तुर्रा यह कि हम तुम पर यहसान करते हैं वाहरे चालांकी ॥

इंगलैंड—( स्वगत ) अभी इस मे गरमाहट बाकी है अब कुछ और हिकमत अमली काम मे लावें अच्छा तो चल कर इस की सलाह नये कंसर्वेटिव दल वालों से करें इस मे अपना काम भी सधेगा और कहां तक इन की अकिल दौड़ी है इस की परख भी हो जाय गी—( प्रकाश ) हम जान गये भारत तुम्हें हमारे स्वरूप का परिचय अभी अच्छी तरह नहीं हुआ तुम्हारी बूढ़ी सठियानी अकिल दुरुस्त करने की हम कुछ और भी फिकिर करेंगे तब तक यह चटनी हम तुम्हें दिये जाते हैं इस चटनी का नाम इनकमटैक्स है इस के चाटने से तुम्हारे दिमाग की बची बचाई गरमी दूर हो कूवत और तरी पहुंचेगी तब तुम इस लायक होगे कि हमारा जौहर पहचान सको ( जाता है )

भारत—हाय ! यह तो बड़ा भारी ज़रर पहुंचने चाहता है इस घाव का पुरना महा दुर्घट काम है ( मूर्छित हो गिर पड़ता है )

—:०:—

# । समय के शुभ चिन्ह ।

गत मास के अन्त मे भारत बर्ष के ५ मुख्य मुख्य स्थानों मे बिद्वान् और उत्साही जनो का समूह एकत्र हुआ जिन्मे भिन्न भिन्न रूप से अनेक देशोपकारी बातों का बिचार किया गया इन मे प्रथम कलकत्ते का देशीय समागम था जहां हर एक प्रान्त की सुघठित मण्डली के बिद्वान् इकट्ठे हो अनेक आवश्यक राजकीय बातों का बिचार किया—दूसरा पूना मे भारतीय जातीय एकता Indian natonal का समागम हुआ जिस मे बम्बई मंदराज । कलकत्ता । प्रयाग । बनारस । लखनऊ । लाहौर आदि कई एक मुख्य स्थान के प्रति निधि एकत्र हो इंगलेंड के लोगों को भारत सम्बन्धी ठीक ठीक समाचार पहुंचाने तथा भारत सम्बन्धी बातों मे उन को दत्त चित्त करने की उपायों का बिचार किया – मन्दराज मे दीवान बहादुर रघुनाथ राव के प्रयत्न से बाल्य बिबाह के बन्द करने और बिधवा बिबाह प्रचलित करने के उपाय सोचने के लियेमन्दराज प्रान्त के अनेकानेक बिद्वानो का संघट्ट हुआ—अजमेर मे परोपकारिणी सभा का अधिवेशन किया गया जहां अनेक धनी मानी सज्जन और बिद्वान् राजा बाबू तथा आर्य्य समाजों के मुखिया एक चित्त हो बहुत सी उपकारी बातों का बिचार किया—पांचवें हमारे इस बृद्ध तीर्थ राज मे सध्य हिन्दू समाज के अनेक नायक और सहायक बिद्वान प्रतिष्ठित जनों का संघट्ट हुआ जो पश्चिमोत्तर और अवध के प्रत्येक नगरों के प्रति निधि हो कर आये थे हिन्दू जाति की उन्नति का बिचार

इस समाज का प्रधान कर्तव्य है—इन कल्याण कारी समागमों को देख किस भारत सन्तान के हृदय मे नूतन नूतन आशा और आनन्द का उद्गार न होता होगा—हठी और केवल दोष देखने वालों को समझाना तो हमारी सामर्थ्य के बाहर है पर कौन बिचार शील न कहेगा कि ऐसे ऐसे समागम भावी कल्याण के अंकुर और शीघ्र आने वाली देश की सुदशा के सूचक हलकारे नहीं है—घर पर बैठे बैठे देश के सुधारने की चर्चा करना अथवा जब तब सभा और कमेटियों मे व्याख्यान देना चाहो शुष्कबाद और व्यर्थ की दांत किट्टन समझी जाय पर गांठ का धन गवांय और सौ दो सौ चार सौ कोस से भलाई की इच्छा से एक स्थान मे जमा होना कदापि व्यर्थ नहीं समझा जा सक्ता—यद्यपि मध्य सभा के इस दो बर्ष के अधि वेशन से अभी तक कोई बिशेष लाभ नहीं हुआ और लोग यहां से जा के अपने उदार बिचारों को भूल से जाते हैं तथापि यह निश्चित है कि यह समागम ऐसा ही प्रति बर्ष होता रहा तो अवश्य काल पाय इस से अनन्त उपकार होंगे—यह क्रम नया है लोगों के चित्त स्वार्थ परता और आलस्य के अनेक दृढ़ बन्धन से चिरकाल से बंधे हैं जो देशोपकारक काम आरंभ किये जांयगे उनमे शीघ्र जैसी दृढ़ता और स्थिर उत्साह चाहिये हर एक मनुष्य मे नहीं मिलेगा पर इस मे हतोत्साह होना वा आरंभ की निन्दा करना भी भूल है दो चार सत्पुरुष भी यदि इस कार्य मे शुद्ध और स्थिर उत्साह के साथ लगे रहें तो उन के उदाहरण से और लोगों मे भी कुछ दिन बाद वैसा ही बिमल और निश्चल उत्साह आजायगा और कार्य निस्सन्देह सफल होगा—उचित इतना ही है कि प्रति मनुष्य जिसे अपनी

सज्जनता का कुछ भी खयाल है। इसे अपना कर्तव्य समझ अपने वचनों के प्रति पालन और पूरा करने में सन्नद्ध रहे ॥

# । पुस्तक प्राप्ति ।

## पातंजल दर्शन

—:०:—

महर्षि व्यास देव कृत भाष्य सहित का भाषा अनुबाद पं०—रुद्रदत्त शर्मा कृत अनुबादित—इसका अनुबाद अति ही उत्तम साधु भाषा मे किया गया है अनुबादक महाशय से मेरा कुछ भी परिचय नहीं है पर उन का यह साधु प्रयत्न प्रशंसा के योग्य है—इसी योग सूत्र का भाषानुबाद धर्म दिवा कर के सम्पादक हमारे श्लाघनीय सुयोग्य मित्रवर पं०—देवीसहाय भी अपने पत्र के कई एक अङ्कों मे प्रकाश कर चुके हैं कदाचित् उसी की सहायता ले कर यह फिर से मुद्रित होना आरंभ किया गया है।—

—:०:—

अस्तु इस से हमे क्या काम ग्रन्थ यह बड़ा उत्तम तैय्यार हो रहा है यदि सब का सब इसी क्रम से तैय्यार होजाय—अभी केवल एक अङ्क हमारे पास आया है मूल्य एक अङ्क का ≡) है भारत मित्र प्रेस कलकत्ता मे छपा है—प्रारंभ मे जो उपोद् घात लिखा है इस की भाषा और आशय भी उत्तम है जिस से इस के सम्पादक की बिद्या का पूर्ण परिचय मिलता है जिन का मन पारमार्थिक बिषयों के ध्यान मे चुभा है। और जो नरक तुल्य इस संसार के क्रिमि न बना चाहें उन को इस पत्र का अवश्य ग्राहक बनना चाहिये—ऐसे ऐसे पदार्थों का अनुबाद हमारी भाषा

में हो जाने से हमारे आर्य शास्त्रों का पूर्ण गोरव प्रगट हो जायगा और अंगरेज़ी तबियत वाले जिन्हों ने यही निश्चय कर लिया है कि विद्या के महोदधि की तरंगें सिवाय अंगरेज़ी के और कहीं नहीं उठती हुई देख पड़तीं उन के मन को भी एक प्रकार ठोंकर पहुंचे गी ईश्वर करे सम्पादक का प्रयत्न सफल हो—

—:०:—

# । राजनीति माला ।

## पहला भाग

श्री मन्महाराजा धिराज कुमार श्री श्री गुरुप्रसाद सिंह बहादुर लिखित इस छोटी सी पुस्तक मे बालकों के पढ़ने योग्य नीति के छोटे छोटे वाक्य अनेक नीति के ग्रन्थों से उद्धृत कर लिखे गये हैं मूल्य ≈) भारत जीवन प्रेस बनारस मे छपी है ॥

—:०:—

# । गुलदस्तै बे नजीर ।

गाने लायक अच्छे अच्छे नये और पुराने कबियों के गज़लों का संग्रह कानपूर निवासी बाबू भगवानदास बर्मा द्वारा संग्रहीत कोई कोई गज़ल इस मे की बहुतही चुटीली और रसीली हैं हमारे मित्र बाबू भगवानदास हिन्दी के बड़े प्रेमी और सुलेखक हैं और हिन्दी को बहुत कुछ सहारा पहुंचा रहे हैं सच्चा हित साधन ऐसे ही लोगों से है। सत्ता है जो निःस्वार्थ किसी काम मे लगे हुये शनैः शनैः कुछ करते जाते हैं मूल्य इस पुस्तक का ।) है—हरि प्रकाश यंत्रालय बनारस मे मिलेगी—

——:०:——

## मन की लहर

यह लहर एक निराले ढंग की और निराली तबियत से उठी हुई है श्री बाबु हरिश्चन्द्र के उपरान्त निराले ढंग का यदि कहीं आश्रय मिला तो इसी तबियत में—जब हम लोग लुहार की धोंकनी के समान सांस लेते अपने क्लेशपूरित जीवन को किसी तरह झेलते जाते हैं ब्राह्मण के सुसम्पादक हमारे प्रिय मित्र पण्डित प्रताप नारायण मिश्र अपने प्रेम मय जीवन की ऐसी ऐसी लहरों में मग्न हो रहे हैं—यह पुस्तक भारत जीवन प्रेस बनारस में मिलेगी मूल्य ≠)॥ खरीद कर पढ़िये तब इस लहर की लहर बहर आप को मालुम होगी ॥

——:०:——

## तसबीरों के कलई दार चौखटे साफ करने की रीति ।

बिलायती चौखटे जिस पर मक्खियां बैठ बैठ कर मैला कर देती हैं या गर्द पड़ जाती है उस को पानी या दूसरी चीज़ से साफ करने में चमक जाती रहती है इस लिये एक कपड़े या स्पंज के एक टुकड़े को ताड़पीन के तेल या स्पिरिट आफ बहन में थोड़ा सा तर कर लो और हलके हाथ से कलई किये हुये हिस्से पर लगा दो और फिर उसे मत पोंछो स्वत: सूखजाने पर चौखटा खूब साफ और चमकीला निकल आवेगा ॥

## । चौखटे पर फिर से कलई करने की रीति ।

पीली मिट्टी जिसे राम रज कहते हैं १ हिस्सा । कोपाल बार्निश २ हिस्सा । तीसी का तेल ३ हिस्सा । ताड़पीन का तेल ४ हिस्सा । मिट्टी को पहले खूब बारीक बुकनी करलो और तब उसे गरम तेल मे घोटो उस को एक दिल हो जाने पर और चीज़ों को भी उस मे मिला कर काम मे ला सक्ते हो यदि बहुत गाढ़ा हो तो तीसी का गरम तेल मिला सक्ते हो इस मसाले को चौखटे पर लगा दो सूख जाय तब बालूदार काग़ज़ से उसे मलो अब चौखटे का अस्तर तैय्यार हो गया—बहुत सहज रीति यह है कि पीली मिट्टी को खाली ढीले सरेस मे खूब घोटो और जब चौखटे पर लगाना हो तो ज़रा गरम कर एक अस्तर उस का चौखटे पर लगा दो सूख जाने से बालू दार काग़ज़ से करगड़ कर साफ कर डालो यह सब रीति अस्तर चढ़ने की हुई अब तुम्हे सोने का मसाला बनाना चाहिये—इस के वास्ते सोने के बरक को गोंद मे मिला कर खरल मे खूब घोटो जब बिल्कुल बरक घुल जाय तब गोंद को पानी से धो डालो ऐसा की सोने की बुकनी पानी मे बहने न पावे तब इसे सरेस मे मिला कर चौखटो पर लगा दो और मोटे कपड़े या चमड़े से खूब रगड़ो चमकने लगेगा ॥

—:०:—

## । शीशे या चीनी के बर्तनो पर कलई करने की रीति ।

कोपाल वार्निश जो हर एक बिसाती की दूकान में मिलती है ला कर बर्तन या शीशे में जहां पर कोई करना हो या फूल अथवा बेल बूटे बनाना हो उसी स्थान पर कोपाल बार्निश से खींच बर्तन को आंच पर दिखलाओ बार्निश लसार हो जायगी तब इस में सोने के बरक रुई के पहले पर उठा कर लगाओ और एक रात दिन उसे सूखने दो बाद कोड़ी या किसी दूसरी घोटने की चीज़ से घोटने में चमकने लगे।—इतना याद रहे कि बार्निश के लगाने के पहले थोड़ा सा तीसी का गर्म तेल और तारपीन का तेल उस में मिला दो॥

## । समुदाये शक्तिः ।

धन बल बुद्धि बिना इन तीनों के कोई काम कभी निर्विघ्न सम्प्न नहीं होता—धन का अर्थ है कार्य सिद्धि की सामग्री अर्थात् एक दो या सो दो सौ व्यक्ति विशेष के सामान नहीं किन्तु देश भर का धन अर्थात् सामान—परोपकार या दूसरे का हित इस के भी यही मने हैं कि दूसरे को ऐसा कर दे कि वह अपना हित आप कर सके तब यह समझना बड़ी भूल है कि दो चार मनुष्यों के करने से देश का हित हो सक्ता है—इस लिये हम सबों का पहिला काम यह है कि देशका धन बल और बुद्धि को बढ़ा कर इस योग्य बना दें कि वह अपने हित को आप ही बिचार सके-बहुत से लोगों की यह सम्मति है कि देश केवल व्यक्ति विशेष के समूह का नाम है अतः व्यक्ति विशेष की भलाई से देश की भलाई है परन्तु मेरी समझ में ऐसा मान लेना भूल है समूह की भलाई और व्यक्ति विशेष की भलाई में बड़ा अन्तर है—यदी

अपने देश और धर्म के लिये प्राण दे देना है एक पुरुष के लिये नहीं किन्तु देश भर की स्वतंत्रता को बचा रखने के लिये जैसे माला हितका डोरेके बने रहनेसे है एक एक मोती का हित अलग हो उस से डोरे को कुछ सरोकार नहीं है और जो यह कहो कि माला का हित मोतियों का ठीक ठीक हित है तो खैर यह बात किसी क़दर मानने योग्य है परन्तु मोतियों का हित माला का हित है यह युक्ति संगत नहीं हो सक्ता क्योंकि मोतियों का हित माला से अलग भी हो सक्ता है ॥

अब पहले हम देश के धन का बिचार करते हैं क्योंकि बलवान् और बुद्धिमान् को भी पहले प्राण रक्षा के लिये धन चाहिये—देखा जाता है कि प्रत्येक समाज के बड़े बड़े बलवान् पुरुष बिद्यमान् हैं पर बिना धन के कुछ नहीं कर सक्ते बल और बुद्धि कभी कभी को एक मनुष्य की भी समाज को अपनी मुठी मे कर सक्ती है पर एक पुरुष के धन से समाज का यथावत् हित नतो हो ही सक्ता है न एक पुरुष चाहो कुबेर सा धनी क्यों न हो अपना सर्बस्व किसी सर्ब साधारण सामाजिक काम मे दे दिवाय आप निष्किंचन बन बैठे यह किसी को गवारा हो सकेगा तो निश्चय हुआ कि धन वही जो जातीय संपदा Mationalfund की उपाधि पा सके जिस मे कुल देश भर का स्वत्व है और किसी का भी नहीं इसी तरह पर बल और बुद्धि भी जातीयत्वावच्छिन्न हो समुदाय की कही जा सक्ती है जिसे हम फिर लिखेंगे अभी आप से इतना ही कहते हैं कि इस ऊपर के बाक्य को गांठ मे बांध रखिये कि समुदाय मे शक्ति है—ह—प्र—

अग्रिम बार्षिक मूल्य ३।⅛) पीछे देने से ४।⅛)

प्रयाग यंत्रालय में मुद्रित हुआ

# मेरे नवीन देशोपकारी व्याख्यान और ग्रंथ

१ 'मट्टी शरीर पर मलने से रोगों की चिकित्सा'-इस अपूर्व लेक्चर में अमेरिका के प्रसिद्ध हकीम ने सिद्ध किया है कि मट्टी अपनी बिजली की शक्ति से शरीर के बाधक अंशों का जो रोग के हेतु हैं ते हैं खींच लेती है ≠)॥ २ 'मनुष्य की संतान में किस बिधि करके सुन्दर रूप बल बुद्धि उत्पन्न हो सक्ता है, इस लेक्चर में उक्त प्रोफेसर ने सिद्ध किया है कि गर्भ और मगज़ में बिजली द्वारा पूरा संबंध है गर्भिणी को जैसी भावना विचार कर्म होंगे वा जैसी वस्तु देखेगी उन सब का साक्षात् अवतार बच्चा जन्मेगा ≡)३ 'मातृ भाषा की उन्नति करने के उपाय ≠)॥४ 'बाल विवाह की कुरीति की शारीरिक सामाजिक और धार्मिक महा हानि ≡)५ मनुष्य का सच्चा सुख किस में है और उसकी प्राप्ति के कौ द्वार हैं ≠)॥ ६ 'तीन ऐतिहासिक रूपक, इन में मन भावन रीति से विषयी पुरुषों की दुर्दशा दर्शाई गई है ≡)॥ ७ 'बालविधवा संताप नाटक, और विधवा विवाह के शास्त्रीय प्रमाण ।≠)॥ ८ 'नं स्युपदेश अर्थात् अपनी युक्ति से बुद्धि स्मरण भावना तर्क, मनोहर रीति से सभा में बोलने और लिखने की शक्ति बढ़ाने, आरोग्यता रखने नीति धर्म पालन करने के स्वभाविक नियम और साधन यह सेलफ़कलचर का अनुवाद है मू० ॥≠)॥ ( यह उर्दू में भी है ) ९ युरोपियन सती और धर्मशीला स्त्रियों के परम मनोहर ४० चरित्र ॥≠॥ १० भारत वर्ष की विख्यात पतिव्रता शूर वीर प्रबन्ध कर्त्ता और उदार हृदय रानियों के चरित्र जो मुसलमानों और अंगरेज़ों के राज्य समय में हुई ॥)॥ ( उर्दू में भी है ।≠)॥ ११ खेती की विद्या के मूल सिद्धान्त योरप की नई विद्याओं के अनुसार खेती करने की सरल उपायें ॥≠)॥ १२ अंगरेज़ी कवि शिरोमणि शेक्सपियर के परम मनोहर २० नाटकों के आशय का अनुवाद यह कवि मनुष्य के हृदय के भाव और कटाक्ष दरसाने और स्वभाविक रीति से नीति धर्म सिखाने में योरप में अद्वितीय समझा जाता है वहां केवल व्यवहार का भी उसने पूर्ण चित्र उतारा है प्रथम भाग ६ नाटक १।)॥ द्वितीय ११ नाटक १।≡)

काशीनाथ खत्री
रामबाग सिरसा ज़िला इलाहाबाद

—++:०:++—

## मासिक पत्र।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै॥

१ फरवरी सन् १८८६ } { जिल्द ९ संख्या ६

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

# ॥ हिन्दीप्रदीप ॥

——:०:——

जिल्द ९ } { १ फ़रवरी
संख्या ६ } { सन् १८८६ ई०


## पैत्रिक धर्म ग्रहण करने की शक्ति ।

पुत्र को हमारे यहां आत्मज कहा है और तनय तनुज सूनु आदि भी इसी जोड़ के शब्द हैं—और बाल्यावस्था ही मे जब आदमी को अपने तईं बाप बनने का मौका भी नही मिला जब वह निरा विद्यार्थी है अपने पठन पाठन मे ऐसे ऐसे श्रुति वचनों से जैसा ( आत्मा वै जायते पुत्र: ) अवश्य परिचित हो जाता है—खैर माना कि संसार मे सब ऐसे नहीं हैं जो अपने लड़कपन को विद्याभ्यास मे बिताया हो तो युवा अवस्था मे जब उस बस्तु का साक्षात् दर्शन हो गया तो किस के मन मे यह बात न आई होगी कि। फलाना लड़का सूरत शकल मे बैनहू अपने बाप की तरह है—वा इस लड़के की प्रकृति और शील स्वभाव मे बिल्कुल इसके बाप का अनुहार है। और मान लीजिये कि लोगों को ऐसा इत्तिफ़ाक न पड़ा हो कि किसी बाप को हू बहू

नकल उसके पुत्र मे देख साश्चर्य यह बचन मुह से निकला हो कि 'देखो ये दोनों आपस में कितना मिलते हैं, तब भी यह तो अवश्य कह सक्ते है कि इस संसार मे ऐसा कोई न होगा जिस ने ठीक इसी के जोड़ की बात पेड़ पालो के सम्बन्ध मे अवश्यमेव देखा है क्योंकि जैसा मनुष्य या पशु पक्षियों मे बीर्य दान द्वारा सन्तति बाढ़ने का क्रम है ठीक ऐसा ही या इस से भी स्पष्टतर रीति पर पेड़ आदि मे भी अपने जाति के गुण अपने जोड़ के इतर पेड़ों मे बनाये रखने की सामर्थ्य क्या नहीं है—जिस किसी ने स्वयं किसी पेड़ का बीज बोया होगा या अपने माली को एक आम की कलम दूसरे मे लगाने का हुक्म दिया होगा तो क्या उसके मन मे यह दृढ़ बिश्वास न रहा होगा कि यह जो बीये बोये जाते हैं या कलम लगाई जाती है उन्मे पूर्ण वृक्ष होने की सामर्थ्य है और इस बिये से उन्ही गुणों से पूर्ण और उसी प्रकार का पेड़ उग सक्ता है जिस तरह के पेड़ का यह बिया है और केवल इतना ही नहीं कि यह बीज कालान्तर मे वृक्षत्व को प्राप्त हो सक्ता है किन्तु इस एक बिये के द्वार और वृक्ष उग सक्ते हैं और उन के द्वारा और दूसरे वृक्ष इस रीति से इस एक बिये मे वह सामर्थ्य है कि हज़ारों बर्ष तक अपनी सन्तति बढ़ाता जाय और अपना रूप और गुण पृथ्वी पर बिद्यमान रक्खे—इस क्रम पर ध्यान देने से जितने (*Organisms*) प्राकृतिक पिण्डमय चलते पुरज़े हैं उन्मे हम तीन बात देखते हैं अर्थात् पहले तो पैत्रिक गुणों के उत्तराधिकारी होने की शक्ति और फिर इस के उपरान्त अपने जीवन का सहारा पाने पर उस से लाभ उठाने की शक्ति—तीसरे

जैसा स्वयं एक से पैदा हुये वैसे ही अपने रूप और गुण को दूसरे मे छोड़ जाने की शक्ति—ये तीनों बात हम उन प्राणी मात्र मे पाते हैं जिन्मे वंश परम्परा द्वारा संसार मे अपनी सन्तति प्रसन्तति बिद्यमान रखने की सामर्थि है और ये तीनो गुण हम आदमी जानवर और बीरुध इन तीनों मे पाते हैं—ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता है कि पहला और तीसरा गुण जो हमने ऊपर लिखा है इन दोनो को एक तरह पर लेने से बड़ा अन्तर नहो है अर्थात् पैत्रिक धर्म्म के उत्तराधिकारी होने की शक्ति और आगे को स्वयं अपनी सामर्थि द्वारा अपनी ब्यक्ति को संसार मे बढ़ाने और बिद्यमान रखने की शक्ति इन दोनो मे अत्यन्त समीप का सम्बन्ध मालूम होता है इस लिये इन दोनों की हम एक साथ ही समालोचना करते हैं और दूसरा गुण ( अर्थात् बाहर से अपने जीवन धारण का सामान ढूंढ़ना और उस को काम मे लाय अपनी पुष्टि करते जाना यह गुण ) ऊपर के उन दोनों गुणों से भिन्न है इस कारण इस की मीमांसा हम अलग करेंगे—

ऊपर हमने ( शक्ति ) शब्द का प्रयोग किया है सामान्य रीति पर यह पूछा जा सक्ता है कि शक्ति क्या बस्तु है और बिज्ञान अथवा दर्शन शास्त्र में इस्का क्या लक्षण निश्चय किया गया है ? क्योंकि सामान्य सर्ब साधारण लोग यदि किसी शब्द को साफ २ समझ भी सक्ते हों पर जब किसी शास्त्र मे उस शब्द का प्रयोग होगा तो उस शब्द का पूरा तात्पर्यार्थ स्पष्ट रीति पर खोलना चाहिये जिस मे सुनने वाले को कुछ संशय बाकी न रहे उदाहरण की रीति पर साधारण बोल चाल मे कह सक्ते हैं कि उस बालक मे आधमन का पत्थर उठाने की शक्ति है अर्थात्

बल है या उस पुरुष मे पांच मन का पत्थर उठाने की शक्ति है इसी तरह पर यह भी तो कह सक्ते हैं कि डइनामाइट मे वह शक्ति है कि पार्लियामेन्ट हौस को उड़ा सक्ता है या पानी मे वह शक्ति है कि जिसको काम मे लाने से रेल तक चल सक्ती है—यहां हमने दो तरह के उदाहरण दिखलाये एक मनुष्य के शारीरिक बल का दूसरा पानी का—पाठक जन टुक ध्यान दे सोचैंगे तो इन दोनो उदाहरणो मे कुछ २ भेद पावेंगे—मनुष्य के शारीरिक बल की जो शक्ति है वह बिना किसी दूसरे की सहायता के जब वह चाहे तब अपनी बलरूप शक्ति को काम मे ला सक्ता है—इसके बिपरीत जल मे जो शक्ति भरी है वह स्वयं अपना गुण नही दिखा सक्ती किन्तु कुछ और उसके साथ किया जाय या जल जिस दशा मे है उस दशा मे न रहे तब वह शक्ति काम मे आवे—अर्थात् जल जब तक अपने रूप मे है तबतक उसकी शक्ति अपने को प्रगट नहीं करती किन्तु जब आग के द्वारा आपने उस पानी को भाफ कर डाला तो उस्से वह शक्ति पैदा हुई जिस्से हज़ारो लाखों मन की रेल चलती है—इसी तरह डइनामाइट या बारूद स्वयं अपनी शक्ति को नहीं दिखलाता पर जब आपने उसमे छोटी सी आग की चिनगारी छोड़ दिया तो चट उसकी शक्ति काम मे आगई जिस्से वह पत्थर के क़िले या लोहे के जहाज़ों को भी उड़ा देता है—तो अब स्पष्ट होगया कि शक्ति मात्र को हम दो बड़े बिभाग मे अलग कर सक्ते हैं एक वह जिसका उदाहरण हमने मनुष्य का शारीरिक बल माना है जो बिना दूसरे के सहारे के जिस दशा मे वह है उसी मे अपनी पूरी सामर्थ्य देखला सक्ता है

दूसरी शक्ति बारूद के तरह की है जिस मे जब तक किसी बाहरी चीज़ का लगाव न रहे तब तक अपना प्रकाश नही कर सक्ती और इस के वास्ते दशा का परिबर्तन होना भी आवश्यक है—पहली शक्ति का नाम स्पष्ट शक्ति रक्खा जाय तो दूसरे तरह की शक्ति को गुप्त शक्ति यदि कहैं तो उचित है—

अब थोड़ा सोचने से हमारे पढ़ने वालों को झट खुल जायगा कि मनुष्य की बृद्धि और पुष्टि प्राप्त करने की शक्ति भी ( जो हमारे इस लेख मे प्राणी मात्र के लक्षणों मे दूसरा लक्षण है ) गुप्त शक्ति की गणना मे आवेगी भेद केवल इतना ही है कि ऊपर जो हम ने उदाहरण दिये हैं जैसा बारूद आदि वे सब गुप्त शक्तियुक्त निर्जीव पदार्थ हैं और बृद्धि और पुष्टि का लक्षण हम ने प्राणियों के संबन्ध मे माना है तो अब यह प्रश्न उठ सक्ता है कि प्राणी या जीवधारी आप किस को कहैंगे वा उसी प्रश्न को यों भी कह सक्ते हैं कि जीवन या जीवधारण आप किस को कहैंगे—यहां पर हम दार्शनिकों की भांति प्राण और आत्मा के सूक्ष्म बिचार मे नहीं प्रवृत्त होते किन्तु सामान्य रीति से जीवन शब्द की मीमांसा कर रहे हैं—जीवन वह गुप्त शक्ति है जो बाहरी पदार्थों को काम मे ला उस से लाभ उठा अपनी पुष्टि और बृद्धि करती है-और इस रीति पर देखने से यह बात स्पष्ट होती है कि इस सम्बन्ध मे हम पेड़ और आदमी दोनो का एकही लक्षण दे सक्ते हैं—पर इस से हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि मनुष्य को हम केवल अपनी बृद्धि और पुष्टि का एक यंत्र बिशेष मानते हों और इस सम्बन्ध मे मनुष्य और पेड़ों मे कुछ भी भेद न देखे—नहीं यह हमारा तात्पर्य किसी तरह पर नहीं है बरन मनुष्य की धार्मिक और

मानसिक शक्तियों को हम कभी नहीं भूल सक्ते जो ईश्वर ने केवल मनुष्यही को अपनी सब सृष्टि से बिशेष दिया है पर यह बात भी देखी जाती है कि शारीरिक और मानसिक का आपस मे सम्बन्ध बहुत निकट तर है इस लिये जिन जिन नियमों से कि शारीरिक बातें मनुष्य की बद्ध हैं उन्ही से उस की मानसिक और धार्मिक भी अर्थात् संसार मे यदि पिता पुत्र की आकृति और रूप मिलता है तो चरित्र और प्रकृति उस का दस गुना मिलेगा—

अब यहां पर यह शंका उठती है कि यदि एक आदमी चोर या बड़ा बिद्वान् है तो क्या उस की कुल परम्परा चोर अथवा बिद्वान हो जायगी क्योंकि उस चोर या बिद्वान् का बालक भी अवश्य चोर या बिद्वान् हो होगा—इस शंका की निवृत्ति के लिये हम फिर पेड़ों हीं को उदाहरण मे लेते हैं बहुधा देखा जाता है नीम आम आदि वृक्ष एकसां बलिष्ठ पुष्ट और घने नहीं होते—कारण इसका यही है कि ज़मीन का अच्छापन, आबो हवा का माफिक होना और सूर्य की गरमी इत्यादि जो पोषक पदार्थ हैं वे सब नीम अथवा सब आम के पेड़ों को एकसां नहीं मिले—तब मनुष्य के सम्बन्ध मे भी यह बात सिद्ध होती है कि जितनी अच्छी तरह वह बिद्याभ्यास अच्छी या बुरी आदत अच्छी या बुरी संगत इखतियार करेगा उस नाही उसका भला या बुरा परिणाम होगा—बिद्या पढ़ो अच्छी बातें सीखो अच्छे लोगों का साथ करो ( सद्भिरेवसहासीतसद्भिः कुर्वीतसङ्गमं । सद्भिर्विवादंमैत्रींचनासद्भिः किंचिदाचरेत् ) इत्यादि कोटों मे तुले हुये बड़े लोगों के सदुपदेश न जानिये कबसे इसी लिये होते चले आये हैं—सारांश यह कि किसी पुरुष को

वंश परम्परा प्राप्त मानसिक और धार्मिक प्रकृति जो उसमे पाई जातीहै वह उसके पूर्वजों की अंश है और इस बहु मूल्य थाथी को बनाकर या बिगाड़ जैसा वह अपने सन्तानो के लिये छोड़ जायगा वैसाही वह आगे को असर पैदा करैगी—जैसा किसी खेत को एकही घराना किसान का पुश्तहापुश्त सैकड़ो वर्ष से जोत रहा है और समय २ पर अतिवृष्टि अनावृष्टि आदि आपदाओं के कारण हानि को प्राप्त होकर अथवा दूसरे २ समय मे पोषक पदार्थो का सहारा पाय अब उस घरके एक किसान के हाथ में आजाय तो उस खेत को यथा विधि जोतना और उसकी वृद्धि करना या उसको बिलकुल खबर न लेना और यहां तक आवारगी पर कमर कस लेना कि उस खेत को बिलकुल नष्टकर जिमीदार या राजा से दण्ड के योग्य होजाना ये सब बातें उस किसानही पर निर्भर हैं—इसी तरह पर आदमियों मे जो हम लोगों की शारीरिक मानसिक या धार्मिक बिद्यमान दशा है वह सब मानो हमारे पुर्व्वजों का दिया हुआ स्वत्व है जिसे वे हमारे लिये छोड़ गये हैं—सोचिये कि मनुष्य का इस संसार में केवल जीना ही कितनी भारी जवाबदेही का काम है ! बेपरवाह अमीर लोग मुफ्त अपनी औकात खोया किया करते है अपना रुपया वाहियात कामों मे लुटाते हैं और अपने मन मे सोचते हैं कि क्या हम किसी की बुराई करते हैं ? हम अपने घर चाहो जिस रंग मे रहैं पर सच पूछिये तो वे कुछ न करने ही से अपने प्रिय से प्रिय लोगों की भलाई के बाधक बन रहे हैं क्योंकि अपने संतान से बढ़ कर प्रिय और कौन होगा और जैसा जो करेगा उस का पूर्ण असर उसके सन्तानमे जायगा और यह पैत्रिक गुण ग्रहण करने का नाता ईश्वर

ने ऐसा प्रबल बनाया है कि इस से बाहर कोई हो ही नहीं सक्ता—इस वास्ते हे प्रिय पाठक गण ! सोचिये कि कितने लोगों के भलाई बुराई का पूर्ण निर्भर केवल आप ही के चरित्र पर है—तब यह आप को पूर्ण अधिकार है कि चाहो मन माना खुल खेलिये या दमन शक्ति के बशम्बद हो ऊंचे दर्जे की शिष्टता या भव्यता के नमूना बनिये ॥

—:०:—

## । लेडी डफरिन फंड ।

इस महीने की २३ तारीख को यहां की म्योहाल से अंगरेज़ और हिन्दुस्तानियों की इस फंड जमा करने को बड़ी भारी मीटिंग की गई जिस मे श्री मान सर आलफ्रेड लायल यहां के लफ़टिनेंट गवर्नर सभा पति थे—वहां तो हमारे हिन्दू भाई अंगरेज़ अफसरों के खुश रखने को अवश्य ही उन के मन की सी वक्त आये पर बास्तव मे अधिकांश हिन्दू इस बात से बड़े सशंकित से हैं कि इस से उन की रीति नीति पर बहुत कुछ सदमा पहुंचेगा—बिलायती स्त्रियों के द्वारा अपनी मा बहन तथा बहू बेटियों का दुःख दूर करना कदापि प्रिय न होगा—छिपाने से लाभ क्या यह जनानासिष्टेम जो हम लोगों मे रिवाज पाता जाता है और अंगरेज़ी मेमें लोगों के घर २ घुसा करतीं है इस बात ने बहुत से दूर दर्शी हिन्दुस्तानियों के चित्त मे बड़ी खनक और असावधानी उपजा दी है और उन अंगरेज़ी मेमों के संपर्क

से जो घोर आपत्तियां बहुधा लोगों के घरों मे उपस्थित हो गईं उन पर दृष्टि दे कम लोग बिलायती धायों को अपने घर मे बिशेष अवसर देंगे—साधारण से साधारण बीमारियों मे डाक्तरों की फीस और दवाइयों की बिल अदा करते २ लोगों के धुर्रे उड़ते हैं स्त्रियों के लिये अलग धायें और डाक्तरिनियां होंगी तब तो निस्सन्देह बे मौत के मरना होगा और प्रत्येक घराने से जितना रुपया डाक्तरी फीस तथा दवा की बिल का दिया जता है उस का दो गुना जाया करेगा—प्रगाय हिन्दू मध्य समाज ने देशी तिजारत के न रहने से यहां के जुलाहों की जो हानि है उस पर तो बड़ी हम दर्दी और दया प्रकाश किया कोड़ियों के भाव से प्रत्येक नगरों मे डाक्तरों के बढ़ जाने से हमारे यहां की बैद्य बिद्या लुप्त होती जाती है और अच्छे अच्छे सत्कुलीन ब्राह्मण बैद्यक मे पूर्ण अभ्यास कर जो भूखों मर रहे हैं इस की फिकिर न कभी मध्य समाज ने किया और न किसी दूसरी सभा या कमेटी मे इस का आन्दोलन देखा सुना गया—अस्तु अब तो लेडी डफरिन फंड हो ही रहा है हमारे रोके क्या रुक सक्ता है हमको बिशेष दुःख उस दिन की कमेटी मे राजा शिव प्रसाद के अनर्गल बचनों पर है जिन्हों ने महाराजा युधिष्ठिर से सच्चरित्र संपन्न महापुरुष पर अपने छोटे अपबित्र मुह से दोषारोपण करते हुये यह कहा। हम लोग स्त्रियों की भलाई करना क्या जाने उन्हें जुवा मे युधिष्ठिर के समान हार जाना अलबत्ता जानते हैं—और और जायदातों की तरह औरतें भी हमारी एक जायदात हैं जिन पर हमारी सर्बतोमुखी प्रभुता है उन्हें जिस तरह पर मन आवे काम मे ला सक्ते हैं हिन्दुओं की स्त्रियां कुत्तों की मौत मरती हैं—कदाचित् राजा साहब के

घराने मे यही दस्तूर है कि स्त्रियां कुत्तों की मौत मारी जाती हैं— हम तो कहीं नहीं देखते कि अपने बित्त के अनुसार स्त्रियों की खातिर दारी मे कोई पीछे हटता है—हम लोग अपनी स्त्रियों को नखसे सिख तक सोने से लस इन्द्राणी बनाये रहते हैं और घर गृहस्थी के कामों मे विना उन की सलाह के पत्ता नहीं खड़कने पाता यह क्या कोई खातिर दारी ही नहीं है ! हां अंगरेज़ी मेमों के समान बे परदगी उन से अलग नहीं किया चाहते इसी को शायद राजा साहब कुत्ते की मौत मरना मानते हों-फिर उक्त राजाने यह भी कहा—मेरी बहन लेडी डफरिन साहबा की यह शुभ इच्छा सुन अति प्रसन्न हुईं और चलती बार मुझसे कहा मैं क्यों कर ऐसी स्त्री को तेंतीस करोड़ देवी देवताओं मे शामिल कर चन्दन फूल से पूजा करूं हमारे देवताओं मे शामिल होना लेडी साहबा काहे को पसन्द करेंगी—राजाजी ऐसी २ खुशामद की छुद्र बातों से जो चाहते हों कि डफरिन साहब को खुश कर एक बार कौंसिल के मेम्बर हम फिर कर लिये जांय सो कभी नहीं होना है हाकिमों को भी इन की खुद गर्ज़ी और ज़ाहिर दारी का सब हाल भर पूर मालूम हो गया है—खैर इसे हम कहां तक भीखते रहें— 'नीम न मीठी होय सींच गुड़ घी से,—राजा साहब देश की बुराई करने मे न चूकें मौका पाय काटैं पर काटैं और यारों का भी यही प्रण है कि इन्हें टोकेंगे फिर टोकेंगे हज़ार बार टोकेंगे—अस्तु डफरिन साहब इन कंटैक्स के द्वारा हिन्दुस्तान की नस २ दुहने की तदबीर कर रहें हैं लेडी साहबा अपने नाम का यह फंड खड़ा कर अंगरेज़ी धाइयों के मुख रूप पात्र मे यहां का धन दुहैं—'पृथुप दिष्टां दु दुहु धरित्रीम्, ॥

# । नूतन ब्रह्मचारी ।

## उपन्यास

### १ परिच्छेद

पिंडारियों के लूट मार की दक्षिण मे किसी समय बड़ी धूम थी—गांवों की कौन कहे बड़े २ नगर और राजधानियां भी उन के अत्याचार से न बचे थे—मुसलमानी और महरठा राज्य के उथला-पथल के कारण वह अन्धेर और नवाबी मच रही थी कि राजकी य पुलिस और सैनिकप्रबन्ध की कौन कहे सामान्य रीति पर भी कोई बचाव जानोमाल का न था—जो लोग स्वास्थ्य और अमन चैन के समय कदाचित् ईमानदार और भले मानुस रहे हों उनकी नीयत भी ऐसे समय डांवा डोल थी – जिस की लाठी उस की भैंस इस कहावत का पूरा बर्ताव इसी काल में था—ऐसे अराजक मे यह मानो एक मसल चल पड़ी थी कि ऐसे समय जो अपने माल को रक्षा न करै वह तो बेवकूफ हई है पर उस से बढ़ कर बेवकूफ वह है जो अरक्षित माल पर हाथ न बढ़ावे – इन्हीं दिनो की यह बात है कि बैशाख के महीने मे नासिक से दस कोस पर एक जंगल में सांझ के समय तीन आदमी हथियार बन्द घोड़े पर सवार आपस मे कुछ गुप्त कथा कर रहे थे – उन मे से एक के चेहरे से जान पड़ता था कि वह दोनों का सरदार है—और उन दोनों के भयावह चेहरे और आंखों के देखने से मालूम होता था कि उन्हों ने कितने ही लोगों का खून किया होगा – दया और प्यार अथवा मित्रभाव तो उन की सूरतही देख सैकड़ों कोस

दूर भागता था और यही मन मे व्यापती थी कि ये दोनों साक्षात् कृतान्त के सहोदर भाई हैं अथवा पिण्डीभूत क्रूरता और निठुराई के अंशावतार हैं — उन के फुरतीले बदन से यह बात झलकती थी कि निस्सन्देह वे लोग घोड़े पर चढ़ने मार पीट करने और छापा मारने मे बहुत ही निपुण होंगे — उनकी चुस्त पोशाक भयङ्कर चेष्टा और सब रङ्ग ढङ्ग इस बात की गवाही देते थे कि बेशक ये लोग लुटेरे हैं चलते २ थक से गये हैं इस लिये सघन वृक्ष की छाया मे कुछ देर के लिये विश्राम करने को ठहर गये हैं — तीसरा आदमी जो पोशाक, सूरत शकल, और हुकूमत के ढङ्ग से उन दोनो का सरदार मालूम होता था उसके चेहरे पर इतनी निर्दयता नहीं बरसती थी जितनी औरों के — यद्यपि ढङ्ग उस का भी लुटेरों ही का था पर उसकी आंखों मे शील और दया की कोई २ समय झलक सी मालूम होती थी — उस वक्त की उनकी बात चीत से ऐसा जान पड़ता था कि किसी बात की बहस उनमे पेश है और सरदार की राय उन दोनो लुटेरों के कुछ खिलाफ मालूम होती थी ॥

पहिला लुटेरा — घंटे दो घंटे और चले चलिये यहां ठहरने से फायदा ॥

दूसरा — ठीक तो है — थोड़ी दूर और चले चलिये फिर तो आठ बजे तक चांदनी निकल आवेगी तब मजे से जङ्गल की बहार देखते चले चलेंगे और आधीरात तक मे ठाकुर साहब की गढ़ी के पास पहुंच जांयगे ॥

सरदार — नहीं २ गढ़ी पर कल्ह चलेंगे आज यहां ही रहो ॥

पहिला ( कुछ क्रोध से ) यहां रहें तो खांयगे क्या !

सरदार ( मुलाइमीयत से पर हुक्म देता हुआ ) जो फेंट में बंधा है वह आज की रात खाता नहीं कल्ह की कल्ह है ॥

यह इस तरह से कहा गया कि यद्यपि दोनों लुटेरे मानो क्रोध की आग मे भुने जाते थे पर आगे बोलने की हिम्मत उनकी न पड़ सकी चट दोनो घोड़े से नीचे कूद पड़े और घोड़ा पेड़ मे बांध दिया और सरदार ने भी उसी पेड़पर की एक चिड़िया का शिकार किया और उसके भूनने की फिकिर मे हुआ ॥

——:०:——

२ परिच्छेद

यह भू भाग अनेक सुरम्यलता और प्राकृतिक कुंजों की प्रसव भूमि थी — क्योंकि बनजो यहां थे वे इतने सघन न थे कि उन मे घुसने ही से बटोही भूल भुलैया के चक्कर मे पड़ कोसों तक भटकता फिरे — इस बन के बृक्ष भी इतने गम्भिन न थे कि सूर्य्य देव की किरणें बाहर ही से झांक कर रह जांय पेड़ों के एका के कारण भीतर न घंस सकें — सहास्रांशु की सहस्र २ किरणें उदय होने के साथ ही एक बारगी आ कर इन वृक्षों के कोमल प्रवाल सदृश पल्लवों पर जो टूट पड़ती थीं यह उसी का परिणाम है जो इन वृक्षों मे एका न था क्यों कि जहां एका है वहां यह कब सम्भव है कि कोई बाहरी आकर अपना प्रभुत्व जमा सके — अलबत्ता इस ठौर यह बात न देखी जाती थी कि कोसों तक सुस्वाद मीठे फलों से लदे हुये बृक्ष पथिकों को आतिथ्य के लिये अपनी लम्बी बिस्तृत डाली रूप भुजाओं से हवा मे झकोरा खा खा कर बोला रहे हों — इसी जङ्गल के और २ प्रान्त के समान न

यहां कोसों तक केवड़े के वृक्ष ही थे जो अपनी सुगन्धिसे उदाहरण बनते हुये सर्व्व साधारण को यह उत्तम शिक्षा दे रहे हों कि भलाई और अच्छा काम तुम से जहां तक बन पड़े करो परन्तु उस भलाई का प्रति फल पाने की आशा मत रक्खो – सांपों से गुथे हुये चन्दन के पेड़ों की जो कहानियां प्रसिद्ध हैं वे इन्हीं बिकट कानन की कथायें हैं – परन्तु खेद का बिषय है कि यह खूबी भी जिस स्थान का हम बर्णन कर रहे हैं उस में न थी ॥

यहां पर थोड़े से पेड़ों का बिरल भाव उस रम्य स्थान के सोहावने पन को बढ़ाता सा था – जङ्गल काहे को था वह माली जिसका नाम प्रकृति है उसके हाथ का लगाया हुआ एक छोटा सा उद्यान सा था – पहाड़ों की उंचाई भी इस स्थान की भयावनी न थी – हिमालय में जाइये तो प्रकृति का महत्त्व और बिशालता देख कर आदमी को सैर करने से सुख उठाने का अवकाश ही मानों नहीं मिलता – बेचारा सैर करने वाला हिमालय की लोकोत्तर बस्तुओं के सामने आश्चर्य्य और अचम्भे ही में गोता खाता हुआ रह जाता है – यहां पर सो बात न थी – बनैली घासों से तुपे हुये पहाड़ियों के छोटे २ टीले बहुत ही सोहावने देख पड़ते थे उनके नीचे जो खड़ा होकर ऊपर शृङ्ग की ओर देखता था उसका मन ऊपर चढ़ने से हार नहीं जाता था – बरन पगडण्डियों से ऊपर चढ़ कर और दूर तक के दृश्य की बहार देखने का चौगुना हौसला बढ़ता था ॥

दिन प्रति दिन बढ़ती हुई गरमी के मौसिम मे प्रातःकाल से बढ़कर दूसरा समय ऐसा सुख दायी और आराम का नहीं होता ऐसेही प्रातःकाल के समय एक दिन दो मनुष्य पहाड़ के

एक टीले से उतरते हुये दिखाई दिये – जिनमे एक स्त्री थी दूसरा पुरुष – पुरुष का नाम बिट्ठल राव था और स्त्री जो उसके साथ थी उसकी अर्द्धाङ्गिनी मालूम होती थी – प्रातःकाल बनो मे जैसा पक्षियों का कोलाहल होता है वह अभी समाप्त नहीं हुआ था क्योंकि दिननाथ भगवान् प्रभाकर कुछ निकले थे और कुछ आकाश बितान से अपना मुह ढांपे रजनीकर के बियोग ताप मे सन्तप्त रजनी बिरहिनी को आश्वासन सा दे रहे थे – और उन ऊंचे पेड़ों में जिनकी पत्तियां बारहों महीने हरी भरी बनी रहती हैं उनकी फुनगियों से फूट २ किरणें अपनी झलक दिखला रही थीं और उन्ही पेड़ों की पत्तियों को थोड़ा २ हिलाते हुये जो प्रातःकालीन मन्द मारुत बह रहा था जिसमे अभी तक गरमी का लेश मात्र भी नहीं आया था उस शीतल मन्द सुगन्ध त्रिविध समीरण का सुख उठाते बिट्ठल राव ठाकुर साहब की गढ़ी को जारहे थे – ठाकुर साहब की गढ़ी उस टीले से पूरे चार घंटे की राह थी इस लिये शीतल मन्द वायु का आनन्द उठाने के अभिप्राय से अथवा इस दूर के रास्ते को सोच कर आपस मे कुछ बात चीत करते हुये दोनो धीरे २ आरहे थे पहनावा बिट्ठल राव का छज्जेदार महरठी गोल पगड़ी घुटने तक का चोली दार छोटा अङ्गा था किनारे दार एक मोटी धोती पहने थे और चौड़े किनारे का एक नागपुरी उपरना ओढ़े थे न तो बिट्ठलराव के साधारण बेश से और न इनकी स्त्रीही के पहनावे से कोई बिशेष अमीरी का चिन्ह सूचित होता था-बिट्ठलराव अमीर नहीं थे पर गरीब भी न थे-सामान्य रीति पर एक तरह की प्रतिष्ठा और गौरव उन के चेहरे से झलकता था –

अवस्था इन दोनों स्त्री पुरुष की पैंतीस और चालीस के लग भग थी — प्रतिष्ठा और मर्यादा बिट्ठल राव के घराने की इसी एक बात से सूचित होती है कि पुश्तहा पुश्त से ये और इन के पूर्वज ठाकुर साहब और ठाकुर साहब के पूर्वजों के कृपापात्र और स्नेहभाजन थे इस लिये बिट्ठल कभी २ अकेले और बहुधा तो सपत्नीक ठाकुर साहब के घर जाते थे औ उन से मिल आते थे — गरीब बिट्ठल के पास असबाब ही क्या था जो कुछ था भी वह उन्हीं दुष्ट पिंडरी लुटेरों के अत्याचार के कारण थोड़े दिन हुआ लुट गया था इसी से इधर ये कुछ तंग और दुखी रहते थे — इसी कारण पिछली बार जब ये ठाकुर के यहां गये थे तो इन्हें तंग और दुखी देख ब्राह्मण समझ कर दान आदि दे ठाकुर ने इन का बिशेष उपकार कर दिया था — उस दिन तो इन्हों ने कुछ न कहा और ठाकुर साहब ने जो कुछ दिया ले लिया पर मन मे इन के यही बिचार आया कि 'हमारा सदाही यहां आने का क्रम है अब जो इसी तरह पर आना जाना नहीं बनाये रहते तो ठाकुर कहेंगे देखो बिट्ठल राव कृतघ्नी है और उस को घमण्ड हो गया है अपना मतलब निकल गया तो अब मुलाकात तक छोड़ दी, — साथ ही यह भी शंका मन मे हुई कि 'ठाकुर ने आज हमारा कितना उपकार कर दिया है अब यदि शीघ्र ही फिर अपने क्रम के अनुसार यहां आते हैं तो ठाकुर यही समझेंगे बिट्ठल राव बड़ा लालची है एक बार इतना ले गया देर न हुई फिर आकर मौजूद हुआ, — यह पिछली भावना इनके मन मे इतनी प्रबल हुई कि इस ने और सब तर्क बितर्क को दबा दिया — उस दिन से बिट्ठल राव ने यही

ठान ठाना कि जब तक ठाकुर खुद आदमी न भेजें तब तक बिना बुलाये नहीं जाना इस से इधर बहुत दिनों से ये ठाकुर के यहां नहीं गये थे—और न जाने का एक कारण और भी था कि इन के पुत्र का यज्ञोपवीत इसी बैशाख मे था और यद्यपि बिट्ठलराव खूब जानते थे कि बिना ठाकुर की सहायता के उन का काम न चलेगा पर जो जो तर्क बितर्क हम ने ऊपर लिखा है उन्हीं सब को सोच बिचार बिट्ठलराव की हिम्मत ठाकुर के यहां जाने की न पड़ती थी—यद्यपि इस कार्य्य की आवश्यकता उन को बार २ प्रेरणा करती थी पर फिर भी बिना बुलाये वे ठाकुर के यहां नहीं जाया चाहते थे कि इतने मे कल सांझ को (जिसका बर्णन हम ऊपर लिख आये) ठाकुर के यहां का बुलावा आया ही तो और इतने दिनों तक न आने का बहुत सा उलहाना के बाद ठाकुर साहब की यह इच्छा प्रगट हुई कि सस्त्रीक बिट्ठलराव कल सुबह को हमारी गढ़ी मे अवश्य आवें—यह सन्देसा कह हलकारा लौट गया—अब बिट्ठलराव की सब इच्छा पुरी हुई मान का मान रहा और काम का काम चल निकला—एक दिन भी इस हलकारे के आने में देर हुई होती तो बिट्ठलराव यहां तक खुश्क और निष्किंचन हो गये थे कि न जाने क्या करते और कहां से काम चलाते क्योंकि पहली और दूसरी वेदी का उपनयन और बेदारम्भ संस्कार तो अपने पुत्र का ये किसी न किसी तरह पर अपने आप कर चुके थे पांच छ दिन के उपरान्त समावर्त्तन संस्कार होने वाला था इस में दूर २ के नाते रिश्ते वाले भाई बिरादरी के लोग ने उतहारी आते तो उन के खाने पीने लेने देने के सामान तथा

समावर्तन यज्ञ के पूरा करने की सब सामिग्री बिना रुपये के कैसे होती—ऐसे २ बहुत से तरद्दुद बिट्ठलराव को उपस्थित हो रहे थे—बिट्ठलराव के मन की फिकिर और चिन्ता की दशा उस समय जो थी उसे पाठक जन आपही सोच लें और फिर जब ठाकुर का बुलावा आया तो जैसा हर्ष से इन का मन मुकुल विकसित हो एक बारगी खिल उठा इस का पूरा २ अनुभव उन्ही को होगा जिन्हें कभी ऐसी संकीर्णता झेलना पड़ा है या पाठक जन इस का अनुमान आप ही कर लीजिये पूरा २ वृत्तान्त बिट्ठलराव ने लिखना लेखनी की शक्ति के बाहर है क्योंकि यह अनुभव की बात है लिखने की नहीं—हलकारे को विदा करते समय इतना कह दिया कि—"इतने दिन तक न आने की मैं ठाकुर साहब से क्षमा कल्ह आप ही आकर मांग लूंगा विशेष क्या कहूं,—रात किसी तरह पर बिताय तड़के उठते ही बिट्ठलराव चलने की तय्यारी मे हुये—क्रमशः ॥

—:0:—

# भारत बर्ष की जातीय भाषा

लोग कहते हैं इस उन्नति के समय मे ( छिः ! ) भारत बासियों को अपने स्वत्व की पहचान और अभिमान दिन २ बढ़ता जाता है और देश की पराधीनता मे जो कुछ हमारे हाथ अभी बचा हुआ है उसे सब प्रकार रक्षित रखने के अनेकों प्रयत्न दिन २ सोचे जाते हैं—जातीय गौरव के संरक्षण की ओर सुशिक्षित मण्डली का ध्यान प्रतिक्षण अधिक होता जाता है—देशी विद्या, देशी बस्त्र, देशी रहन, देशी चलन, देशी उठन, देशी

बेठन इत्यादि यावत् स्व देश सम्बन्धी बातें हैं सब के संशोधन और परिवर्द्धन मे चित्त दिया जाता है—काश्मीर मे कुमारी और किराची से कोचीन तक के बिस्तृत भूभाग मे भारतत्व निवेशित करके प्रत्येक देशीय व्यक्ति मे भ्रातृत्व समझा जाने लगा है—बहुत ठीक—परन्तु हम पूछते हैं भला इस सब का कारण क्या है ? क्या पहले भी ऐसा था ?—पचास बर्ष पहले हम लोगों की यह दशा थी ऐसा तो कभी नहीं कहा जा सक्ता परन्तु ऊपर के प्रश्न के उत्तर मे सब एक स्वर से यही कहेंगे कि जब से इस विश्व व्यापिनी अंग्रेज़ी शिक्षा का सञ्चार देश मे हुआ तभी से यह नवीन शाखा चला और सभी को इस उत्तर मे हां करके सन्तोष करलेना पड़ेगा ॥

उन की हां मे हां मिला कर हम भी यही कहते हैं कि निस्सन्देह इसी भाषा की शिक्षा का यह सब फल है—इसी से इस भारत भूमि के देश देशान्तरों के बासियों मे एक ही प्रकार के बिचार और भाव उत्पन्न हुये हैं—उसी के उंजयाले से अपने दीप शून्य घर के पदार्थ हम लोगों को सूझने लगे हैं—उस मे भी कुछ पुराने ही पदार्थ नहीं किन्तु अनेकों ऐसी नवीन वस्तु दृष्टि आने लगी हैं जिन का जानना बिना अंग्रेज़ी की कृपा के कभी सम्भव न था—यहां एक उदाहरण भी दिया जाता है—'जातीय गौरव' यह एक पद है जो आज कल अंग्रेज़ी सहित संस्कृत जानने वालों की बोली और लेखों मे प्रायः बरता जाता है—इस का अर्थ किसी निरे संस्कृतज्ञ से पूछिये तो वह अपनी २ जाति का बड़ापन या अभिमान छोड़ और कुछ न बतावेगा—परन्तु अंग्रेज़ी पठितों से अथवा उन लोगों से जिन के बीच इस

भाषा के ढंग के बिचारों ने किसी प्रकार प्रवेश कर लिया है इस पद का शाब्द बोध कुछ निराली ही रीति का होता है—वे जातीय गौरव से हिन्दुओं की अनेक जातियों में से किसी जाति विशेष सम्बन्धी प्रतिष्ठा का अर्थ नहीं समझते। किन्तु हिन्दू मात्र अथवा और भी बढ़िये तो भारतीय देशी प्रजा मात्र के समुदाय की मान मर्यादा प्रतिष्ठा आदि से तात्पर्य मानते हैं—यद्यपि इस उदाहरण के देने की इस लेख में कोई आवश्यकता न थी परन्तु चर्चा करते २ आ गया—खैर लिख दिया—पर भाव हमारे कथन का यह है कि जो कुछ अपने सांसारिक स्वरूप का ज्ञान हम लोगों को इस समय में हुआ है बहुधा अंग्रेज़ी ही के प्रसाद से कहा जा सक्ता है—और इसी बोली के द्वारा भारत बर्ष के भिन्न २ देशों के निवासी परस्पर भाव प्रकाश करते हैं—

परन्तु जब कि हम और और विषयों में भारत बर्ष में ममता रखते हैं और उसे एक ही देश मानते हैं तो क्या आश्चर्य बरन उपहास की बात नहीं है कि यहां कोई भाषा ऐसी एक नहीं जिसे सम्पूर्ण देश अपनी कह सके क्या भारत बर्ष के भिन्न २ प्रान्तों के लोग मिल कर कह सकते हैं कि हम सब की अमुक एक भाषा है!

यदि किसी भाषा को हम लोग भारत बर्ष में व्यापक रूप से प्रचलित देखते हैं तो अंग्रेज़ी ही को पाते हैं—परन्तु क्या वह भारत बर्ष की भाषा है! क्या उस में हम लोग स्वत्व मान सक्ते हैं क्या किसी बिदेशीय बस्तु में अपनी ममता स्थापन कर हैं कभी नहीं—

बहुत सी वस्तुयें हैं जिन मे हमारा जातीयत्व स्थिर और दृढ़ है। परन्तु कोई एक भाषा अकेली ऐसी नहीं है जिसे भारत वर्ष की जातीय भाषा कह सकें! हां संस्कृत को अवश्य सब देश अपनी कह सक्ता है—परन्तु वह सामान्य बर्ताव मे नहीं आती इस से वर्तमान कालीन जातीयता उस मे नही है॥

यह बहुत सम्भव है कि यदि अंग्रेज़ी की शिक्षा इसी प्रकार दिन २ फैलती गई तो कालान्तर मे हमारी जातीय भाषा का भाव उसी मे आजाय——परन्तु यदि ऐसा हुआ तो इस विश्वोन्नत प्राचीन भारत वर्ष के लिये इस से अधिक तर लज्जा का विषय दूसरा क्या होगा!

यदि देश का कुछ भी अभिमान हमको है तो ऐसा उपाय शीघ्र ही करना चाहिये जिस से हमारी एक जातीय भाषा हो जाय॥

यहां पर इतना हमे अवश्य कहना चाहिये था कि यद्यपि जातीय भाषा हम लोगों की कोई नहीं परन्तु जातीय अक्षर हैं—और जो कोई हमारी जातीय भाषा कभी होवेगी इस के अक्षर भी वे ही अक्षर होने चाहिये जिन मे कि इस समय जातीयता है—वे अक्षर देव नागरी हैं—और भारत वर्ष की वर्तमान भाषाओं मे एक भाषा भी ऐसी है जो इन उक्त अक्षरों मे लिखी जाती है और वह भाषा ईश्वर की कृपा से हिन्दी है—फिर यह भी है कि यह हिन्दी थोड़ी बहुत भारत वर्ष के सब भागों मे समझी जाती है और अधिक भागों मे बोली भी जाती है॥

इस से हमारी समझ मे तो यही आता है कि यदि भारत वर्ष की कभी कोई जातीय भाषा होगी तो वह यही हमारी प्यारी सर्व गुण आगरी नागरी ही होगी—और यथार्थ मे इसी को ऐसा बनने का अधिकार भी है॥

परन्तु उस का इस पद पर प्राप्त होना केवल उन्हीं पुरुष

सिहों के आधीन है वो उसे उन्नति देने का बीड़ा उठाये हुये हैं ॥

क्या उन के लिये हिन्दी को उक्त स्थान पर पहुंचा देना कोई बड़ी बात है कभी नहीं — शिष्ट और माननीय महा पुरुषों की झुकावट इधर होना चाहिये ॥

## लड़ाई भिड़ाई ।

### ( पंच )

भारतेन्दु से

अब की साल लड़ाइयों की कुछ ज्यादा धूम धाम रही मिसर की लड़ाई । रूस की लड़ाई । बर्मा की लड़ाई । तमाम रौद्र वीर । भयानक । रौद्र घोर बीभत्स रसमें ही कटी । यहां तक कि जब कोई लड़ाई न रही । तो युद्धप्रिय लार्ड डफ़रिन ने दिल्ली में झूठी ही लड़ाई शुरू की । क्यों न हो ! ईश्वर करे ऐसे गवर्नर जेनरल सदा हिन्दुस्तान मे आवें । जिन से हिन्दुस्तान एक बार वीर रस मे मस्त हो जाय । यही सब इधर उधर लड़ाइयां देख कर हमारा कायर चित्त भी लड़ाई के लिये उमग आया । जब हमने देखा कि डरपोक बंगाली तक वालन्टियर बनने को तय्यार हैं और बड़ोदा की वृद्धा महारानी यमुनाबाई तक काली कराली बन कर युद्ध करने को तय्यार हो गई तो क्या यार लोग ही चुप रहें । हमारे कायरपने की दुम मे आग के फ़ील का रस्सा ! बात क्या है । भागतों के अगाड़ी मारतों के पिछाड़ी तो सदा की रीत है । होगा क्या यही न कि हम मर जायेंगे । चलो कवि का वाक्य सफल हुआ, 'हा कष्टं खलु जीवनं कलियुगे धन्याः मृता ये नराः' जो हो हम भी वालन्टियर बनेंगे । पर अफ़सोस कि

सरकार ने हमारा हाथ पकड़ा ही नहीं। हम ऐसे पराधीन हुये कि सरकार के ऊपर मर भी न सके! ख़ैर उधर से दिल खट्टा हुआ तो सोचा कि किसी से मुक़द्दमा लड़ें पर जब पाकट मे हाथ गेरा तो कुल तीन पाइयां ही निकलीं इस से क्या हो सक्ता था यह तो कचहरी के इक्के का भी ख़र्च नहीं। तब यह ठहरा कि कानपुर चलें वहां दंगल मे कुश्ती लड़ेंगे इनाम पायेंगे पर याद आया कि किसी पंजाबी पहलवान ने घिस्सा मारा तो फिर महीनों खाट पर सिकेंगे इस से यह भी नहीं अच्छा सब पगड़ी बांध पण्डित बन कर किसी सभा मे लड़ेंगे पर विद्या कहां। काशी मे पढ़े ही नहीं जो धूर्त्तता आती नवद्वीप गये ही नहीं जो अवच्छेदकावच्छिन्न की झड़ी बांध देते जब कहीं हमारा मनोरथ सिद्ध न हुआ तो हमें यह सूझा कि 'हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखो ही आवे, देशोपकारी लड़ाई लड़ो और अपने देश के बैरी अज्ञान को मारो इस मे कुछ नहीं चाहिये मुख मस्तीति वक्तव्यं दश हस्ताहरीतकी, बस बाक़ी क़लम दवात स्याही काग़ज़ यह सोच कर हम इस लड़ाई पर क़ायम हो गये अब कौन है जो हमें इस इरादे से हटावे। हमने जो अब तक इस के वास्ते सामान इकट्ठा किया है और जो जो तदबीरें सोची हैं उन की लिष्ट यह है कि पहिले तो हम हिन्दुस्तान मे सब जगह समाजों की छावनी करेंगे आर्य्य धर्म ब्रह्म थियोसोफ़िकल सब अपनी ही छावनियों मे दाख़िल हैं इन मे सब तरह के सिपाहियों की पलटनें भरती करेंगे उन्हें विद्या की बन्दूकें और कमेटियों के कार्तूस देंगे जितने "School Boys" हैं उन को रिसाले मे रखेंगे और इन को अंग्रेज़ी की तेज़ घोड़ी मिलेंगी जो अंग्रेज़ी घोड़ीपर सवार न हो सकेंगे उन्हें हिन्दी फ़ारसी अरबी घोड़ी देंगे इस के

सिवा एक उर्दू का ऊंटनियों का रिसाला भी होगा जिस में बहस मुबाहिसों के किताबों के भारी २ तजवें रहेंगे हमारा यह भी विचार है कि थोड़े से भुच्च गंवार घोंघा पण्डित (कुछ हाथ पैर नहीं चलाते) उन्हें संस्कृत के हाथी पर सवार करा उन के हाथ में पुराने धर्म के धनुष और पीठ पर पुस्तकों के तर्कश में पन्नों का बाण भर देंगे जिस से लड़ाई के समय और नहीं तो दुश्मन की फौज के सिपाहियों पर धीरे२ बाण छोड़ कर उन के नाक कान काटेंगे जब हमारी पल्टन और रिसाले दुरुस्त हो गये तब फिर तोपखाने की भी दुरुस्ती होनी चाहिये पहिले तो हम पुराने ज़माने की ज़मीन में गड़ी दबी हिन्दी की तोप साफ़ कर के रस की गाड़ियों में बैल जोतेंगे और उन में से करुणा रस के गोले चलावेंगे दूसरे बंगाली गुजराती मरहठी कनाड़ी तोपें उन्हीं देशों पर रख कर उन में से स्वाधीनता और बलवीर्य के गोले चलावेंगे तीसरे खास बिलायती इंगलिश गन छः छः घोड़े की गाड़ी पर धरी जावेंगी जिन में से तर्क वितर्क कुतर्कों के दो दो मन के गोले चलेंगे जिस से कोसों तक हमारे वेग का पता न लगेगा इस से अधिक बहुत से तरह २ के ज़ंजीरी गोले अखबारों के चलेंगे जो हजारों शत्रुओं को क्षण भर में नाश करेंगे इस सब सेना के जेनरेल कर्नेल हमारे इन दिनों के रिफ़ार्मर महाशय होंगे और कमाण्डरइनचीफ़ बाबू सुरेन्द्रनाथ बनुर्जी होंगे इस सेना की तनख्वाह देश बासियों के चंदे से निबटाई जायगी और देसी तिजारत कम्पिनी के कपड़ों की बर्दी दी जायगी और बाद लड़ाई के लूट माफ़ जो लोग लड़ाई से भागेंगे उन पर हमारे लेक्चरों की गोलियां छूटेंगी और ज़बर्दस्ती उन्हें लड़ना पड़ेगा बस हमने लड़ाई का सब सामान तय्यार कर लिया है अंग्रेज़ी राज को सूचना दी जाती है कि या तो वह पंद्रह दिन के भीतर हिन्दुस्तान खाली कर दें नहीं तो चोरों की तरह कैद कर के अण्डामन भेज दिये जावेंगे॥

# मेरे नवीन देशोपकारी व्याख्यान और ग्रंथ

१ 'मट्टी शरीर पर मलने से रोगों की चिकित्सा'—इस अपूर्व लेक्चर अमेरिका के प्रसिद्ध हकीम ने सिद्ध किया है कि मट्टी अपनी बिजली शक्ति से शरीर के बाधक अंशों को जो रोग के हेतु होते हैं खींच लेती ≠)॥ २ 'मनुष्य की संतान में किस विधि करके सुन्दर रूप बल बुद्धि उत्पन्न हो सक्ता है, इस लेक्चर में उक्त प्रोफेसर ने सिद्ध किया है कि गर्भ और मगज़ में बिजली द्वारा पूरा संबंध है गर्भिणी की जैसी भावना विचार कर्म हैं। गेसा जैसे वस्तु देखेगी उन सब का साक्षात् अवतार बच्चा होगा ≠) ३ 'मातृभाषा की उन्नति करने के उपाय, ≠)॥ ४ 'बालविवाह की कुरीति की शारीरिक सामाजिक और धार्मिक महा हानि, ≠) ५ मनुष्य का सच्चा सुख किस में और उसकी प्राप्ति के के द्वार हैं ≠)॥ ६ 'तीन ऐतिहासिक रूपक, इन में रोचक भावन रीति से विषयी पुरुषों की दुर्दशा दर्साई गई है ≠)॥ ७ 'बालविधवा संताप नाटक, और विधवा विवाह के शास्त्रीय प्रमाण ।≠)॥ ८ नीत्यु पदेश अर्थात् अपनी युक्ति से बुद्धि स्मरण भावना तर्क, मनोहर रीति से समझ बोलने और लिखने की शक्ति बढ़ाने, आरोग्यता रखने, नीति धर्म पालन करने के स्वभाविक नियम और साधन यह सेल्फकलचर का अनुवाद है मू० ॥≠)॥ ( यह उरदू में भी है ) ९ युरोपियन सती और धर्मशीला स्त्रियों के परम मनोहर ४७ चरित्र ॥≠)॥ १० भारत वर्ष की विख्यात पतिव्रता शूर बीर प्रबन्ध कर्ता और उदार हृदय रानियों के चरित्र जो मुसलमानों और अंगरेज़ों के राज्य समय में हुवे ॥)॥ ( [illegible] में भी है ।≠)॥ ११ खेती की विद्या के मूल सिद्धान्त योरप की नई विद्याओं के अनुसार खेती करने की सरल उपायें ॥≠)॥ १२ अंगरेज़ी कवि शिरोमणि शेक्सपियर के परम मनोहर २० नाटकों के आशय का अनुवाद यह कवि मनुष्य के हृदय के भाव और कटाक्ष दरसाने और स्वभाविक रीति से नीति धर्म सिखाने में योरप में अद्वितीय समझा जाता है वहां केवल व्यवहार का भी उसने पूर्ण चित्र उतारा है प्रथम भाग ९ नाटक १।)॥ द्वितीय ११ नाटक १।≠)

काशीनाथ खत्री

रामबाग सिरसा ज़िला इलाहाबाद

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥


१ मार्च सन् १८८६ | जिल्द ९ संख्या ७

इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३॥) पीछे देने से ४॥)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ६ संख्य ७ — १ मार्च सन १८८६ ई०

# । इन कम् टैक्स ।

## ( आय वा आमद पर कर )

मनुष्य जाति के इतिहास के आरंभ मे "राजा" और "प्रजा" ये शब्द किसी को नहीं बिदित थे जब थोड़े से घराने के लोग किसी एक स्थान मे एकच हो कर रहने लगे तब पहले पहल उन मे किसी राजा की कुछ आवश्यकता ही न थी—लोगों की संख्या कम थी और हृदय ऐसा दोषी और कश्मल पूर्ण न था कि प्राय: एक दूसरे को विशेष क्लेश पहुंचावें जो कुछ अपने गांव (क्योंकि अभी बस्तियां अलग२ थीं) का प्रबन्ध आवश्यक होता था लोग स्वयं मिल कर निपटा लेते थे—एक दूसरे की रक्षा मे तत्पर थे और पंचायत के द्वारा अपराधियों को दण्ड दिया जाता था यह क्रम सर्वत्र मनुष्य जाति के इतिहास मे पाया जायगा—फिर ज्यों २ मनुष्यों की बस्ती और संख्या बढ़ती चली और एक स्थान के लोग दूसरे २ गांव के लोगों को जीत कर बश मे लाने लगे राजा, जाति वा दल के मुखिया की आवश्यकता हुई और ज्यों २ समय बढ़ता गया राजा का पद स्थिर और निश्चित होता गया-

प्रजा की संख्या बढ़ने के साथ ही साथ राजा को उन्हें मर्यादा मे स्थित रखने के लिये बिशेष २ प्रबन्ध करने पड़े और उसी प्रबन्ध के खर्च निकालने को प्रजा से उन की योग्यता के अनुसार कर उगाहना आरंभ किया गया और यह क्रम संसार की प्राय: सब सभ्य जाति मे पाया जाता है—अंग्रेज़ी मे इस कर उगाहने की दो भिन्न रीति हैं जिन को Direct डइरेक्ट और Indirect इन डरेक्ट कहते हैं—डइरेक्ट कर वह है जो राजा अपनी प्रजा से सीधे२ उनके बित्त में से कुछ भाग ले लेता है और यही क्रम पूर्व काल में यहां प्रचलित था प्रजा के आयका छठवां भाग राजा का होता था और प्रजा मात्र से लिया जाता था—यहां तक कि जो ऋषि मुनि जन संसार के समस्त सुखों को त्याग निबिड़ जंगलों में तपस्या करते थे तो उस तपस्या का भी छठवां भाग राजा का स मझा जाता था क्योंकि वहां बन में भी रा जा दुष्ट जीवोंसे उनकी रक्षा किया करता था और वे तपस्वी यह उचित समझते थे कि जब वे राजा की रक्षा से तप संचय करते थे तो उस्का भी छठवां भाग राजा को दें "षष्टांश मुव्यो इव रक्षिताया:,, जो जिस व्यापारमें रहता था और जिस राजा के राज्य में प्रजा भय छोड़ उस्की भुजा की छांह में सोती थी और किसी वस्तु का उपार्जन करती थी उस्को अपने लाभका छठवा भाग प्रीति पूर्वक भेंट करती थी—यह प्रबंध इतना पुराना और व्यापक था कि इस्का चर्चा संस्कृत ग्रंथों में असंख्य बार आया है और प्राय: धर्म्म शास्त्रों में अवश्यही मिलता है — Indirect taxaton वह रीति है कि राजा वनिज व्यापार की वस्तुओं पर एक कर लगा दे जैसा सरकार ने नोन शोरा और अफीम आदि मादक द्रव्यों पर लगाया है — अंगरेजी राज्य य

हां होने के पूर्व नोन यहां बहुत सस्ता बिकता था गवर्नमेंटने राज भंडार भरने की दृष्टि से आठ आना मन टिकस लगाया फिर उसे बढ़ाकर डेढ़ रुपया मन फिर दो और तीन रुपये मन तक किया जिसे लार्डरिपन साहब ने बड़ी अनुग्रह कर दो रुपये मन घटाकर कर दिया इसी तरह पर जो बस्तु इस देश से अन्य देशों में जाती हों वा अन्य देशोंसे इस देशमें आतीहों उनपरएक रुपये मनवा पांच रुपये सैकड़ा महसूल लगाया जाता है इसको इन डइरेक्ट टैक्स कहते हैं – जैसा जो रुई यहां से बिलायत को लादी जाती है उसपर दो या चार रुपया मन के हिसाब से टैक्स लगाया जाता था और इस्से कई लाख को आमद इंडिया गवर्नमेंट को होती थी और वह सब रुपया यहां का यहीं रहता था – लार्ड रिपनने मेनचेस्टर के जुलाहोंकी चिल्लाहट पर ध्यानदे वह कर माफकरदिया जिससेअब यहांकी गवर्नमेन्टको हरसाल कई लाखकी हानि पड़ती है चावल, गेहूं, तीसी, आदि यहां से दूसरी २ बिलायतों मे जाती है उस पर यदि एक रुपये या दो रुपये मन का टैक्स लगा दिया जाय तो वह भी इस देश के लिये अच्छे आय का द्वार होगा – पिछले क्रम पर जो टैक्स लगाया जाता है उसको इनडइरेक्ट टैक्स कहते हैं क्योंकि यद्यपि इस का बोझ भी प्रजा ही पर पड़ता है परन्तु यथार्थ मे सीधी २ रीति पर नहीं पड़ता और पहले वाले को डइरेक्ट टैक्सेशन कहते हैं क्योंकि सीधे राह प्रजा ही पर आगिरता है – उदाहरण की रीति पर यों समझिये कि यदि कोई किसी से यों दो पैसा मांगे तो उस्को गड़ाय गा पर यदि अन्न वस्त्र जो वह अपने काम के लिये मोल लेता है उस्मे सेर पीछे पैसा दो पैसा बढ़ा दिया तो यद्यपि वहभी उस

के सिर पड़ेगा और उसे वह अपने बढ़ते कुटुम्ब के पालन पोषण में क्लेश दायी मानेगा तथापि यह उसे इतना न अखरेगा जितना सीधेर उसको प्रतिबर्ष वा प्रतिमास ॥) वा १) अथवा ५०) अपनी आमदनी में से देना पड़ेगा इस कारण सब देशों में लोग डइरेक्ट टेक्सेशन के प्राय: बिरुद्ध होते हैं और जब यह समझते हैं कि इनडइरेक्ट टेक्स का भी भार उन्हीं के सिर होगा तब भी इस सीधी रीति पर देने से बचा चाहते हैं—इस देश में अंगरेजी राज्य के पूर्व इन डइरेक्ट टेक्सेशन बहुत कम था हिन्दू राजाओं के समय में और मुसलमान राजाओं के अधिकार में भी प्राय: सीधे टेक्स से राज भण्डार भरा जाता था और लगान विशेष कर धरतीही पर लगाया जाता था सो भी जितना अधिक लगान धरती का सरकार हमसे लेती है उतना कभी नहीं लिया जाता था हिंदू के धर्म शास्त्रों में लाभ या उपज का छठवां भाग लिया जाता था अर्थात् रुपये में =)॥ के लगभग अंगरेज़ी राज्य में सब मिलाकर रुपये में ॥=) के लगभग अर्थात पहले का चौगुना लिया जाता है यही कारण है कि अन्न अब इतना मंहगा बिकता है और प्रजा भूखों मरती है—इसको अतिरिक्त और भी सी रीतियों से सरकार हम लोगों से कर लेती है—नोन का कर, अफीम का कर, कानून के जाल में फसाय बात २ में स्टेंप का कर इत्यादि—इससे भी जब पेट न भरा तब लइसेंस टेक्स लगाया जिस्से उन लोगों को जो किसी तरह का ब्योपार करते हैं अपनी अपनी दशा के अनुसार ५००) साल तक देना पड़ा प्रजा को इस्से बड़ी पीड़ा हुई लोगों में खीझ और अप्रसन्नता फैल चली पर सरकार ने उसपर भी कुछ ध्यान न दिया और इतनी आमदनी से भी जब

फ़जूल खर्ची का काम न चला तो अब यह इनमकटैक्स अर्थात् आमदनी पर टिकस लगाया गया है और चारो ओर से लोग इस्के बिपरीत चीत्कार कर रहे हैं-नया कर तभी लगाया जाता है जब राज्यके प्रबंध का खर्च बढ़ जाता है और इसी कारण यह टिकस लगाया भी गया है पर खर्च कैसे बढ़ा? अमीर काबुल को रुपये, हथियार और भांति२ के लड़ाई के सामान भेंट देने से, रावल पिंडी में केवल अपना ठाट बाट देखाने की दृष्टि से दर्बार करने से, ब्रह्मा देश पर आक्रमण करने और वहां की निरपराध प्रजा की स्वतंत्रता छीन लेने से, देहली में लड़ाई का नाटक करने से, यदि इन सब नाश कारी खेलों में इतना रुपया न फूंका जाता तो कभी संभव न था कि इस वर्ष यह कर लगाने की आवश्यकता होती एक कारण अबकी साल खर्च बढ़ने का यह भी हुआ कि चांदी का भाव घट गया है और बिलायत में सोने का गिनी या पौंड का चलन है इस कारण स्वार्थ पर अंगरेज़ों ने ऐसा एक कानून गवर्नमेंट से जारी करा रक्खा है कि उनकी पेंशन आदि उन के सिक्के में अर्थात् पौंड मे दी जाय इस कारण से भी हिन्दुस्तान को अनन्त हानि सहनी पड़ती है करोरों रुपये इसी चांदी के भाव घटने के सबब हर महीने यहां से निकल जाते हैं तौभी यह फजूल खर्ची जिसका चर्चा हम ऊपर कर आये न की गई होती तो यह बढ़ा हुआ राज्य प्रबंध का खर्च भी पहले ही की आमद से निपट जाता—अब मान भी लो जिये कि यह सब रुपया जिसे हम लोग समझते हैं व्यर्थ फूंका गया देश की रक्षा के उपाय मे लगाया गया है तौभी इस्के लिये इस नये कर इनकंमटैक्स का होना क्यों आवश्यक है? हिन्दुस्तान के लोग इंगलेंड की अपेक्षा पचासों गुना अधिक गरीब हैं

यह बात चिरस्मरणीय फासेट ऐसे भारत हितैषियों ने सिद्ध कर दिया है और इस गरीबी पर ध्यान दीजिये तो जो कर अब गवर्नमेंट लेतीहै वही हम के लिये अति से अति है—अधिक लज्जा की और क्या दूसरी बात होगी कि प्रजा का प्राण और नस नस के लोहू के समान धन इस समय अनेक टिकसों के द्वारा सरकार उगाहती है और घोर से घोर फजूल खर्चों की रीति पर फूंकती है जितना अंधा धुन्ध खर्च इस देशके राज्य प्रबंधमे होताहै उतना पृथवी मण्डल के किसी देश के राज्य प्रबंध मे नहीं होता जितनी भारी तलब इस देश मे आकर सिविलियन लोग पाते हैं अन्यत्र कहीं नहीं और यह सब तब जब कि बिचारवान जन इस बात को बार २ देखाते आये हैं कि यह देश महानिर्धन है—शरीर और प्राण का रुधिर चूस २ तो हम से कर उगाहा जाता है और बरसात के पानी की भांत बहाया जाता है—क्यों नहीं सरकार अपना खर्च कम करती ? क्यों नहीं सिबिलियनों की तनख्वाह घटा देती ? क्यों नहीं बेहूदा ओहदों को जिन से कुछ लाभ नहीं तोड़ देती ? कमिश्नर लोग किस काम मे आते हैं ? सनीटरी कमिशनर, स्टैम्प कमिशनर, परमिट के कमिशनर, इत्यादि अनेक कमिशनर के ओहदे हर एक डिपार्टमेन्ट के किस काम आते हैं ? ऐसा ही सेक्रीटेरियट मे देखो तो बीस तरह के अलग २ सिकत्तरों के होने की क्या आवश्यकता है ? अंडर सेक्रीटरी असिटेन्ट सेक्रेटरी जाइन्ट सेक्रेटरी इत्यादि कोड़ियों और दरजनों के हिसाब से इतने सिकत्तरों के होने की क्या ज़रूरत है ? बम्बई और मन्दराज़ मे गवर्नरों की क्या आवश्यकता है ? पश्चिमोत्तर पंजाब और बंगाल की भांत वहां भी लफटिनेन्ट क्यों न रक्खे जांय ? किस लिये

बम्बई मन्दराज़ मे गवर्नरों को रख उन्हें डेहुडी तनख़ाह दी जाती है ? इस से क्या लाभ कि हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त की सेना अलग २ समझी जाय अर्थात् हर एक हाथे के सेनापति क॰म्यांडरन चीफ़ भिन्न २ रक्खे जांय ? क्या एक मुख्य सेनापति रखने से सेना का बल कुछ घट जायगा—उन के नीचे बीसों सहायक सेनानी रहते हैं क्या उन से सेना का भार नहीं सम्हल सकेगा—तब क्यों करोड़ों रुपया हिन्दुस्तान का इस तरह पर लुटाया जाता है ? इङ्गलैंड हिन्दुस्तान से ५० गुन अधिक धनी है वहां भी सेना का इतना खर्च नहीं होता जितना यहां होता है—क्यों नहीं देशी लोगों को सेना की अफसरी दी जाती ? यहां के लोगों को यदि अफसरी दी जाती तो क्यों बिलायत से बड़ी २ तलब दे कर साहब लोगों को बुलानेकी जरूरत होती ? क्यों प्रति बर्ष गवर्नमेन्ट दार्जिलिंग शिमला और नैनीताल गरमियों मे जाया करती है—हाईकोर्ट के जज यहां की गरमी सह सक्ते हैं तो क्या लफटिनेन्ट और गवर्नर जेनरल नहीं सह सक्ते ! कमिश्नरी के ओहदे पर जब तक रहे तब तक गरमी जाड़ा सब कुछ सहते रहे बोर्ड के मेम्बर होते ही मिज़ाज बदल जाता है बिना नैनी ताल की ठंढी हवा का मज़ा उठाये दिमाग साफ रहता ही नहीं—ऐसी २ अनीति देख हम यही निष्कर्ष निकालते हैं कि भूखों के हाथ की रोटी छीन दुखियों के तन का बस्त्र उतार लोगों के प्राण का रुधिर चूस सरकार रुपया उगाहेगी और उस रुपये से इंगलेंड की प्रबल जठराग्नि को आहुत देगी—उस रुपये से अंगरेज़ सिबिलियनों और सिपाहियों को शराब पिलाई जाय गी—उस रुपये से हथियार खरीद सरकार अमीर काबुल को

देगी कि अवसर पाय उसी से हमारा श्रोर अंगरेज़ों का भी गला काटा जाय—उसी रुपये से ब्रह्मा के राजा को गद्दी से उतार ब्रह्मा की निर्दोष प्रजा को सदा के लिये गुलाम बनावेगी—उसी रुपये से सिविलियनों को नैनी ताल और शिमले की तरावट के मज़े मे मस्त करेगी—उस रुपये से बिलायत के स्वार्थ परायण लोभी कारीगरों का और सौदागरों का रोज़गार बढ़ावेगी और साथ ही हम लोगों को बड़े कोमल मीठे और कृत्रिम उदार बचनों से फुसलावेगी कि "तुम हम को प्राणों से भी अधिक प्यारे हो—तुम्हारे उपकार के लिये, तुम्हारे ही सुख के लिये, हम अपने सुख मय शीतल देश को छोड़ कर यहां की भयानक लू सहते हैं—तुम्हारे सुख के चिन्तन मे हम को रात २ नींद नहीं आती—बेटा हो—मुन्ना हो—यदि हमने तुम्हारा हथियार ले लिया तो तुम्हारे ही उपकार के लिये—जो हम तुम्हे ऊंचे २ ओहदे नहीं देते सो तुम्हारी ही भलाई के लिये—तुम को क्षीण किये देते हैं सो तुम्हारे ही उपकार के लिये—तुम क्यों हमसे रूठते हो—क्यो दुष्टों के बहकाने मे पड़ते हो—हमारी सेवा करो—हमारे दास बनो—हमारा चरणामृत लो—हमारा नाम जपो—यही तुम्हारा धर्म है—यही तुम्हारासुख है—"हम मात पिता तुम बालक हमरे हमरी कृपा से होय घनेरे—कोई न जाने हमरा अन्त ऊंचे से ऊंचा भगवन्त,, जो हम करें उस को सदा हित समझो—सदा उस में प्रसन्न रहो—तुम्हारा हित सोचते २ तुम्हारा हित रटते २ तुम्हारा हित ध्यावते २ हमारा चित्त तुम्हारे हित मे ऐसा तन्मय हो गया है कि संसार मे हमको तुम्हारा हित छोड़ और कुछ सूझता ही

नहीं-हम बिष भी तुम्हे देते हों, तुम्हारा गला भी काटते हों, तो हम यही जानते हैं कि हम तुम्हारा हितही कर रहे हैं – क्योंकि हम को तुम्हारे हित का कमल हो गया है तुम्हारा हित छोड़ और कुछ हमें सूझताही नहीं पर चाचा हो अब हम दूध मुख बालक नहीं हैं तुम्होंने पढ़ाय लिखाय हमारी आंख में अंजन दे दिया और हमारे बिचारों पर सान चढ़ा दिया – हित अनहित हमको भी सूझता है – भला बुरा हम भी समझते हैं – और तुम्हारे बेर से नहीं किंतु शुद्ध प्रीति और भक्ति भाव से तुम्हें हाथ जोड़ निवेदन करते हैं कि केवल बातोंहो में फुसलाना छोड़ करतूत से हमारे हृदय को अपने प्रेम के बंधन में बांधे रहो – तलवार का ज़ोर तुम स्वयं जानते हो कैसा कमज़ोर होता है—राजा के राज्य की स्थिरता प्रजा की प्रीति पर निरभर है—उसी प्रीति की बेल को सींचो जिन बातों से प्रजा पीड़ित होती है उन को दूर बहाओ जिनसे उनका हृदय कमल प्रफुल्लित हो सोकरो—लल्लो चप्पो नहीं करते किन्तु हमारी पक्षपात शून्य बुद्धि यही कहती है कि तुम्हारे ही राज्य के अभी बहुत दिन तकबने रहने से इस देश का कल्याण है और न केवल हमारा ही बरन तुम्हारा भी बहुत कल्याण है "परस्परं भावयन्त: श्रेय: पर मवाप्स्य,, हम तुम्हे बढ़ावें तुम हमे बढ़ाओ—इसी से हम तुम्हारी भक्ति को अपने चित्त मे स्थान दिये हैं और तुम्हारे बैरियों से लड़ने को तुम से आगे प्राण होमते हैं—इसी से और भी तुम से प्रार्थना करते हैं कि प्रजा को पीड़ा पहुंचाने वाले कामो को बचाये रहो—फज़ूल खर्ची कम करो – प्रजा का भार हलका करो – टिकस घटाओ प्रजा का सुख बढ़ाओ- और उन का आशीर्बाद पाओ यही सड़क तुम्हारे राज्य चक्र चला-

ने को सीधो और हमवार है — यही मार्ग तुम्हारे कल्याण का है-इसी मे तुम्हारा श्रेय है — श्रेयसा मेष पन्था, — किम्बहु —

इस अङ्क मे सामान्य रीति से यह दिखाया गया कि सरकरी खर्च कम कर देने से इनकंटेक्स के लगाने की आवश्यकता मिट सक्ती है—दूसरी संख्या मे यह दिखावेंगे कि किस रीति से और किन २ बातों मे खर्च की कमी होनी चाहिये—

——:०:——

# नया पाहुना

आं ! आं ! आं ! आप आये—खो—खो खोदा आप को और आप के भेजने वाले को ज—ज—जहन्नुम रसीदा करे आप कब आये—लार्ड ड—ड—डफरिन के दुलारे—ब्रिटिश गवर्नमेंट के आंख के तारे—ह—ह—हमारे उंजियारे घर के अंधियारे —त—त—तो अब क्या आप हमारे भु—भु—भूरे हाड़ पर आराकशी करने आये—आह ! बि—बि—बिभीषण के भाई समान आप की भीषण आंखदेख हमे मरी औरकालकेबिकरालदिनयाद आती है —प्रजा के बीच अंगरेज़ीराज्य की ओर घिन उपजाने वाला ऐसा कोई दुसरा अब तक नही आया—इतना बड़ा ब्रह्मा का राज्य निगल बैठे क्षुधा शान्त न भई अब आप का म—म—मनहूस कदम जो यहां आया है सो किस बिह़ते पर ॥

यह सब आप को रिसकी खिस है आप हज़ार कोसिये हमारे संग दिल पर इस रोने चिल्लाने का ज़रा असर नहीं होता हम आप की आमदनी पर आये हैं और हमे आप दो दिन का पाहुना मत समझिये हमने सदा के लिये कदम जमाया और बजाय लड़से

न्स के हम भरये हैं—जब हमने देखा कि लइसेन्स सिर्फ रोज़गारि योंही पर है नौकरी पेशे वाले और और लोग उस्के मज़बूत पंजेसे छुटे है तब हमने उसे बर तरफ कर इनकंटैक्स के नाम से क्या रोज़ गारी क्या पेशे वाले सब को धर दावा ईश्वर करे लार्ड डफरिनसे गवर्नर जेनरल यहां सदा आयाकरें जो हमारे जन्मदाता हैं और आपके नसनसका रस खींच आपका कंठगत प्राण कर आंख बगार २ तुम्हे पड़े २ कोल्हते देखें—

—:०:—

## नूतन ब्रह्मचारी

पूर्व प्रकाशिता नन्तर

३ परिच्छेद

आज कल के क्रम के अनुसार उत्सव के दिनो के खुशी की परख यदि केवल इतने ही से हो सक्ती है कि उस मे कितना खर्च किया गया तो निश्चय जानिये कि निर्धनी बिट्ठलराव के उन दिनो के हर्ष का अनुमान पाठक आप को नहीं हो सक्ता क्यों कि उत्सव के दिनो मे बहुत सा अपब्यय के अतिरिक्त कोई और दूसरा रास्ता प्रमोद के प्रगट करने का यदि हई नहीं तो स्पष्ट है कि बिट्ठलराव को अपने एकलौते पुत्र के उपनयन उत्सव मे ऊपरी धूम धाम के साथ कोई द्वारा अपने मन का उच्छाह और हर्ष प्रकाश करने का अब तक नहीं हो सका था—हां अलबत्ता यदि आभ्यन्तरिक प्रीति भाव और प्रसन्नता का आविष्कार रुपये को छोड़ किसी दूसरी तरह भी हो सक्ता है तो यह अवश्य मानना पड़ेगा कि यह निष्किंचन ब्राह्मण अपने मन का अन्त: सन्तोष

प्रगट करने मे बड़े २ अपव्ययी बैभवोन्मादी धनियों से पीछे नहीं हटा था—फिर भी हमारे पढ़ने वालों के लिये यह अवश्य तर्क करने का स्थान है कि बिट्ठलराव ने कौन सी ऐसी बात किया जिसे हम उन के मुदित होने का चिन्ह मानें—वह आम का वृक्ष कैसा कि बसन्त काल मे जब उस के बौरने का समय है पास जाने ही से अपनी मीठी सौरभसनी सुगन्धि से मन को न लुभा ले! वह घर कैसा जहां कुछ उत्सव हो और उस घर मे जाने से चित्त भीतर से आल्हाद पूर्ण न हो जाय—सो उस रम्य निरा॰ले स्थान मे जहां तपोधन ऋषियों की कुटी समान बिट्ठलराव अपना घर बनाये थे वह स्थान ही समान्य रीति पर ऐसा बिमल और पबित्र था कि जहां एक बार जाने ही से वहां की प्राकृतिक शोभा देखने वाले के चित्त से कितना ही भुलावा देने पर भी कुछ दिनो के लिये हटाये नहीं हटती थी दूसरे बिट्ठल सा धर्म शील संयमी अपनी धर्म सम्बन्धी नित्य नैमित्तिक क्रियायों से उस स्थान के माहात्म्य को चतुर्गुण बढ़ाये हुये थे यह इसी टौर देखा गया कि इन के उज्वल खान पान रीति ब्योहार के कारण संकुचित और भय भीत सी हो कृष्णता केवल हरेकृष्ण इत्यादि नारायण के नामोच्चारण मे आ बसी और सब ओर से निरास हो मलिनता इन की अग्नि होत्र शाला के धूम का आसरा पकड़ा और इस होन हार यज्ञोपबीत उत्सव के कारण ऐसे रम्य स्थान को भी बिट्ठलराव ने इतना स्वच्छ कर डाला था कि यह कहना सर्व्वथा अत्युक्ति न होगी कि इस स्थान के आस पास की बायु में भी पबित्रकरने वाली एक अद्भुत शक्ति भर गई थी और ऐसा मालुम होता था कि इस बायु के संपर्क मात्रही से वहां

जाने वालों के चित्त में न केवल एक बिमलताही होगी पर उनके शरीर का सब रोग दोष दूर भागजायगा— क्योंकि जिस उद्यान के दृश्य पर कबि मगडली ने उत्तम से उत्तम अपनी कबिता के भावों को न्योछावर किया है वह बात वहां स्वभाव सिद्ध थी दूसरे इनके पबित्र होमाग्नि के धूम के कण सब ओर व्याप्त रहे तब वहां के शुद्ध बायु के गुणों का क्या कहना ॥

हिन्दुस्तान में यदि अब कभी पुराने रिषियों के यज्ञ का समय याद आता है तो ब्राम्हणों के यज्ञोपवीत संस्कारही में जिस्को कारण मान लौकिक आनन्द बढ़ाने वाले भांतर के उत्सव और अन्त: करण को शुद्ध रखने वाली अनेक सुनीति शिक्षा दोनों बहुतही उत्तम ढंग पर आपस में जोड़ खाती है—ब्रम्हचर्य की शिक्षा अपने पुत्र को देते हुए बिट्टल को एक अलौकिक आनन्द मिलता था और साथही साथ यह उस समय को याद करते जाते थे जब इनकी बाल्य अवस्था थी और इनके आचार्य भी उनसे वही सब काम लेते थे जैसा इस समय ये अपने पुत्र से ले रहे हैं — और बाल्य अवस्था की अज्ञानता के कारण बिट्ठल राव के मन में इस ब्रह्मचर्य के सब फाइदे तब न आये थे जितना अब उनको याद कर चित्त को दो गुना चौगुना हर्ष होता था — यद्यपि इसे पचीस बर्ष बीत गये थे जब कि एक समय बिट्टलराव खुद ऐसाही ब्रह्मचारी थे और इनके बाप भी इन्हें ऐसाही शिक्षा देते थे जैसा अब ये अपने पुत्र को दे रहे हैं पर इनको मालुम ऐसाही होता था मानो यह सब कल्हकी बात है —

बिट्ठलराव ठाकुर साहब के यहां जाने के लिये बड़े तड़के उठे और दूर जाना था इस लिये इन्होंने सोचा पौ फटते ही अंधेरे

मुंह चले चलेंगे पर ब्रह्मचारी के नियमों में त्रुटि न होने पावे और ऐसा न हो कि बिनायक राव उनका पुत्र जो अभी नया ब्रह्मचारी हुआ था कोई बात नियम की भूल जाय तो बटु और आचार्य दोनो प्रायश्चित्त के भागी हों और रोज़ा छोड़ नमाज़ गले पड़े इस लिये बहुत सी बात उस नये ब्रह्मचारी को बतलाते २ कुछ बिलम्ब हो ही गया फिर भी बिट्ठल सूर्योदय होते २ अपने घर से चल निकले——चलती समय अपने पुत्र से बड़ी ताकीद से कहा "बिनयक ! सूर्योदय हुआ चाहता है झट स्नान कर सूर्य को अर्घ दे दे और देख सन्ध्या आदि नित्य कर्म में त्रुटि न होने पावे——बेटा नित्य जितनी गायत्री जपते थे उतनी आज भी अवश्य जपना, जैसा हमने बतलाया है पूरककुंभक रेचक युक्त तीनो प्राणायाम सविधि करना, भोजन करती समय मौन रहना, आज की भिक्षा का जो अन्न लाना उसे रख छोड़ना बिना हमारी आज्ञा उसे खर्च न कर डालना, हमारे सांझ के होम के लिये टटके कुशा और लकड़ी बन से तोड़ लाना——और बेटा देखो जो कोई अतिथि आ जाय तो उस का सत्कार बिधि पूर्बक करना तुम अभी बालक हो इस से ऐसा न हो कि किसी बात मे तुम चूक जाओ तो जो पाहुने आवें उन की खातिरदारी भर पूर न बन पड़े इस बात की खूब चौकसी रखना, – यद्यपि यह पिछली बात का ब्रह्मचारी के नियमो से कुछ सरोकार न था पर यह सोच कि कदाचित् हमारे न्योताहरियों मे से कोई आवें और बिनायक से उचित आतिथ्य उन का न बन पड़े तो उन्हें क्लेश हो अपने पुत्र को यह सब सिखाया पढ़ाय बिट्ठलराव ने ज्यों ही देहली के बाहर पांव रक्खा त्योंही इन के घर की मज़दूरिन पास के झरने से

पानी भरने को छूंछा घड़ा लिये घर के बाहर निकली – यात्रा के समय इसे असगुन समझ बिट्ठल फिर लौट आये और बिनायक को आनेवाले अतिथियों के सत्कार की भरपूर ताकीद कर टीले के नीचे उतरे – पाठक ! प्रथम परिचय जब बिट्ठलराव का आप को कराया गया था वह यही समय था जब वह टीले से नीचे उतर रहे थे – स्त्री समेत यह नीचे उतरे आते थे पर खाली घड़ा मिलने से असगुन का ध्यान जो मन मे समाय सा गया उस पर भांत भांत की कल्पना और तर्क बितर्क जो उठते थे उस का समाधान भी अपने आप ही करते जाते थे ठाकुर साहब के यहां जाने से लाभ अवश्यही होगा क्योंकि ठाकुर ने बुलाया है तब क्यों कर कहें कि इसी छूंछे घड़े के समान हमे वहां से लौट आना पड़े न यही सम्भव है कि ठाकुर सा भला मानुष और सज्जन हमारी किसी तरह अप्रतिष्ठा और अनादर करे तब यह असगुन क्यों हुआ और इनकी पत्नी स्त्री जाति सुलभ अपनी भीरू प्रकृति के कारण कुछ अधिक शंकित सो हो गई थी उसे आश्वासन देते दोनो चले आते थे और इन्हो तर्क बितर्कों में ये दोनो ऐसे डूबे हुये थे कि उनके पासही पेड़के आड़ में जो तीन सवार खड़े थे उनपर इनका बिलकुल ध्यान नगया – जब ये दोनो कुछ दूर निकल गये तब जिस रास्ते से बिट्ठलराव आयेथे उसी टीले पर ये तीनो सवार हो अपनेर घोड़ों को ले चले – क्रमशः

——:०:——

## —प्रेरित—

# । दैवो दुर्बल घातकः ।

जैसे तैसे बर्षाओर शरत् अनेक बिपत्ति सह सहाय बीत जा

ने पर अब नया साल आया कुवांरी और अगहनी फसल जैसी हुई सब को मालूम है कि खेतिहरों की कौन कहे ज़मीदारोंके भी ज़ेवर और पोहे बिक गये और आमदनी भरपूर वसूल नहुई अब आने वाली फसल चैती है उस्के लिये सामान देखिये तो महीने मे कई बार पाला पड़ चुकाहै नित्य की बदरी बूंदी देख जी कांप रहा है कि ईश्वर ही कुशल करै दूसरे फागुन मे बुध शुक्र दो ग्रहों का योग क्या कभी खाली जानेवालाहै — रोज़गारी पेशे वालों कीओरध्यान दीजिये तो चुङ्गी और रेल महसूल ने मुनाफा इतना पतला कर डाला कि किसी माल मे परताही नही बैठता उस पर यह इनकं-टैक्स लगाया जायगा हम लोग निःसत्व हैं चूं करना जानतेही नहीं तब क्या चाहो इनकंटैक्स लगाओ चाहो लेडी डफरिन फंड जारी करो — हमारी समझ मे इस फंड जारी करने के लिये ज़िले के कलट्टरों को हिदायत की जाय वे एक २ तहसीलदारों के नाम परवाना जारी कर दें अभी दम भरमें रुपयोंके चबूतरे बनजातेहैं जो हर जगह शहर २ इमारत बनवाने और इस काम के लिये सब सामान वहम पहुंचानेको काफी होंगे रही लेडी डाक्टरोंकी तनखाह सो नज़राने और बिज़िट के रुपयों से बहुत कुछ वसूल होजाया करेगी ज़राभी तरद्दु द न करना पड़ेगा जहां इतने बोझ हमपर लदे हुये हैं वहां इस फंड का भी एक बोझ और लदा सही इसी से हम ने कहा "दैवो दुर्बल घातकः," ॥

एक देश हितैषी

——:०:——

# महाराज जम्बू देशाधिपति का दान।

श्री मन्महाराजाधिराज काश्मीर जम्बू देशाधिपति की ओर से प्रति बर्ष यहां प्रयाग तीर्थ मे सुपठित ब्रह्मणो को पुस्तकें और अन्न आदि माघ भर प्रतिदिन दिया जाता है—यह अन्न उन्हीं को दिया जाता है जिन्हे कहीं अन्यत्र ठिकाना न हो तथा बिदेश से तीर्थ करने आये हों या यहीं के सुपात्र सत्कर्म निष्ठ हों-अब की साल उक्त महाराज की ओर से पं० गङ्गाराम इस दान के अधिकारी होकर आये ये महाशय बड़े ही बिचारवान् धर्म शील बिबेकी और सरल चित्त देखे गये क्यौं कि इस बर्ष जो अन्न आदि दान किया गया उसका बितरण अवश्य प्रसंशनीय और उत्तम ढंग से हुआ अभी हाल मे श्री महाराज काशी इत्यादि तीर्थों मे जैसा दान और बिद्वानो का सन्मान कर गये हैं उससे श्री मान की उदारता और धर्मिष्ठता पर बहुत लोगों का चित्त आकर्षित हो गया है—अतएव महाराज से निवेदन है कि यह अन्न दान केवल माघ ही भर क्यौं होता है हुल्कार सेंधिया आदि कई श्री मन्तों की ओर से यहां क्षेत्र है जिस मे प्रतिदिन भोजन दिया जाता है वैसा ही क्षेत्र या सदा बर्त इस क्षेत्र मे महाराज की ओर से कुछ न कुछ बारहो महीने रहना चाहिये माघ मे बढा दिया जाय, जैसा श्री काश्मीराधिपति हमारे देश के बड़े राजाओं मे हैं वैसा ही यह प्रयाग

चेच सब तीर्थों मे बड़ा है—'चकास्ति योग्य नहि योग्य संगम:' ॥

—:०:—

# प्रेरित

## । अवध के कास्तकारों का दुःख ।

नवाबी में अवध के ताअुक़ेदार ठीके दार समझे जाते थे जब कबूलियत साल दो साल के लिये होजाती तब तहसीलते थे जब दूसरा कोई कबूलियत कर लेता था तबपहले का ठीकेदार भागकर अङ्गरेज़ी राज में आय छिपा था और मालगुजारी का बहुत कुछ रुपया हज़म कर बैठता था — और काश्तकार उस पृथ्वी के रईस समझे जाते थे चाहो जो ठीकेदार होकर आवे कभी नहीं भाग कर दुसरे ठौर जा बसते थे — अब उन कास्तकारों के हक्क का सरकार कुछ खयाल न कर उनको अपनी २ कास्तकारी से खारिज किये देती है — संपादक महाशय न जानिये क्या कारणहै कि कास्तकारों के दुःख और चिल्लाहट पर गवर्नमेंट कुछ ध्यान नहीं देती और कास्तकार हरसाल बेदखल भये जाते हैं — कैसी बेइनसाफी की बात है कि मर पच बड़ी मेहनत से जब इन बिचारों ने ज़मीन की हैसियत बढ़ाया तब झट उनसे उनकी कास्तकारी छीन ली गई — बल्कि कितने इस दुःख में ज़हर खाकर मरे जाते हैं। इलाहाबादही की लफ्टिनेंटी में अवध भी शामिल है तबभी एकही राजा के राज्य में फल दो तरह का इस पश्चिमोत्तर में १२ बर्ष के ऊपर की कास्तकारी कभी छूट नहीं सक्ती अ

बधमें हज़ार वर्ष का कास्तकार भी हो ज़मीदार जब चाहे उ से अपने बाप दादे की मीरास से खारिज कर दे कहीं उ सकी सुनाई न होगी आशा है हमारे न्यायकारी लफ्टिनेंट श्रीमन लायलसाहब इस अन्याय की ओर ध्यान दे हज़ारों गरीब दुखिया कृषकों का दुःख काटेंगे जिसमें अवध की प्रजा समूल नाश होने से बचे और श्रीमान को चिर काल तक आ सीसती रहे—

पं० लक्ष्मी दत्त त्रिपाठी रईस अवध

—:०:—

## । बाल्य बिवाह ।

यहां गत मास मे बम्बई के रहने वाले इण्डियन स्पेक्टटर के सम्पादक और देश की बुराइयों के प्रसिद्ध संशोधक मिस्टर बहराम जी मालाबारी आये थे—ये महाशय पारसी हैं पर हिन्दुस्तान की सब चाल चलन रीति व्योहार इन पारसियों मे भी आ गये हैं इस से उक्त महाशय को एक तरह से हिन्दू ही कहना चाहिये— बड़े हर्ष की बात है कि एक मनुष्य जो हिन्दू नहीं है वह हिन्दु-ओं की समाज संशोधन मे तन मन धन से लीन हो—यह जो मनोहर अनुप्रास युक्त तीन शब्द "तन मन धन, आज काल के लेख और व्याख्यानो मे जहां देखिये वहां ही हम लोगों के उदा-सों का पोला पन प्रगट करते बहुधा पाये जाते हैं वैसा माला बारी महाशय के सम्बन्ध मे नही देखा जाता—क्यों कि तन देखिये तो कुरीति संशोधन के काम मे प्रवृत्त हो उन्हों ने नगर२ और देश२ घूम अपने शरीर की स्वास्थ्य रक्षा का ध्यान बिल्कुल

छोड़ दिया है जिन्हों ने इन्हें देखा है वे जान सक्ते हैं कि अभी अल्प बय मे भी अधिक दौड़ धूप के कारण बूढ़े मालूम होने लगे हैं—मन जैसा इस काम मे इन्हों ने लगाया है स्पष्ट ही है कहने की क्या आवश्यकता—धन की कहिये तो पहले ऐसे २ कामो मे धन का इतना प्रयोजन हीं नहीं है दूसरे मालाबारी महाशय ने अपनी रोज़ी छोड़ गांठ का बहुत सा रुपया खर्च कर ऐसे काम मे तत्पर हैं जिस से उन को सच पूछिये तो अपने निज का कोई लाभ नहीं है ॥

अस्तु इतना वृत्तान्त इस उद्यम के उठाने वाले का लिखना आवश्यक समझ अब आगे उस उद्यम ही के सम्बन्ध मे जो कुछ हमे कहना है उसे प्रकाश करते हैं—इस नगर मे मालाबारी महाशय के सत्कारार्थ जो छोटी सी सभा की गई उस मे उन्हों ने अपनी यह अनुमति प्रगट की ॥

बाल्य बिबाह की बुराइयों के सम्बन्ध मे कुछ कहना ब्यर्थ है क्यों कि इस मे सब देश हितैषियों का एक मत है कि इस से सर्वथा हानि है तो इसकी बुराइयों पर कुछ बकना छोड़ कोई उपाय सोचना चाहिये जिससे हमारे उन बांधवों की भी भलाई हो जिनको इस कुसंस्कार ने यहां तक अंधा कर रक्खा है कि वे उसे अपनी प्राचीन पद्धति मान बैठे हैं—इस के रोकने के तीन उपाय मेरे मन मे आते हैं पहले सामान्य शिक्षा का फैलाव-दूसरी स्त्री शिक्षा तीसरे अपने ही उदाहरण से उस बुराई को दबाना अर्थात् जहां तक हो सके मनवचकर्म से इस बुराई से बचना और इस के लिये जो भलाई का द्वार है स्वयं खोलना—पहली दोनों उपायों मे स्वाभाविक रीति पर बहुत काल के उपरान्त अच्छी बातों को सर्व

साधारण तक फैलना आप छोड़ देते हैं—तीसरी उपाय मे काल की प्राकृतिक मन्द गति पर भलाई होने का भार न छोड़ आप अपने ही कामों से देश की भलाई करने मे तत्पर होते हैं—इन तीनो उपायों की अलग २ समालोचना की जाति है ॥

पहली उपाय अर्थात् सामान्य शिक्षा का फैलाव—यों तो इस कहावत के बिरुद्ध कोई कुछ नही कहसक्ता कि बिद्याही से सब दोष दूर होते हैं—पर इस्का असर दरियाफ्त करना ज़बानी जमा खर्च पर न छोड़ यदि देश की वास्तविक दशा मे देखें तो अधिक लाभ दायक होगा अभी तक जो शिक्षा फैली है वह केवल पुरुयोंही मे है इस लिये जैसी हमारी वास्तबिक दशा है उस पर दृष्टि दीजिये तो क्या बात नज़र आती है कि पुरुष तो एम—ए—बी—एल—होगये पर घरवाली मे बिद्या का लेश तक नहीआया—अब सोचिये इस्का परिणाम क्या हो सक्ता है यही कि ज्यों २ शिक्षा फैलती जायगी स्त्री और पुरुष के बीच भेद बढ़ता जायगा—क्योंकि बर्त मान समय मे शिक्षा के फल से पुरुषों के खयालात ऊंचे होते जाते हैं जो कुछ बुराइयां समाज मे वे देखते हैं जो कुछ देश संशोधन के बारे मे उनके जीमे होसिले उठ रहे हैं उन सब अच्छे खयालों की गन्धि तक उनकी स्त्रियों मे नही पाई जाती अर्थात् मर्द साहब एक ऐसी नई दुनिया मे घूमते हैं जहां उन की बीबी साहबा के खयाल के फिरिशते भी नहीं पहुंच सक्ते इससे अपने यहां हम इस सामान्य शिक्षा के माने ऊपर लिखी हुई विषमता ही का बढ़ना कह सक्ते हैं तब बाल्य बिवाह के उठने की कौन कहे तज्जनित बुराइयों का दृढ मूल होना सामान्य शिक्षा का फल मालूम होता है इस लिये इसे छोड़ हम

दूसरी उपाय स्त्री शिक्षा की समालोचना करते हैं ॥

दूसरी उपाय स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध मे मालाबारी महाशय ने कहा कि यह प्रसिद्ध है कि इस पश्चिमोत्तर मे पढ़ी लिखी स्त्रियां दो सौ मे एक हैं और स्कूल जाने वाली बालिकाओं की संख्या तो आठ सौ मे एक पाई जाती है यह दशा हमलोगों मे स्त्री शिक्षा की है तब यदि कोई साहब केवल इस भरोसे हाथ पांव ढीला कर बैठ जांय कि काल की गति से स्त्री शिक्षा जब अच्छी तरह फैलेगी तब आप से आप सब बुराइयां और कुसंस्कार भाग जायगें—तो अब बतलाइये ऐसेलोगों का हौसिला के जन्म मे पूरा होगा—हम तो समझते हैं सौ जन्म मे भी नही—इस लिये स्त्री शिक्षा के फैलने की भी आशा को निष्फल देख हम तीसरी बात की समालोचना करते हैं ॥

ऊपर की बातों से यह स्पष्ट हो गया होगा कि बाल्य बिवाह की बुराइयां ऐसी नहीं है कि काल पाय आप ही आप उन के दूर हो जाने पर भरोसा रक्खे रहें इस लिये कोई विशेष यत्न बिना काम मे लाये सर्व साधारण का उद्धार किसी रीति से हो ही नहीं सक्ता—प्रसिद्ध है कि यदि यह मंजूर नहीं है कि यह काम पूरी तरह पर हो तो उस के लिये लोग प्रति निधि नियत कर देते हैं और जो दिल से यह इच्छा है कि यह काम भरपूर और अच्छी तरह पर हो तो उस का करना स्वयं अपने हाथ मे लिया जाता है—ऐसे ही बाल्य बिवाह को भी समझिये यदि वास्तविक भलाई आप चाहते है तो स्वयं उस बुराई दूर करने का नमूना बनिये—अर्थात् यदि दस पांच पढ़े लिखे आदमी

इस बात के लिये कमर बांध मुस्तैद हो जांय कि हम अपनी मण्डली मे बाल्य बिबाह होने ही न देंगे तो कैसे संभव है कि यह बुराई दूर न हो—अब यहां पर एक बात और सोचना चाहिये कि मान लिया कि दस पांच भले मानुसों ने शपथ कर लिया कि हम अपने बीच कदापि बाल्य बिबाह न करने देंगे परन्तु किसी कारण से हो ही गया तब आप क्या कर सक्ते हैं—बम्बई मे कुछ लोगों ने प्रण बद्ध हो शपथ कर लिया था और यह नियम कर लिया था कि जो कोई अपने प्रण के बाहर होगा वह पंचायत से दण्ड भागी ठहरेगा परन्तु उन्हीं की मण्डली मे बाल्य बिबाह हो गया तब सबों की हिम्मत पस्त हो गई और उस नियम को तोड़ना पड़ा कारण इस का यही कि पुरुष लोग कितना ही प्रण और शपथ करें पर अपने घर की बड़ी बूढ़ी स्त्रियों पर उन का क्या बश है—आप इस के लिये दौड़ धूप समझाना बुझाना व्याख्यान नसीहत सब कर सक्ते हैं पर जबरदस्ती नहीं कर सक्ते—उदाहरण को लीजिये बीस में उन्नीस हिस्सा आप नमूना बन स्वयं कर भोलेंगे परन्तु जबतक वह बाकी बीसवां हिस्से पर कोई बाहरी दाव न होगा तब तक आप के उस नमूना बनने से कोई भलाई की सूरत नहीं हो सक्ती—आप की बात बड़ी मीठी बड़ी उपकारी और सब को प्रिय हो पर सर्व साधारण अपने रास्ते से मुड़ आप के रास्ते पर चलें इस बात मे आप को कोई अधिकार नहीं है—इस कारण मालावारी की राय है कि अपने ही कर्तब्य के द्वारा बाल्य बिबाह की बुराइयों का दूर होना अति कठिन है जब तक सर्कार से उस्के लिये सहायता न ली जाय—हम सब लोग एक मत हो गवर्नमेंट से इस्के लिये निवेदन करें कि

वह कोई ऐसा कानून जारी करे जिस्से बाल्य बिबाह करने वालो को कुछ हानि सहना पड़े गवर्नमेन्ट की ओर से एक पंचायत नियत कर दी जाय कि जो कोई बाल्य बिबाह करेगा वह उस पंचायत से दण्डनीय होगा और उस्पर जो जुर्बाना प्रंचायत ठहरायेगी वह देना पड़ेगा इत्यादि—इत्यादि—अर्थात् बाल्य बिबाह करने वालों पर किसी प्रकार की राजकीय टोक अवश्य होना चाहिये—

यदि यह कहा जाय कि बिदेशीय गवर्नमेंट से हम अपने घर की बुराइयों के दूर करने की प्रर्थना करें इससे बढ़ कर लज्जा की बात और क्या होगी—तो इस्के उत्तर मे हम यह कहेंगे कि इस बाल बिबाह की बुराई के कारण अपनी हर तरह की हानि सहते जाने से लज्जा का बोझ उठाना उत्तम है—और यदि यह कोई कहे कि गवर्नमेंट का क्या बिश्वास हां थपकड़ते ही पहुंचा पकड़े आज हमारी सामाजिक बातों मे दखल दिया तो हमारे धर्म तथा और २ बातों मे भी कूदेगी तो इस का उत्तर भी हम यह देते हैं कि सरकार यदि इस बात मे आप की सहायता करेगी तो आप के बिरुद्ध हो कर नहीं बरन जैसा आप कहेंगे वही होगा—यह सब मालावारी का कहा हुआ प्रस्ताव हम ने यहां पर लिखा पर हमको जो कुछ इस बिषय मे बक्तव्य है वह स्थान न रहने से दूसरे अङ्क मे प्रकाश करेंगे ॥

—:o:—

—— ++:0:++ ——

## मासिक पत्र ।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वे आनंद भरे ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ अपरैल सन् १८८६ } { ज़िल्द ९ संख्य ८

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३॥=) पीछे देने से ४॥=)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ९ संख्या ८ — १ अपरैल सन १८८६ ई०

—:०:—

## सरकारी खर्च कैसे कम हो सक्ता है

पिछली संख्या मे हम ने दिखाया था कि सरकारी खर्च कम कर देने से इनकं टैक्स के लगाने की आवश्यकता मिट सक्ती है और उसी के साथ यह भी प्रतिज्ञा की थी कि इस संख्या में यह दिखावेंगे कि किस रीति से और किन २ बातों मे खर्च कम होना चाहिये – प्रिय पाठक उस समय हम को यह नहीं समझ पड़ा कि हम क्या कहते हैं – जैसा तुम अनेक दया पात्र लोगों को जानते होंगे जो बात चीत के उमंग वा वक्तृता के उत्साह मे बिना सोचे बिचारे बीसों तरह के प्रण कर बैठते हैं और यह नहीं बिचारते कि हम इन को कभी पूरा करेंगे वा नहीं वैसे ही आज हम से भी यह चूक बनी है – सरकारी खर्च किन २

बातों मे कम होना चाहिये इस के ठीक २ कहने के लिये यह जानना आवश्यक है कि कहां २ कितना २ खर्च होता है और उस के देखाने को एक नहीं अनेक प्रदीप चाहिये — तो क्या अब हम आप से क्षमा मांग चुप रह जांय — नहीं — यह बात सम्पादकीय कृत्य के बिरुद्ध है तो लो एक श्लोक अपने चित्त के चित्रपट मे लिख लो जन्म जन्मान्तर तुम्हारे काम आता रहेगा — "वाचा यच्च प्रतिज्ञातं कर्मणा नोपपादितं। रिणं तद्धर्म संयुक्त मिह लोके परत्र च,, — हां! यदि यही भाव हमारे बर्तमान गवर्नर जेनरल श्रीमान् डफरिन महाशय के हृदय मे होता तो आज भारत बर्ष का दुःख कितना कम हो जाता — हमारे पाठकों को याद होगा कि इनकं टेक्स की छूरी मारने के पूर्व लार्ड डफरिन महाशय ने हमे कैसे मीठे २ शब्दों से फुसलाया था — यद्यपि लाट साहब अपनी अद्भुत बक्तृत्व शक्ति के कारण प्रसिद्ध है कि दुध और मधु के समान मीठी बातों मे फुसला खूब जानते हैं "बिष रस भरा कनक घट जैसे,, — फिर भी हम ने आशा किया था कि कदाचित् इस अवसर मे श्रीमान् ने शुष्क न्याय और नीति की बुद्धि ही से अपने बचनो को पूरा करेंगे — इनकं टेक्स लगाने की आवश्यकता दिखाने के समय लाट साहब ने कहा था कि जल्दी ही एक कमीशन खर्च की जांच और कमी के बिचार के लिये नियत करेंगे जिस मे ऐसे २ लोग रहेंगे जो निष्पक्ष और निर्भय रीति से खर्च की कमी का उपाय बता सकें — यदि इस प्रकार का कमीशन नियत हुआ होता तो हम लोग इसी आशा से चित्त को समझाते कि बर्ष दिन के उपरान्त खर्च कम हो जायगा और इनकं टेक्स की मार से हमारे प्राण बच जांयगे — पर बास्तव

मे हुआ क्या लार्ड डफरिन साहब ने केवल आठ आदमियों की एक कमेटी नियत कर उन को खर्च की कमी के भारी बिचार का सब भार दिया है – ये आठो जन सरकार नौकर हैं और प्राय: सिबिलियन हैं जिन से यह आशा नहीं होती कि वे अपनी व अपने सिबिलियन भाइयों की बड़ी २ तलबों मे कुछ कमी कराने की सम्मति दें – इन आठ जनो मे केवल एक जन भरतबर्षीय हैं अर्थात बम्बई के श्रीमान् महादेव गोबिन्द रानाड़े – अब बताइये कि क्या आशा की जाय कि ये सिविलियन लोग उचित २ खर्च की कमीकी संमति देंगे और क्यो कर बिश्वास हो कि इन सात की चीत्कार के आगे एक गोबिन्द रानाडे महाशय की बात सुनी जायगी —यदि बास्तब मे सर्कार खर्च कम किया चाहती थी तो उचित था कि कमेटी वा कमीशन मे आधे अंगरेज़ और आधे हिन्दुस्तानी रखती जिन्मे से कम से कम आधे पुरुष ऐसे होना उचित था जो सर्कारी नौकर नहोते और जो नितान्त निर्भय होकर सर्कार को यह दिखाते कि किन २ बिभागों मे खर्च कम हो॰ सक्ता है – यदि लाट साहब इस ढंग की कमेटी नियत करते तो हम समझते कि उन्हों ने अपना बचन पूरा किया – अभी तो हम समझते हैं कि वे प्रजा के रिनिया हैं और यद्यपि श्रीमान सामर्थ्य रख कर भी इस रिण को यहां नही चुकाते तो कहीं ऊपर जाकर आवश्य एक न्याय शील के सामने इस रिण को मे बियाज और छियाज के चुकाना पड़ेगा ॥

पाठक इसे यों समझिये – यदि कोई अपने ही भटत्य और आश्रितों से कहे कि वे उसके खर्च मे कमी का उपाय बतावें तो कहो वे कब तुमसे कहेंगे कि स्वामी हो तुम थोड़ा जीभ का चटोर

पन छोड़ दो थोड़ो विषय लोलुपता कम करो ग्रीष्म मे हिम गृह की शीतलता चन्दन और उशीर का लेप कुसुम की सेप्यासे थोड़ा मन को खींचो कब वे कहेंगे कि आप अपने मित्रों को अपने भाई बन्धुओं को अपने कुल कुटुम्ब को ग्रीष्म की कड़ी घाम सहना सिखलाओ — तो ऐसे ही कमेटी की गति समझिये कौन सी आशा है कि कमेटी के मेम्बर गवर्नर जेनरल से कहेंगे कि तुम शिमला सपाटू की तरावट का मज़ा छोड़ दो सि-विलियनो की और फ़ौजो अफसरों की तलब घटाओ और फिर इस खर्च की कमी से प्रजा का भार हलका करो ॥

गत संख्या मे हम कह चुके हैं कि यहाँ के राज्य प्रबन्ध के खर्च के समान पृथिवी मण्डल मे कही नहीं है इङ्गलेंड इस देश से ५० गुना अधिक धनी है वहां के राज्य प्रबन्ध का खर्च यहां के खर्च की तुलना मे बीसवें भाग के बराबर है — यदि सरकार देशी लोगों से राज्य का अधिक काम कराती होती तो कदापि सम्भव न था कि इतनी ऊंची तलब कर्मचारियों को दी जा-ती पर जब अङ्गरेज़ो अफसर और कर्मचारी रखना है तब ऊंची तलब किसको कसकैगी — "घरके परसैया अंधेरी रात,, एक २ अंगरेज़ कर्मचारी की तलब नवाबों की आमदनी को लजाती है सामा-न्यत: यह कहा जा सक्ता है कि कोई अंगरेज़ सर्कारी नौकर ऐसा नहो है जिसकी तलब आधी कर दी जाने पर भी और देशी की अपेक्षा ऊंची नबनी रहे — हम मानते हैं तीस वा चालीस वर्ष पूर्व जब इंगलेंड से लोगों को यहां आने मे ६ महीने लगते थे और कम लोग यहां आया चाहते थे तब कुछ ऊंची तलब देना आवश्यक होसक्ता था क्योंकि बिना ऊंची तलब की लालच दिये अच्छे अंगरेज़ विलायत की शीतलता छोड़ यहां की गरमी

झेलना पसन्द न करते पर अब तो धूमयान के बल से इंगलैंड और हिन्दुस्तान घर आंगन होरहे हैं २० दिन मे लोग यहां से वहां आ जा सक्ते हैं और सहस्रों अच्छे घरों के पढ़े लिखे अङ्गरेज यहां आकर नौकरी करने को तैय्यार हैं तब क्यों इतनी ऊंची तलब दी जाती है—

राज्य के खर्च की पूरी मीमांसा करने को मोटी रीति पर उसे दो बड़े हिस्सों मे बांट दीजिये ( एक दीवानी दूसरा फौजी ) अर्थात् एक सेना सम्बन्धी दूसरा उस से अतिरिक्त और सब — सन सत्तावन के बलवे के पहले यहां का राज्य भार ईष्ट इंडिया कम्पनी के हाथ मे था बलवे के उपरान्त महाराणी ने यह भार अपने ऊपर उठा लिया — आशा यह होनी चाहिये थी की महाराणी की रक्षा मे रह कर प्रजा सुखी होगी — पर अब तक इसके बिपरीत ही देखा गया जो पीड़ा प्रजा को बलवे के पूर्व थी वह यद्यपि बहुत भारी रही हो तथापि सही जा सक्ती थी — यह पेट की पीड़ा जिस्से अब अधिकांश प्रजा व्याकुल है नही सही जाती— सब बातों मे खंच बढाया गया कर का भार दिन २ भारी होता जाता हैं — आय वा आमद के द्वार बन्द होते जाते हैं — सेना की कहिये तो सन १८५८ के पूर्व हिन्दुस्तान की सेना और इङ्गलैंड की सेना भिन्न २ समझी जाती थी बलवे के उपरान्त दोनों देशें की सेना मिला दी गई और दोनो सेना के एक होजाने से हिन्दुस्तान को घोर आपत्ति सहनी पड़ती है—यद्यपि भारतीय सेना की संख्या घटा दी गई है पर इङ्गलेंड की सेना के साथ मिली समझी जाने के कारण खर्च अब पहले से अधिक देना पड़ता है यदि जर्मनी फ्रांस प्रभृति देशों मे हर एक सिपाही पीछे १०) मा॰

सिक खर्च किया जाता है तो हिन्दुस्तान मे ३०) वाउस्से भी अ-
धिक हर एक सिपाही पीछे महीने मे उठता है – दूसरे का तेल फूंकते
क्या लगता है दूसरे का धन लुटाते क्या लगता है – खास कर
जब लूटने वाले अपनेही मौसिया भाई हों – थोड़े२ सिपाहियों के
अलग २ दल मे 'रेजीमेंट,, बांध दिये गये हैं – उन के लिये अलग
२ बिलायत कौवड़ी २ तलब के अपसर रक्खे गये हैं और उस्मे
भी भारतीय सेना मे इतने अधिक अपसर हैं कि उनको अफसरी
के लिये दल नही मिलता पर सेना का दल हो वा नहो वे अंगरेज़
अफसर हैं इस लिये अफसरी की तलब उन को मिल तोही है –
सेना का समस्त प्रबन्ध इंगलेंड मे हार्सगार्डस (Harse Guards.) नाम
सभा और युद्ध कार्यालय War office. के आधीन है जो ये चाहते
हैं वही करते हैं और अब तक किसी की सामर्थि यह न हुई कि
इन के ऊपर हुक्म चला सके जिस्मे उन को इंगलेंड और इंगलेंड के
लोगों को लाभ देख पड़ता है वही वे करते हैं और फिर चाहो सब
संसार सिर धुन डाले ये उस्पर ध्यान नही देते जब तक पार्लिया
मेंट इन पर कुछ दाव ना पहुंचावेगी कोई आशा नही किये लोग
हिन्दुस्तान का गला काटना छोड़दें – इङ्गलेंडीय और भारतीय सेना
के एक कर दिये जाने के कारण कम से कम दो करोड़ रुपये साल
का खर्च यहां बढ़ गया है – यदि इस एक सेनाही का प्रबन्ध उचित
रीति से होतो दो चार टेक्स उठा दिये जा सक्ते हैं हम ऊपर कह
आये हैं कि सेनामे दल छोटे २ रक्खे गये हैं इस्से अफसरों की
संख्या आदि बढ़ कर बहुत सा निरर्थक खर्च हो जाता है – चिर
काल से इस बात पर बुद्धिमानों की दृष्टि पड़ती आती है लार्ड मेयो
के सेना संबन्धी सभासद सरहेनरी डूयूरेंड ने कई बर्ष हुये सेक्रेटरी

आफस्टेट को लिखा था कि यदि सेना दलों Regiments. की संख्या घटा दीजाय और उन्मे सिपाहियों की संख्या बढ़ा दी जाय जैसा बीस २ के स्थान मे चालीस २ कर दिये जांय तो सेना का तनिक भी बल घटाये बिनाही बहुत कुछ खर्च कम हो सक्ता है—यह सब कुछ उन्हो ने लिखा पर इङ्गलेंड की हार्स गार्डस वाली सभा ने कुछ न होने दिया— लार्ड रिपन ने भी इस बिषय पर अपनी कृपा दृष्टि फेरी थी पर अपने अल्प समय मे वे बिशेष कुछ न कर पाये—इस्के सिवाय यह एक महा घोर अन्याय है कि सेना मे हिन्दुस्तान के लोगों को रिसालदार आदि तुच्छ पदों के अतिरिक्त कभी कोई ऊंचा पद नहीं दिया जाता यदि ऊंचे २ पदों पर जैसा "कप्तानी जेनरली आदि" हिन्दुस्तानी रक्खे जांय तो धन की भी बचत हो और प्रजा को सर्कारमे बिशेष प्रीति और बिश्वास भी हो—यह बात एक साधारण बालक भी जानता है कि यदि किसी को कोई अपनाया चाहता हो तो उचित है कि उस्के साथ अपने के समान बर्ते—जिस्का हम बिश्वास करेंगे वह हमारा भी बिश्वास करेगा और जिस्का हम बिश्वास न करेंगे वह हमारा बिश्वास भी न करे गा—यदि सर्कार हम लोगों का बिश्वास नहीं करती तो मानो वह हमे यही सिखाती है कि हम भी सर्कार का बिश्वास न करें नहीं तो क्या कारण कि हमारे देश के वीरों को सर्कार केवल रिसालदारी वा सिपाह गीरी से फुसला कर जन्म बिताती है – देश मे बिदेश मे बिपति मे संपति मे सब प्रकार सर्कार हमारी राज भक्ति की जांच कर चुकी तो भी हमे छोटा सा कप्तान या जेनरल करने मे संकुचाती है – इस्के अति" रिक्त सेना मे एक स्टाफ कोर का महासत्यानाशी प्रबन्ध है जिस्से

हमारा करोड़ों रुपया प्रतिबर्ष बिलायत ढोया जा रहा है — स्टाफ कोर के नाम से एक दल बिलायत मे रक्खा गया है केवल तीन वा पांच बर्ष यहां सेना मे काम कर अंगरेज़ इस दल मे भरती हो जाते हैं और फिर जीवन पर्यन्त चाहो सिविल अर्थात् दीवानी क.मों मे लगे रहें और चाहो उनको एक घंटा कभी फ़ौज का कुछ काम न करना पड़े तथापि इसी दल मे वे ऊपर चढ़ते २ मेजर जेनरल की पदबी तक पहुंच जाते हैं और जीवन भर ११००० साल पेन्शन पाया करते हैं — दूसरे यहां कमांडर इन चीफ़ मुख्य सेनानीत्व की भिन्न २ पदबियों के कारण अनन्त धन का नाश होता है — जब देश एक गवर्नर जेनरल एक ही तो समान पद के ४ भिन्न भिन्न सेनानी क्यों रक्खे जांय — बंगाल के मुख्य सेनानी पश्चिमोत्तर और अवध के मुख्य सेनानी बम्बई और मंदराज के मुख्य सेनानी यह सब क्या खेलवाड़ है भारत बर्ष की समस्त सेना का एक ही मुख्य सेनानी क्यों नहीं जैसा लफटिनेन्ट गवनरों से प्रान्त २ का काम होता है वैसाही लफटनेन्ट कामांडरों से प्रान्त २ की सेना का प्रबन्ध क्यों नहीं हो सक्ता इतने ही से कितना धन हर साल बच सक्ता है — जितने भिन्न २ ऊंचे अफसर होंगे उतना ही खर्च अधिक होगा उन के ठाठ बाठ का अलग २ प्रबन्ध करना पड़ता है तो जब उस से कोई बिशेष लाभ नहीं तो क्यों इतना द्रब्य निष्कारण फेंका जाय — पर नहीं हम सेना का खर्च घटाने की रीति है वहां अब की बर्ष सेना मे पूरे दो करोड़ रुपये साल का खर्च और बढ़ाया गया है और दोनों करोड़ को अङ्गरेज़ी सिपाही और अफसरों की जठराग्नि मे आहुति दी जायगी बिचार था कि सेना मे कुछ सिक्ख लोगों का दल भी बढ़ा दिया जाय पर

अंगरेजी दल के बढाने मे दोनो करोड़ स्वाहा होगये — सिक्ख लोग मिट्टी फांक और हवा पी कर सर्कार की सेवा किया चाहें तो कदाचित् कर सक्ते हैं — पाठक जन ईश्वर का स्मरण करो और प्रार्थना करो कि वह सर्कार की बुद्धि को सुधार दे नहीं तो इन सेना दलों की बढती मे तुह्मारे सूखे प्राण कुचल कर रह जांयगे और नित नये टिक्कस के पेचकस मे कस कर हमारे तुह्मारे नस२का रुधिर नस जाय गा — बस अब तुम एक महीने ईश्वर से प्रार्थना करत रहो दूसरे महीने हम तुह्मे और२ दीवानी खर्च का और २ ब्योरा समझावें गे—

—:०:—

# नूतनब्रह्मचारी

पूर्व प्रकाशिता नन्तर

## ४ परिच्छेद

बिनायकराव का बय अभी आठ वर्ष और तीन या चार महीने का होगा पर देखने से छही वर्ष का मालूम होता था क्योंकि उस्का दुबला शरीर ऐसा नथा कि बाल्य अवस्थाही सेआगामी युवा अवस्था के सब पूरे लक्षण प्रगट कर सके प्रत्युत इस्का डील डौल उन पेड़ों के समान था जो आरंभ मे लगाने वाले को कुछ निरास सा कर देते हैं पर समय पाय भर पूर फलते फूलते हैं—यदि ऊंचा और चेड़ा लिलार भाग्य की पहचान है तो खेद के साथ हमे यह अवश्य कहना पड़ेगा कि बिनायक के भाग्य मे

किसी प्रकार का बड़प्पन नहीं लिखा था—और यदि विशाल और बड़े नेत्र सराहने के योग्य हैं तो बिनायक की छोटी २ आंखें लड़क पन के कुतूहल से भरी हुई और पल २ मे बीसों तरह के भाव देखलाने वाली निस्सन्देह उसके मुख की शोभा को घटाती थीं—कभी तो उन मे बड़ेही गूढ़ भाव के चिन्ह दिखलाई पड़ते थे जिन पर ध्यान देने से यही मालूम होता था कि ये आंखें नहीं किन्तु बड़ी दूर तक चले जाने वाले दो अन्धेरे सुरंग हैं जो बिनायक के हृद्गत भाव रूपगढ़ी तक पहुंचते हैं फिर पल ही भर मे वह सब गूढ़ भाव ऐसा साफहो जाता था मानो उन आंखों मे किसी प्रकार का गांभीर्य रहा ही नहीं और उन के सहज सौन्दर्य और प्राकृतिक निष्कपट भाव को देखने वाला ऊपर ही से खींच ले॰॰सत्य है चितवन मे जो एक प्रकार का जादू लोगों ने मान रक्खा है वह यही है बरन सामुद्रिक का एक प्रधान अङ्ग इन आंख के भावों को जिस ने समझा उस ने मानो ईश्वर की ईश्वरता पहचानने का पूर्ण अभ्यास कर लिया—प्रिय पाठक हमे पूरा बिश्वास है कि लोक की प्रसिद्ध रुचि के अनुसार छोटी आंखों की प्रशंसा आप को कदापि भली न लगी होगी पर अवसर पा कर यह प्रश्न पूछने का साहस हमे क्यो न होना चाहिये कि यह बात स्वयं सिद्ध है कि बड़ी वस्तु के घूमने फिरने मे छोटे पदार्थ की अपेक्षा कहीं अधिक देर लगती है—तब यदि बिबिध भावों से पूर्ण चंचलता की शोभा आप को प्रिय है तो कभी अपनी पसन्द को बड़ी आंखों का उम्मेदवार न बनाइये—अस्तु इतने पर भी यदि आप गतानुगतिक न्याय के बाहर

होने का साहस नहीं बांध सक्ते और अपनी रुचि बड़ी आखें उघलग नही कर सक्ते ते क्या किया जाय लचारी है "भिन्न रुचिर्हि लोकः" इस लोकोक्ति पर ध्यान रख हमों को क्षमा कीजिये—

न यही कह सक्ते हैं कि इन्ही आखें के ऊपर जो भौं थे वही बड़े घने थे पर इतना तोभी कहेंगे कि बाल्य अवस्था की मचलाई का क्रोध दरसाने भर का भर पुर गर्भिन थे—क्रोध के समय बालकों की भृकुटी के आगे दुरवासा की भृकुटी भीमात है. यह माता का स्नेह नहीं बरन उन भृकुटीयों ही का प्रताप था जो बिनायक को अपनी मन मानी कराही के छोड़ता था और मा को उसीके मन की करनाही पड़ता था—मानो संसार मे वात्सल्य रस की सजीव मुर्ति होती है उस्के साथ बिनायक को अपनी भृकुटी काम मे लाने का अवसरही नहीं मिलता था पर पिता के कड़े बरताव के कारण बे चारा बिनायक क्रोध और दुःख मे जब भर जाता था तब उसके दोनों भवों के ऊपर सिकुडन पड़ जाती थी और मुंह कुछ खुल जाता था और मोतियों की लड़ियों समान चमक दार बत्तीसो दांतो की आभा कांपती हुये बिम्ब सदृश ओठों पर पड़ती हुई मानो इस बात को सूचन करती थी कि क्यों मेरेही मन की नहो और पिता उस्के हृदय तक पहुंच बिनायक का मान क्यों नही रख लेता—पर बहुधा इस भारी क्रोध काभी असर उस्के पिता पर कुछ नहीं होता था और अन्ततोगत्वा बिनायक को लाचार हो पिता ही के मन कीसी करना पड़ता था—फिर दूसरे ही क्षण मे वे सब

क्रोध के चिन्ह कुछ भी नहीं रह जाते थे और बिट्ठल राव जो कुछ सिखलाते थे उसे बिनायक सीख लेता था और यह नया ब्रह्मचारी अनेक कष्ट व्रत और ब्रह्मचर्य के कैसेही कठिन नियम जो पिता आज्ञा करता था सब स्वीकार कर लेता था—यद्यपि आरंभ मे पहले पहल वे सब संयम खेलबाड़ी बिनायक को नही भावते थे और लड़कों की सीधी सरल प्रकृति के अनुसार जो बात उसे अच्छी नहीं लगती थी उस पर नाक-भौं सिकोड़ता था—क्योंकि अभी तक यह किसी तरह के संयम और नियम के जत्ते मे नहीं कसा हुआ रह कर परम स्वतंत्र और अपने मन का राजा था—मन माना एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ मे घूमा करता था कभी नीचे उतर आता था कभी ऊपर की चोटी पर जा बैठता था और जब भूख लगती थी तो बिना किसी प्रकार की रोक टोक के जंगली फलों को खा लेता था प्यास लगने पर झरने का स्वच्छ स्वादिष्ट मधुर जल पी लेताथा—छठवें वर्ष इन मीठे सुखों का बाधक विद्यारंभ जब से बिनायक को कराया गया और समय से उठने बैठने खाने पीने की कैद मे जकड़ दिया गया तब से उसे अखरने लगा और अब तो ब्रह्मचर्य के टेढ़े से टेढ़े संयम उसकी स्वच्छन्दता पर मानो आरा चला रहे थे—पर नियम बद्ध होकर अभ्यास का करना भी एक बड़ा साधन है—थोड़ेही दिनो मे विनायक की सब चौकड़ी भूल गई और न केवल उन पुरानी बातों ही को भूल सा गया किन्तु मन भी उसका यहां तक बदल गया कि वे सब पहले के खेलबाड़ अब उसको आप से आप अरोचक होगये—अर्थात् इस ब्रह्मचर्य मे घसते ही बाल्य

अवस्था के कुतूहल के बदले एक ऐसे सहज गाम्भीर्य ने बिनायक के मन मे स्थान पाया जो कि बयो वृद्ध पुरुषों मे बहुधा देखा जाता है ॥

ब्रह्मचर्य के बहुत से संयम नियम के कारण उस्के दोनो गोल कपोल पीले पड गये थे पर यह पीतिमा बिनायक के ब्रह्म तेज की द्युति को मानो बढ़ाती सी थी—छोटा चिबुक और पतली कोती गरदन इस्के गोल चेहरे के सौन्दर्य और निकाई पर मानो मुहर सी थी — येसब एक २ अंग मिल कर देखने वाले को बिनायक के चेहरे से क्या भाव दरसाते थे—केतने बालकों के चेहरेही से उन के होनहार बुद्धिवैभव का प्रकाश झलकता है—केतने अपने डील डौल से बालपने ही से अपनी कुटिल प्रकृति का परिचय देते हैं—कोई २ बालक ऐसे भी हैं जिन मे वाक् चातुरी की तेज़ी उन की शकल ही से बरसती है पर बिनायक के चेहरे से देखने वाले पर क्या असर होता था ? प्रिय पाठक हम जहां तक खयाल दौड़ाते हैं इस नूतन ब्रह्मचारी के चेहरे से भोला ही पन हमे जंचता है—हां उसके पतले भीतर को धंसे हुये ओठों को देख इस बालक मे एक प्रकार की दृढ़ता और अपने अध्यवसाय मे स्थिरता अलबत्ता झ्यासती थी जो बय क्रम के बढ़ने के साथ ही साथ अवश्य बढ़ती जायगी ॥

हम ने ऊपर कहा है पहले बिनायक दौड़ धूप बहुत पसन्द करता था—निस्सन्देह ऐसी रमणीक पर्वत स्थली मे रह कर भी जिस ने दौड़ धूप न किया उस्की प्रकृति संसार भर से न्यारी होगी—बिकट गुफाओं के भीतर निः शङ्क घुस जाना विनायक इस

उत्कट इच्छा से करता था कि इस के भीतर जाकर देखें यह सुरंग कितनी दूर तक है पर दिन मे भी इन गुफाओं मे इतना अन्धकार रहता था ( लीनं दिवा भीत मिवान्धकारं ) कि दस पांच कदम के आगे बढ़ने की हिम्मत इस को न होती थी—एक दिन बिनायक एक बड़ी नीची गुफा मे उतरने के ताक झांक मे था अकस्मात् उस की मा राधाबाई जो पास के झरने से पानी लेने आई थी इसे नीचे उतरते देख दौड़ आई और पकड़ ले गई—राधा को स्वयं उन गुफाओं का बहुत हाल मालूम न था पर मोटी रीति पर यह बिश्वास उसके मन मे जमा हुआ था कि दुनियां भर के भयङ्कर जानवर सिंह व्याघ्र आदि हिंस्र पशु सब इन्ही गुफाओ मे रहते हैं इस से और भी बिनायक को गुफाओं के निकट नही जाने दिया चाहती थी—उन दिनो बिनायक नित्य अपनी मा से रामायण को कथा सुनता २ सो जाता था उस दिन रामचन्द्र का दण्डकारण्य के राक्षसों के मारने की कथा आई—राधाबाई बिनायक की देह से धूर पोछ ती और उस का बार सवांरते हुई बोली—"और राक्षस जब मुनियों के होम मे बिघ्न करने आये तो रामचन्द्र ने अपने धनुष के टंकार से सबों को भगा दिया ॥

बिनायक – और सब राक्षस मारे गये ॥

राधा – हां राक्षस मारे गये पर उन मे से एक भाग गया और रामचंद्र उसको न पकड़ सके और आकर उसी गुफा मे पैठ गया जहां वह आज तक छिपा है जिस की ओर तुम आज जाते थे बल्कि रात को कभी २ वह निशाचर निकलता भी है, ।

यह सुन उस दिन से बिनायक इतना सहम सा गया कि तब से उस गुफा के पास जाने की हिम्मत उस को कभी न हुई । बिट्ठलराव के घर के उत्तर पांचसात गज की लंबी चोड़ी एक झील थी बड़ी से बड़ी रस्सी जो विनायक को मिलती थी उस मे ढेला बांध उसने कई बार इस्की गहराई की थाह लेना चाहा पर जब थाह न मिली तो उस ने यही समझा कि यह झील अथाह समुद्र का एक हिस्सा है — एक दिन नित्य के क्रम के अनुसार उस ने अपनी मा से समुद्र मंथन की कथा सुना दूसरे रोज़ भोर होतेही बिनायक ने यह आजमाना चाहा कि इस झील के मथने से भी देखें कोई रत्न निकलते हैं या नहीं इस लिये दो बड़ी २ लकड़ियां ले जा कर घंटों तक उस झील मे ऊपर २ करते खूब खेला रत्न आदि तो कुछ न निकले पर कई दिन के लिये सरदी उसे खूब ज़ोर से हो गई और मा ने बहुत घोंटा और डांटा भी — बेचारे बिनायक को इस बात का सदा खेद रहा कि क्यों मा मेरे सराहनीय उद्यमों को न समझ उलटा घोटती है —

बिनायक ! तुम्ही क्या बहुतेरे इस संसार मे इसी अचरज और दुःख मे रहते हैं कि उनके मन की सो क्यों नहीं होती ॥

पर इन दिनों बिनायक को पहली सब बातें निरी किस्सा कहानी मालूम होने लगीं — आज तड़के सन्ध्या बन्दन का आन्हिक कर्म विनायक बिट्ठलराव के जाने के पहले ही कर चुका था और अब गो के लिये चारा और उस दिन के होम के किये लकड़ी और कुशा लाने की फ़िकिर मे घर से बाहर निकला ज्यों

हां डेठी के बाहर पांव रक्खा कि घोड़े की टाप का शब्द सुनाई दिया – बिनायक का घर पगडंडी के रास्ते ही पर था इस लिये उस ने समझा कि घोड़े पहाड़ के एक ओर से दूसरे को जाते होंगे पर उसे कुछ अचरज सा हुआ जब उस ने देखा कि तीनों सवार रास्ते को छोड़ उस के घर ही की ओर मुड़े और जहां वह खड़ा था वहीं आकर उन्हों ने घोड़ा रोका ॥

——:०:——

## । सच्ची समालोचना ।

"संयोगता स्वयम्बर"—दिल्ली निवासी लाला श्री निवासदास रचित एक ऐतिहासिक नाटक की—

लाला जी यदि बुरा नमानिये तो एक बात आपसे धीरे से पूछैं वह यह कि आप ऐतिहासिक नाटक किसको कहैं गे क्या केवल किसी पुराने समय के ऐतिहासिक पुरावृत्त की छाया लेकर नाटक लिख डालनेही से वह ऐतिहासिक हो गया--क्या किसी बिख्यात राजा या रानी के आने ही से वह लेख ऐतिहासिक हो जायगा यदि ऐसा है तो गप्प हाकने वाले दास्तान गो और नाटक के ढङ्ग मे कुछ भी भेद न रहा – किसी समय के लोगों के हृदय की क्या दशा थी उनके आभ्यन्तरिक भाव किस पहलू पर कुलके हुये थे अर्थात् उस समय मात्र के भाव Spirit of the times क्या थे – इन सब बातों को ऐतिहासिक रीति पर पहले समझ लीजिये तब उस के दरसाने का भी यत्न नाटकों के द्वारा कीजिये – केवल क्लिष्ट श्लेष बोलने ही से तो ऐतिहासिक नाटक के पात्र क्या बरन

एक प्राकृतिक मनुष्य की भी पदवी हम आप के पात्रों को नहीं दे सक्ते—बल्कि मनुष्य के बदले आप के नाटक पात्रों को नीरस और रुखे से रुखे अर्थान्तरन्यास गढ़ने की कल कहें तो अनुचित नहोगा – नाटक के चौथेही पृष्ठ में आप लिखते हैं "अभिनय कर्ता अपने चित्त पर पूरा अधिकार रख सक्ता है,, यदि ऐसा है तो ग्रन्थ कर्ता को चाहिये कि पूर्ण रीति पर अधिकतर अधिकार अपने हृदय पर रक्खे—किन्तु इसके बिपरीत हम देख ते हैं आप के नाटक मे राजा, मंत्री, कबि, यहां तक कि संयोगता बेचारी भी अपना पाण्डित्य ही प्रकाश करने के यत्न मे हैरान हो रहे हैं – भला बतलाइये यह कौन सा ढंग भावों के दरसाने का है? कबिता के मीठे रस के बदले नैयायिकों के सदृश कोरा तर्क बितर्क भरना भाव का गला ही घोटना है कि और कुछ ? पृथ्वीराज संयोगता से क्यों अलग हुआ क्योंकि नीति शास्त्र मे लिखा हैं ( पृष्ट ४३ )राजा जैचन्द और पृथ्वीराज मे क्यों मेल मिलाप होगया ? केवल इसी कारण से कि अन्त को पछता के किसी तरह जयचन्द के मन मे महा भारत के घोर युद्ध का कारण धंस गया ( पृष्ट ८२ ) अहा ! हा ! तनिक और जल्दी धंस जाता तो काहे को आप को नाटक लिखने का कष्ट सहना पड़ता – खैर जाने दीजिये बेचारे जैचन्द को क्षमा कीजिये सब के बुद्धि पर आप के समान पाण्डित्य की सान नहीं रक्खी है—हमने जहां तक नाटक देखे उन्में पात्रों की व्यक्ति ( Characteri zation ) के भिन्न २ होनेही से नाटक की शोभा देखा पर आपके पात्र सब के सब एक ही रस मे सने उपदेश देने की हवस मे लथर पथर पाये गये और उस रस मे आप ही की बिद्या के प्रकाश का

ज़हर भरा है—हमारे ही यहां के बड़े प्रसिद्ध प्राचीन नाटक कार ( क्यों कि आप की तरह अरबी फारसी बूकने तो मुझे आता नहीं ' ) भवभुति ने कहा है—यद्वेदा ध्ययनं तथो पनिषदां सां ख्यस्य योगस्यच ज्ञानं तत्कथने नकिं नहि ततः कश्चिद्गुणो नाटके । यत्प्रौढ़त्व मुदारता च बचसां यच्चार्थतो गौरवं तच्चे दस्ति ततस्त देव गमकं पाण्डित्य वैदग्ध्ययोः—अर्थात् नाटक मे पाण्डित्य नहीं, बरन मनुष्य के हृदय से आप को कितना गाढ़ा परिचय है यह दरसाना चाहिये—पर यदि इस्के विपरीत आप एकता सच्ची प्रीति आदि विषयों पर अपने पात्रों के मुख से लेक्चर दिया चाहते हैं तो एक सलाह मेरी है उस्को सुनिये—इस नाटक को काट छांट इसमे से आठ दस ( पैफलेट ) छोटे २ गुटके छपवा दीजिये और दूसरी बार जब दूसरा नाटक लिखने को हौसिला कीजिये गा तब कृपा कर बेचारी निरपराधिनी कबित्व शक्ति के भावां का प्राण ऐसे निर्दयता के साथ न लिजियेगा नहीं तो जिन कबियों से आप ब राबर श्लोक दोहे चौपाई और बैत उध्रित कर के लिखते हैं वह बेचारे भाव उन्हीं कबियों के सामने जाय आप की लेखिनी के दिये हुये अपने कोमल शरीर के घाव उन को दिखलावेंगे—

यह तो हमने समान्य रीति पर आपके लिखावट के ढंग पर कुछ कहा अब दो चार बातों का ब्योरा अलग२ भी बतलाना चाहिये—आरंभही में ५ और ६ के पृष्ठ मे नटी नट से कहती है—"ईश्वर कृपा से मैं इस समय आपकी कण्ठा भरण हूं,,—लाला जी आपने कभी इस बातपर ध्यान दिया है कि स्त्रियों की कितनी मृदु प्रकृति होती है और कितनी प्रबल लज्जा उनमें होती है—हम नहीं जा नते दिल्ली की स्त्रियों की मुसलमानो की राजधानी मे रहने से मुस

ल्मानी खयालात और ढंग सीख क्या दशा हुई पर इन प्रान्तों की स्त्रियां तो मर जांय गी कदापि अपने पति से ऐसे बचन न कहेंगी कि – मैं आपकी कण्ठा भरण हूं – मैं आपकी प्रेयसी और प्राण बल्लभा हूं – इत्यादि २ इस तरह के बचन तो कृत्रिम प्रीति वालीयों महाव्यभिचारणी के मुंह से भी न निकलेंगे – कदाचित आप फुटनोट दे कर यह लिखना भूल गये हैं कि यह बचन नटी की निपट निर्लज्जता प्रगट करने को लिखा गया है खैर कुछ हर्ज नहीं दूसरे बार जब इस पुस्तक को फिर छपवाइयेगा तब इस भूल को दुरुस्त कर दीजियेगा –

पृष्ठ ११ में संयोगता पृथीराज से अपनेही प्रेम के बारेमे अपनी सखी करनाटकी से कहती है "फिर प्रेम क्या केवल अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिये किया जाता है ? यहतो प्रेम का सब से निकृष्ट भाव है,, – जी नहीं – संयोगता जी आप ज़रासा चूक गई – अभी आपकी उमरही क्या होगी और बेशक ऐसी कच्ची उमरमें आपसे किसी तरहके पक्के तजुरबे की आशा करना भी बृथा है – सबसे निकृष्ट भाव प्रेम का हम से सुनिये – आप जी जान से अपने प्रियतम के ऊपर न्योछावर हों – पर यह तो बतलाइये कि यह ले कचर देना आपने किससे सीखा – आप तन मन धन सब से आसक्त हों कुछ हरज नहीं पर यदि आप अपने दर्शकों को निरा बालक समझ एक छोटा सा व्याख्यान देने का हौसिला करेंगी तो न केवल आपकी प्रीतिही को मैं झूंठी समझूंगा वरन आपको भी निरी पाखंड और कपट की कठपुतली मानूंगा यह आप ने किस प्रेमी

को देखा है कि अपने प्रेम की प्रशंसा अपने ही मुंह से गावे —

पृष्ठ ३१ मे लङ्गुरी राय पृथ्वी राज से रण भूमि मे जाने की आज्ञा मागते हुये यों वहस करते हैं— "रण सन्मुख मरना संसार मे सब से अधिक सराहनीय गिना जाता है,, वाहवाह आप भी संयोगताही के भाई वन्धों मे से निकले — आखिर जांयगे कहां — वह तो जैसा हम ने ऊपर कहा कि सब पाच मात्र के नस २ मे एकही ज़हर भरा है — संयोगता शायद स्त्री होने के कारण अपने मुह से नहीं कहती कि मेरे प्रीति करने का ढंग अति सराहनीय है और लङ्गुरी राय अपने को जवांमर्द पुरुष मान यह कहता है कि जिस तरह के व्यापार मे मै प्रवृत्त हूं वह अति श्लाघनीय है — इस लिये हे पृथ्वीराज मै मरूंगा तो मेरा यश संसार मे कल्पान्त रहेगा,, — धन्य बीर! धन्य! बीरता इस को कहते हैं — यदि प्रशंसा का सहारा न होता तो काहे को रण क्षेत्र मे कदम भी आप रखते — लाला जो आप यह नहीं सोचते कि किसी पुरुष का चरित्र या व्यापार कितना ही प्रशंसा के योग्य क्यों नहो यदि वह आप खुद अपनी दशा को समालोचना कर के डींग मारना आरंभ करेगा तो उस्से बढ़ के घृणित और कुत्सित और कौन दूसरा होगा ॥

अब आप के पद्यों मे से भी एक उदाहरण लेना अवश्य है—पृष्ठ ४६ मे संयोगता अपने प्यारे पृथीराज को इन शब्दों मे मद्यपान के लिये कहती है—"साजन थोड़ा अमल से फुर्ती घणी जणाय—सूर चढ़े अरु श्रम मिटै वार न खाली जाय,, —यह कहना — कुछ अप्रस्ताविक न होगा कि किसी तरह का पद्य दोहा

चौपाई गान आदि भी बोलने वाले के खयाल का एक हिस्सा समझा जायगा और यदि पद्य मे ही हुआ तो इस मे उस के वाक्य मे कुछ गौरव न बढ़ जायगा – हम समझते हैं ग्रन्थकार महाशय बीबी संयोगता को ( पण्डित प्रताप नारायण मिश्र के कलिकौतुक रूपक वाली ) शराब खारों की महफिल मे भेज देते तो शराब की तारीफ मे सब से बीस संयोगता ही की स्पीच रहती – सच है जो पहली मुलाकात मे मर्द से आगे ही सुरापान की इच्छा प्रगट करे उस के खयालात और लब्ज़ कहां तक पाक हो सक्ते हैं – हाय हाय संयोगता पर भर पूर शामत सवार हुई जो उस के बारे मे नाटक लिखने का हौसिला आप के मन मे बढ़ा – छि: ऐसा ही नाटक ऐतिहासिक कहलाने के योग्य है – लाला जी आप के नोवेल "परीक्षागुरू" से तो मालूम होता है कि आप ने अङ्गरेज़ी की भी कई किताबों की सैर की है तो ज़रा देख तो लिया होता कि ऐतिहासिक नोवेल या नाटकों का निबाह कैसे होता है अथवा इस बात को बंगला या गुजराती ही मे ( जिस मे आप को पूर्ण पण्डित होने का दावा है ) देख लिया होता –

——:०:——

## । प्रेरित ।

सम्पादक महाशय ता – २४ मार्च के प्रयाग समाचार से बिदित हुआ कि कई समाचार पत्रों के सम्पादक यह सम्मति देते हैं कि बाल्य बिवाह के सामाजिक बिषय मे सरकार का हस्ताक्षेप न होना चाहिये – किन्तु उक्त सम्पादक का यह निर्णय है

कि बिना सरकार के हस्ताक्षेप के इस कार्य की सिद्धि नहीं हो सक्ती - इस के उत्तर मे हम यह कहते हैं यदि इस का भार सर्कार के ऊपर छोड़ दिया जाय तो पीछे से पछताना पड़ेगा हम लोगों की तब वही गति होगी जैसी उन बिल्लियों की हुई थी जो पनीर के एक टुकड़े को आपस मे न बांट सकीं और बन्दर के निकट न्याय चाहने अर्थात् ठीक आधा २ हिस्सा कराने को गईं और पीछे से हाथ मल २ के रोना पड़ा और कुछ भी न मिला—तब यही कहना पड़ेगा कि हमारे सामाजिक व्यवहरों को हमारे ही ऊपर छोड़ दीजिये हम आप कर लेंगे—हमारा यह प्रयोजन नहीं है कि सरकारी कानून या उनके बनाने वालों का कुछ दोष है जिस महकमे के कानून आप देखिये उनमे न्याय, उदारता, प्रजा की रक्षा दुष्ट दमन और शिष्ट पालन यही पाइयेगा और जो लोग उन कानूनो को बनाते हैं उनका भी सदा यही तात्पर्य रहता है कि जो कुछ प्रजा के हित के लिये वे करते है उसका भली भांत बर्ताव किया जाय—किन्तु खेद का विषय है कि उनको काम मे लाने वाले घाऊघप्प छोट भइये बर्ताव तो "बसुधैव कुटुम्बकम्„ इसी सूचानुसार करते हैं पर उनके कार्यों का प्रतिफल जैसी उन की भावना है तदनुकूल होता है—वे इस सूच का यों व्याख्यान करते हैं कि जब सम्पूर्ण पृथ्वी मण्डल उनका कुटुम्ब है तो तुम्हारा माल हमारा माल हमारा माल तो हमारा हुई है—इस लिये वे लोग प्रजा को पीड़ा और अनेक क्लेश दे कर भी द्रव्य लेने मे कुछ अन्याय नहीं समझते और पुलिस तथा अदालतों के अमले तो बहुधा इसी के अनुसार चलते हैं—यदि पूछीये कि "बसुधैव कुटुम्बकम्„ इसका अभिप्राय तो परस्पर स्नेह रक्षा न्याय और पालन है आप अपना मन माना अर्थ कहां से लाये —इसका जबाब वे यों देते हैं—आप अपनी भट्ठी अकिल को ज़रा सब्ज़ बाग़ की ओर टहला लाइये कुछ न्याय शास्त्र लौजिक या मन्तिक भी पढ़े हो? इसके माने यह हैं कि जैसे कुटुम्ब मे श्रेष्ठ जन का अधिकार सब के ऊपर रहता

है वैसे ही हमारा अधिकार तुम सबों के ऊपर है हम चाहो कुछ करें तुम चूं नहीं कर सक्ते इस सूच के पूर्बार्द्ध का भी कुछ मतलब समझते हो "अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसां„ अर्थात् यह बस्तु मेरी है इसको लेना चाहिये और यह दूसरे की है इसे न लेना चाहिये, यह सब बिचार छोटे लोग करते हैं हम तो उदार चित्त हैं जब पृथ्वी मात्र को अपनी समझ बैठे हैं तो किसी से उसकी राज़ी या ज़बरदस्ती कोई चीज़ लेने मे कुछ पाप नहीं है—क्या अपनी बस्तु मे भी राज़ी या नाराजी होती है? तात्पर्य यह कि प्रचलित बाल्यबिवाह के रोकने को यदि निबेदन करें और हमारे दूःख दूर करने का भार गवर्नमेंट अपने ऊपर उठा भी लेतो क्या होगा? सरकार और उसके बड़े न्यायाध्यक्ष खुद सब कार्यों को न देख सक्ते हैं न कर सक्ते हैं क्योंकि इसी के समान और इस से भी बड़े २ कार्यों का भार उन के ऊपर है उन की प्रकृति भी तो हमारी ही सी है क्योंकि न तो वे सर्बदर्शी हैं न सर्बज्ञ हैं जो सब बातों को आप ही संभाल सकें अन्त को घूम घाम यह बन्दोबस्त या तो पुलिस के सिपुर्द किया जायगा या अदालत के अमले लोग उसे अपनी ओर खींच लेंगे फिर क्या मानो सोने की चिड़िया हाथ लगी आप लोग बिबाहादि कार्यों मे अप व्यय के बारे मे लिखना भूल जाईयेगा और दुलहे को टीका चढ़ाने के पूर्ब अपने छुटभइये अधिकारियों को टीका चढाना पड़ेगा पुलिस की न्योछावर बर और कन्या की न्योछावर के पह॰ ले करनी पडेगी—साहब इन्स्पेक्टर जमादार और मुनसरिम साहब के लिये दहेज की तैयारी पहले कर तब कन्याके लिये दहेज की फिकिर होगी और ऐसा न कीजियेगा तो बिबाह न करने पाइयेगा—दूसरे जब यह बात गबर्नमेंठ तक पहुंचेगी तो वह इस्के लिये कानून गढ़ैगी— आप जानते ही हैं कानूनो के गढ़ने मे प्रजा की सम्मति कभी नही ली जाती जब इस्का आन्दोलन लेजिसलेटिब कौन्सिल अर्थात बड़े लाट साहब की कनून बनाने वाली सभा मे होगा तो इसपर अंगरेज़ीढंग और रीति से बर्ताब

होने लगेगा वहां हिन्दुस्तानी मेम्बर तो नाम मात्र को ही हैं उन की सम्मति अंगरेज़ मेम्बरों से जो प्रधान सभासद हैं अवश्य भिन्न होगी कारण इस्का यही है कि वे लोग एतद्देशियों की कुल रीति और स्त्रियों मे परदे का ब्योहार बिशेष रीति से कुछ नहीं समझते संभव है हमारे यहां का बिबाह अपने देश की रीति अनुसार स्थापन करेंगे क्योंकि यह स्वाभाविक है कि हर एक मनुष्य अपने देश की रीति और ब्योहार आदि को औरों से अच्छा समझता और मानता है और लेजिसलेटिव कौंसिल मे जिस राय के अधिक लोग होंगे वही ग्रहण की जाती है तो जब अधिक कौंसिली अंगरेज़ ही हैं तब उन्हीं की सम्मति के अनुसार बाल्यबिबाह के निषेध कारक कानून भी बनाये जांयगे—और हमें निश्चय है यद्यपि नई रोशनी वाले उन्नीसवीं सद्दी के हमलोग बाल्य बिबाह के बिरुद्ध हैं तौभी अभी इतनी रोशनी हम से नहीं समाई कि हम अंगरेज़ी रीति के अनुसार बिबाह से महीनों अथवा बरसों पहले "कोर्टशिप„ रहस्य ललना प्रलोभन को अच्छा समझें—अतएव सर्कार से इस्के उठाने के लिये निबेदन पत्र भेजने मे अनेक अपरिहार्य दोष समझ हम सब लोग अपने आप क्यों दृढ़ प्रण न करालें कि बाल्यबिबाह से हमारी कायिक तथा मानसिक दोनो प्रकार की हानि है इस लिये हम अपने बंशधर सुकुमार बालकों को इस बाल्यबिबाह रूपी प्रेतबाधा से जैसे हो सके तैसे रक्षा करें और इस्के लिये हर एक जाति और फिर के के थोड़े लोग भी मुस्तैदी के साथ दृढ़ सङ्कल्प हो जांयगे तो थोड़े ही समय मे इस महा दुःख का निवारण हो जायगा इस से सरकार को भी कष्ट न सहना पड़ेगा और न अन्य मतावलम्बी यही कह सकेंगे कि हिन्दू दास पूरे गोबर गनेस हैं बिना सरकार की सहायता के कान और पूछ भी नहीं हिला सक्ते—किम्बहु—

मो—रा—ति—

—:०:—

## मासिक पत्र ।

विद्या नाटक, इतिहास परिहास, साहित्य, दर्शन,
राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ मई सन् १८८५ } { जिल्द ८ संख्या ९

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कम्पनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३॥) पीछे देने से ३॥।)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ९ | संख्या ९ | मई सन १८८५ ई०

# सरकारी खर्च ।

—:०:—

पिछली संख्याओं मे हम दिखा चुके हैं किस रीति से सेना का प्रबन्ध हो सक्ता है जिससे सेना संबन्धी खर्च मे कमी हो सके—इस संबन्ध मे पुलिस बिभाग के खर्च का बिचार छूट गया था इस मे भी कोतवाल से ऊपर के ओहदे अंगरेज़ो ही अफरों को दिये जाते हैं और जो काम सौ रुपये मे देशी मनुष्यों के द्वारा उत्तम रीति से हो सक्ता है उसके लिये दो सौ चार सौ रुपये देकर एक गोरे चाम का बिलायती मनुष्य रक्खा जाता है—देखने मे यह एक छोटी सी बात मालूम होती है पर यदि ऐसी ही ऐसी छोटीर बातों पर ध्यान दिया जाय तो एक नहीं अनेक इनकमटैक्स की आमदनी बच जाय ।

अब दीवानी "सिविल,, खर्च की ओर दृष्टि फेरिये पहले इन बिचित्र सिबिलियन लोगों के दल पर ध्यान दीजिये जैसी ऊंचीर तलब की आमदनी इन सिविलयनों को है वैसी एक अच्छे तअल्लुकेदार और नव्वाब को भी नहीं हैं—यूरोप बहुधा हमारे देश से

अधिक सभ्य समझा जाता है और पृथ्वी मंडल के हर एक प्रान्तों से धन खींच रहा है वहां भी बड़े से बड़े राज्य मंत्री को उतनी भारी तलब नहीं दी जाती जो यहां मध्यम श्रेणी के सिविलियन महाशय पाते हैं—जर्मन देश के प्रधान मंत्री प्रिंस बिस्मार्क को राज्य से उनके खर्च के लिये सब मिला कर साल मे ३६000) के लग भग दिया जाता है इंगलेंड जो संसार भर मे सबसे अधिक धनी है वहां राज्य के प्रधान मंत्री को 40000) साल दिया जाता है—हमारे इस अभागे देश मे जहां आधी से अधिक प्रजा आधे पेट भोजन कर सन्तोष करती है एकर कमिश्नर बोर्ड के मेंबर और हाईकोर्ट के जजों की तलब इन इंगलेंड और जर्मनी की ऊंचीसे ऊंची तलबों का उपहास करती है—माना कि अंगरेज़ी राज्य के आरंभ में योग्यता संपन्न अङ्गरेज़ों को बिलायत से यहां लाने को बड़ी तलब देना बहुत आवश्यक था तो अब उनकी तलब क्यों न घटा दी जाय—पहले बिलायत से यहां आने मे ६ महीने लगते थे और तार और धुआं कस ने इङ्गलेंड और हिन्दुस्थान को घर आंगन नहीं कर दिया था तब लोग बिलायत से यहां आना काले पानी जाने के बराबर मानते थे और देशी लोग अङ्गरेज़ी भाषा न जानने के कारण राज काज मे नहीं लगाये जा सक्ते थे उस समय हमारे छोटे राजाओं की आमदनी को लजाने वाली ऊंची तलबों से सुयोग्य अङ्गरेज़ों को यहां खींचलाना कदाचित् सर्वथा अनुचित न रहा हो पर अब तो वे सब बातें बदलगईं और जैसी पहले यहां आने मे बिपत्ति और कठिनाई सहनी पड़ती थी वैसाही अब सुबीता और आराम हो गया है और बहुत देशी मनुष्य अङ्गरेज़ी बिद्या मे परम्पारीण हो देश के प्रबन्ध करने मे महादक्ष और चतुर

हो गये हैं—दरिद्रता की व्यथा से आरत भारत की दीन दुखिया प्रजा का प्राण के रुधिर सदृश धन खींच वैभवोन्माद में उन्मत्त इन सिविलियेनों को इन्द्र लोक का सुख देना कौन सा न्याय और दया है— हमारे इस लेख पर कितने सिविलियन हसेंगे पर उन से जोकोई सत्य और न्याय परायण हों उन्हीं से हम शपथ पूर्वक पूछते हैं कि यदि उनकी तलब आधी के लग भग घटादी जाय तो राज्यका प्रबन्ध क्या बिगड़ जायगा तब क्यों दुखियों के मुह का कौर छीना जाता है ? क्यों हमे तन का कपड़ा तक दुर्लभ हो रहा है क्यों हमारे ऊपर टिकस पर टिकस का बोझ लदता जाताहै जिस बोझ से हमारा कंठ गत प्राण हो रहा है—यदि प्रजा का सुख और हित राजनीति मे कुछ धर्म समझा जाता हो तो क्यों थोड़े खर्च मे यहां के राज्य का प्रबन्ध न कराया जाय ? जो प्रबन्ध देशीजन उत्तम रीति से न कर सक्के हों उसके किये बड़ीर तनखाह दे इङ्गलेंड से अङ्गरेजों को बुलाना हमे असह्य नहीं है पर इन दिनो इतने कृत विद्य नीति कुशल देशी विद्वानों के रहते कौन कह सक्ता है कि देशी जन राज्य के प्रबन्ध में सर्बथा असमर्थ हैं ? गवर्नमेंट की प्रजा के प्रति कितनी ऐसी काररवाइयां हैं जिनका पाप गवर्नमेंट के हृदय को प्रजा की ओर से सशंकित कर रहा है तो माना कि गवर्नर जेनरली लफ्टिनेंट गवर्नरी चीफ कमिशनरी कम्यान्डरइन चीफ आदि ओहदे देशीय लोगों को अभी न दिये जांय परन्तु और कितने नीचे के ओहदों मे क्यों नहीं थोड़ी तलब पर देशी योग्य पुरुष रक्खे जाते—यदि सर कार यह नियम कर ले कि जिस कामको सुयोग्य देशी जन कर सकेंगे उस्के लिये बड़ी तलब दे कर अंगरेज़ नहीं रक्खे जांयगे तो आज भारत की दुखिया

प्रजा के सिर का बोझ आधा हो जाय क्यों कि यह निश्चय है कि जिस काम पर २०००) मासिक देकर बिलायती मनुष्य रक्खे जाते हैं. उसी काम को प्रशंसनीय रीति से देशी जन १०००) मासिक मे कर सकेंगे—आश्चर्य है लफटिनेंट गवर्नर—हाई कोर्ट के जज – कमिश्नर—कलट्टर—डाईरेक्टर इंजीनियर – पोष्टमाष्टर जेनरल – डाईरेक्टर आफ पवलिक इंसट्रक्शन – सनिटरी कमिशनर के दर्जो की ८०००) । ६०००) । ४०००) ३०००) २५००) २०००) इत्यादि मासिक तलब ऐसे अभागे देश मे हो जहां नोन सी आवश्यक बस्तु पर भी टिकस लगाया जाता है और जहां आधी से अधिक प्रजा पाव भर सत्तू और सेर भर जल पीकर पेट पालती हैं। धिक्!!! क्रूरता और अत्याचार की परा काष्ठा है और फिर उन ओहदों मे भी बहुत से ऐसे ओहदे हैं जिन से प्रजा का कुछ भी उपकार नहीं होता जैसा कमिश्नरी का ओहदा है – यदि रेल न जारी हुई होती तार न लगाया गया होता और लफटिनेंट गवर्नर के पास लिखा पढ़ी करने मे बिलंब लगता होता तो पांच वा छ कलक्टरों के ऊपर एक कमिश्नर नियत कर देना नितान्त अनावश्यक न होता पर अब तो रेल और तार के लग जाने से वह कठिनाई दूर होगई तब कमिश्नरों को रख क्यों व्यर्थ लाखों रुपये सालमे फेंके जाते हैं इसी प्रकार और भी बहुत से छोटे बड़े ओहदे निकलेंगे जिन से प्रजा का अणुमात्र उपकार नहींहै औरकरोड़ों रुपये साल का खर्च कम हो सक्ताहै ।

नेक और दृष्टि फैलाइये तो गवर्नमेंट की प्रजा बतसलता की परम सीमा का आप को दर्शन करावें इतिहासों मे हम लोग उन दानवक्रूर राजाओं का हाल पढ़ते हैं जो अपनी प्रजा का अन्न बस्त्र छीन आप बेश्या और मद्य के आमोद मे मग्न रहा करते थे और

उनकी प्रजा चाहि२ चिल्लाया करती थी उन राजाओं को हम लोग असभ्य अत्याचारी और राक्षस कहते थे पर यहां हमारी सभ्य ग- वर्नमेंट है — जो न्याय की कलंगी खोंसे है दुखियों पर दया करने वाले ईसा मसीह की अपने को अनुयायी पुकारती है और अपने कलुषित चरित्र से ईसा सरीखे शान्तशील दयालु पुरुष के नाम मे कलङ्क लगाती है प्रजा तो दुर्भिक्ष कर पीड़ित हो चाहि२ पुकार र ही है छोटे और बड़े लाट साहब और अनेक दूसरे२ कर्मचारी जन गरमी आतेही शिमला सपाटू और नैनीतालकी तरावटमे जाकर करवट लेते हैं—बिकराल ग्रीष्म की खरतर घाम मे तपकर जो धन प्रजा उपार्जन करतीहै वह उनसे भान्तरके करके रूप मे छीन लिया जाता है और सिबिलियन महाशयो के सुख साजन मेंलगाया जाता है—हमारे सिबिलियन महाशयों की अर्द्धांगिनी जिन के कोमल कमल दल समान कमनीय सुकुमार गात्र पर हेमन्त के सूर्य की भी किरने अति असह मालूम होती हैं बसन्त के प्रारंभही से अपने २ प्रियतमों से शिमला नैनी ताल चलने की धुनबांध देती हैं और उनके मुख से "ग्रीषमे प्यारे हिमन्त बनाइये,, सुनकर किसकी सामर्थि है कि प्रयाग वा लखनऊ की आतपसन्तप्त भूमि मे एक छिन भी ठहर सके। यदि येलोग पहाड़ पर जाने का खर्च अपनी अपनी तलबों से देते होते तो हम कभी न कहते कि न जांय पर दुःख तो यही है कि इनके आने जाने मे लाखों रुपये साल का डण्डा भी दुखिया प्रजाओंही के सिर पर बजाया जाता है और नित२ नये टिकस जारी होते जाते हैं

यदि कहा जाय कि यहां की बिकराल गरमी मे सुकुमार साहब लोग काम नहीं कर सकते तो हम पूछते है हाई

कोर्ट के जज ज़िले के हाकिम लोग किस तरह से यहां जेठ बैशाखमें कामकरतेहैं जो लफटिनेंट गवर्नर – अकौंटेंट जेनरल – बोर्ड के मेंबर – डाइरेक्टर आफ पबलिक इंसट्रकशन आदि महाशय यहां काम नहीं कर सक्ते – हिन्दुस्तान मात्रके सरकारी अफसरों का पहाड़ों पर जाना बन्द कर दिया जाय तो न जाने के लाख रुपये की बचत साल में सरकार को हो और लाइसेंस टैक्स इनकम्टैक्स की प्रबलवेदना से प्रजा आकुलित न हो ।

पाठक जन पिष्ट पेषण के समान हम यह सब लिखतेर उबगये औरहमे सन्देहहै आप पढतेरभी उबगयेहोंगे इस्से इस रावण रसरा को अब यहां ही समाप्त करते हैं—अभी एक बड़ाभारी मद्द पबलिक वर्क्स डिपार्टमेंट जिससे कोठियों रुपयोंकी प्रति वर्ष आहुति होती है बाकी ही है – यदि उसका विस्तृत बर्णन करना चाहेंगे तो दस बीस पन्ने योंही रङ्गजांयगें इस्से संक्षेप मे तुम्हे समझातेहैं—हमारे तुम्हारे बीचभी कुछ ऐसे मनुष्यहैं जो रुपया उधार काढ़ इमारत उठवाते हैं वैसही हमारी परम नीति निपुण सर्कार कोठियों रुपये उधार ले कर अनेक तरह के "पबलिक वर्क्स" जिन से लाख रुपये मे हज़ार भी वसूल नहो बनवाया करती है और इस महकमे की अधा धुन्ध लूट आप को बिदित ही है जो सड़ी दीवार हम आप दस रुपये मे उठवा लेते हैं उसी में इंजीनियर साहब की कृपा से १००) सोख जाता है—जो बारिक आप १००) मे बनवा सकें गे उस्मे १०००) अथवा २०००) लग जाता है—और इस्मे आश्चर्य क्या रुपया न इंजीनियर साहब को देना पड़ताहै न उनके मौसिया भाई कलट्टर कमिशनर आदि महाशयों के गांठका कुछ जाता है तो फिर

एक की जगह दस और दस की जगह सोलगाते उनका क्या बिगड़ताहै—"यह सिर किस्का? पञ्चका — लगे घड़ी घड़, देखें किस दिन ईश्वर इस बिकराल अधर्म जाल से हमारा प्राण छुटाता है—जितना द्रव्य इस महकमे के द्वारा प्रजा का सत्यानाश मे मिलता है जो करोड़ों रुपये इस्के द्वारा बिलायत बालों के सन्दूक मे जाते हैं उस सब के लिखने का इस समय मुझे अवकाश नहींहै इस लिये जो कुछ थोड़ासा हाल इस्का हमने ऊपर लिखाहै हमारे पढ़नेवाले उसी से इस महकमे का अपव्यय टटोल सक्ते हैं और इस सब महीनों को गाई गीत का सारांश यही समझ लीलिये कि यदि सर्कार खर्च कम किया चाहे तो राज्य प्रबन्ध मे कुछ भी दोष पहुंचाये बिना सुख से कर सक्ते हैं न करैंगे तो क्या अनर्थ होगा उसे इस समय हम कहना या बिचारमे भी लाना आवश्यक नहीं समझते। इति

—:0:—

## तीन

तीन वस्तु को सदा अपने पास रखना—धैर्य— नम्रता—और प्रेम॥

तीन वस्तु की प्रशंसा करनी—बुद्धि—पदवी और गुण॥

तीन वस्तु का तिरस्कार करना—क्रोध—अहङ्कार और कृतघ्नता॥

तीन वस्तु से अपने को बचाना—नीच पन—ढोंग और डाह॥

तीन वस्तु का सत्कार करना — धर्म — न्याय और आत्म संयम॥

तीन वस्तु से आनन्दित होना — सौन्दर्य — भोलापन और

स्वतंत्रता ॥

तीन वस्तु की इच्छा रखना – तन दुरुस्ती मित्र और खुश मिज़ाजी ॥

तीन वस्तु के लिये प्रार्थना करना – आस्था शान्ति और सन्तोष ॥

तीन वस्तु की स्तुति करना – चातुरी – विवेकबुद्धि और दृढ़ता ॥

तीन वस्तु की चाहना रखनी – हास्य विनोद – अकृत्रिम भाव – पौरुष ॥

तीन वस्तु का भय रखना – खुशामद – दंभ – और तात्कालिक प्रीति ॥

तीन वस्तु को छोड़ना—आलस्य—बहुत बोलना और पराई निन्दा ॥

—:0:—

तीन वस्तु की वृद्धि करना—उत्तम ग्रन्थ – सुमित्र और हेल मेल ॥

तीन वस्तु का बचाना—आबरू—पर स्त्रीसंसर्ग—और वाग्वाद ॥

तीन वस्तु को स्वाधीन रखना – स्वभाव – वृत्ति और जिहवा ॥

तीन वस्तु के लिये अपने को तैयार रखना – ज़माने का फेर फार-गिरती दशा – और मरण ॥

—:0:—

## एक

एक घंटा सुबह देर को उठने से दिन भर के सब काम अस्त व्यस्त होते हैं ॥

एक कुचाल कुनबे भर को बदनाम करता है ॥

एक सुपूत कुल का दीपक होता है "एको गोत्रे सम्भवति पुमान् यः कुटुम्बं बिभर्ति" ॥

एक मीठी बोल हज़ार तरह की ख़फ़गी दूर करती है ॥

एक चुप हज़ार बलाय को टालती है ॥

एक बहम हज़ारों सुबहे पैदा करता है ॥

एक मछली सारा जल गंदला करती है ॥

एक और एक ग्यारह होते हैं ॥

एक मेवा द्वितीयम् "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" ॥ (U.R.P.)

—:०:—

## । सम्पादक सा—सु—नि—का ।
## भ्रम निवारण ।

श्लाघनीय प्रेमास्पद सम्पादक महाशय सङ्कीर्णता कैसी बरन यह तो अनुपम उदार भाव का प्रकाश करना है कि लाला श्रीनिवासदासजी सरीखे प्रशस्त धनी का तनिक भी संकोच न कर जो कुछ सच्च २ मन से आया कह सुनाया—ग्रन्थकर्ता के पाण्डित्य का सर्वस्व उस्मे भरा हुआ है इसे तो हम भी स्वीकार करते हैं परन्तु नाटक के लेख कैसे होने चाहिये और नाटक से क्या भाव दरसाना उचित है सो उस्मे कहीं पर नहीं है—जो कहिये केवल दोष बिबेचन के अतिरिक्त गुण भी उस्मे कुछ हैं यह नहीं प्रगट किया गया तो गुण गान कर हां मे हां मिलाने वाले बहुत से लोग पड़े हैं यह क्या आवश्यकता है कि हम भी उन्हीं के समान हां मे हां मिलाने वाले हों—मत हमारे पास कोई पुस्तक भेजा करे समालोचना तो उसी का नाम है कि उत्तम से उत्तम लेख का भी दोष निरूपण कर

आईना करदे—मंमट भट्ट के काव्य प्रकाश को देखिये अष्टम उल्लास मे बेणी संहार आदि परमोत्तम रचना के दोष निरूपण कर कितनी चित्थार की गई है—तो क्या मंमट भट्ट से उन ग्रन्थ कर्ताओं केसाथ कुछ ईर्षा रही है कभी नहीं किन्तु जब समालोचना करने बैठे तब भर पूर अपनी अनुमति न प्रकाश करना ही लज्जा और आक्षेपका बिषय है ॥

हम लोग ग्रन्थों की समालोचना करने मे केवल उपस्थित ग्रन्थही पर ध्यान नहीं देते किन्तु उस प्रणाली के परम उत्कृष्ट ग्रन्थ पर दृष्टि रखते हैं और जो (Standard of excellence) उत्कृष्टता की माप प्राचीन और नबीन बुद्धिमानो के बिचार के अनुसार अपनी बुद्धि मे उत्तम जंचते हैं उन को बुद्धि के चित्र पट मे रख कर उससे उपस्थित ग्रन्थ को तुलते हैं और उस तुलने मे जो कुछ गुण दोष समझमे आताहै उस्को ग्रन्थकर्ता ग्रन्थ कर्ता के मित्र जन अपने मित्र तथा और इतर लोगों की प्रसन्नता वा रुष्टता पर नेकभी ध्यान नदे प्रकाशित करते हैं इससे ग्रन्थ कर्ता की ओर से ईर्षाद्वेष वा अप्रसन्नता का भार हम पर आरोपण करना सुजन मण्डली मे किसी तरह पर सराहना के योग्य नहीं है—आशा है अब हमारे प्रेमास्पद मित्र हमारे भावार्थ को समझ गये होंगे और जो कुछ इस लेख मे हम से धृष्टता बन पड़ी हो उसे क्षमा करेंगे ॥

—:०:—

## । इलाहाबाद मे युनिवर्सिटी ।

गये महीने की ८ तारीख को सायंकाल के समय महामान्य लार्ड

डफरिन महाशय ने म्योर कालेज के नये भवन खोलने की प्रतिष्ठार्थ को बड़ा दरबार किया था उस्मे श्री मान् आलफ्रेडलायलसाहब ने यहां युनिवर्सिटी होने की अभिलाषा प्रगट किया और कहा कि हम आशा करते हैं भारतीय गवर्नमेंट हमारी इस अभिलाषा को पूर्ण करेगी — डफरिन साहब ने अपनी वक्तृता मे इस भाव का अनुमोदन किया और कहा कि जो विचार सर आलफ्रेडलायल ने प्रगट किया है उस्को वे अति संमान पूर्वक पूरा करने का यथोचित प्रयत्न करेंगे इत्यादि—इस्से आशा होती है कि लायल साहब चलते २ हम को अपना स्मारक चिन्ह प्रयाग मे विश्व विद्यालय छोड़ जांयगे — अब हमारी प्रार्थना लायल साहब से यहहै कि यहां युनिवरसिटी हो तो उस ढंग की न हो जैसी पंजाब मे हुई है और अंगरेज़ी तथा ( Western culture ) पश्चिम के विद्वानो की बुद्धि का सर्बस्व जो standard उन्मापक शिक्षा प्रणाली है वह किसी तरह पर घटाई न जाय — निस्सन्देह संस्कृत फारसी आरवी को समुचित उत्साह देना किसी को अप्रिय न होगा किन्तु वह उत्साह यदि अंगरेजी शिक्षा को घटा कर देना मंजूर हो तो ऐसा उत्साह प्रदान गवर्नमेंट सिकोरे बैठी रहे हमे युनिवरसिटी न चाहिये हमारा जो कुछ स्टेंडर्ड है वही बना रहे। बकस बिलाई मे लुंडीही हो कर जिओगी। इस लिये यह युनिवरसिटी पंजाब के ढङ्ग की कदापि न होनी चाहिये किन्तु कलकत्ता बंबै और मन्दराज के ढङ्ग पर हो नहीं तो इस्मे देश की बड़ी हानि होगी और सब दूरदर्शी जन ऐसा होने मे महा खिन्न होंगे।

——:०:——

—:०:—

# । कश्मीर पर सरकार की कुदृष्टि ।

हमारे विदेशीय प्रभुत्रों का ब्रह्मादेश को एकही कौर मे हप्प कर जाने से सन्तोष नही हुआ अब स्वर्गादपि गरीयसी काश्मीर देश की हवा ने इनका जी लुभाया है – पयोनियर की बुरी नज़र तो बहुत दिनों से इस देश पर थी पर उस्का प्रतिफल अब हुआ चाहता है महाराज काश्मीराधिपति के साथ जो सन्धिपत्र था उस्मे अब कुछ परिवर्तन होने वाला है जिस्का तात्पर्य केवल यही है कि तुम जो स्वतंत्र राजा वने हुये हो सो क्यों? जैसा और २ रजवाड़े हमारे सेवक हैं वैसाही तुम भी हो कर रहो – यह तो हम भी जानते है और सरकार भी जानती हैं कि महाराज काश्मीराधिपति इस बात को सीधे से स्वीकार न कर लेंगे तो कर क्या सक्ते हैं सरकार बहुत बलवान् है तीन पांच करेंगे तो कान पकड़वाहर कर दिये जांयगे- यह सब कुछ ठीक है पर हमारी समझ मे बल की शोभा न्यायहै" रहिमन राज सराहिये जो बिधु को बिधि होय। रबि को कहा सराहिये जो उगे तरैयां खोय ॥

बलवान को निर्बल की बस्तु ले लेना और बुद्धिमान् पुरुषको निर्बुद्धी को धोखा देना कोई बड़ी बात नहीं हैकिन्तु बड़ाई इस्मे हैकि जब ईश्वर बल दे तो दूसरों को अभय दान देना और बुद्धि से दूसरों को अच्छी राह सुझाना-पर यह हम क्या कहते हैं और किस्सेकहते हैं लोभ बश हो आदमी कब किसी की सुनता है-उपदेश उसको लगता है जो बिचार शील हो जिसके ऊपर अपना कुछ ज़ोर हो सो बिचार को तो लोभ

ने ढांप लिया रहा ज़ोर उसकी यह दशा है—

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई।
भावे तुमहिं करो सोइ सोई॥

तब हमारी कौन सुने और कैसे सुने — किन्तु हम अपने कर्त्तव्य पर दृष्टि दे सरकार के कान मे यह बात अवश्य डालना चाहते हैं।

"छोटे नर से रहत है शोभायुत सिर ताज।
जैसे राखत चांदनी निर्मल पायंदाज।,

माना हमने कि ये छोटे२ राजे महाराजे सरकार का कुछ बिगाड़ नहीं कर सक्ते उन वेचारों का जो चाहो सो करलो पर इतनी बात अवश्य ध्यान मे रखना चाहिये कि सरहद्द के छोटे२ राजे दूसरे बड़े राज्य के विद्रोह से बचाये रहते हैं जो छोटे२ राजे बीच में नहीं और दो बड़े राज्यों की सीमा आपस मे मिल जायगी तो नित्य प्रति दोनो बड़े राज्य झगड़ते रहेंगे और किसी समय उन दो बड़े राजाओं में ऐसा घोर युद्ध उपस्थित हो जाता है जिसमे दोनो ओर की महा हानि के अतिरिक्त लाभ किसी को कुछ नही है — यदि यह कहो कि सरकार काश्मीर का राज्य छीनती तो नही केवल अपना अधिक प्रवेश उसमे चाहती है तो इसके उत्तर मे हम यही कहेंगे कि मनुष्य में स्वतन्त्राही बड़ी वस्तु है जब तक यह पुरुष में रहती है तब तक सूरमा पन मित्रता बिचारशीलता आदि सब शुभ गुण वास करते हैं और समय पड़ने पर वह यथा शक्ति आपकी सहायता कर सक्ता है परन्तु जब आप उसके ज़ोर को घटा देंगे और ऐसी बात करेंगे जिस्से उसको यह जान पड़े कि वह स्वतन्त्र नही हैं केवल आपका आधीन दास बन आपका एक सेवक

माच है सिवाय आपकी इच्छा के उसके बचाव के लिये न कोई का नून है न कोई कायदा है तब उस्का सब बल टूट जायगा जितने स्वतंत्रता के शुभ गुण हैं सब उससे जाते रहेंगे और कपट मे सनी ठकुर सोहती बोलने वाले खुशामदी बन केवल अवसर की प्रतीक्षा करते समय बिताते रहेंगे।

अजी साहब हम सब समझते हैं पर हम तो नये सिरेसे फिर के डालहौसी की पालिसी इजरा करना चाहते हैं इस लिये आपकी चिकनी चुपड़ी बातों पर हमारा मन नहीं जमता हम अवश्य वही करेंगे जो हम ने ठान रक्खा है आपका सिर दुखाना व्यर्थ की मूर्खता है

—:o:—

श्री मान् हिन्दीप्रदीप सम्पादक महाशय समीपेषु।

महाशय,,

प्रयाग समाचार नम्बर १० मे सारसुधानिधि और हिन्दीप्रदीप की आलोचना पर आक्षेप देखकर बड़ा शोक होता है कि जब ऐसे२ गुणी लोग भी जो पत्रों के सम्पादक बनते हैं लेख के मर्म को न पहचान कर ऐसी बात कहै तो मूर्ख लोग क्या कहेंगे क्योंकि कहा है॥

"मूरख को पोथी दई बाचन को गुन गाथ
जैसे निर्मल आरसी दई अन्ध के हाथ"

तथा

"पण्डित जन को श्रम मरम मूरख नाहि लखाय,,

आप यह न समझिये कि मैं आपकी चापलूसी करता हूं न दूसरे महात्मा यह समझें कि मैं भट्ट जी की हां में हां मिलाता हूं — मेरा उन महाशयों से जिनको इस समालोचना से खेद हु

आ है एक यह प्रश्न है कि जब कोई सज्जन अपना बनाया हुआ ग्रंथ आप के पास भेजता है तो उसका अभिप्राय क्या होता है — क्या वह इस निमित्त भेजता है कि आप थोड़ा सा नोन मिर्च मिला कर उसकी वाह वाह लिख दें या इस लिये कि आप पण्डित हैं बिद्वान् हैं आप इसको देखें और जो कुछ इसमें बुराई भलाई हो उसे बता दें जिसमें आगे को उनकी ओर ध्यान दियाजाय — जो इस पिछलेही तात्पर्य से लेख विद्वानों के पास भेजे जाते हैं तो फिर भट्ट जी ने क्या बुराई की जो सच्चा सच्चा हाल उसका लिखा — क्या तुक मेंतुकमिला देनेही का नाम काव्य है — आप ने क्या बुरा किया जो लिख दिया कि भाव और रस आदि के बिना काव्य फीका लगता है जो केवल गप्पकाही नाम काव्य है तो ऐसे काव्यों को पण्डितों के पास समालोचना के हेतु भेजना व्यर्थ है क्योंकि वे बिचारे किस्सा कहानी की समालोचना को क्या जाने मैंने इस पुस्तक को नहीं देखा है इस कारण मैं नहीं कह सकता कि समालोचना में जो दोष दिखाये गये हैं वह बास्तव में इस नाटक में हैं या नहीं परन्तु इतना कहना अवश्य है कि जो आक्षेपक महाशय यह समझते हैं कि मिथ्या दोष आरोप किया गया है तो उनको उचित था कि जिन गुणों से रहित आप ने इस ग्रंथ को बताया है उनको दिखाते कि यह सब गुण उसमे हैं तब आक्षेप ठीक होता और जो यह सत्य है कि वह नाटक के गुणों से शून्य है तो उसको नाटक कहना ठीक नही है हां जो अच्छे२ उपदेश हैं तो उसको वैसेही नाम से प्रसिद्ध करना चाहिये था — आपकी समालोचना से केवल यही जाना जाता है कि ऐतिहासिक नाटक के गुण उसमे नहीं पाये जाते — अन्त मे हम आशा करते हैं कि ग्रंथकार महा

ग्रंथ भी आप की समालोचना को इसी अभिप्राय से समझ कर आपकी समालोचना को केवल मित्रभाव से समझ आगे को अपने कार्य से हताश न हो कर ऐसा यत्न करेंगे जिस्से जो ग्रंथ लिखें उस मे उस के सब अंगों का ध्यान पूर्ण रीति से रहे क्योंकि जैसा प्रसंग हो वैसीही रचना चाहिये—और कहा भी है ॥

नीकी पै फीकी लगे बिन औसर की बात ।
जैसे बरणन युद्ध मे रस सिंगार न सुहात ॥

और रहा यह कि हिन्दी प्रदीप हिन्दी भाषा का एक उच्च श्रेणी का पत्र है इस मे तो मैं समझता हूं कि किसी हिन्दी भाषा जानने वाले को सन्देह न होगा—मेरी समझ मे तो कदाचित दो चारही पत्र और हिन्दी भाषा मे ऐसे होंगे जो इस पत्र की सरबरी कर सकें आगे जो कुछ समझ और लोगों की हो ॥

आप का कृपा कांक्षी
हरदेव प्रसाद

# प्राप्त
# एकान्तवासी योगी

पं—श्रीधर पाठक रचित गोल्डस्मिथ हरमिट का अनुवाद खड़ी बोली में—विशेष प्रशंसा के योग्य यह नवीन रचना इसलिये है कि अंगरेज़ी में जो पद्य था उस्का अनुवाद भाषा के पद्यों ही में किया गया है—जहां २ जितना ग्रन्थ कारने अपनी ओर से मिलाया है वह भाग अधिक रसीला और माधुर्य पूर्ण है—हमारे मित्र पाठक महाशय ने अपने इस परिश्रम से हमे यह अच्छी तरह जता दिया कि कविता

के पश्चिमी संस्कार ( Western idea ) कभी हमारे लिये मनोरंजक और दिलचस्प नहीं हो सक्ते—इस्मे सन्देह नहीं अंगरेज़ी अत्यन्त बिस्टटत भाषा और उन्नति के शिखर पर चढ़ीहुई है परंतु कबिता के अंश में हमारी देशी भाषाओं से कभी होड़ नहीं कर सक्ती—ग्रिफिथ साहब का रामायण शकुन्तला प्रभृति नाटकों का अनुबाद आदि इस बात का बड़ा पक्का सुबूत है कि हमारी भाषाओं के काव्यों का अनुबाद जो और २ भाषाओं में किया गया है वह कितना सर्ब संमत और बिद्वज्जना दरणीय हुआ वही अंगरेज़ी मे पहले तो इतने अनूठे कोई काव्य हैं नहीं जो अनुबाद के योग्य हों हैं भी तो हमारी भाषा में उनका सब्दार्थ अनुबाद कदापि चोखा रसीला सर्ब सम्मत और सर्ब ग्राह्य न होगा ।

—:०:—

## सुतप्रबोधनी

दो खण्ड में मुन्शी उलफतराय तहसीली मुदर्रिस राठ ज़िलह मैनपुरी कृत—सुकुमार मति बालकों को जिन्हे संसार के सबी बिषय ज्ञातव्य रहते हैं उनके लिये यह पुस्तक बहुत उपकारी है इस्मे बिद्या सम्बन्धी विविध बिषयों पर छोटे २ ( Essay ) व्याख्यान और उपदेश लिखे गये हैं—सर्कारी मदरसों मे ऐसी २ पुस्तकें जारी होनी चाहिये जिसके द्वारा बालकों को बहुज्ञाता शीघ्र सम्पादित हो सक्ती है यह पुस्तक छपी बड़ी खराब है टाइप मे छपना उचित था दाम दोनों खण्डों का ॥) है ॥

—:०:—

# रूसकी तैयारी।

—:o:—

आज हो या दस बर्ष में हो हमारे देश बान्धव तथा गवर्नमेंट इस बात को अपने चित्त के चित्रपट में लिख रक्खें कि एक दिन अवश्य ऐसा होगा कि अंगरेज़ और रूस में लड़ाई होगी पर होगी—"राम भजन से चौकस रहना, एक दिन चोर आवेगा"—निपट मूर्ख जो रूसको अफगानिस्तान की तरफ बढ़े आनेका प्रयत्न समझ सकेगा वह भी चट्ट मालूम कर लेगा कि इस बढ़ने मे सिवाय हिन्दुस्तान पर छापा पड़ने के रूस का कोई और अभिप्राय नहीं है—सब लोग जानते हैं कि मध्यएशिया को अधिकतम भाग नितान्त निर्जन और ऊसर है जिस जाति के लोग वहां बसते हैं वे भी महा असभ्य और निष्किञ्चन हैं तब हम पुछते हैं रूस से अफगानिस्तान तक रेल बनाने मे रूस वालों का क्या मतलब हो सक्ता है—कौनसी सभ्यता कौनसी संपति कौनसा लाभ दायक ब्यौपार उनके साथ होना संभव है जिस्के लोभ से रूसी लोग मध्य एशिया को रूस से रेल और तार के द्वारा मिलाने को प्राण दे रहेहैं—कोई कुछ बका करो हमको निश्चय है कि जिस दिन यह रेल तैयार हो जायगी और रूस से अफगानिस्तान— क्यो हिन्दुस्तान मे— टीड़ी दल के समान रूसवालों को सेना और रसद पहुंचाना केवल खेल कूद के समान हो जायगा उसी दिन रूस की सेना मे ढोलों पर संग्राम का धौंसा धमकैगा और रूसियों के मारू बाजन की प्रचण्ड ध्वनि हमारे कान की चैलियों को फोरने लगेगी—और हमारे भूखे पेट की बिरल निद्रा को अनेक प्रकार की शंका और चिन्ता से अधिक

तर बिरल और बिच्छिन्न करैगी—अबकि बार बिकराल रूस केवल एक पंजदेह गटकनेसे ही शान्तान होगा किन्तु एक संग अफगानिस्तान पर टूटता हुआ हमारे द्वार पर अपना प्रचण्ड डंका बजावेगा-ईश्वर इस आगामी बिपति से हमे बचाये रहे—जो दशा उस समय हम दीन दुखिया प्रजाओं की होगी उस्का स्मरण भी हमे व्याकुल करता है और ईश्वर से बराबर यही प्रार्थना है कि वह उस भयानक बिपति से हमे बचावे पर फिर भी हमे यही देख पड़ता कि वह बिपत्ति किसी प्रकार अमिट नहीं है-रूसकी पापी दृष्टि इस अभागे देश पर चिरकाल से गड़ी है और जब तक वह एक बार इस पर आक्रमण न करलेगा तब तक किसी प्रकार शान्त न होगा-अंगरेज़ी राज्य में हमे अनेक अकथ दुःख हैं सही पर हमे आशा है कि लगातार नीति पूर्वक आन्दोलन करने से एक दिन हम उन दुःखों से मुक्त होजांयगे रूस के भयानक नीराजक राज्य में हमे कौनसी सुख की आशा है जिस्से हम रूस के आने के बिचार से प्रफुल्लित हों—पर हमारे प्रफुल्लित और दुखी होने मे अन्तरही क्या ? मान लिया कि हम रूस के आने मे प्रफुल्लित होंगे तो हम क्या उनको सहायता देसक्ते हैं ? वह बाहु बल और बीरता जिस्के बल से हम अथवा हमारे पूर्व पुरुष समस्त भूमण्डल को दलन कर मुकुट माणिक्य बनने का दावा बान्धतेथे— वह पौरुष और पराक्रम जिस्के कारण हम मिस्र यूनान फारिस अफगानिस्तान आदि को पूजा और भय के स्थान थे चिरकाल से सो पौरुष हम से हज़ारों कोस दूर भागा —अंगरेज़ी राज्य यहां प्रतिष्ठापित होने के कुछ दिन पीछे तक उन पूर्वोक्त गुणों की गन्ध हम मे यत्किंचित मालूम देती थी पर अब तो अंगरेज़ी सर्कार ने अपनी बुद्धिमत्ता के जाल मे छोड़

हमे सर्व तो भावेन निःसत्व और क्लीव कर रक्खा है—अब हम मे कहां वह शक्ति कि सर्कार को अपने प्राणान्तक बैरी के नाश करने मे भी सहायता दें—इस से अधिक हमारे और इंगलैंड दोनो के बैरी लार्ड लिटन—"ईश्वर हम को ऐसों के चंगुल से बचाये रहे,,—हमारे पास ऐसे शस्त्र भी नहीं छोड़ गये कि इस सरीखे विकराल भालू का मारना कहां रहा छोटे २ गीदड़ और भेड़ियाओं से भी अपने २ पुत्रकलत्र हितू और प्रेमियों का प्राण बचा सकें—अनेक प्रकार के अपने कुटिल राजनैतिक प्रबन्ध और उपायों से सर्कार चिरकाल से हमे दीन बलहीन करती आती है जो उत्साह बीरता और पौरुष की कणिका हम मे कभी २ देख पड़ी है उसको बुझाने मे सदा प्रयत्न करती रही और जो बातें हम मे निर्बीरता और अपौरुषत्व की बढ़ाने वाली हैं उन को उतनेही प्रबल प्रयत्न से पोषती और बढ़ाती आई है—तो क्या आश्चर्य है कि आज हम नाम मात्र को भी अपनी रक्षा मे असमर्थ हैं-"शान्ति रपि शान्तिः,, करने वाले प्रबन्ध और प्राणगत रुधिर शोषक टिक्कसों पर टिक्कस की घोंसने कब किसी देश मे वीरता का अंकुर जमने दिया है—बेकन सरीखे महा विद्वान् का यह कथन क्योंकर झूठ हो सक्ता है कि "जो लोग कर भार और टिक्कसों के बोझ से दबरहे हैं उनमे बीरता और उत्साह कभी नही स्थान पाता,,—क्या अचरज कि लार्ड डर्फरिन जो अपने को लार्ड लिटन से भी विशेष करतूतिया देखाया चाहते हैं इसी बिचार से यह नया इनकंटैक्स का वज्र हमारे छाती पर मारा हो कि जो बीरता के अंकुर लार्ड लिटन के शस्त्र निग्रह कारी कानून जारी होने के उपरान्त भी भारतीय प्रजा मे रह गया हो उस्को वह नये टिकस की चक्की से घिस २

नाश कर दें—

अस्तु हम चाहते हैं अंगरेज़ी राज्य यहां तोभी कुछ दिनो तक अभी अचल रहे और इसी मे हमारे देश का कल्याण है—परन्तु जब हम अंगरेज़ कर्मचारियों या सरकार की ऐसी भूल देखते हे कि जिससे प्रजा का मन राजा की ओर से हटना संभव है अथवा अंगरेज़ी राज्य की दृढ़ता और स्थिरता मे बाधा पहुंचना संभव है तभी हम छाती फाड़ रुलाई रोते हैं और चिल्लाते हैं कि जिस्मे अब भी सर्कारी कर्मचारियों की आंख खुले और वर्तमान तथा भावी विपत्ति दूर हों। हम विश्वास पूर्वक कह सक्ते हैं कि प्रजा कितनीही निःसत्व और निर्वीर्य हो बिना इनकी प्रसन्नता और सहायता के सर्कार को रूस के टीड़ी दल का ध्वंस करना यदि असंभव नहीं तो अत्यन्त कठिन और दुष्कर है – इस्से सर्कार को उचित है कि जिन उपायों से हो सके ( और वे उपाय अति सरल और न्याय भी हैं ) प्रजा में प्रीति और भक्ति बढ़ावे और उनको अपनी सहायक होने की योग्यता दे—यदि अब भी सर्कार के हृदय मे हम लोगों की बात नहीं स्थान पाती तो सिवाय ईश्वर से प्रार्थना के कि वह हमे इन पर्विर्त्तियों से बचाये रहे और क्या चारा है॥

—:०:—

# सौन्दर्य का मर्म।

वाह ! आपको भी क्याही बारीक समझ है—अगर सुन्दर होनेही का मर्म आपको मालूम होगया तो हमारे यहां के लोगों के दिल

में धधकती हुई हवस की आगही मानों बुझसी गई—अगर यही लटका हाथ लग गया तो मानो इस ज़िन्दगी का सब हैं।मिला पूरा हुआ इस लिये कि कौन ऐसा होगा जो रूपवान होना नहीं चाहता अथवा अपने शरीर में यदि कुछ कज या दोष है तो उसे दूर करने की चेष्टा नहीं करता? कौन ऐसा है जो घड़ी दो घड़ी न सही तो मिनट दो मिनट निपट फेसन की खाक छानने की खाहिस से चेहरे की सफाई और बालों की दुरुस्ती मे नहीं गंवाता? कौन ऐसा होगा जो अपने को दूसरों से किसी अंश मे कभी कुरूप मानता हो—यहां पर वही मसल ठीक जान पड़ती है कि लोग अपने को उन आंखों से नहीं देखते जिनसे कि और दूसरे उन्हें देखते हैं ॥

अच्छा तो इस सब से क्या सूचित हुआ? यही कि मनुष्य के इस लालची हृदय में जहां नाम की, पदवी की, सन्तान, धनकी लालसा ये हैं वहां रूपवान होने की भी हवस है—यह पिछलीहवस किसी की पूरी हुई है या पूरा होना संभव है? कभी नहीं—कहने का तात्पर्य यह कि रूपवान् होने का अभिमान यद्यपि सैकड़ों को है पर रूप कोई ऐसी वस्तु नही है कि उस्के फिराक में पड़े रहने से हाथ लग जाय—चढ़ती उमर मे तो कोई अपने को बद सूरत समझताही नही पर उमर ढलने के समय आंखों को दांतों को बालों को मज़बूत और खूब सूरत बनाये रखने को लोग क्या २ नहीं करते? क्योंकि जिनको वे चीजें हासिल नहीं हैं यदि वेही इस बात को मान लें कि यत्न किये पर भी कुछ असर नही होता तो मानों उन्होंने अपने जीने का बड़ा भारी सहाराही खो दिया—अस्तु लोग न भी मानें तो क्या हुआ किन्तु इस बात मे कुछ भी सन्देह नहीं है कि रूप केवल ईश्वर का दिया हुआ हो सक्ता है ॥

फिर माना कि आपने बड़े कष्ट कल्पना से सींग कटाय बछेरों में दाखिल होने की भांत तेल पनिया कर कराय रूपवानों में दाखिल भये भी तो लोग यह कभी न कहेंगे कि फलाने के बाल अच्छे हैं जब कि प्राकृतिक सौन्दर्य शाली बालों का मुकाबिला आपड़ेगा अर्थात् हम बहुत कुछ बन ठन अपने कृत्रिम रूप से जो प्राकृतिक सौन्दर्य्य की तुलना किया चाहैं तो इस्से बढ़ कर बेहूदगी और क्या होगी—"इय मधिक मनोज्ञावल्कलेनापितन्वी किमिवहि मधुराणां मंडनं नाकृतीनाम्,, अब इस प्राकृतिक सौन्दर्य्य को भी टुक देखिये—आपके बाल, दांत आंख चेहरा स्वभाव ही से बडे सौन्दर्य्य और रूप की पताका हैं तब भी उन्में नित्य संस्कार की आवश्यकता है—एक दिन भी आप बालों में कंघी न करें दांतों को न मांजें चेहरे को न धोवें देखिये दूसरे ही दिन वह प्राकृतिक सौन्दर्य्य आपका नष्टप्राय और अस्त व्यस्त होजायगा—सारांश यह कि रूप पाने पर भी नित्य संस्कार की आवश्यकता ही रहती है—कुरूप को रूपवान् न होने का यदि खेद है तो रूपवान को अपना रूप संभाले रहने के पीछे पूरी मौत है-जब यह बात है तो इस लेख का नाम जो हमने सौंदर्य का मर्म दिया है उस्का क्या तात्पर्य जब यह सौन्दर्य ऐसी नायाब और नाज़ुक चीज़ है तो इस्का मर्म ही क्या हो सक्ता है – प्रिय पाठक सौन्दर्य से हमारा प्रयोजन बाहरी रूप रंग बनाये रखने से नहीं है जिस्की दुर्दशा हमने भरपूर कह सुनाया – वरन सौन्दर्य से हमारा प्रयोजन आभ्यन्तरिक चरित्र अथवा शील पालन से है और मनोहर का शब्द मनुष्य के चेहरे के वास्ते न कहके शील अथवा स्वभाव के लिये हम प्रयोग करते हैं क्योंकि शारीरिक सौन्दर्य पहले तो सब को प्राप्त नहीं है और न

यत्न किये से मिल सक्ता है तव हम क्यों इस दूसरे प्रकार के सौन्दर्य के लिये यत्न न करें जो थोड़े प्रयत्न में मिल सक्ता है और न इस्के बढ़ने की कुछ अवधि है जहां तक बढ़ाते जाइये कभी आप यह नही कह सक्ते कि हमारे अधिक अच्छे होने की और गुंजइस नहीं है – इस शील पालन के सौन्दर्य के बिषय मे अद्भुत बात देखी जातीहै कि जो शील पालन के सौन्दर्य से पूर्ण हैं वे अपने को कुरूपही मानते हैं अर्थात् जो अच्छे हैं वे सदा यही मानते हैं कि मेरे मे लाखों दोष और ऐब भरे हैं – यहभी हम दिखा चुके कि बाहरी सौन्दर्य बढ़ाने तथा उस्को कायम रखने के कितने खटराग हैं पर यह आभ्यन्तरिक सौन्दर्य जिसे हम शील पालन कहते हैं न उस्के बढ़ाने मे किसी तरह का खटराग है न इस्का दृढ़ और यावज्जीव चिरस्थायी रखना बड़ा दुष्कर है बल्कि सच पूछिये तो जितने बड़े २ कष्ट व्रत तपस्या तीर्थ यात्रा संयम नियम हैं वे सब और हैं क्या केवल चित्तवृत्ति को दुरुस्त कर उसे स्वच्छ और विमल रखने के एक २ रास्ते हैं – तब हे प्रिय पाठक निष्फल शारीरिक सौन्दर्य के पीछे यत्न करना छोड़ सुलभ चित्त वृत्ति को सुन्दर करने में तत्पर हो इसीसे आप अपने को और जगत भरको प्रसन्न रखियेगा ॥

——:○:——

# हिन्दीप्रदीप ।

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन ॥
राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में

---

हर महीने की पहिली को छपता है।

---

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वे आनंद भरै ॥
बचिदुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

---

१ जून सन् १८८६ } { जिल्द ६ संख्या १०

---

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की अज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ
मूल्य अग्रिम ३।≈)· पीछे देने से ४।≈)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ६ संख्या १० | १ जून सन १८८६ ई०

—:०:—

# प्रतिनिधिशासन ।

Representative Government

राज्यका प्रबन्ध तीन रीति से होता है राजा की इच्छा के अनुसार राजा और प्रजा दोनो की इच्छा के अनुसार अथवा केवल प्रजा की इच्छा के अनुसार—योरोप में इन तीनो क्रम के राज्य बिद्यमान हैं रूस जर्मनी प्रुशिया प्रभृति मे प्रथम क्रम का अर्थात् राजा की इच्छा के अनुसार है—इंगलेंड में द्वितीय क्रम का अर्थात् राजा और प्रजा दोनो की इच्छा के अनुसार है—फ्रांस स्विटज़र-लेंड इटाली ग्रीस आदि में तृतीय क्रम का अर्थात् केवल प्रजाकी इच्छा के अनुसार होता है—अमेरिका तथा आसट्रेलिया में जहां इंगलेंड के लोग जाजा कर बसे हैं वहां भी राज्यशासन प्रजाही की इच्छा के अनुसार किया जाता है—अफरिका और एशिया के महा द्वीप मे प्रथम ही क्रम का शासन आज तक चला आया है—इन सबों में इंगलेंड के राज्य शासन का क्रम सब देशों से बिल्कुल निराला

है नाम को तो राज्य शासन राजा और प्रजा दोनों की इच्छा के अनुसार होता है परंतु वास्तव मे वहां राजा वा रानी को कुछ विशेष अधिकार नहीं है और जो अधिकार हैं भी वे प्राय: थोड़े अधिकारों को छोड़ प्रजा की इच्छा से बद्धं और नियमित हैं—आज दिन इंगलेंड से हमारा ऐसा घना संबन्ध हो रहा है वहां के शासन के क्रम के ऊपर हमारा सुख दुख इतना निर्भर है कि वहां की शासन प्रणाली का जानना हम लोगों को इस समय अत्यन्त हितकर और आवश्यक है—किंतु उस्का पुरा वर्णन हम किसी दुसरे समय के लिये रख आज केवल प्रतिनिधिशासन के क्रम का जो इंगलेंड फ्रांस अमरिका आदि देशों मे समान है बिचार करते हैं ॥

प्रतिनिधि शब्द का अर्थ प्राय: हमारे पाठक जानते हैं तथापि जिस्मे निम्न लिखित लेख के समझने मे किसी को कुछ संदेह नहो इसलिये उसको यहां लिखना अनुचित न होगा—प्रतिनिधि जिस्को अंगरेज़ी में रिप्रेज़ेंटेटिव और उर्दू में कायम मुकाम कहते हैं उस मनुष्य बिशेष या वस्तु बिशेष की संज्ञा है जो किसी एक मनुष्य वा बस्तु के अभाव में उस्का काम दे जैसा प्राय: जब कभी हमारे सेठ साहूकार महाजन लोग किसी पंचाय तथा सभा में बुलाये जाते हैं और स्वयं वहां नहीं जा सक्ते वा नहीं जाना चाहते तो अपने पुत्र भाई वा मुनीम को अपने स्थान में भेज देते हैं और जो कुछ वह वहां जाकर कर आता है उस्को बहुधा अपनाही किया मान लेते हैं वास्तव में सेठ जी का जाना और उनके मुनीम का जाना समान नहीं तथापि जब वे नजासकें तो जिस्को वे अपना बिश्वास पात्र जान अपने स्थान में भेज दें वह काम के निबाहने के लिये उन्हीं के तुल्य समझा जाता है—जिन देशों मे राज्य का

प्रबन्ध सर्वथा प्रजाही की इच्छा से वा प्रजाओं की सम्मति लेकर होता है वहीं इस प्रतिनिधियों के क्रम की आवश्यकता उपस्थित होती है—मान लीजिये कि शासन सर्वथा प्रजाओं ही इच्छा से होता है तो यह संभव नहीं कि प्रत्येक राज्य संबन्धी बात के बिचार के लिये राज्य भर के लोग एक स्थान में बार २ वा बर्ष मे दो एक बार भी इकट्ठे होसकें इसलिये भिन्न २ नगर और बस्तियों के लोग सब मिलकर अपनी बस्ती भर की ओर से दो वा चार अथवा एक ही ऐसे पुरुष को चुनते हैं जिसके बुद्धि वा बिचार मे उन सबों को वा उनसे अधिकों को विश्वास हो और उस्को राज सभा में जहां राज्य के प्रबन्ध का बिचार होता है भेजकर यही समझते हैं कि मानो वे लोग स्वयं उस सभा में वर्तमान हैं और जो बातें वहां स्थिर की जाती हैं उनको बहुधा अपनी की हुई स्वीकार करते हैं इसी रीति से जब देश के समस्त नगर वा बस्तियों के लोग अपनी २ बस्ती की ओर से कुछ लोगों को चुनकर भेजते हैं तो सब प्रतिनिधियों की सभा वा मण्डली जो काम करती है वा जो बातें स्थिर करती है वह उस देश मात्र के लोगों का काम वा सिद्धान्त समझा जाता है और फिर उस देश के सब लोग उस महा सभा की स्थिर किई हुई बातों को राजा की आज्ञा के समान मानते हैं और उनका पालन करते हैं—जहां प्रबन्ध सर्वथा राजा ही की इच्छा से नहीं किन्तु जहां राजा प्रजा की संमति ले कर प्रबन्ध करता है वहां भी ऊपर लिखे क्रम के अनुसार प्रजाओं के प्रति नि-धियों को बुला कर उनकी संमति ली जाती है और जिन बातों को प्रतिनिधि जन स्वीकार वा अस्वीकार करते हैं उन्हीं के अनुसार राजा प्रबन्ध करता है—इङ्गलैंड का उदाहरण लीजिये हम

पहले कह चुके हैं वहां की शासन प्रणाली ऐसी है कि वहां राजा और प्रजा दोनो की संमति से राज्य का सब काम होता है—इस लिये राजा के मंत्री लोग कोई नया टिक्कस लगाया चाहते हैं तो इस्से पूर्व कि वे वह टिक्कस लगा सकें उनको प्रजाओं के प्रतिनिधि जनो की महा सभा" हउस आफ कामन्स" की संमति लेना नितान्त आवश्यक है यदि प्रति निधि लोगों ने उस टिक्कस के लगाने मे संमति न दिया हो और राजा लगादें तो इङ्गलेंड के लोग कट जांयगे लड़ जांयगे मारेंगे मर जांयगे पर जो टिक्कस उनके प्रतिनिधियों की संमति के बिना लगाया गया है उसको कदापि न देंगे—इस बात के लिये पहले इङ्गलेंड मे अनेक युद्ध और घोर संग्राम होचुके हैं और इसी नियम की रक्षा मे सहस्रावधि पुरुषों ने अपना प्राण होम दिया है जिसका परिणाम अब यह देखा जाता है कि बिना प्रजा के प्रतिनिधियों की संमति के इङ्गलेंड मे किसी प्रकार के टिक्कस के लगाने वा उसके उगाहे धन को किसी काम मे उठाने का कोई स्वप्न मे भी मन नहीं करता ॥

सामान्य से सामान्य जन भी इसे स्वीकार करेंगे कि यह प्रबन्ध अति उत्तम और न्याय युक्त है कि जब राजा प्रजा के हित और सुख के लिये है, जो कुछ प्रबन्ध राज्य मे किये जाते हैं वे प्रजाही के प्राण और धन की रक्षा तथा सुख के लिये हैं उन्ही प्रबन्धों के लिये उनसे टिक्कस उगाहा जाता है तो उनकी संमति लेकर वे प्रबन्ध किये जांय और वे टिक्कस लगाये जांय —आप हम पर बड़ी कृपा करते हैं आप हमारी रक्षा और सुख के लिये गढ़ी बनवाया चाहते हैं हमारी झोपड़ी को उजाड़ कर हमारे लिये नया राज भवन बनवाया चाहते हैं हमे दाड़िम और दाखरस

पिलाया चाहते हैं हमे फौहारों के बीच फूल की सेज पर सुलाय अमर लोक के सुख का अनुभव कराया चाहते हैं तो यह सब आप का महा अनुग्रह है यदि आप अपने धन से यह सब सुख का सामान हमारे लिये एकत्र करते तो हम आप को रोम २ से असीसते और आप की जै मनाते पर जब आप यह सब हमा राही धन ले कर किया चाहते हैं हमारी बोली मे एक फूहर मसल के अनुसार "मियें की चूंदी मियें का तेल,, किया चाहते हैं तो उचित है कि हमसे पहले इस्की चर्चा तो करलें-यदि हम उस गढ़ो और राज भवन दाड़िम और दाखरस फौहारे और फूल की सेज का सुख उठाया चाहते हैं तो हम आप को उस्के बन वाने लायक धन दें गे नहीं चाहते तो आप को इस हित चिन्तन का सूखा धन्यबाद दें गे—पर जो धन प्रजाओं ने धरती को जोत बोय आषाढ़ की अखण्ड जल धार और सावन भादों की भयानक अंधियारी मे खेतों मे हिल कर और मचानो पर जग कर अनेक व्यापार अनेक व्यव-साय अनेक कठिन उपायों से दूरदेशों मे प्रवास का दुःसह दुख उठाय बन और पहाड़ो पर घूम दुख को दुख और सुख को सुख न मान प्राण को होम उपराजा है और जिससे वे अपने प्रिय पुत्र कलत्रों को अन्न वस्त्र पहुंचाते हैं वह धन उन से ले लेना और अपनी इच्छा अनुसार हित के नाम से मन मानी वैभवोन्माद मे लगाना कौन सा न्याय है ? इस अन्याय की चक्की मे हिन्दुस्तान ही पिस रहा है इंगलैंड के लोग इससे सब तरह पर मुक्त हैं और उन्मे बिना उनके भेजे प्रतिनिधियों की संमति के उन पर कर लगाना वा उस कर से उगाहे धन को किसी काम मे उठाना दोनो असंभव है—

अबजब हम अपनी आंख इस अपने दीन देश पर फेरते हैं तो यक संग परदा उलट जाता है चित्त ग्लानि और ग्लानि की मलिनता मे सोंद जाता है बुद्धि की गति दुःख के कारण मन्द पड़ जाती है जिस इङ्गलेंड की प्रजाओं का सुख और स्वातंत्र्य हम ऊपर लिख आये हैं वहीं से हमारे देश के शासन की भी प्रणाली निश्चित की जाती है और इससे यह आशा करना कुछ अयुक्तिक न था कि हम अभागों के शासन मे भी वैसीही शुद्ध न्याय पूरित प्रबन्ध की छाया देख पड़ेगी कि जो लोगअपने स्वत्व "हक" की रक्षा के लिये प्राण देने को सन्नद्ध रहते हैं जो लोग राजा और प्रजा मे शुद्ध न्याय युक्त सम्बन्ध स्थापित करने को शताब्दियों तक अविच्छिन्न संग्राम और अन्दोलन मे मग्न रहे हैं वे इस भूभाग की अपनी आश्रित प्रजाओं के लिये भी निर्मल प्रबन्ध करावें गे—पर जब हम देश की बास्तविक दशा पर दृष्टि फेरते हैं तो हृदय क्रोध और करुणा की मिश्रित ज्वाला से कुछ अकथनीय दुःख अनुभव करता है—यहां हम लोगों पर कर लगाना और उस धन को मन माना ब्यय करना वास्तव मे एक गवर्नर जेनरल और एक सेक्रेटरी आफस्टेट फार इंडिया के ऊपर निर्भर है—

नोन पर कर लगे—दाल पर कर लगे – चावल पर कर लगे, गेहूं पर कर लगे—पहनने के कपड़े पर कर लगे—खाने के अन्न पर कर लगे—सवारी पर कर लगे—खेत पर करलगे—खलिहान पर करलगे—आमदनी पर कर लगे – जहां तक चाहें कर बढ़ाते जांय कोई उनका हाथ पकड़ने वाला नही है—देश का देश रो २ कर प्राण दे डालें तोभी उनका कर लगाना वा निष्फल कौतुक और तमाशों की बातों में प्रजा का धन फूकना कभी कम न होगा—अब

की बार इनकंटैक्स में हमारे निज के रहने के घरों के अन्दाज़ी किराये पर कर लगा है कल को कदाचित् हमारी स्त्रियों पर भी कर लगे क्योंकि मध्यम श्रेणी वाले गृहस्थों में पाक आदि कर्म स्त्रियां ही कर लेती हैं तब जो खर्च रसोई दार इत्यादि के रखने में होता उस्की बचत अवश्य हुई जैसा रहने के मकान के किराये की बचत एक प्रकार की आमदनी समझी गई है ठीक २ इसी तरह पर यह भी है— हम सर्कार को राय देते हैं दूसरे साल से इस प्रकार का भी कर अवश्य लगावे—अब हम इस विषय को अधिक पल्लवित न कर इस बात की प्रार्थना करते हैं कि गवर्नर जेनरल तथा लफटिनैट गवर्नर की कौंसिल मे कुछ जन देशी कम से कम आधे प्रजाओं की ओर से चुने हुए रहा करें और टिक्स के लगाने मे तथा खर्च मे या और अनेक प्रजा संबन्धी वातों में उनको संमति ली जाया करे तो हमको दृढ़ बिश्वास है कि इंगलैंड के लोग भी हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करेंगे—पर इस्के लिये निर्भय नीति पूर्वक आन्दोलन आवश्यक है बिना इस्के यह कदापि सिद्ध न होगा—यह भी सदा ध्यान में रखना चाहिये कि यदि हमारे देश वान्धव चाहते हैं कि इस अन्याय पृथा से अपना प्राण छुटावें तो अब उनको अपने बहुत्त दिनों के पाले पोखे वैरी फूट आलस्य और बेपरवाही को छोड़ एक मत हो लगा तार इस्का आन्दोलन करना चाहिये—और यह आन्दोलन तथा दुःख निवारण के लिये प्रयत्न केवल इसी राज्य मे संभव है—रूस सरीखे अत्याचारी निरंकुश राज्यों मे जहां स्वयं रूसवालों को इस बात की चर्चा चलाना भी महा बिपत्ति का कारण है तब आश्रित प्रजाओं की कौन कहे ॥ इति ॥

—:०:—

## शिष्टता की कसौटी

मनुष्य में शिष्टता की कसौटी की दो बड़ी बात हैं—हाथ की सचाई और दिल की सफाई ॥

—:०:—

## बिना धन के भी सुख का साधन।

संसार मे धन सब सुख का साधन है सही—पर हमेशा मुफलिस कल्लांच दौलत को लात मार कर भी सुखी हो सक्ता है यदि मनुष्य सहन शील—तितिक्षु—परिश्रमी—संयमी परमित व्यय शील हो—और अपने पुरुषार्थ पर पूरा भरोसा रख सके।

—:०:—

## मिलन सारी का लटका

संसार में हेल मेल पैदा करने के लिये अकुटिल भाव और जी की सफाई अधिक कार गर है मग़ज़ की सफाई से ॥

—:०:—

## रहीम के अनमोल बोल।

रहीम के बोल कितने अनमोल हैं इसे हमारे माननीय मित्र ब्राह्मण के संपादक अपने एक नम्बर में प्रकाश कर चुके हैं—उन्हीं के अनुयायी बन हमने भी रहीम की कतिपय उक्तियों का संग्रह किया है जिसे यहां पर आज प्रकाश करते हैं – हमारे पाठकों में

से जिनके पास छिपे छिपाये रहीम अथवा कबीर दास के कहे हुये चुटीले वाक्य पड़े हों हमारे पास भेजदें हम अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक प्रकाश कर उनको अनेक धन्यबाद देंगे।

जो गरीब सों हित करैं धन रहीम वे लोग। कहा सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई जोग॥

हरि रहीम ऐसी करी ज्यों कमान सर पूर। खैंच आपनी ओर कों डारि दियो पुनि दूर॥

चपला यह न रहीम थिर सांच कहत सब लोय। पुरुष पुरातन की बधू क्यों न चंचला होय॥

रहिमन राज सराहिये जो बिधुके बिढ़ि होय। रबि को कहा सराहिये जो उगे तरैयां खोय॥

अब रहीम चुपकरि रहो समझ दिनन को फेर। जब दिन नीके आइ हैं बनत न लागी देर॥

यारो यारी छोड़ दो अब रहीम वे नाहि। अब रहीम दर२ फिरैं मांगि मधुकरी खाहिं॥

जो रहीम ओछे बढ़ैं बढ़त करैं उत्पात। प्यादे से फरज़ी भयो कि तिरछे२ जात॥

—:०:—

## ।सोरठा।

बूंद समुद्र समान यह अचरज कासो कहूं। ढूढन हार हेरान अहमद आपुहि आपमे।

यह तन हरिअर खेत तरुनी हरनी चरगई। अजहु चेत अचेत अब अधचरा बचायले।

यद्यपि पिछले ये दो सोरठे रहीम के नहीं हैं पर चोट इनमे भी रहीम ही के बोलकोसी है हमे क्या "किन्नश्छिन्नं य एव निवर्तने प्रभवति गवां स एव धनञ्जय:,, हमे तो जहां से सदुपदेश मिश्रित चुटीले वाक्य मिलें उन्हो के लिये अपनी मधुकरी वृत्ति को काम मे लाना ॥

# । हमारी नई रोशनी की निराली परिपाटी।

"गोकुल गांव का पैंड़ो न्यारो" हम नये हैं हमे नई रोशनी का ज़ोर है इस लिये हमारी सबी बात नई और निराली है –

क्या खान क्या पान क्या रहन क्या सहन क्या आचार क्या बिचार क्या धर्म क्या कर्म क्या उठना क्या बैठना क्या आना क्या जाना सब मे हमारा नया और अनोखा ढङ्ग—"नवे तस्मिन्महीपाले सर्वं नव मिवा भवत्,, लो हम कहते चलें तुम सुनते चलो –

भोजन— टटका और गरमागरम शुद्ध अमनिया मटन चाफ – पनीर – पावरोटी और बिसकुट – खुदा बक्श ब्रह्मचारी के कर कमलों का सिद्ध किया हुआ ॥

पान – रोज़ लिकर – एक्स्ट्रा नम्बर वन् अथावा सोडा वाटर लेमोनेड ।

रहना – बंगलों का इंगलिश क्वार्टर मे ।

आचार – बाहरो सफाई चेहरेकी – बालकी – कपड़े-की – बूटकी ।

बिचार – परोक्षबाद का खण्डन – "याबज्जीवेत्सुखं जीवे

दृणं कृत्वा घृतं पिबेत् । भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरा गमनं कुतः, ।

धर्म—— स्वार्थ साधन ।

कर्म—— दास्यभाव——नौकरी – खुशामद ।

नित्य कर्म – बाक करना – दिन में तीन बार ब्रूस और कंघी करना – रोज़ नहीं तो आठवें दिन तमाम बदन में साबुन पोत गुसल ज़रूर करना ॥

नैमित्तिककर्म – लेबी या बाल के द्वाराश्वेतद्वीप के इनलइटेंड महर्षियों को षट्रस भोजन कराना ।

दान – चन्दा सर्कारी – प्रजा का नहीं ॥

सन्मान – रूपये का – प्रभुवरों की खुशामद का – अथवा जिसे पिया चाहें वही सोहागिन ॥

जान पहचान – मतलब की

आमोद या दिल बहलाव – इवनिंग पार्टी में यथेष्टाचरण प्रभुवरों के "चाकर के चूकर चूकर के पेशकार" का उच्छिष्ट महाप्रसाद खाद्य अखाद्य सब हप्प – "उच्छिष्ट भोजिनो दासाः॥ नहीं रदासा नुदासाः सबै भूमि गोपाल की यामे अटक कहां जाके मन में अटक है सोई अटक रहा – ॥

पहनावा – इंगलिश ड्रेस – कोट पतलून – चक्कर दार टोपी या टर्किश क्याप ॥

मेला तमाशा – सत्यानाशी पारसी थियेटर ॥

महा पाप – हिन्दी पत्रों का स्पर्श मात्र भी ॥

पुण्यपाठ – नित्य पयोनियर का पढ़ना ॥

पूजन – सिद्ध पीठ इंगलेंड वासिनी महा देवियों का ॥

——:०:——

—:०:—

# कलियुग की अति व्याप्ति

पाठक जन आप लोगों ने बहुधा इस बात को देखा होगा कि जब किसी पर भूत सवार होता है तब उस्में अनेक प्रकार की विकृति और प्रकृति बिरुद्ध बातें देख पड़ती हैं ऐसा ही इस कलि की अति व्याप्ति मेभी है जहां २ और जिस २ मे आपका मनहूस कदम जा पहुंचा वहां२ और उसी२ में इतनी विकृति देखी जाने लगी कि मानों आकाश और धरती का अन्तर आ लगा है॥

सोने में—१६) का अब २४) दर कुन्दन बिकता है – और सोने मे तो सदा से कलियुग का बास शास्त्रकारोंने निश्चय किया है पर इस समय तो इस्की अति व्याप्ति है॥

चान्दी मे – रूपया का गज़ हो गया॥

कपड़े में – तन पर रक्खा नहीं कि गल कर चियरा होने लगा"

अंगरेज़ी इमारत मे अथवा इंजीनियर साहब की अकिल में-इमारत एक तरफ बनती जाती है दूसरी तरफ ढहती जाती है।

बिलायत के हुंड़ियावन में – १४०) दीजिये तो वहां १००) पहुंचे।

हिंदुस्थानियों की बुद्धि मे – नौकरी के आगे व्यापारतुच्छ रंगी चुंगी चिकनी चुपड़ी ऊपरकी भड़कीली भीतर की पोली बिलायती चीजों के आगे ठोस और पायदार देशी चीज़ें तुच्छ और भद्दी॥

इस देश के बूढ़ों की समझ मे – अनेक कुसस्कार पूरित जिनकी भद्दी अकिल ने हमे इस दशा को पहुंचा दिया कि सब तरह पर भिखारी निर्लज्ज और निष्पुरुषार्थी बन बैठे तौभी नस २ मे

व्याघ्र बाल्य बिवाह आदि मलिन संस्कारों से हमारा गला नहीं छूटता

हमारे खाद्य पदार्थों में – घी चीनी अन्न साग भाजी इत्यादि यावत् बस्तु पहिले की अपेक्षा अब दुगने दाम से बिकती हैं ॥

इलाहाबाद के उत्तर कोतवाली बाड के कुआओं में – सूखी कुआओं में डोल फूटते हैं गृहस्थों के बाल बच्चे प्यासे मरते हैं पनिहारिनियां ढूढ़े नहीं मिलती फिर भी पानी के नलों की कुछ आवश्यकता नहीं है ।

हमारी संस्कृत बिद्या में – हम लोग अवच्छेदकावच्छिन्न मे सनी टिड्डाशय की बुकनी फांकते २ कोरे मूर्ख बने रहे यूरोप के बिद्वान् संस्कृत की नस २ का रस खींच उलटा हमारे शिक्षा गुरू बन बैठे ।

इस देश की रत्न गर्भा वसुन्धरा में – गोल कोंडा प्रभृति हीरे की खानों में अब कोइला भी न रहा कोहनूर सरीखा महामणि बिलायत को सिधार गया – "सिद्ध रही सो गोरख लेगये खाक उड़ावें चेले,, ॥

हमारे पत्र में – एक से एक चढ़ बढ़ कर प्रस्ताव लिखते २ घिस गये पर ग्राहकों की संख्या न बढ़ी जो बचे खुचे हैं उन्हें ना दिहन्दी का चसका चूसे लेता है ॥

क्षीण धन हिंदुस्थानियों के मनोरथ में-जो कभी सिद्ध होते ही नहीं – उत्थायन्ते विलीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः बाल वैधव्य दग्धनां कुलस्त्रीणा कुचाविव ॥

स्वत्वाभिमान शून्य हमारे अमीर कबीरों में–जिन्होंने फेशन की खाक छानते ए सिवा पेटभर अन्नखा लेने के जो लाचारी है कि बिलयत में उपजताही नहीं और किसी बस्तु मे अपनापन रक्खा

ही नहीं – धिक् ॥

हमारी वैद्य बिद्या में – जब कि डाक्टर लोग अंगरेज़ी चिकित्सा प्रणाली से लोकोत्तर चमत्कार देखाकर लोगों को भौचक्के करते हैं वहां हमारे देशी वैद्य चरक सुश्रुत बाग भट्ट सब को तिलांजुली दे केवल भाषा में दो चार नुसखे सिख सिखाय वैदगीरी की टांग तोड़ते हैं – पहले तो आपका वैद्यक डाक्तरी के मुकाबिले पासंग भी नहीं जो कुछ है भी उसमें कलि की महिमा व्याप्त है ॥

ब्राह्मणों के ब्रह्म कर्म मे – अपने लिये संध्या का खट करम की कौन कहे कभी एक बार पूरी गायत्री भी न पढ़ेंगे यजमान के लिये वाचस्पति के भी बाबा हैं ऋद्धि सिद्धि सब उनके जीभ के हिलाने ही मात्र में आरही है – एवं क्षत्रियों की बीरता मे – वैश्यों की आढ्यता में – शूद्रों की सेवा मे — सतियों के सतीत्व में राजाओं की रजाई में भिखारियों की भिक्षा मे सर्बत्र कलिकी कलुषित महिमा की अति व्याप्ति देखी जाती है बानगी के तरह पर हम ने थोड़ीसी दिखाया हमारे पाठक इसी सूत्र पर नाक के सीधे चले जांय कलि काल की अपार महिमा का पार पा जांयगे ॥

—:०:—

## । हिन्दुस्तानियों की दियानतदारी का नतीजा ।

यूरोप के मेकाले सरीखे बड़े दियानतदारों ने हिन्दुस्तानियों को दुनिया भर मे सबसे झूठे और बे इमान निश्चय किया है और इतना अबिस्वास के योग्य समझा है कि बडे ऊंचे ओहदे अबतक इन्हे इसी खयाल से नहीं दिये जाते किन्तु हम जो नीचे

लिखेंगे उस्से आप को यही प्रगट होगा कि यदि हिन्दुस्तानी वैसे होते तो इस देश की ऐसी दशा न होती जैसी आज है क्योंकि हमारे यूरोपयीय भ्रातृगणो के राज नैतिक गुढार्थ को टटोलिये तो उस्से यही सिद्धान्त निकलता है कि बार २ झूठ बोलने और बेइमानी ही करने से मुल्क की तरक्की है—जिस देश के मनुष्य सचाई सिधाई अपने बात के धनी और भोले पन से रहेंगे वे ऐसे ही कुटिल मण्डली के वशम्वद होंगे जैसे हम हुये हैं—"स्टेटस म्यान शिप,, ( राज्यतंच निपुणता ) "डिप्लोमेसी,, ( राज नोति की काट छांट) "पालिसी,, ( राजनैतिक कुटिलता ) "प्रेसटिज,, ( आत्म गौरव ) "प्रिबेलेज" ( स्वत्वरक्षा ) आदि High sounding बड़े बोल के शब्दों पर ध्यान दीजिये तो हमारे जेताओं की दियानतदारी और औदार्य की भर पूर कलई खुल जाती है और उन शब्दों के गूढार्थ का बर्ताव केवल इस एशिया खण्ड के निवासियों ही के साथ किया जाता होसो नहीं किंच – अहे: पादान् अहिरेव जानाति – खग जाने खगहीं की भाषा – वाली कहावत के अनुसार यूरोप की एक जाति और देश के लोग आपस मे दूसरे के साथ भरपूर कर रहे हैं हां हमारे जेता प्रभुवरों का नम्बर चाहों अलबत्ता सब मे पहिला और वढ़ा हुआ है – वारेनहेसटिङ्ग निरपराध चेत सिंह को सत्यानाश किया इस लिये कि उक्त महाशय बड़े भारी स्टेट्सम्यान थे – इलवर्ट बिल के अन्दोलन मे ऐंगलोइंडियनों का क्यों मूड़ फिराया इस लिये कि ब्रिटिशवार्न सबजेक्ट का प्रेसटिज "आत्म गौरव,, नष्ट होता था मिस्र देश से क्यों लड़े इसलिये कि फ्रांस और इंगलेंड का प्रिबेलेज "स्वत्व,, स्वेज़ के नाल में था इत्यादि अनेक उदाहरण हैं – कहना

और कुछ करना और कुछ — झूठ फरेब कुटिलता आदि वहां गुण हो गये — क्वचित् दोषो गुणायते — हमारे में सचाई सिधाई भोला पन अपनी बात पर दृढ़ रहना आदि सब महा वेगुण और पातक हो गये — एक बात को कह कर फिर उस्का Interpretation भावार्थ अपने मुफीद मतलब लगा लेना-अस्तु पिछली बातों को छोड़ Let the past bury its dead "बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले,, हम अपने सामयिक शासन कर्ता श्रीमान लार्ड डफरिन महाशय की करतूतों की समालोचना किया चाहते हैं—निरपराधी बर्म्हा के राजा थीवाने क्या किया था जो उस्का सर्वस्व अपहरण किया गया केवल इतनाही कि वह पालसी राज नैतिक कुटिलता में सर्वथा अनभिज्ञ हो अपने प्राण रक्षार्थ शरण पन्न हुआ- भूपाल और काश्मीर के साथ जो कुछ किया गया सब को प्रगट है यह क्या कि स्वतंत्र राजाओं को पहले अपना करद Feudatory बना लेना फिर पोलिटिकल एजंट रखना उपरान्त वहां अपनी सेना स्थापित करना अंत में मौका पाय एक बारगी उस्का सर्वग्रास कर लेना अर्थात् नाम मात्र के लिये राजा बनाय उन्हें सोने की बेड़ियों से जकड़ सिंहासन रूपी महा कारागार में बंद रखना क्या शुद्ध राजनीति है — सेंधिया को सर्कार ने ग्वालियर का किला लौटा दिया हमारे संपादक गण लार्ड डफरिन महोदय की स्तुति गीत गाचले यह न सोचा कि डफरिन सरीखे नीतिज्ञ पुरुष के हाथ से यह किला सेंत और विना अपना भरपूर भा वी लाभ देखे मिलना संभव ही नथा — लोगों ने समझा पत्थर पर दूब जमाई गई बांझ के लड़का हुआ सेंधिया चाहो अपने को कृत कृत्य मान बैठे हों पर वास्तव में इस्से हमको प्रसन्न होने का

कोई अवसर नहीं है – यदि ग्वालियर के पुराने किले के बदले में मुरार की छावनी और १५ लाख रुपया सेंधिया से न लिया गया होता तो अलबत्ता समझते कि सेंधिया के संग न्याय किया गया इन्हीं सब करतूतों के कारण हमारे प्रभुवर डफरिन महाशय यूरोप के प्रसिद्ध राज नैतिक काटब्योंत में सम्यक निष्णात पुरुषों में गिने जाते हैं – अब बतलाइये यह सब हमारा बोदापन और सिधाई और दूसरे ओर की संशोधित कुटिलाई और स्वार्थ परता है या नहीं ॥

—:०:—

## । स्वत्व परिज्ञान ।

शठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती ।
सहज कृपण सन सुन्दर नीती ॥
ममता रत सन ज्ञान कहानी ॥
अति लोभी सन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहि शम कामिहि हरि कथा ॥
ऊसर बीज बये फल यथा ॥

हमारे देश के से भोले या वे समझ मनुष्य दूसरी ठौर कहीं न मिलेंगे – इनको चाहो जैसे बहलालो फुसलालो कोई इनके साथ कैसोही चाल चले यह अपने सरल भाव से उस चाल चलने वाले को भी साधुही समझते रहेंगे – इनका सब घर भर लूट कर खा जाइये और इनको यह समझा दीजिये कि तुम्हारे भले के लिये हम यह सब कर रहे हैं तो ये महा गवुच्चरदास बड़े प्रसन्न हो घर का ठंका मुंदा सब तुम्हारे भेंट कर देंगे जैसे रसायन के शौकीन ठगों को भेंट कर देते हैं – इनको नज़र बन्द करके रखिये परन्तु

इन से यस कह दीजिये कि आप हमारे परम मित्र हैं हमने आपको प्रतिष्ठा और मान के लिये यह किया है फिर तो ये फूले न समायगे और सच्च २ यही समझेंगे कि ये वास्तव मे हमारे दिलो और सच्चे मित्र हैं और जो कहीं इनके नाम के आगे खिताब के दो एक अक्षरों का पुछल्ला जोड़ दीजिये तब क्या निहाल हो रोम २ कुप्पा से फूल उठेंगे – इतनाही नहीं आप इन्हें निरादास बनाये रहिये पर अपनी कुटिल बुद्धि से चिकनी चुपड़ी बातें बना दीजिये इनकी आंख कभी न खुलेगी – अंगरेज़ लोगों ने देखा कि व्यापार के द्वारा जो रुपया हमारी बिलायत मे खिचा आता था अब उस्मे कमी होने लगी क्योंकि हिन्दुस्तानी अब अपना निज का कारखाना खोलते जाते हैं और अदालत के झगड़ों से जो रुपया आता था उस्मे से बहुत सा इसी देश में रह जाता है क्योंकि देशी लोग भी अब अदालत मे लड़ने झगड़ने से ऊंचे ओहदे पाने लगे हैं सिवा इस्के अंगरेज़ कर्मचारी लोगों ही का बहुत सा रुपया इस देश मे रह जाता है तो अब सोचते २ यह उपाय बिलायत में धन पहुंचाने को सोचा कि इनके कान मे यह गुरु मंत्र फूंक देना चाहिये कि तुम अपने जातीय गौरव और मान रक्षा के लिये एक २ कौड़ी का जातीय कोष Nationalfund जमा करो और बिलायत वालों के अर्पण करदो इसी मतलब से लाल मोहन घोस ने लाखों रुपया जातीय कोष का सत्यानाश में मिलाया और अन्त को अपना सा मुह लिये चले आये – जातीय गौरव और मान रक्षा की एक बात भी इन को किसीने न सुना – अब सुनते हैं फिर इस्का आन्दोलन हो रहा है कि बिलायत तकलड़ने और झगड़ने का फिर बिचार किया जाय और जातीय कोश फिर जमा किया जाय – यदि अंगरेज़ महाशय

इन पर सच्चे जी से कृपा करनेका बिचार रखते हों तो उन्हें हम या तो निरा बेवकूफ कहेंगे जो अपना शिकार छोड़े देते हैं या साक्षात् देवता हैं जो हम सरीखे अधम पात की मनुष्यों पर अनुकंपा की दृष्टि रखते हैं – भाइयो निश्चय जानिये यह सब आपका व्यर्थ का हड़ बड़ाना है तुम्हारे देश की आब हवा मे जो ज़हर समा रहा है उसे साफ होने को अभी सैकड़ों बर्ष चाहिये तब तक मे आपका कई जन्म हो चुके गा और इस ज़हर से अपना छुटकारा आप तब मानिये गा जब आपके देश के छोटे से छोटे मनुष्य भी इनके उच्छिष्ट महा प्रसाद को लात मार अपने निज के बाहु बल का भरोसा रख आगे बढ़ने का मन करेंगे भरपूर सच्चा हित आपका नतो लिबर दल कभी करेंगे न पार्लियमेंट महा सभा से आप को कुछ आशा रखनी चाहिये यह सब इनकी चाल है व्यर्थ को अपना धन फूकना आपको मंजूर है तो हमे क्या पड़ी है कि मना करने जांय बिलायत में एक छोटा सा किसान भी अपना स्वत्व पहचानता है और उस्की रक्षा में सन्नद्ध रह प्राण तक देडालता है – यह उसी का प्रताप है जो हम सब बड़े मान और प्रतिष्ठा वाले भी अपने कल्याणार्थ इनका मुह जोहा करते हैं और ये हमे काठ की पुतली सा नचाते रहते हैं – इसी स्वत्व परिज्ञान ही का नाम एका है इसी का नाम सभ्यता है इसी का नाम ईश्वर की कृपा है इसी का नाम प्राणगत प्राण रुधिर गत रुधिर है यही ज़िंदगी का नमक है इसी से जीवन का साफल्य है हम इसी के बिना सब कुछ होकर भी कुछ नहीं हैं पानी से भी पतले हैं तूल से भी हलके हैं पांव की धूल से भी अधिक तर वेक़दर हैं ॥

——:०:——

# ( कुपुत्र गाथा )

बर्तमान समय के पुत्र ।

क्षत्रिय पत्रिका से

त्रेता मे इक सरवन पूत, कलियुग में बहु पूत सुपूत, हरगङ्गा
ताने माय बाप बैठाय, कांधें कांबर लिया उठाय हरगङ्गा ।
तीरथ २ भरमन कियो, मातु पिता कहं सदगति दियो, हरगङ्गा ।
अब के पूत जु पावहिं जोय – वश ह्वै जाहिं दास तसु होय हरगङ्गा ।
घर की स्वामिनि जोरुहि करैं – आपु सदा आयसु अनुसरैं हरगङ्गा ।
जो कहुं सुनैं कि नारि रिसानि, कोप भवन में गई कोहानि, हरगङ्गा ।
सन्मुख जाइ बेत इव कांपत– कोप छुड़ा वहिं चरनन चांपत हरगङ्गा ।
सबही भांति खुसामद करैं—पानि निवारत पुनि २ धरैं हरगङ्गा ।
कहैं कि कौन चूक है परी—जासों तुं इहि बिधि रिस भरी हरगङ्गा ।
माय कछू गुस्ताख़ो करी —बहिन न तब अज्ञा अनुसरी हरगङ्गा ।
तो मैं घरते तिनहिं निकारि—मन तब भरौं पनहियन मारि हरगङ्गा । माय बाप कछु अप्रिय कीन्ह—तो कहं अणुमात्रहुं दुख दीन्ह हरगङ्गा । तो मैं भूखन तिनहिं रटाऊं—मरतिहु बार न बारि पिलाऊं हरगङ्गा । मरे अधूरी गात जलाय—कलिमल सरिमहं देउ बहाय हरगङ्गा । मन लगाय नहिं पिण्डा पारौं—तरपन करत न वाक्य उचारौं हरगङ्गा । सुसुकि २ यों बोलै नारि—जियन न देइ मतारि तुम्हारि हरगङ्गा । बात २ में झगरा करै—जोइ पावै सोइ मुहं में धरै हरगङ्गा । बरजत नेकु गाज परि जाय—लगे सरापन देव मनाय हरगङ्गा । आंचर बारहि बार पसार—लगे चबावन पूत भतार हरगङ्गा । तुम सन हौं एकहुं नहिं कहौं—रुधिर घूट पीपी के रहौं हरगङ्गा । अबतो मोंसन सहो न जात—जरत बात सुनि२

के गात हरगङ्गा। कहंलगि रोज लुआठो सहौं—मन मारे कब लगि तन दहौं हरगङ्गा। एकहु बार उतरि हौं देउं—तौ अपने सिर आफति लेउं हरगङ्गा। बुढ़वो ताही की दिस होइ—बकन लगो सब लज्जा खोय हरगङ्गा। तुम्हरे ही भय मुख नहिं खोलौं—लाख सुनो पै एक न बोलौं हरगङ्गा। पै ऐसे मो मन खिसियाय—धरि के डारो देउं जलाय हरगङ्गा। इहि बुढ़वे लागो बुढ़ भेस—देखेउं आजु संवारत केस हरगङ्गा। होतहि सांझ हजाम बुलावै—सिगरे तन में तेल लगावै हरगङ्गा। तेल देत कहुं लगै जु देर—छिन ही में ह्वै जाय अन्धेर हरगङ्गा। पुनि २ बुढ़वा पटकै गात—किच किचाई बहु पीसै दांत हरगङ्गा। बुढ़ियो डाइन बर बर करै—बिनुही मांगे भांड़ा भरै हरगङ्गा। कछु बुढ़वा के गात लगावै कछुवारे कछु भुइं ढरकावै हरगङ्गा। अब हौं तुम कहं जोरौं हाथ—तुम्हारे पायन राखौं माथ हरगङ्गा। नेहर मोहि देहु पहुंचाय—निति उठि कर २ सह्यो न जाय हरगङ्गा। जब लगि जोहै बुढ़की रांड़—नैहर रहिहौं पी के मांड़ हरगङ्गा। भोर होत ही नैहर जाउं इहां रहौं तौ विष्टा खाउं हरगङ्गा। भोरहि नाहिं कहार बुलावहु—तौ जियते मम गात जरावहु हरगङ्गा। सुनि इम कहैं कमासुत पूत—करिकै तिय सन विनय बहूत हरगङ्गा। मन कों प्यारी सानति करै और हु दस दिन धीरज धरै हरगङ्गा। आजु दुहन को धरि कै बाल जूतन सों मुहं करिहौं लाल हरगङ्गा। अबतो बन्द रसोई करै सब अनाज ताले में धरै—हरगंगा। नित बजार से पूरी लाय, खैहौं पहिले तोहि खवाय हरगङ्गा। मरि जैहैं भूखन ते दोई—तब नहिं रहिहै खटखट कोई हरगङ्गा। इहि विधि करि कामिनी परितोष—मातु पिता ढिग आइ सरोष हरगङ्गा। छोड़ै सांस देह सब कांप—चोट

खाइ जिमि गोहुमन सांप हरगङ्गा। बघ सरिस गरजे अति घोर—मुखते गारी बके कठोर हरगङ्गा। पूछें कारे बुढ़वा सार तो कहं शामति भईसवार हरगङ्गा। पागल भयो गयो सठियाय—अबहुं न ससुरो जमपुर जाय हरगङ्गा ज्यों बुड्ढ़ा कुछ बोलन चहै —पूत झपटि झोंटा कर गहै हरगङ्गा। देइलातदुइ पांजर मांहिं—बुडढ़ा रहै कर्राहि कराहि हरगङ्गा। बोले हरेकृष्ण हाराम—कवन मोर जीवन कर काम हरगङ्गा। इहो कुदशा रहै जों प्रान—अधम कवन जग मोहि समान हरगङ्गा। जब से भयो पूत कर राज —पायो नहिं भरि उदर अनाज हरगंगा। काल्हि रह्यों भरि दिन बिनुना ज—पायें मुठो चबेना आज हरगङ्गा। ताहि पचायसि लातन मारि —यह दुरगति हा दैव हमारि हरगङ्गा। नरकहु माहि मिले जो ठाउं—तो यह दुख तजि सानन्द जाउं हरगङ्गा। यह सुनि के बुढ़ियो आपरे—सुत सन बहुत निवेदन करे हरगङ्गा। कहै कि मोरि बात सुनि लेहु – तब तुम दंड चहहु सो देहु हर-गङ्गा। कोन सुने तह धरम कहानी – चढ़ो सीस तो रिस महरानी हरगङ्गा। मारन लगे घसीट२ रोवै बुढ़िया छाती पीटहरगंगा। रुदन सोर सुनि भीतर आय – नगर नारि नर दौंहिं छुड़ाय हरगङ्गा। रोइ २ बुढ़िया यों कहै – सुननहार की छाती दहै हरगङ्गा। जाके हित बहु कियें उपास – उदर रख्यों जाकहं दशमास हरगङ्गा। जनत समय जोवेदन भई—सो किहि भांति बतावों दई हरगङ्गा। पोख्यों सुतहि कष्ट सहि जोन – आजुहि आगे आयो तौन हरगङ्गा। निसिदिन दूध पियावत राहें – ताके पलटे यह सुख लहें हरगङ्गा। दिन महं दसदस तेल लगाऊं – चलत थके तब तेल लगाऊंहरगङ्गा। सोइ सुत मो कह मरै लात – हाय अजहु नहिं जी उपरात हरगङ्गा। बिष्टा धोवत आठोजाम – नेक लेउं नहिं घिन को नाम हरगङ्गा। ताको फल हों पायों आज – धन्य२ कलियुग महराज हरगङ्गा॥

—:0:—

# कर्तव्य और परम कर्तव्य।

सुख की प्राप्ति और दुःख की हानि श्रेय वा कल्याण कहला

तो है उसी को पुरुषार्थ भी कहते हैं—यद्यपि निज के पौरुष के बिना भी और के द्वारा दूसरे को सुख की प्राप्ति और दुःख की निवृत्ति वा हानि हो सक्ती है परंतु वैसा पुरुषार्थ मुख्य पुरुषार्थ नहीं कहा जा सक्ता है—मुख्य पुरुषार्थ वही है जिसे अपनी ही इच्छा और करतूत से प्राणी निज के प्रयत्न से सिद्ध करता है-प्राणी मात्र अपनी समझ के अनुसार पुरुषार्थ हो के साधन में प्रवृत्त हैं परन्तु पुरुष की बुद्धि भ्रम और प्रमाद से कभी २ और का और कराय बैठती है तो ऐसे अवसर पर अभ्रान्त और अप्रमत्त बुद्धि के पथ प्रदर्शक ( अगुआ ) भये बिना पुरुषार्थ साधन दुर्घट है – दार्शनिकों का सिद्धान्त है कि जब कोई वादी निः स्वार्थ हो के परार्थ के साधन में प्रवृत्ति का उपन्यास ( कथन ) करता है तो उसके पक्ष का खण्डन स्वीकार किया जाता है इसलिये अभ्रान्त और अप्रमत्त बुद्धिवाला स्वार्थ हो के सम्बन्ध से परार्थ मे प्रवृत्त हो सक्ता है ॥

अभ्रान्त और अप्रमत्त बुद्धि वाला कौन है ? केवल ईश्वर-ईश्वर को कौन सा पदार्थ साध्य है जिसके लिये वह परार्थ में प्रवृत्त हो क्योंकि वह तो स्वयं सच्चिदानन्द पूर्ण है ऐसी शङ्का का समाधान यह है कि गीता मे श्री मुख वाक्य है—"नमे पार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषुलोकेषु किञ्चन । नान वाप्त मवाप्तव्यं वर्त्त एवच कर्मणि। उत्सदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् । संकरस्यच कर्तास्या मुपहन्यामिमाः प्रजाः,, अर्जुन तीनो लोक के रचित होने पर मेरे को कोई अप्राप्त पदार्थ प्राप्त नहीं हो जाता है तथापि में सृष्टि रचना रूप कर्म मे प्रवृत्त हो हूं क्योंकि यदि में सृष्टि निर्माण रूप कर्म न करूं तो यह जगत न रह जाय और प्रजाओं का लोप कर्ता मही होऊं और सब अस्त व्यस्त और गड़बड़ हो जाय—तात्पर्य यह कि राग द्वेष रहित जानकार अनजान के अन्यथा चरण वा अनुचित बर्ताव की ओर जब लक्ष्य करता है तो निः स्वार्थ हो के भी परार्थ मे उसे प्रवृत्त होना ही पड़ता है और ऐसे स्थल मे परार्थ किये बिना उससे रहा ही नहीं जाता चेतन पदार्थ का यही असाधारणत्व

वा बिशेष धर्म है — उसी परार्थ बुद्धि से भगवान् बेद की अभिव्यक्ति ( प्रकटता ) करते हैं --प्राणी अपनी पुण्य मय वा पाप मय बुद्धि से उसके तात्विक ( सत्य ) वा अतात्विक ( असत्य ) अर्थ का ग्रहण कर तदनुसार आचरण कर के पुरुषार्थ मे सफल प्रयत्न होते हैं वा पुरुषार्थ से भ्रष्ट हुआ करते हैं — यद्यपि यह बात युक्ति से बिरुद्ध है कि कोई राग ( इच्छा ) द्वेष ( क्रोध ) रहित भी किसी बात मे अपनी प्रबृत्ति प्रगट करै तथापि "यत्किंचिद्युक्ति बिरुद्धं तदीश्वर कृतम्,, अर्थात् जो कुछ युक्ति से बिरुद्ध भी बात हो उसे ईश्वर कृत स्वीकार करना होता है यह महा युक्ति है — उदाहरण यथा परिमाणु की सिद्धि बिभाग की अनवस्था दोष से अयुक्तिक है तथापि परपरमाणु जन्य कार्यों की प्रत्यक्ष उपलब्धि (ज्ञान) की अन्यथानुपपत्ति ( अर्थात और किसी प्रकार से जो समाधान न हो सके ) रूप महा युक्ति से ईश्वर कृत उसे स्वीकार ही करना पड़ता है अन्यथा मूर्त द्रव्य की सिद्धि का अस्वीकार किया जाय तो प्रमाण ( निश्चय ज्ञान साधन ) प्रमेय ( निश्चय ज्ञान साधन का बिषय ) को व्यवहार के लिये तिलमात्र भी प्रसर ( स्थान ) नहीं रह जायगा किंच स्वयं साक्षात् भगवान् जब श्री मुख से कहते हैं कि रागद्वेष रहित हो के भी निः स्वार्थ मे परार्थ मे प्रबृत्तहूं तब और क्या आशंका की जाय रहा यह कि बेद बस्तुतः भगवद्वाक्य है वा नहीं तब उसी के साथ ही यह प्रश्न भी उठ सक्ता है कि यह सृष्टि ही ईश्वर कृत है वा नही—अब इन शंकाओं के समाधान के उद्देश्य से इस लेख का आरंभ नहीं है उनके लिये पृथक् लेखों की आवश्यकता है इस समय का हमारा लेख केवल इस बात के बिचार पर है कि बेदोक्त कर्तव्य और परम कर्तव्य क्या है— क्रमशः

पं — सरयू प्रसाद — प्रयाग

—:0:—

## मासिक पत्र ।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य दर्शन ॥
राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है ।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सो मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

१ जुलाई सन् १८८६ | जिल्द ९ संख्या ११

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ।
मूल्य अग्रिम ३।) पीछे देने से ४।)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ६ संख्या ११ } { १ जून सन १८८६ ई०

—:०:—

# चांदी का भाव—बट्टा ।

हमे अपने देश बान्धवों की दीन दशा पर अति दुःख होता है जैसा सहारा वा राजपूताना की बिस्तृत मरूस्थली मे ग्रीष्म के प्रचण्ड सूर्य को किरनों से झुलस कर अभागे बटोही तृषा की असह वेदना से शुष्क कण्ठ हो इतस्ततः तड़पते फिरते है और जल का एक विन्दु भी न पाकर अकथ वेदना का अनुभव करते हैं और उस बेदना से मुक्त होने का उपाय न देख व्याकुल होते हैं—जिस तरह शरीर के भीतर कहीं कुठांव पर कोई फोड़ा वा और कोई रोग होने के कारण उस्की दुःसह पीड़ा से पीड़ित जन अपनी तलफन से देखने वाले को बेचैन करते हैं और फिर भी उस पीड़ा को ठीक कारण नहीं समझ सके अथवा समझ भी गए तो अन बोल दूध मुख बालकों के समान उस्के प्रकाश करने में असमर्थ होते हैं – उसी प्रकार हमा-

रे सीधे साधे छल छन्द रहित भोले भाले देश बान्धव आज दिन अनेक ऐसे दुःखों से दुःखित हैं जिनके दूर करने मे वे प्रायः असमर्थ और भग्नोद्यम हैं और अनेक विथाओं से व्यथित होने पर उस्का कारण नही समझ पाते इसलिये उनकी दीन दशा हमे और भी दुःखित करती है — लार्ड डफरिन ने एक नये टिक्कस का ऐसा बज्र उनकी छाती पर मार दिया है जिस्की चोट से व्याकुल हो रोते हैं-कराहते हैं अहर्निश आंसू बहाते हैं पर यह नहीं जानते कि डफरिन साहब ने उनके साथ क्यों यह बद सलूकी किया व्योपार दिन २ घटता जाता है आमद पहले की आपेक्षा अब चौथाई भी न रह गई गृहस्थी मे खर्च की यावत् बस्तु मंहगी होगई खर्च संभाले नहीं संभलता अकुलाते हैं घबड़ाते हैं खिझलाते हैं पर इस खीज का ठीक २ कारण नहीं जानते इतना अलबत्ता जानते हैं जब चाहिये पूछ देखिये कि राजा की नीयत खाम होगई है—सरकार लूटे लेती है—दिन बहुत बुरे आये हैं—और यह भी ठीक है इस्से अधिक जानके करैं ही गे क्या ? उनकी तीन हिस्सा बिपत्ति तो सर्कारही की किई हुई है और सर्कार ही उन विपत्तियों को दूर कर सक्ती है—और सब छोड़ इस चांदी के भाव का मंहगा हो जाना ही लीजिये—देशी बस्तुओं का व्योपार अंगरेज़ी सर्कार के चरण आने पर अस्तही हो गया—बिलायती कपड़े बिलायती सूत बिलायती चीज़ों को बेच बांच हम्माली का हक्क झरन झुरन पाकर लोग पेट पालते थे बाल बच्चों को जिलाते थे जिस्मे अब दिन २ बट्टे की बढ़ती के कारण लाभ अत्यन्त कम होता जाता है—पहले सौ रुपये का माल बिलायत में खरीदते थे तब सौ का १००) देना पड़ता था सो बट्टा बढ़ते २ सौ की जगह अब १४०) देना पड़ता है और बिलायत से

माल यहां आने में जो ५०) सेकड़ा खर्चा पड़ता है सो अलग—अब बतलाइये उन मालों मे लाभ की आशा करना कौन बुद्धिमानी है उधर टिक्कस की धौंस इधर बट्टे की बढ़ती दोनो चक्कियों मे पिसकर रोज़गारियों का सब लाभ धूल मे मिला जाता है—बजाज और साहूकार बनिये और महाजन सब इस बिपत्ति से आकुल और पीड़ित हैं पर बेचारे इस्का कारण नहीं समझ सक्ते आज उन्ही के समझाने को यह लेख हम लिखते हैं।

यह सब लोग जानते हैं कि बस्तुओं का भाव घटना उनकी मांग या पहुंच पर निर्भर है जब एक बस्तु की मांग कहीं अधिक होती है और उतनी पहुंच आमद उस बस्तु की नहीं होती तो उस्का भाव बढ़ जाता है अर्थात् वह बस्तु महंगी हो जाती है और जब एक बस्तु की पहुंच कहीं अधिक होती है और मांग उसकी नहीं होती तो वहवस्तु मट्टी पड़जाती है अर्थात् उस्का भाव घट जाता है साग पात फल फूल घी दूध अन्न वस्त्र जिस्मे चाहिये इस सर्ब सामान्य परिभाषा को घटा कर देखलीजिये—बूढ़े लोग कहते हैं ५० बर्ष पहले एक पैसे के साग मे कुनबे भर के लोग यथेष्ट भोजन करते थे अब यहां जब से हाईकेर्ट औरदूसरे २ दफतर आये बंगाली बाबुओं की और किरानियों की सृष्टि बढ़ी चार पैसे का साग भी कुनबे भर को अच्छी तरह नही आंटता इसी तरह घी दूध आदि यावत् खाद्य पदार्थ सब का यही हाल है – तात्पर्य यह कि जिस बस्तु के ग्राहक अधिक होते हैं उसीका दाम चढ़ जाता है जिस्के लेने वाले कम हैं वह बही २ फिरती है।

इंगलैंड तथा और २ देशों में भी पहिले चांदी ही का सिक्का प्रधान था ज्यों २ वहां सोने की वृद्धि हुई त्यों २ सोने के सिक्कों की चाह

बढ़ी और अन्त को वहां सोने ही का सिक्का प्रधान कर दिया गया और उन सिक्कों के बनाने के लिये सोने की अधिक मांग हो चली पर उस समय अमेरिका मे नई २ सोने और चांदी की खान निकलने के कारण सोना बाज़ार मे कम नथा इस्से कुछ बिशेष हानि न मालूम पड़ी ज्यों २ रेल और धुआं कस के द्वारा ब्यापार और सभ्यता बढ़ती गई त्यों २ सोने कीमांग अधिक होती गई – यदि इस बढ़ी हुई मांग के साथ सोने को नई खान भी निकलती आतीं तो यह संकट भी उपस्थित न होता पर दुर्भाग्य से नई खानों का निकलना तो दूर रहा जो पुरानी खानों मेसे सोना निकलता था सो भी कम हो गया। – इसी दशा में इंगलेंड के देखा देखी जर्मनी वालों ने भी अपने देश में सन १८०३ से सोने ही का सिक्का प्रधान कर दिया जिस्से उस देश में भी मोहरों के बनाने के लिये सोने का खर्च बहुत बढ़ गया – इन दोनो की देखा देखी और भी समस्त सभ्य देश जापान और दक्षिण अमेरिका अपने यहां चांदी का सिक्का बनाना कम करते जाते हैं और सोने ही के मुद्रा को प्रधान करते जाते हैं – इसी तरह पर जो सहस्रों मन चांदी इन देशों में रुपया बनाने मे खर्च होती थी वह बाज़ारों में परती चली जाती है और जो सोना था सो मोहर बनाने के लिये खींचा चला जाता है अब हमारे पाठक समझे होंगे कि जो सोना १५) या १६) के दर मे बिकता था सो अब २२) या २३) के दर मे क्यों बिकने लगा सोने का खर्च बढ़ गया चांदी का घट गया सोना मंहगा होगया चांदी सस्ती हो गई और यदि इन सब देशों के शासन कर्ता एक मन हो चांदी की मुद्रा बंद कर देने का बिचार त्याग न देंगे तो दिन २ यह सोना चांदी को चबाता और दबाता चला जायगा – अंगरेज़ लोग अपनी चीज़ों का

दाम सोने ही के मोहर मे जिस्को वे पौंड स्टर्लिङ्ग कहते है लेते है और सोने की मोहर का दाम दिन २ बढ़ता जाता है इसी से हमारे देश में लोगों को प्रति बर्ष करोड़ों रुपये की हानि उन लोगों को बट्टा देने में सहनी पड़ती है और जब तक इंगलेंड सोने के सिक्के की प्रधानता दूर कर चांदी के सिक्कों का स्वच्छन्द प्रचार न करेगा तब तक यह बट्टा हमको देना पड़ेगा।

इंगलेंड से यह करा लेना कुछ कठिन न था पर हमारी सर्कार जो भूरी बातों में हमे फुसलाती है कभी इसपर ध्यानही नहीं दिया चाहती और क्यों ध्यान दे हानि तो हम अभागों की है भूखों तो हम मरते हैं सरकार की इस्मे कौन सी हानि है बल्कि अपने भच्य अथवा शिकार पर दया प्रकाश करना नितान्त मूर्खता है।

ब्यापार आदि को अलग रखिये केवल उसी धन में जो प्रति बर्ष हमारे देश के राज्य प्रवन्ध के बदले इंगलेंड मे जाता है सेना का खर्च – पेनशन – मंत्रियों की तलब इत्यादि न जानिये कितने मद्द हैं जिनके द्वारा हम लोगों को करोड़ों रुपया हर साल बट्टे का देना पड़ता है और उसी के भरने को यह टिक्कस पर टिक्कस लगता जाता है – यदि सर्कार को कुछ भी हमारे सुख की चिन्ता होती अथवा हमे दुखी देख कुछ भी दर्द मालूम होता तो निस्सन्देह यत्न करके इस बट्टे की दिन २ बढ़ती आग कोकभी बुझवा दिया होता – अभागी प्रजा भूखे पेट सोवे और भूखे पेट जागे पवन पीकर और धूर फांक कर अपने दु:खित जीबन को किसी तरह पर काटे सर्कार जब तक टिक्कस वसूल होता जाता है तब तक क्यों और बातों की चिन्ता करे – रहा इस बिपत्ति से बचने का दूसरा उपाय सो हमारे देश भाइयों से कब होगा – हमारे सेठ साहूकारों की बुद्धि में

यह बात काहे को कभी आवेगी कि प्रमेसरी नोट का ।-)॥ का ब्याज छोड़ उस रुपये से कार खाने खोल अपने ही देश मे उन चीज़ों के बनवावें और बेचें जिनको बिलायत से मंगाते और मुनाफे के नाम रोते हैं – काहे को उन्हें यह कभी सूझे गा कि यदि वे कपड़े काग़ज और भांत २ की फैंसी चीज़ें जो एक से एक चढ़ बढ़ कर यहां बिसातियों की दूकान पर देख पड़ती हैं यहीं बनवावें और बेचें तो न केवल बट्टेही के घाटे से छुटें बरन फिर एक बार २०) और २५) सैकड़ा लाभ उठावें अपने को और अपने देशको भी भरपूर लाभ पहुचावें–मा होती तो मौसी को भीखते–यदि ऐसा ही होता तो हमे हर महीने एक नये ढंग का दुख रोना काहे को रोना पड़ता और पाठकों की नज़र में मनहूस और झिखने वाले कभी न जचते पर क्या करें लाचारी है – चातुरी चिवत मपाकरोतिकः ।

—:०:—

## । सर्कारी स्कूलों मे फीस का दूना होना ।

लीजिये इन प्रान्तों के डइरेक्टर अफ पबलिक इन्स्ट्रक्शन ने भी आप पर बड़ी कृपा प्रकाश किया आप को अपने लड़कों के पढ़ाने मे जो कुछ किफायत होती थी उसे डइरेक्टर सहब की कृपा ने चट्ट कर लिया–यह कौन नहीं जानता कि हिन्दुस्तान के हर एक हिस्सो से यह पश्चिमोत्तर हर एक बातों मे सब से पीछे हटा हुआ है—हम को अब तक डइरेक्टर साहब की ओर से यही बिश्वासथा कि ये सिबिलियन हैं हमारे बालकों की शिक्षा की उन्नति मे कभी कोताही न करें गे – किंच आलस्य और सुस्ती की सेवा

मे तत्पर ग्रिफिथ साहब की डइरेकृरी मे जो अबतरी शिक्षा बिभाग मे होगई थी उसे दूर कर देंगे – हम यह कभी नहीं समझेंथे कि इन के संकीर्ण हृदय मे हम लोगें की ओर से इतनी बुराई जमी हुई है कि ये हिन्दुस्तानी कभी आगे न बढ़ने पावें बंगाल आदि प्रान्तों की अपेक्षा इस हिस्से के लोग शारीरिक बल मे प्रबल हई हैं अब उच्च शिक्षाके प्रभाव से मानसिक बातें मे भी प्रबल होगये तो अंगरेज़ी राज्य की कुटिल नीति मे बड़ा भारी धब्बा लग जायगा ओर हम अपने सिबिलियन भाईयों के बोच कभी आदर नपावेंगे क्योंकि यह तो किसी तरह होही नहीं सक्ता कि जो हिन्दुस्तानियों का शुभचिन्तकहो वह क्षुद्र हृदय सिविलियन लोगें की मण्डली मे सुर्खरू रह जाय – याद रहे हमारे अभागे देश मे रुपये वाले धनी बिद्या बृद्धिमे किसी तरह दत्त चित्त नहीं है क्योंकि ये लोग बिद्या का फल केवल रुपये पैदा करना मानते हैं जिनके मुह से यह बहुधा सुनने मे आया है कि हमारे पास रुपया है सैकड़ों पढ़े लिखे हमारी खुशामद किया करते हैं तब हम क्यों अपने मस्तिष्क को दुखा कर प्राण शोषक मेहनत से बिद्या उपार्जन करें – रहे मध्यम श्रेणी वाले वे अगतिक की गति हैं पढें नतो खांय कहां से उन के लिये फीस दूनी की जाती है हम तो जो फीस अब लगती है उसी को झीख रहे हैं कि यह बहुत अधिक है सर्ब साधारण इतनी फीस दे कर अपने लड़कों को नहीं पढ़ा सक्ते जो फीस अब लगती है उस्से वेही अपने बालकों को पेट काट कर भी पढ़ा सक्ते हैं जिन्हे बिद्या लाभ का रसभींजगया है ओर उस्के फल को भरपूर समझते हैं – डइरेकृर साहब का धन्य बाद तो तब किया जाता कि

इस फीस को घटा कर आधोकर देने और हर एक बहाने स्कूल मे पढ़ने वाले लड़कों से जो पैसा वसूल किया जाता है इस लवड़ घों घों को दूर करते — महीने २ किताबें नई २ जारी हों उस्का दाम दो जाड़ों मे गेंद खेलाने का गरमियों मे पंखा डोलाने का पानी पिलाने का बात २ मे जुरवाने का पैसा लिया जाय उधर फीस भी दूनी की जाती है तो अब गरीब आदमी क्यों कर अपने लड़के को स्कूल मे भेज वरपा हो सक्ता है — हमारी समझ मे वेहतर होगा कि जैसा इनकं टैक्स हवीलटैक्स चुंगी आदि हैं उसी हिसाब से यह भी नियम कर दिया जाय कि जो गरीब हो कर अपने लड़के को सरकारी मदरसे मे भेजे वह इतना टैक्स बतौर जुरबाने के प्रति मास अदा किया करे — इस देश मे विद्या वृद्धि के मूली च्छेद की यह बहुत सहज तरकीब होगी — "न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी „ — सुनते हैं श्री मान् लायल साहब बड़े विद्वान् हैं तो क्या उन की विद्वत्ता का फल हमे यही हो कि उनके अधिकृत देशों मे बसने वाले हम लोग निपट मूर्ख कर दिये जांय ? — एक बिद्वत्ता सर विलियम म्यूर साहब की थी जो बिद्या के प्रचार करने मे भोज के अनुयायी बने थे जिनका नामोच्चारण करते हम लोग रोम २ से निहाल होते हैं सच है सब जन हों हिन एक सम — हमारे यहां के हेडमास्टर साहब खुशी मनावें उन के तो मन ही की हुई वरसों से ईसी प्रयत्न मे थे कि फीस दूनी कर दीजाय जिस्मे गरीवों के लड़के स्कूल से निकल जांय —

—:०:—

—:०:—

# भलमनसाहत ।

लोग कहते हैं भलमनसाहत बड़ी बात है बड़ी २ हानि सह कर भी भलमनसाहत बनी रहे तो उसे बनाये रखना चाहिये भले मानुसों के बीचरहना चाहिये भले मानुसों ही का सा बर्ताव रखना मुनासिब है"सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गमम्,,मसल भी है"आप भले तो जग भला,, पर इस्का पता आज तक न लगा वह भलमनसाहत वास्तव मे है क्या जिस्के होने की हम तुम इतनी चाह रखते हैं – अपने तथा अन्यदेश के नीति तत्व वेत्ताओं ने जो परिभाषा भले मानुसों की मान रक्खा है उसपर ध्यान देने से यही निश्चय होता है कि भलमनसाहत लोहे के चने हैं और भले मानुसों की श्रेणी मे नाम लिखाना मानो तलवार की धारपर पांव रख कर चलना है—हमारे देश के अशिक्षित नीची बुद्धि वालों ने भलमनसाहत का कुल दार मदार केवल रुपये पर छोड़ रक्खा है—आप जितनी चाहिये उतनी बेइमानी कीजिये जैसा चाहिये वैसे ही नीच बर्ताव से बर्तिये रुपये पास हैं तो समाज मे भले मानुसों की श्रेणी मे प्रथम समझे जांयगे दरबार मे कुरसी भी आप को बे प्रयास मिलेगी हुजूर के सलाम के लायक भी आपही समझे जांयगे हुजूर के बेयरा खानसामा भी आप की खुशामद से मुह न मोड़ेंगे—ऐसे ही लोगों के मत के सिद्धान्त का यह महावाक्य है—"धनान्यर्जयध्वं—धनान्यर्जयध्वं"—"भाग्यवन्तं प्रसूयेथा: माशूरान्माच पण्डितान्"—पुराने समय मे केवल सौ पचास वर्ष पहले भलमनसाहत हमारे देश मे आचार व्योहार आदि मे

समझी जाती थी कोई कितनाही अकिंचन और दरिद्र हो उस की चाल बर्ताव भली होती थी तो वह सज्जन भलामानुस समझा जाता था बड़े २ धनिक वणिक् अपनी गद्दी पर उसको सादर बैठाते और शुश्रूषा करते थे अब भलमनसाहत केवल वचन मे रह गई है—झूठ कपट छल मे डूबे रहते हों मांस मद्य और वेश्या के चिकुण्ड मे गोते लगाया करते हों पर यदि बचन रचना मे पटु हों चटक मटक लंपटता बक बृत्ति मे प्रबीण हों—बात बनाना खूब जानते हों – बगुलों का सा स्वच्छ बेश बनाये हों पुराने क्रम के हों तो मस्तक मे ऊर्द्ध पुण्ड त्रिपुण्ड या अधोपुण्ड लगाये हों नये फेशन के भक्त हों तो कोट बूट पतलून अथवा अबा कबा चढ़ायें हों तो आप भलमनसाहत की नाक समझे जांयगे – परदार पर द्रब्य परद्रोह पराङ्मुख होने के पीछे आप ने अपने तन को मास तक छील डाला हो और ऊपर कही बातें आप मे न हों तो आप गबुच्चर गाउदी निपट असभ्य समझे जांयगे – इस भलमनसाहत को दूरही से प्रणाम है ईश्वर हमे अन्तः सार शून्य निरी पोली चूना पोती कबर सदृश ऊपर की चटकीली भड़कीली ऐसी भलमनसाहत से कोसों दूर हटाये रहै और ऐसे भलेमानुसों का सम्पर्क हमारा कभी स्वप्न मे भी न करावे ॥

—:०:—

## । अनूठे चुटकुले ।

दूर की ढोल सोहावनी – हमारे नादेहन ग्राहक ॥

बदन का कांटा – ईर्षी ऐंगलो इण्डियन की नज़र मे हि-

न्दुस्तानी कृतविद्य बी – ए – एम – ए ।

चार दिना की चांदनी फिर अँधियारा पाख – लार्डरिपन साहब की सलतनत ॥

धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का – अधकचड़े अंगरेज़ी खां ॥

कौड़ी के तीन तीन – हिन्दी अखबार और उन के एडिटर ॥

चूना पोती कबर – इस समय की सभ्यता ॥

मुख मे राम बगल मे छूरी – लार्ड डफरिन की कुटिल नीति ॥

बह बह मरैं बैलवा बैठे खाँय तुरङ्ग – छाती फाड़ मेहनत पर भी आधे पेट खा कर सन्तोष करने वाले हिन्दुस्तानी और भाग्यवान् अंगरेज़ ॥

ज़बर दस्त का ठेंगा सिर पर – बर्म्मा की फतहयाबी ॥

मान न मान मै तेरा मेहमान – कश्मीर मे रज़ीडंट ॥

काटा सांप जहां मन भावे – चुङ्गी लइसेन्स इनकं इत्यादि टिक्कसों की भर मार ॥

आम के आम गुठली के दाम – पन्द्रह लाख रुपये भी झंस लिये और ग्वालियर का पुराना किला हवाले कर सेंधिया को फुसला भी लिया ॥

दाल भात मे मूसलचन्द—पश्चिमोत्तर की हाईकोर्ट मे लीगल रिमेम्बेंसर का ओहदा ॥

नक्कार खाने मे तूती की अवाज़ – सरकार की बेजां कारखाई पर हम लोगों का हांव हांव करना ॥

चाकर के चूकर चूकर के पेशकार – यूरेशियन या नेटिव क्रिश्चन् ॥

—:०:—

# । कर्मण्येवा धिकारास्ते मा फले-षु कदाचन ।

भगवान् अर्जुन से कहते हैं कर्म करने मे तुम्हारा पूर्ण प्रभुत्व है तुमको रोकने टोकने वाला कोई नहीं है स्व-च्छन्दता पूर्वक जो चाहो कर सक्ते हो पर उस काम के फल भोक्ता होने के लिये तुम को कोई अधिकार नहीं है – हमारे अजान पाठक बहुधा पूछते हैं तुम ने अमुक बिषय को इतने ज़ोर शोर से लिखा पर उस्से कोई बात होती नज़र न आई—ऐसे लोगों को हम किस तरह समझावें—अरे भोख मे पछोर नहीं देखा जात "मुल्ला की दौड़ मसजिद तक" बहुत जी खों खाना कलम अपनी स्याही अपनी हर एक पहलू को बचाते खयाल के घोड़े को दौड़ा दिया—पूर्ण स्वाधीनता उस मे भी नहीं क्योंकि पद पद मे "डिसलाय-लटी" राज बिरुद्ध होने का सन्देह लगा रहता है इतनी भी क्या कुछ थोड़ी कृपा और एहसान है – इसी से हम कहते हैं फल भोगी होना हमारे लिलार मे बिधिना ने नहीं लिखा ऐसे बड़ भागी अभी हम नहीं हुये ॥

—:०:—

# —गुप्त भेद (पालिसी)—

हमारे गुरू लोगों का सर्वस्व इस पालिसी ही चाण्डालिनी पर निर्भर है बरन भेद रखा उन गुरुओं की ऐसी भारी चाल है जिस के बल आज दिन मतवाला हाथी सा इतना बड़ा साम्राज्य मानों कच्चे सूत मे बंधा स्थिर और निश्चल हो रहा है वही हम इस गुप्त भेद की पहचान ही न रखने से मारे गये—गुरू लोग हमे यह सिखापन देते हैं कि जब तक हमारे और आप के बीच भेद का यह झिंझरा परदा पड़ा है तभी तक हम जेता हैं स्वामी हैं महा मान्य हैं बड़े हैं और आप जित हैं दास हैं अनुयायी हैं आज्ञा कारी हैं वशम्बद हैं जब तक भेद है तभी तक हम काग हो कर भी श्वेत द्वीप के महा मराल हंस तुम्हे प्रतीत होते हैं-हम प्राण पण के साथ भी इस गुप्त भेद को इस लिये रक्खे हैं और आप के कान मे इस महा मंत्र को नहीं पहुने देते कि कहीं ऐसा न हो कि सब सिधाई सचाई सरलता से मुह मोड़ आप भी हमारे समान सर्वज्ञ हो उड़ने लगें और हमारे नस २ की पालिसी सब आप के ध्यान गम्य हो जांय—जब कि सब से उत्तम पुरुष ईश्वर भी अपना गुप्त भेद अनधिकारी को नहीं देता तो हम और आप किस गिनती मे हैं - आप क्यों अपनी सिधाई मे दाग लगाते हैं सीधे और सरल स्वभाव के आदमी केवल इसी योग्य होते हैं कि अपना जीवन जिस तरह पर हो काट लें जो कुछ बोझ उन पर रख दिया जांय बहें और अपनी मज़दूरी के हक्क मात्र से सन्तोष कर बैठे रहें ॥

—:०:—

# । कबीर के अनुभव ।

जिस के सिर पर मालिक राज़ी उस का जगत भिखारी है- कहैं कबीर समझ के खेलो अब की जीत हमारी है ॥

या दुनिया माया की लोभी रोवत है धन को—माया लोभ सबै हम त्यागा त्याग दिया घर को—कहैं कबीर सुनो भइ साधो सोच नहीं तन को ॥

हम पंछी तुम अधिक अहेरी कितक उड़ान उड़ैहो—का-के अंगना काके द्वारे काके ऊंचे बोल सुनैहो, अरे करम तुम कहां कहां ले जैहो ॥

पल्ले खर्चे न बांधते पंछी या दुर्वेश। जिनको तकिया रब्ब की उन को रिज़क हमेश ॥

आंख कान मुख मूंद के नाम निरञ्जन लेय। हिरदे के पट जब खुलें जब बाहर के पट देय ॥

कबिरा सोया क्या करे उठ के भजे मुरार। एक दिन सो-ना होयगा लम्बे पांव पसार ॥

कबिरा खड़ा बज़ार में दुनो दीन को खेर। ना काहू से दोस्ती ना काहू से बेर ॥

कबिरा खड़ा बज़ार मे दोनो जग पर बीन। नां काहू से ले लिया न काहू को कुछ दीन ॥

कबिरा बसे बज़ार मे गल कट्टों के पास। बे भोगें करम आपनें में क्यों होउं उदास ॥

कबिरा कबिरा क्यों करो खोजो अपन सरीर। पांचो इन्द्री

बस करो तुमही दास कबीर ॥

ना कछु किया न कर सके न करने योग शरीर । जो कुछ किया सो हरि किया होत कबीर कबीर ॥

कबिरा गरब न कीजिये रंक न हसिये कोय । अभी तो नाव समुद्र मे को जाने क्या होय ॥

कबिरा बासी देश का जहां जात बरन कुल नाहिं । शबद मिलावा होत है देह मिलावा नाहिं ॥

पोथी पढ़ २ जग मुआ पण्डित हुआ न कोय । दोई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय ॥

—:o:—

## । मलार ।

## आरत भारत टेरि सुनायो

नृप गन सावधान ह्वै रहियो डफरिन को पग आयो ॥
काहू को प्रबन्ध दूषित कहैं काहु असमर्थ बतायो ।
काहू को रिपु पच्छ बिदित करि दुर्गति कठिन भोगायो ॥
काशमीर के प्रबल राज्य पै पहिलेहि डीठ जमायो ॥
दोष अनेक लगाय तहां हूं निज रजिडेंट बसायो ॥
कठिन कराल गदर के दिन मे जो नहि प्रीति डिगायो ।
सोइ बेगम भूपाल की जग मे हेठी नहक करायो ॥
निज देसिन के लाभ हेत लगि बरह्मा युद्ध उठायो ।
राज्य छीन बल हीन थिबासों तेहि बिदेश दुरियायो ॥

खर्च कियो संग्राम मे जहं तहं मन भर द्रब्य लुटायो ।
दुःखित प्रजा इहां की तिन पै नूतन टिकस लगायो ॥
तेहि के प्रबल त्रास से चाहो जो निज प्रान बचायो ।
फूंकि २ तौ धरहु पांव नित अरु जगदीसहि ध्यायो ॥

—:०:—

## । सियापा ।

## । न रोलाई आती हो तो प्याज़ का गट्ठा आंख मे मल लो ।

हे हे टिक्कस हाय हाय । कहां से देवें हाय हाय ।
आमद कुछ नहिं हाय हाय । खरच बढ़ा है हाय हाय ।
अमले फैले हाय हाय । चढ़ी कड़ाही हाय हाय ।
नीयत बिगड़ी हाय हाय । गायब पगड़ी हाय हाय ।
मरी पेटागिन हाय हाय । पर दे बहु टिक्कस हाय हाय ।
नफा नही है हाय हाय । घाटा ही घाटा हाय हाय ।
सदा मोहर्रम हाय हाय । भारत के घर हाय हाय ।
छाया मातम हाय हाय । कोई न पुरसां हाय हाय ।
राजा परजा हाय हाय । कोई न राजी हाय हाय ।
धन्य अंगरेज़ी हाय हाय । आमद पर है हाय हाय ।
या कम्बख्ती हाय हाय । बाबू बनिया हाय हाय ।
कोई न छूटे हाय हाय । चुंगी लइसेंस हाय हाय ।
तापर टिक्कस हाय हाय । गई अमीरी हाय हाय ।

आई फक़ीरी हाय हाय । गई मातबरी हाय हाय ।
यह टिक्कस है बुरी बलाय । इस्से नहिं छुटकारा हाय ।
हे ईश्वर तुम होहु सहाय । है है टिक्कस हाय हाय ॥

—:०:—

## । दिल बहलाव ।

एक काहिल आदमी अपने खान दान के पुराने होने की बड़ी डींग मार रहा था एक किसान जो पास बैठा था बोल उठा "ठीक है जितना पुराना बीज उतनी ही खराब पैदावरी" ।

लुकमान हकीम ने कहा है मैं ने ४०० किताबें हिकमत की पढीं उन्मे ४ बात सारांश निकाला—जिन्मे २ भूल जाने लायक हैं और २ याद रखने लायक हैं— मौत और खुदा को तो हर समय और हर हाल मे याद रक्खे और जो कोई अपने साथ बुराई करे उसे भूल जाय और आप जो किसी के साथ एहसान करे उसे भी भूल जाय ।

एक आज़ाद फकीर कई मुल्क घूमता २ एक बादशाह की महल के पास आनिकला और पहरे वाले सन्तरियों को असावधान देख भीतर घुस मखमली फर्श पर ज्योंही चाहा कि लेट रहे कि पहरुये पहुंच गये और डपट कर बोले तू बड़ा बेवकूफ है तूने शाही महल को सरांय समझ रक्खा है जो यहां बिना पूछे घुस आया— फकीर और पहरुये दोनो की कहा सुनी हो रही थी कि अचानक बादशह भी वहीं आनिकला और फकीर से कहा क्या तुम नही जानते सरांय और बादशाही मकान मे क्या फर्क है ? फकीर ने कहा इस मकान मे सब से पहले कौन रहता था ? बादशाह ने जबाव दिया मेरे परदादा — फिर फकीर ने पूछा उस्के बाद कौन

रहने लगा ? शाह ने कहा मेरे दादा—तब फकीर ने कहा उस्के बाद कौन रहता था ? बादशाह ने उत्तर दिया मेरे बाप और अब मैं रहता हूं—फकीर बोला तब सरांय और किसे कहते हैं तुम खुद कहते हो मेरे परदाद रहे दादा रहे बाप रहे और अब मैं रहता हूं— तो सरांय तो उसी का नाम है कि जहां कल कोई रहा और आज कोई है—फकीर की इन बातों को सुन बादशाह फड़क उठा ।

—:०:—

## । हिन्दी अखबार ।

यह अवश्य मानना पड़ेगा कि अखबारों के पढ़ने से जो लाभ अब है पहले न था—अखबार से प्रयोजन हमारा उन पर्चों से है जो किसी न किसी नाम से नियत समय पर छपते हैं चाहो उनमे खबर हो या पुस्तक के आकार मे कोई दूसरे बिषय हों पर एक नियत समय पर छप कर लोगों मे फैलाये जाते हों इस तरह के लेख पहले न थे किन्तु अब थोड़े दिनो से प्रचलित हुये हैं—अखबार पहले तो होतेही न थे दूसरे जो अखबार नबीस बादशाहों की ओर से रहते भी थे तो वह ऐसी खबरें लिख कर भेजते थे जो अद्भुत और अचरज की बातें हों जैसा किसी शहर के अखबार नबीस ने लिखा कि यहां एक औरत्त तीन बच्चे जनी—एक भैंस को तीन टांग का बच्चा पैदा हुआ—पण्डित बहादुर दत्त के बताने से उस म० हाजन के घर जो चोरी हुई थी सब मिल गई और चोरों का नाम तक मालूम हो गया इत्यादि—तात्पर्य यह कि ऐसी कोई

बात इन अखबार नबीसों के अखबारों मे नहीं लिखी जाती थी जिससे सर्बसाधारण को लाभ पहुंच सके—मूलं नास्ति कुत: शाखा—सर्ब साधारण यह शब्द ही जब किसी को मालूम न था और अर्थ गर्भित इस शब्द की कहां तक व्यापकता है जब यही किसी के ध्यान मे न था तब सर्ब साधारण का लाभ कैसा—

अब हम लोग जिसे अखबार कहते हैं वह कई प्रकार का है कितने ऐसे हैं जो दैनिक अर्थात् नित्य छपते हैं कितने साप्ताहिक कितने पाक्षिक कितने मासिक—कितने ऐसे हैं जे समाचार पत्र कहलाते हैं और उनमे केवल खबर मात्र रहती है—कितने ऐसे हैं जिनमे शास्त्रीय विषय या धर्म सम्बन्धी अथवा समाज सम्बन्धी बातों पर लेख रहता है कितनो का तोड़ राजनैतिक बिषयों पर है कितनो का लक्ष्य चोज़ लतीफे इतिहास परिहास पहेलियां कबिता इत्यादि बिबिध बिषयों पर है और बिलायत मे तो हर एक पेशे वालों का अलग २ एक २ अखबार है यहां तक कि कुली और नौकरों से लगा कर बड़े २ बिद्वान बिदों तक के प्रयोजन के अखबार छपते हैं—सारांश यह कि कोई ऐसे लाभ दायक सुखद या रोचक बिषय नहीं बचे जो इन दिनो के पत्रों मे नहीं रहते—जहां पढ़े लिखे लोगों की अधिकाई है और जिनमे पढ़ने का शौक है उनको सदैव अनेक प्रकार के नये २ बिषय पढ़ने की चाह बनी रहती है और सदा से यह क्रम चला आया है कि जब किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो उस वस्तु के भरती का भी प्रयत्न किया जाता है—जब यह क्षुधा लोगों मे बढ़ी तब इस मनसोक्षुधा के बुझाने

को मानसिक भोजन Mental food तैय्यार करने वाले भी होते गये --

अब देखना चाहिये हिन्दी के अखबारों मे पहले कही हुई बातों मे कौन २ बातें मिलती हैं- सच तो यह है कि हिन्दी के अखबार यूरोप के अखबारों के अनुयायीबन सब तरह के विषयों पर हाथ पसारते हैं पर न तो अभी हिन्दी इस लायक हुई और न लिखने वालों की योग्यता ही यूरोप के लेखकों की दशांस भी पहुंची है इस्से उनका यह प्रयत्न जैसा चाहिये वैसा सफल होते नहीं दीखता इन सब बातों के लिये अभी कुछ समय चाहिये -- सब से पहिले बड़ी भारी कसर यही है कि हमारे देश मे पढ़ने वाले नहीं हैं और जो थोड़े बहुत हैं भी उनकी रुचि ऐसी भिन्न है कि एकही प्रकार के लेख से सब का सन्तोष कर देना अतीव दुर्घट है -- हमारे स्वदेशीय ग्राहकों मे बहुतेरे ऐसे हैं जिनको राज्य प्रबन्ध या राजकीय नियमों की कुछ भी खबर नहीं है किन्तु गवर्नमेंट के कामो पर एतराज़ और सर्कारी अफसरों के विरुद्ध लेख पढ़ अत्यन्त प्रसन्न होते हैं इस्का कारण भी है पर यहां हमको उस्से कुछ प्रयोजन नही है यदि इस प्रकार का लेख किसी पत्र मे वे नहीं पाते तो कहते हैं एडीटर डरपोक खुशामदी और सचाई से भागता है -- कितने महात्मा ऐसे हैं जो पत्र उठाकर पूछते हैं कुछ खबर है और इधर उधर उलट पत्र फेंक कहते हैं "इस्मे कुछ नहीं है" ऐसे लोगों को निराली पसन्द खबर किसे कहते हैं यह मालूम करना दुर्घट है कदाचित खबर से उनका यही मतलब है कि कोई ऐसा संग्राम हुआ हो जिस्मे लोहू की नदियां बह चली हों और सहस्त्रों सुयोद्धाओं का वारा न्यारा हो गया हो या कोई नयेईसा पैदा हो जो कर मात और मुआजिज़े दिखावें या नल नील हों जो किसी समुद्र मे पुल बांध पत्थरों से उसे पाट दिया हो इत्यादि कितने यह चाहते हैं कि पत्र मे केवल हास्यही हास्य रहे ऐसे लोग अखबारों को भांड़की नकल और एडिटरों को भांड़ विदूषक या नक़्क़ाल जानते हैं -- कितने केवल पहेली चोज़ और दिलबहलाव पर लट्टू हो रहे हैं -- कितने केवल कविता

ढूढ़ते हैं उसमें भी कोई नया और अनूठा ढंग नहीं किन्तु दसहजार वर्ष से कविता की जिस मैली पग डंडी पर लोग चले आये हैं उससे एक रेख मात्र भी इधर उधर बहक न गये हों याते कृष्ण और गोपियों के परस्पर अनुराग की उद्धरिणी है अथवा नायिका के कुच और मुखके अश्लील वर्णन की मेल मे सों देहों इत्यादि – कितने केवल मलार कजली लावनी और दादरा ढूंढ़ा करते हैं और ये बातें न हुईं तो समझते हैं सम्पादक तबियतदार नहीं है – पर उन महात्माओं को चाहिये कि थोड़ी देर के लिये अपनी चिरलालित रूचि से अलग हो संपादक के स्थान में अपने को समझें तब अनुभव कर सकें गे कि इतने भिन्न रूचि वाले लोगों को प्रसन्न करना कैसा कठिन काम है न केवल उन्हें प्रसन्न ही करना वरन सच पूछिये तो उन मे इस बात का शौक और शऊर पैदा करदेना कि किस तरह के लेख से प्रसन्न होना चाहिये और इतनेही से क्या – हामारी प्रशस्त लेखिनी को अपनी प्रशस्तता का अभिमान कैसा कि पढ़ने वालों मे पूर्ण रसिकता का अङ्कुर नजम गया और विद्योपार्जन का उत्कट स्वाद न पैदा होगया- यह सब कुछ सही पर पढ़ने वाले भी तो मिलें न कोई पढ़ने वाले हों तो क्या किया जाय ॥

—:०:—

## । कर्तव्य और परम कर्तव्य ।

पूर्व प्रकाशिता नन्तर

अब इस बिचार पर ध्यान देना उचित है कि प्राणियों के पुरुषार्थ की अवधि है वा वह पुरुषार्थ निरवधि है अर्थात् पूरी सुख की प्राप्ति और दुःख की हानि का पात्र कभी कोई प्राणी हो

सक्ता है वा नहीं ? यदि कहो नहीं हो सक्ता तो क्यों ? पुरुषार्थ की सीमा ही नहीं होने से अथवा सीमा हो के भी वहां लो पहुंचने के लिये प्राणी मे सामर्थ्य न होने से—अब जो पुरुषार्थ की सीमा न स्वीकार की जाय तो ईश्वर को पुरुषार्थ स्वरूप स्वीकार किये बिना ( अर्थात् ईश्वर को पुरुषार्थ से भिन्न माने तो ) उसे भी सर्वथा पुरुषार्थ मे प्रवृत्त रहना चाहिये क्योंकि पुरुषार्थ सीमारहित है—तो "न मे पार्थास्ति कर्तव्यं„ इस वाक्य मे ईश्वर को हम क्या समझें-और यदि प्राणी मे असामर्थ्य के कारण पूरा पुरुषार्थ सर्वथा अलभ्य मानें तो बेद की अभि व्यक्ति करके भी प्रभु प्राणी के उद्धार मे असमर्थ ही रहा ऐसा कहना पड़ेगा जो सर्वथा बेद के बिरुद्ध है-बेद मे मोक्ष को परम पुरुषार्थ कहा है जिसके प्राप्त होने पर फिर किसी पुरुषार्थ की सिद्धि अवशेष नहीं रहजाती—बेद ईश्वर को पुरुषार्थ स्वरूप कहता है इस्से यह सिद्ध होता है कि ईश्वर के मिल जाने पर फिर प्राणी को किसी बात के मिलने की लालसा वा त्यागने की इच्छा नहीं रह जाती ॥

समझ रखिये अर्थ ( धन ) धर्म (स्वर्गादि सुख का साधन ) काम ( सुख बिलास ) मोक्ष ( दुःख की अत्यन्त निबृत्ति ) ये चार पदार्थ पुरुषार्थ शब्द से प्रसिद्ध हैं मैं उन्हीं के साधन को कर्तव्य पद से निर्देश करता हूं और उसी के साधन के ढंग को "इति कर्तव्यता„ कहता हूं—

जब लों प्राणी स्वयं परम पुरुषार्थ को नहीं पहुंचता तब लों संभव है कि स्वार्थ साधन के प्रयोज़न से भी परार्थ मे प्रवृत्त रहे परन्तु एकान्ततः सर्वथा निःस्वार्थ हो के परार्थ मे कोई भी प्रवृत्त नहीं होता है यह जो मत है उस के मूल मे कारण यह है कि य-

द्यपि मुमुक्षु के लिये निष्काम विशेषण दिया जाता है पर उस निष्काम पद का अर्थ इसके आगे लिखे हुये श्लोक के अनुसार वे ग्रहण करते हैं—"नाना त्वमेवकामानां नाकाम: क्वच दृश्यते। अतोऽविरुद्ध काम:स्या दकामस्ते न भण्यते,,—"नाना प्रकार के मनोरथ हैं मनोरथ रहित कोई नहीं दिखाई पड़ता है किन्तु जो वेद बिरुद्ध बात की इच्छा नहीं करता वही निष्काम कहलाता है,,—यदि ऐसा अङ्गीकार न किया जाता तो त्यागार्थक मुच धातु के अनन्तर इच्छार्थक सन प्रत्यय ही न किया जाता। जिसके उत्तर कर्ता के बतलाने मे उ प्रत्ययसे मुमुक्षु पद सिद्ध हुआ है—

मुमुक्षु = छुटकारा चाहने वाला — निष्काम = इच्छा रहित—

देखिये इच्छा रहित भी हो के चाहना करे ये दोनो परस्पर बिरुद्ध बातें हैं या नहीं—इसी बिरोध के मिटाने को मोक्ष बिरोधी बातों का न चाहने वालाही निष्काम शब्द का अर्थ समझना चाहिये—इस्से यह सिद्ध हुआ कि मोक्ष प्राप्ति मे भी कुछ न कुछ सूक्ष्मानुसन्धान से स्वार्थ की बासनाही से प्राणी परार्थ मे प्रवृत्त रहता है परन्तु मोक्ष प्राप्ति के अनन्तर अद्वैतबाद मे मुक्ति को प्राप्त प्राणी ईश्वर ही के स्वरूप मे प्राणियों के हित के लिये नि:स्वार्थ प्रवृत्त है और जीवन्मुक्त प्राणी भी अभ्यस्त मैत्री करुणा आदि की बासना से स्वत: प्रवृत्त है प्रमाण ऐतरेयोपनिषद पर शङ्कर भाष्य की भूमिका और उसका आनन्द गिरि कृत बिवरण तथा बेदान्त सूत्र के अ—३—पा—४ अधिकरण १ सभाष्य सबिवरण देखिये—और द्वैतबाद मे तो बेदान्त सूत्र पर बनमालि कृत भाष्य के तीसरे और चौथे अध्याय मे जहां मुक्त प्राणी को

भी निःस्वार्थ हो के सत्कर्म मे प्रवृत्त निरूपण किया है स्पष्ट रीति से प्रतिपादन किया है—पाठक गण परम कर्तब्य पद से मैं ऐसेही निःस्वार्थ प्रवृत्त चेतन के परार्थ साधन काबोध करता हूं—आप लोग अपने मन मे कहते होंगे कि अपने मन की खींच खांच से तुम ने ऊट पटांग अनुमान कर लिया है परन्तु हे सत् हृदय सुहृदो मैं प्रमाण पूर्वक ही इस बात का निरूपण करता आया हूं अब भी संशय का लेश आप के मन मे हो तो आप के निश्चय को दृढ़ करने को और भी प्रमाण देता हूं—पुराणों मे लिखा है ऋषि जन जो मुक्त हो गये हैं वे भी नित्यकर्म सन्ध्या बन्दनादि मे प्रवृत्त रहते हैं और जो लोग हरि कीर्तन मे मग्न रह भूल के नित्य कृत्य मे चूक जाते हैं उन के पाप का मार्जन उक्त ऋषियों के नित्य कृत्य की क्रिया से होता है इत्यादि अनेक और उदाहरण हैं—अपना किया अपने ही को मिलता है यह साधारण नियम है पर बेद बाक्या नुसार किसी २ कर्म का फल कर्ता से अन्य को भी मिल सक्ता है इस सिद्धान्त का निरूपण कई एक स्थल मे किया गया है ॥ क्रमशः —

—:0:—

## । श्री राधा कृष्ण पचासा ।

अर्थात् २५ कबित्तें राधिका के सम्बन्ध की और २५ कृष्ण सम्बन्धी चरखारी निवासी बकशी रघुनाथ प्रसाद कृत—कोई २ कबित्त रसीली और चटकीली हैं परन्तु अत्यन्त पुराने फेशनकी—हरि प्रकाश यंत्रालय बनारस मे छपी है मूल्य मै पोस्टेज ≈)॥

—:0:—

। ज़रा इधर भी ।

रसिक अरसिक खरे अथवा खोटे देने वाले या नादेहन्द सवधान ग्राहक महाशयों के हिसाब पर एक साथ सभों को यह सदा नोटिस दी जाती है कि वर्ष पूरा हो गया अब चुप चाप बिना कुछ दुर्भाव मन मे लाये इसे देखतेही हमारा दाम रखदें और जैसा हम बराबर साल भर प्रति मास उन्हे हंसाते हित की चेताते भलाई का पंथ सुझाते रहे वैसेही आज हमे उसका बदला चुका कर सुचित्त कर दें क्योंकि-परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ—और नादेहन्दों को इतनी विशेष सूचना दी जाती है कि हम कौड़ियों तकाज़ा करते २ थक गये अब कहां तक उनका संकोच और मुलाहिज़ा रक्खे रहें इस मास के भीतर जिनका दाम न आवेगा उनका नाम ग्राहक श्रेणी से अलग कर आगामी पत्र मे मय नाना उनके यश कीर्तन द्वारा हम अपना दाम चुकता कर लेंगे -इति-

## मासिक पत्र।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन॥
राज सम्बन्धी इत्यादि के विषय में
हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै॥

---

१ अगस्त सन् १८८६ } { जिल्द ९ संख्या १२

---

## इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कम्पनी लिमिटेड में
छप कर प्रकाशित हुआ

मूल्य अग्रिम ३॥)   पीछे देने से ४॥)

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—:०:—

जिल्द ६
संख्या १२

१ अगस्त
सन १८८६ ई०

—:०:—

# । दर्शन और उनके सम्बन्ध मे मत भेद ।

भारत ने यूरोपीय बिद्या और योरोपीय शिक्षा प्रणाली के द्वारा बहुत कुछ लाभ उठाया है और आगे को अभी लाभ उठाने की आशा है—हम समझते है जहां इसके बहुत से उत्तम फल प्राप्त हुये है वहां बहुत उत्तम फल एक यह भी हुआ है कि अपने ही घर की बिद्या, अपनेही यहां के तत्वान्वेषण की रीति, और अपने निज के ग्रन्थों के महत्व पर भारत की आंख खुल चली है—और क्यों न खुले क्योंकि कोई बिदेशी ग्रन्थ आप पढ़िये यदि और कुछ वह आप को न सिखलावेगा तो यह अवश्यही उससे आप को मालूम हो जायगा कि स्वदेशानुराग क्या बस्तु है और इन दिनों भारत की जैसी दशा है उसके लिये स्वदेशानुराग कैसा भारी बहुमूल्य रत्न है और हम मे देशानुराग का अंकुर जमने की केतनी आवश्यकता है ॥

आप स्वयं सोच सक्ते हैं क्या हम बतावें तब आप को सूझेगा ? यह बिदेशी ग्रन्थ चाहे किसी बिषय का हो किन्तु अपने यहां के उस बिषय पर अच्छी तरह लिखा गया हो तो मानो हम लोगों से यह प्रश्न करता है कि "तुम्हारे यहां इस तरह के ग्रन्थ हैं ?,, फिर यदि किसी ग्रन्थकार ने बिदेशीय बातों की खोज मे कुछ लिखा है ( जैसा हज़ारों उन्मे इस बात पर कमर बांध मुस्तैद हो रहे हैं ) तो मानो वे ग्रन्थ हम हिन्दुस्तानियों को लज्जित करते हैं कि तुम कदापि हमारे बराबर होने लायक नहीं हो क्योंकि "जब तुम ने अपने ही यहां के ग्रन्थों का पता नहीं लगाया तब दूसरे देश के तत्वों का अन्वेषण क्या करोगे—जब तुम्हे अपने ही घर की खबर नहीं तो दूसरे को क्या सहायता पहुंचा सक्ते हो ?" इस लिये यूरोपीय शिक्षा प्रणाली के हम लोग अत्यन्त बाधित हैं जिस के द्वारा हम अपने ही यहां की चीज़ों मे अपनी बिशेष रुचि पाते हैं—क्रम की बात है कि बहुत सी नई चीज़ें एक साथ देखने से आंख चका चौंध मे आती है और ऐसा ही क्रम मनुष्य की बुद्धि का भी मालूम होता है क्यों कि अङ्गरेज़ी शिक्षा प्रणाली मे अभ्यसित बुद्धि को जब हम अपने यहां की चीज़ों पर दौड़ाते हैं तो कुछ बिचित्रही बात देखते हैं और आश्चर्य मे आय खोजने लगते हैं कि हमारे यहां क्या २ है और किस प्रकार की बातें हैं और उन मे क्या २ गुण वा दोष हैं न केवल इतनाही बरन उनके बारे मे बहुत ही मत भेद है बल्कि ऐसा मालूम होता है कि इस बिषय पर एक मत होने मे अभी बहुत देरी है—

अब उचित है कि अपना अभिप्राय स्पष्ट रीति पर प्रगट करने को एक उदाहरण हम चुन लें और उसी पर कुछ समय तक कथोपकथन करते रहें तो हमारा आशय सब को खुल जाय-हम समझते हैं भारत को बड़े से बड़े अभिमान का बिषय उस्का जगत् बिख्यात छहो दर्शनो को छोड़ और क्या होगा इस लिये आज हम उन्ही की आलोचना करते हैं और उन्ही के बारे मे जैसा कुछ बिबिधमत है उस्का संग्रह करते हैं—

पहले इस्के कि हम अपनी आलोचना का आरंभ करें हमे ऐसे लोग मिलते हैं जिन का यह प्रश्न है कि इन ग्रन्थों का परिणाम क्या है ?अर्थात् जिस प्रकार के बुद्धि का वैभव हम उन्मे पाते हैं उस्का नतीजा क्या है यदि यह माने कि ये ग्रन्थ दूसरे शास्त्र के अभ्यास के लिये मनुष्य को तैयार करते हैं तो यह कहना पड़ेगा कि हमारे यहां के जो बड़े २ आचार्य थे वे खुद तत्वान्वेष॰ ण न कर सके बरन किसी दूसरे ही प्रकार के लोगों केलिये तत्वा॰ न्वेषण का काम छोड़ गये और ये हमारे यहां के ग्रन्थ उस तत्व के प्राप्ति के सहायक हैं—सो यह कोई न मानेगा क्यों कि यदि इस बात को मानालें तो फिर इनकी महीमाही क्या रही—इस लिये यह अवश्यमेव कहना पड़ेगा कि तत्व इन्हीं ग्रन्थों मे है इनके बाहर नही है— यदि इन्मे है तो किस प्रकार का है और उस्की खोज में लगने से किस प्रकार का लाभ हो सक्ता है ? पहिला काम किसी बिद्या [ " साइन्स " ] का यह है कि मनुष्य जाति को बिशेष ज्ञान दे और केवल इतना ही नहीं बरन जिस सीढ़ी पर वह था उस्के आगे की सीढ़ी पर ले जाने को वह बिद्या मनुष्य की सहायक हो क्योंकि यदि जिस दशा मे मनुष्य जाति उस शास्त्र

के पढने के पहले थीं उसी दशा मे उस शास्त्र के अभ्यास के उपरान्त भी बनी रही और उस्को कुछ भलाई न हुई तो ऐसे शास्त्र का होना नहोना दोनो बराबर है बरन मनुष्य की उन्नति का हानि कारक उसे कहें तो उचित है क्योंकि जितना समय व्यर्थ उस शास्त्र के पठन पाठन मे नष्ट गया उतना समय किसी दूसरी बिद्या के अभ्यास मे लगाया जाता तो बहुत लाभ पहुचने की संभावना थी—अत एव कोई कैसाही शास्त्र या बिद्या क्यों नहो यदि मनुष्य जाति की उन्नति Progress of humanity का साधन न हुआ तो उसे व्यर्थही कहना पड़ेगा—अब यह प्रश्न उठता है कि ये ग्रन्थ जिन कोहमचर्चा हम ऊपर कर आये मनुष्य जाति की उन्नति मे किस प्रकार सहायक होंगे ? तो चट्ट यह बात ध्यानमे आती है कि उन की जड़ अभी तक तर्क पर है और जब तक तर्क की शृंखला चली जायगी तब तक सिद्धान्त का दर्शन कहां और सिद्धान्त ही नही तब शास्त्र उस्को क्यों कर कह सक्ते हैं फिर जब वह बिद्या ही शास्त्र की पदवी पाने सेच्युत हो गई तब उस्से लाभ किसी को क्या पहुच सक्ता है—कोई शास्त्र हो जब तक उस्की जड़ स्वयं सिद्ध बातों पर जिसे सब स्वीकार करते हैं नही तब तक वह शास्त्र क्या चलेगा ? रेखागणित को लीजिये जिन स्वयं सिद्ध बातों पर इस शास्त्र की जड़ है उस्का काटने वाला याउस्का न मान ने वाला कौन है ? इस लिये सब लोग स्वीकार करते हैं कि यह शास्त्र बहुतही परिस्कृत और निर्मल है—फिर यदि वह शास्त्र practice व्यवहार दशा मे लाभ कारी है तो हमे उस्के सिद्धान्तों के सत्य असत्य होने का कोई ऐसा बाहरी साधन चाहिये जिस्को सर्व साधारण अपने प्रयोजन मे लगावें और एकही परि-

ग्राम को सब लोग पहुचें— जैसा यूरोप के नवीन विज्ञान शास्त्रों मे रसायन विद्या" किमिसटरी,, है—यद्यपि यह विद्या अभी अपनी परिपाक दशा को नहीं पहुची और दिन प्रति दिन रसायन सम्बन्धी नई २ वस्तु अभी मिलती जाती हैं फिर भी उसके विद्वान् तत्सम्बन्धीय थोड़े से स्पष्ट सिद्धान्तों पर तो आरूढ़ होही गये हैं—

तो अब हमारे शास्त्रों के बाबत लोग बिना कुछ सङ्कोच मन मे लाये अवश्य यह प्रश्न करेंगे कि इनमे स्वयं सिद्ध स्पष्ट बातों के बदले वह बिकट जंजाल भरा है कि जिसमे तर्क की सीमाही नहीं है—और इन के घरही मे अर्थात् आपसही मे इतनी लड़ाई है कि कोई बात स्पष्ट सिद्धान्त की उसमे से निकालना दुर्घट है—कारण यह कि वे ऐसी चीज़ के बाबत हैं जिसमे सत्य असत्य का निर्णय करने वाला कोई बाहरी साधन हई नहीं—सुतराम् उनके सिद्धान्त केवल इसी रूप मे चलते हैं कि "वेदान्त का यह मत है,,—"सांख्य का यह सिद्धान्त है,,—"मीमांसक ऐसा मानते हैं,,—"कणाद की इस पर यह युक्ति है,,-इत्यादि॥

शास्त्र मात्र चाहो वह किसी विषय के हों सबों मे यह नियम पाया जाता है कि बराबर आगे को बढ़ते जांय और उसमे अभ्यास करने वाले अपने अनुभव और अन्वेषण द्वारा नये २ तत्वों का लाभ करते जांय—यहां इन ग्रन्थों मे आरंभही से ऐसी बातों की खोज मे लिपटे कि बढ़ती का बीज ही मारा गया—मत का भेद या मतान्तर का होना दूसरी बात है पर उस शास्त्रही की उन्नति और तत् द्वारा मनुष्य जाति की उन्नति बिल्कुल निराली बात है-यहां मत मतान्तर का तो ढेर है पर मनुष्य जाति की उन्नति का

उसको द्वारा सर्बथा अभाव है—अब यदि हमारे इस लेख का आशय यूरोप की बिद्या की प्रशंसा हो बाज़े लोग समझें और ऐसा समझ कर कहें कि इस प्रकार के ग्रन्थ यूरोप मे भी हैं तो हम यही कहेंगे कि यूरोप के उन ग्रन्थकारों के बिचार की प्रणाली भी वहां की उन्नति की बाधक है साधक नहीं—हमारे यहां के दर्शनों से फल या लाभ मे जिन्हें सन्देह है वे लोग बिबिध बिद्याओं को यों अलग २ करते हैं— [१) सब के पहले वे गणित या अङ्क बिद्या को मानते हैं जिसकी शुद्ध और तर्क रहित रीति से बढ़कर रीति किसी शास्त्र की नहीं है—इसी लिये यह बिद्या हमारे यहां की तथा अन्य देशों की एक सी है इस गणित शास्त्र की रीति से और तर्क से इतना अन्तर है जैसा दिन का रात से—[२) दूसरी श्रेणी मे बिज्ञान अर्थात् प्राकृतिक तत्वों के गुण आदि के ज्ञान का शास्त्र इस शास्त्र का आज दिन युरोप मे बड़ा ज़ोर है यदि ऐसा कहें कि इस शास्त्र मे नौ हिस्सा यथार्थ अन्वेषण है केवल एक हिस्सा तर्क है तो अनुचित न होगा—कुछ न कुछ तर्क इस मे भी है सही पर इस कारण से कि तर्क को निराकरण कर ठीक ज्ञान देने वाला एक बाहरी साधन बिद्यमान है इस कारण बिज्ञान शास्त्र के लाभ दायक गुणो मे तर्क कुछ बहुत बाधा नहीं कर सक्ता [३] तीसरे उस प्रकार के शास्त्र जिनमे अधिकांश तर्क ही के द्वारा व्यवहार दशा मे भी उनसे कुछ लाभ होता है—जैसा धर्मशास्त्र नीति शास्त्र राज नीति बिद्या आदि—यद्यपि इन शास्त्रों के बिबिध आचार्यों मे मत भेद है पर व्यवहार मे एकसां लाभ पहुंचाने मे कुछ संशय नहीं है यद्यपि एक देश का क़ानून दूसरे देश के क़ानून से नहीं मिलता पर एकही तरह का गुण उनमे देखा जाता है—[४]

चौथी श्रेणी मे धर्म वा मत के ग्रन्थ हैं यदि यह कोई कहै ये ग्रन्थ उस तरह के शास्त्र नहीं हैं जिस श्रेणी के पहले तीन प्रकार के शास्त्र हैं तो हम कह सक्ते हैं कि जैसा तर्क बितर्क इन ग्रन्थों मे है वैसा कहीं न होगा—यही कारण है कि चाहो दो देश की ओर सब बातें मिल जांय पर वहां को धर्म सम्बन्धी बातें न मिलेंगी और न ऐसे ग्रन्थों के बिचार का प्रतिफल ब्यवहार दशा मे कुछ देखाई देगा—सूक्ष्म से सूक्ष्म बिचार इन ग्रन्थों मे केवल शुष्क तर्क ही के लिये किया गया है और कोई फल नहीं है—और इस चौथी श्रेणी की बातों के बिचार की सूक्ष्मता में हमारे यहां के दर्शन सब देश के दर्शनों मे बढ़े हुये हैं—

अब बतलाइये इन षट् दर्शनों के बिचार की प्रणाली को आप ऊपर लिखी हुई चार श्रेणीयें मे किसमे रक्खेंगे? अतिरिक्त इस चौथी श्रेणी के और किसी मे नहीं और चौथी श्रेणी के ग्रन्थ व्यवहार दशा मे जैसे निष्फल हैं उसे हम प्रगट कर चुके हैं—इन दिनों की बिद्या की प्रणाली यह देखी जाती है कि परिणाम या प्रतिफल को दृढ रूप से आंख के तले रख तब उस बिद्या मे लगना पर वह बिद्या भी ऐसी हो कि जड़ उसकी अत्यन्त पुष्ट रीति से ऐसी बातों से दृढ की गई हो कि जिन पर शङ्का करनाही असंभव है जब ऐसा है तो आगे को इमारत भी खड़ी हो सकेगी नहीं तो बालू की भीत के समान होगी और बिना जड़ पुष्ट न तो आगे को नये २ तत्व निकलेंगे न कुछ उन्नति होगी क्योंकि किसी प्रकार का सत्यहो जब न मानने वाले का या शङ्का करने वालेका भ्रम सद्यः निवारण करने का कोई बाहरी साधन नहीं है और बाद बिबाद मे उस सत्य के

न मानने वाले का पक्ष भी मानने वाले के पक्ष के बराबर हो जाता है तो वह सत्य काहे का है केवल तर्क का जञ्जाल है ऐसी बातों से उन्नति क्या बल्कि अवनति ही होती जायगी—

इस प्रकार का आक्षेप हमारे यहां के दर्शनों पर बहुतेरे लोग करते हैं और न केवल मत भेद होना बरन इन दर्शनों के द्वारा कुछ भलाई हो सक्ती है इस बात को जड़ही से काट देते हैं—अवकाश न होने से इसके उत्तर का बिचार हम आगे करेंगे—

## । सङ्ग्रह ।

हे दूत लाल कपोत व्रत कठिन प्रेम की चाल। मुख सों आह न भाखि हैं निजसुख करोहलाल।

प्रेम बनिज कीन्हो हुतो नेह नफाजिय जान। अबप्यारे जिय की परी प्रान पुंजी मे हान।

तेरोई दरसन चहे निस दिन लोभी नैन। श्रबन सुनो चाहत सदा सुन्दर रसमे बेन।

डर न मरन बिधि बिनय यह भूत मिलें निज बास। प्रिय हित बापी मुकुर मग बीजन अंगन अकास॥

तन तरु चढ़ि रस चूसि सब फूली फली न न रीति। प्रिय अकास बेली भई तुव निर्मूलक प्रीति॥

पिय पिय रट पियरी भई पियरी मिले न आन। लाल मिलन की लालसा लखि तन तजत न प्रान॥

प्रेम प्रीति को बिरवा चलेहु लगाय। सीचन की सुध लीजो मुरझ न जाय॥

( १ )

लै मन फेरिबो सीखे नहीं बलि नेह निवाह कियो नहिं आवत ।
हेरि कै फेरि मुखै हरि चन्द जू देखनहु को हमे तरसावत ॥
प्रीति पपीहन को घन सांवरे पानिय रूप कबों न पियावत ।
जानो न नेकु बिथा परको बलिहारी तऊहो सुजान कहावत ॥

( २ )

कोऊ कलङ्किनि भाखत है कहि कामिनिहू कोऊ नाम धरैगो ।
त्रासत हैं घरके सिगरे अब बाहरीहू तो चबाव करैगो ॥
दूतिन की इनकी उनकी हरिचन्द सबै सहते ही सरैगो ।
तेरेई हेत सुन्यो न कहा कहा और हू का सुनिबो न परैगो ॥

( ३ )

मन लागत जाको जबै जिहिसों करिदाया सोऊ निभावत है ।
यह रीति अनोखो तिहारी नई अपुनो जहां दूनो दुखावत है ॥
हरिचन्द जू बानो न राखत आपुनो दासहू ह्वै दुख पावत है ।
तुम्हरे जन होइ के भोगैं दुखै तुम्है लाजहू हाय न आवत है ॥

( ४ )

लोक बेद लाज करि कीजै ना रुखाई एतो द्रविये पियारे नेकु दया उपजाइ कै । बिरह बिपति दुख सहि नहि जाय कहि जाय ना कछुक रहीं मन बिलखाइ कै हरीचन्द अब तो सहारी नहि जाय हाय भुजन बढ़ाय बेग मेरी ओर आइ कै । बिरुदनि-भाइलीजै मरत जिवाइलीजै हाहा प्रान प्यारे धाइ लीजै गरलाइ कै ॥

( ५ )

सदा चार चबाइन के डर सों नहि नैनहु सामुहे नचायो करै ।
निर लज्ज भई हम तो पै डरै तुमरो न चबाव चलायो करै ॥

हरिचन्द जू वा बदनामिन के डर तेरी गलीन न आयो करै ।
अपनी कुल कानिहुं सो बढ़ि के तुम्हरी कुलकानि बचायो करै॥

( ६ )

तजि के सब काम को तेरे गलीन मे रोजहि रोज तो फेरी करै।
तुव बाट बिलोकतही हरिचन्द जू बैठि के सांझ सबेरो करै ॥
पै सही नहिं जात भई बहुते सो कहां कह लों जिय छोटो करै ।
पिय प्यारे तिहारे लिये कबलों अब दूतिन को मुख हेरो करै॥

—:o:—

## ॥ घनाष्टक ॥

श्रीधर पाठक रचित

सवैया—बड़ाई

( १ )

चूअत बारि की धार घनी अति कारे से पैल कपोल के ठौरी ।
कौंधत बीजु मनो मदबावरो खोलत मूंदत है दृग त्योरी ॥
नाद करै गरजै लरजै बग पङ्क्ति दन्त दिखावत धौरी ।
मेह किधौं मतवारो मनोज को बारन बंधन तोरि भज्यौरी॥

( २ )

ग्रीषम ताप तापायन की छिन में सब भांति सों पीर हरी है।
नीर समीर कें सीरो बनाय उसीर की चाहना दूर करी है ॥
भेक की भीर गभीर नदी भईं बीर बहूटि सरीर धरी है
नीरद की नव बूंदन मांहि खरी कछु जादू गरी सी भरी है॥

( ३ )

सघन स्यामता तो में घनी तन बिज्जु छटा को पितम्बर राजै ।

दादुर मोर पपीहा भई अलबेली मनोहर बांसुरी बाजै ॥
सो बिधि सों नवला अबला उर आस बिलास हुलास उपाजै ॥
जो कछु स्याम कियो ब्रज मंडल सो सब तू भुवमंडल साजै ॥

( ४ )

जीति निदाघ के देश नये नित नीति की रीति सों मीत बनावै ।
प्रीति के अंकुर कों उपजाय प्रतीत प्रजाउर आस बंधावै ॥
छोटे बड़ेन को भेद मिटाय के पूरन न्याय कृपा दरसावै ।
बाढ़ो सदा बिजयी घन रावरो जौलग भानु प्रकासहि पावै ॥

निन्दा

( ५ )

एघन तेरी बड़ी महिमा उपमा जग मांहिं कहूं नहिं पाई ।
पै परख्यो बहुबार पयोधर बानि परी है बुरी एक आई ॥
दीन बिचारी बियोगिनि बाल तिन्हें प्रिय प्रान बिहीन बनाई ।
धावत है उनमत्त भयो जड़ गावत है जमद्वार बधाई ॥

( ६ )

रेघन कारो भयो किहि कारन तू हमकों यह बात बतावरे ।
कारन कौन कहावत "नीच" सोऊ पुनि भेद सबै समझावरे ॥
रोवत क्यों डकरायके धायके क्यों अंसुआ टपकावत बावरे ।
क्यों तनतेरे मे लागत आग है लोहू लोहान परे किमि घावरे ॥

( ७ )

घातक है तू बियोगिन को तिहिपातक कारो सरीर भयो है ।
नीचो करे सोई देखि है नीचो सदा तिहि कारन सोसनयो है ॥
हिंसकता लखि के घन तेरो घनेरो जबै बिधि दंड दयो है ।
ताही सों रोदन आदि करै तन ताही सों लोहू लुहान कयो है ॥

( ८ )

लोकन को उपकारी बड़ो घन नेक दया अपने उर लावरे ।
पैनी कृपान सो काम के बान सो बूंदें बियोगिन पै न गिरावरे ॥
डंक बजाय निसङ्क भयामिनि दामिनि की न दमङ्क दिखावरे ।
पीतम अङ्क में जान तिया तिनको तनको न सतावरे रावरे ॥

—:०:—

# । क्या अच्छा इन्साफ है ।

यहां की हाई कोर्ट मे लइसन्सट्रैन्सलेशन का एक महकमा है—मुक़द्दमो के जो कागज़ उर्दू मे रहते हैं उनका तर्जुमा अङ्गरेज़ी मे हो कर तब जजों के आगे पेश किये जाते हैं—तर्जुमा की जो कुछ फीस होती है मवक्किलों से पेशगी लेलीजाती है और जो तर्जुमा करने वाले हैं उनमे बांट दी जाती है—यह बहुत से सुयोग्य हिन्दुस्तानियों के लिये बड़ा अच्छा सहारा जीबिका का था हमारे म्योर्स कालेज के छात्रों को कालेज से निकलतेहो झट्ट जीबिका पा जाने मे बड़ी सुगमता होती थी सो सुना जाता है वह लइसेन्स जो ठीके मे था अब दस पांच आदमी पुराने २ चुन कर रख लिये जांयगे और उनकी कुछ तनखाह मुकर्रर हो जायगी वही यह काम निपटा लिया करें गे और रुपये की डेढ़ सो या दो सो लब्ज़ के हिसाब से तर्जुमा का जो लिया जायगा वह इन सर्कारी नौकर मुतरज्जिमों की तनखाह मे थोड़ा सा खर्च हो बाकी सब का सब सर्कारी खज़ाने मे जमा होगा और अदालतों के द्वारा जहां कई लाख साल की आमदनी थी उस्मे कई हज़ार साल की आमदनी और बढ़ जायगी—बाहरे नीयत धन्यरे इन्साफ जब

राज्यही ऐसा मर भुक्खा है तब तद्राज्य शासित प्रजा दिन २ जो भुक्खड़ होती जाती है इस्मे कौन सो अचरज की बात है "राजानमनुवर्तन्ते राजा तथा प्रजा:" ऐसेही ऐसे मोकों पर हमे सर कोमर पेथरम याद आते हैं वे होते तो कदापि ऐसी अनीति नहोने पाती और न दाल भात मे मूसल चन्द लीगल रिमेम्बरेन्सरही को अपनी मन मानी कर डालने का इतना साहस होता—नये चीफ़जस्टिस साहब जो ताज़े बिलायत से चले आते हैं और यहां के क्षुद्रहृदय ऐंग्लो इण्डियनो से इन का अभी तक किंचित्‌मात्र भी संपर्क नही होने पाया कदाचित् इस अनीति की ओर ध्यान दें तो हमारा बड़ाही उपकार हो और हमारे सुयोग्य ऐजुण्टों को जो पांव रखने का का ठांवथा वह न मिटै ॥

—:०:—

## । प्राप्त ।

## । मानस बिनोद ।

श्री तुलसीदास के रामायण के चुने २ बाक्यों का स्पष्ट बिवरण ब्राह्मण पत्र के सम्पादक कानपुरस्थ पं॰प्रताप नारायण मिश्रकृत—हमारे महामान्य मित्रबर रसिक प्रेमियों के विनोदार्थ गोस्वामी तुलसीदास की अतलस्पर्श महोदधि समान कविता के गम्भीर आशय मे डूब कर मौक्तिक सदृश कबिकी एक २ उक्तियों को चुन २ कर एकत्र करने मे कहां तक रसिक मन मानस के अनोखे मराल बने हैं यह इस पुस्तक के पढ़ने ही से जान पड़ेगा—मूल्य ।) भारत जीवन प्रेस बनारस मे यह पुस्तक छपी है ॥

—:०:—

## । वंग बिजेता ।

## । उपन्यास ।

बाबू गदाधरसिंह सरिश्तेदार कलट्टरी मिर्ज़ापुर कृत बंग भाषा से अनुबादित -एक तो यह उपन्यासही अतिप्रशंसनीय है दूसरे हमारे सुयोग्य मित्र ने इस्का अनुबाद भी बहुत उत्तम साधु भाषा मे किया है—लाला श्री निवासदास के संयोगता स्वयम्बर ऐतिहासिक नाटक के पक्ष पातियों का चाहिये एक बार इस पुस्तक के ध्यान दे पढ़ैंतो उन्हे सूझने लगे कि ऐतिहासिक लेख कैसे होने चाहिये—बाबू गदाधरसिंह के लेख की यह तीसरी बानगी है—कादम्बरी और दुर्गेशनन्दिनी का अनुबाद ये पहले कर चुके हैं दुर्गेशनन्दिनी का अनुबाद भी ऐसाही सर्बाङ्ग सुन्दर हुआ है—मूल्य इस पुस्तक का १) है भारतजीव प्रेस मे छपी है ॥

—:७:—

## । यहां के सर्कारी स्कूल मे पैसे की उगहनी क्या अब भी बन्द न होगी ?

स्कुलों की फीस दोचन्द कर दी गई शिक्षा बिभाग का सब खर्च दे देवाय हजारों रुपया महीने मे सरकारी गोलक मे बचत का जाने लगा—पर पैसा उगाहने की यह महा कृपण वृत्ति न छूटी गरमी मे चार पैसा फी महीने अलावे फीस के पंखा डोलाई का और जाड़ों मे चार पैसा गेंद खेलाई का सच पूछिये तो यह ऐसी छोटी बात है जिसे कहते लज्जा आती है—आयाकरो आप

को लज्जा यहां तो फुही फुही ताल भरने वाली मसल के अनुसार भर पुर मतलब सधता है—पश्चिमोत्तर भर मे जितनी अधिक फीस यहां के सरकारी स्कूल मे बढ़ाई गई वैसो और किसी शहर मे नहीं और यहां ही लबड़ धोंधों का वार पार भी नहीं है—न इस पर डइरेक्टर साहब ध्यान देते हैं न इनस्पेक्टर न हेडमास्टर तब इतर मास्टरों को क्या पड़ी है जो सत्य कृष्ण कुछ मुह से निकाल अफसरों की खफगी अपने ऊपर लें और अपनी हानि सहें-अप्सर राज़ी रहेंगे तो जैसा अप्सर साहब अपनी बहुत सी अप्रयोजनीय किताबें स्कूल मे जारी कर भरपूर पैसा उगाहते हैं वैसा ही इन मास्टरों को भी तथा अपने आफिस के क्लर्क को भी आछा दे हज़ारों का लाभ करावेंगे—हमारे नये २ मास्टरों को और किसी बात का शऊर चाहो नहो कुछ न कुछ गोड़ गाड़ एक छोटो मोटी किताब तैयार कर दुगना दाम रख अप्सर साहब के समान झट्ट पैसा वसूल करने लगते हैं—और वे किताबें जो इन्हों ने बनाई हैं उनसे लड़कों को लाभ पहुंचने के बदले अपने कोर्स की किताबों को रट लेने का सहारा पड़ जाता है डूब कर अपने परिश्रम से न निकालने की ऐसी आदत पड़ जाती है जिस से आगे को उन की सर्वथा हानि है—हमारे मित्रों मे ऐसे भी लोग हैं जिन को पढ़े हुये ३० या ४० बर्ष हुये जब युनिबरसिटी या कालिजों का नाम भी कहीं हमारे देश में न था केवल दस पांच स्कूल कई एक शहरों मे अलबत्ता थे—जिनमे जुदा २ अपने २ तौर की पढ़ाई होती थी तब के तरीके को हम इस समय की पढ़ाई के तरीके से मिलाते हैं तो बेधड़क यही कहने का जी चाहता है कि यद्यपि इस समय का शिक्षा बिभाग इस बात की शेखी करै कि बिद्या प्रचार

की रीति उसकी दिन २ उमदा होती जाती है पर इस सामयिक बिद्या बिभाग की परिपाटी से जो विद्यार्थी तैयार होते हैं प्रत्येक बिषय मे उनकी कचाहट देख हमे नितान्त शोक होता है—कारण इसका यही है कि पहले के छात्रों को उमदा से उमदा टकसाली चीज़ें अङ्गरेज़ी के लिटरेचर की पढ़ाई जाती थीं और उन को वे बिना किसी टीका या टिप्पणी के स्वयं निकालते थे और समझते थे इन दिनो के लोगों के समान "मक्षिका स्थाने मक्षिका" केवल अक्षरार्थ रट कर नहीं बैठ रहते थे वरन ऐसे ढंगसे पढ़ते थे कि ग्रन्थकर्ता के भाव से और पढ़ने वालों के मन से एक प्रकार का साक्षात्कार सा हो जाता था इससे बढ़ कर पढ़ने और पढ़ाने का फल और क्या हो सक्ता है—यही कारण था कि उनकी बिचार शक्ति बहुत बढ़ी हुई थी उनकी लेख शक्ति और वक्तृत्व शक्ति असीम होती थी और सामान्यत: सब प्रकार का प्रौढत्व उन मे पाया जाता था—बंगाल के कृष्णदास पाल कृष्ण मोहन बनरजी केशव सेन प्रभृति के इमतिहान पास किये हुये थे—किन्तु बाल्य अवस्था ही से उन की सुकुमार मति बिना किसी सहारे के मंजते २ प्रौढ़त्व को प्राप्त हुई थी—और अब हम देखते हैं कि उमर पाकर आज कल के छात्र चाहो भले ही बढ़ जांय पर उनमे गांभीर्य प्रौढत्व स्वयं चिन्तन की शक्ति उनकी छात्र दशा के समय दिन प्रति दिन लुप्त होती जाती है इस लिये उनके जीवन काल मे इन बेचारों को लाखों ऐसे अवसर मिलते है कि उनको बिद्या की कसौटी के समय जैसे सङ्कट मे उनका प्राण होता है ईश्वर न करे कि किसी का पड़े-क्योंकि हम देखते हैं कि अपनी बाल्यअवस्था की सुकुमार मति के कचाहट का छुटकारा उनसे भयाही नहीं तब वे अपनी कोमल बुद्धि से प्रौढ़

बुद्धि वालों का काम क्यों कर दे सक्ते हैं अर्थात् अपनी बिद्या पर भरोसा रख हर जगह और मोकों पर शेर बनेरहने का साहस उनमे कैसे आसक्ता है——नई प्रणाली के छात्रों की बिचार शक्ति मांजी जाने को कौन कहे रोज़ कुन्द या लुप्त होती जाती है और यह सब केवल उसी तोता रटन का फल है – अतएव हमारे डइ॰ रेक्टर साहब को उचित है कि ऐसी २ फजूल किताबें जैसा प्रत्येक बिषय मे प्रश्नोत्तरी जबाब सवाल या वर्डबुक जिसमे डिक्शनरियों से निकाल निकाल अनाप शनाप माने लिखे रहते हैं बिल्कुल स्कूलों से उठा दें नहीं यह अवश्य कहा जायगा कि सरासर लूट और पैसे की उगहनी है—सातवें ही आठवें दर्जे से लड़के "की,, रटने लगते हैं अब बतलाइये जब आरंभही से भारे के टट्टू बनने लगे तब आगे को Self-exertion निज उद्योग से अपने को आगे बढ़ाना वे काहे को सीख सकेंगे इस लिये इन प्रचलित किताबों से केवल अध्यापकों ही को सेकड़ों रुपये साल की आमदनी अलबत्ता है लड़को को तो इस मे सर्बथा हानि ही हानि है और उनके गरीब आप मा या मुरब्बियों के पैसे की खुआरी है जो दो चन्द फीसही के बोझ से दबे जाते हैं—बात २ मे पैसे की उगाही और निपट अप्रयोजनीय किताबों की प्रति मास खरीदारी से यही सिद्ध होता है कि आप लोग मध्यम श्रेणी वाले क्यों अंग- रेज़ी शिक्षा अपने लड़कों को दे आगे बढ़ने का मन कर रहे हैं— समझदार के लिये इशारा काफी होता है – आप लोगों को सरकार ऊंचे दर्जे की तालीम नहीं दिया चाहती बस समझदारी को काम मे लाय अब भी इस इरादे से किनारा कश हो और अपने लड़कों को तालीम का भार सरकार पर न छोड़ो और जो छोड़ते ही तो

हमारी सरकार बनिया है जिसमे अपना फाइदा और आमदनी समझेगी सो करैगी तब उस पर झीखो मत—

अब डइरेक्टर साहब से सबिनय प्रार्थना है कि ऐसा हुक्म जारी करदें कि कोई इस प्रकार की किताबें आगे से न बनावे और जो किताबें अब प्रचलित है उन्हें उठा कर दूसरी २ किताबें जो बिशेष लाभ पहुचाने वाली हों जारी कर दें और महा लज्जा दिलाने वाली पढ़ा के पैसे की उगाहनी बन्द कर दें ॥

—:०:—

## । नेक सलाह ।

लाला श्री निवासदास जी को चाहिये कि जिन महाशय ने उनके नाटक की उचितबक्ता मे बड़ी सराहना की है उनको कोटि २ धन्यबाद दें क्योंकि जल्दी मे उनके लेख का ऐसा प्रबल पक्षपात करने वाला "क्रिटिक„ गुण दोष बिबेचक दूसरा न मिलेगा— नि स्सन्देह बिबेचक महाशय ने जैसा अपने मित्र के ग्रन्थ के पोषण क ध्यान अपने मन मे दृढ़ता के साथ जमाया है यदि उसका आधा भी श्रम न्याय और सत्य क्या बस्तु है इस बिषय पर लगाते तो एक चीज़ होजाते— अस्तु जो होगया सो होगया अब वह बात क्योंकर हो सक्ती है तब उसके लिये पछताना भी व्यर्थ ही है पर यदि दो एक बातों का ओर ध्यान रक्खेंगे तो आगे को इस से भी उत्तम लेख लिख कर अपने मित्रों को प्रसन्नता नहीं तो आश्वासन तो अवश्य दे सकेंगे— पहले हम अपने बिवेचक जी को यह सलाह देते हैं कि साहित्य या काव्य का बिषय क्या है इस को स्पष्ट रीति से समझलें जिसमे आगे को धोखा न हो ओर सुनीति

शिक्षा Morality क्या है उसको इससे अलग रक्खें – भलमन साहत को पद्धति पर चलने का तो क्रम ऐसाही है क्योंकि किसी महात्मा का कथन है – "अप्यापदि दुरन्तायां नैत्र गन्तव्य मक्रमे राहु रप्यक्रमेणेव पिबन्नप्यमृतो मृतः,, – उस भलमनसाहत ही के कारण साहित्य सम्बन्धी बिचार के प्रसङ्ग को "कज्जल फेलाना,, आदि हमारा धर्म जो हमारे बिवेचक मित्र हमपर आरोपित करते हैं उसका अणुमात्र भी बुरा हम नहीं मानते किन्तु उनके लेख को बिशेष आदर भी नहीं दे सक्ते और यदि किसी का हृदय साहित्य सम्बन्धी निर्म्मल बिचार करने को समर्थ न हो तो सहसा करके अपने हृदय की ओर समझ की क्षुद्रता प्रकाश करने वाली बातों का उद्घाटन करना भी हम अदूरदर्शिताही मानते हैं – यदि आप घबड़ा न गये हों तो एक छोटी सी सलाह ओर आप को दे दें – कदाचित् बिवेचक जी ने पहलेही पहले यह लेख लिखा है अस्तु आगे को [ठीक नाम होता तो अच्छा था नहीं तो कल्पित] नाम दे देने से उत्तर देने वाले को सुगमता होती है––समय २ ओर भी ऐसीही सलाह आप को देंगे ओर यदि इस को भी आप की बुद्धि कज्जल ही फेलाना मानती है तो – !

——:0:——

## । प्रेरित ।

## । सभ्यता का छोर ।

आज कल्ह जिधर देखिये सभ्यता की धूम मच रही है हमारे हिन्दुस्तानी भाइयों ने जहां से कोट पतलून लिया है

वहां ही से सब प्रकार की स्वछन्दता रूपी आभूषण भी लिया चाहते हैं - यह नहीं सोचते कि हम उनकी बराबरी करने लायक अभी हुये हैं या नहीं जिनके नस २ मे यहां तक स्वच्छन्दता भीनी हुई है कि उन्हीं मे से किसी का यह वाक्य है कि "गले मे कालर का बन्धन भी जंज़ीर हो रहा है,, यह स्वच्छन्दता डाइन हमारे भाइयों पर बुरी तरह दांत लगाये हुये है लोग इसके पीछे हैरान हो रहे हैं कि हम किसी तरह समाज बन्धन से मुक्त हो स्वच्छन्दता पूर्वक मनमाना यथेष्टाचरण कर अङ्गरेज़ बन बैठें देश की रीति व्यवहार चाल चलन पर बज्र पड़े बलाय से—ध्यान देने की बात है कि जो बातें हज़ारों वर्ष से बराबर होती चली आई हैं और जिनका घनिष्ट सम्बन्ध हमारे प्राण और रुधिर मे प्रविष्ट हो रहा है यक बारगी उनके छोड़ देने से समाज मे कैसी हलचली मच जायगी-नई रोशनी का असर केवल इतना ही न होना चाहिये कि हम अच्छी बातों पर आंख खोल दें पर सोचें कि हममे वह अच्छा पन आसकेगा या हम उसके पात्र हुये हैं या नहीं? सो हम देखते हैं नई रोशनी वालों मे तेज़ी और जोश तो हद्द से ज़ियादह समाया हुआ है पर गम्भीर बिचार शक्ति का सर्बथा अभाव है—यह हम अवश्य कहेंगे कि हमारे यहां के खुर्रांट पुराने खयाल के आदमियों मे चाहो और कुछ न हो पर बिचार की गम्भीरता भर पूर बिद्यमान है और इसी को चाहो आप पुराने लकीर के फकीर कहें या पुराने ढर्रे पर चलने वाले उन्हें मानें—सच पूछिये तो ऐसे नई रोशनी वाले शिक्षित मण्डली को बदनाम कर रहे हैं शिक्षा का फल यह कदापि न होना चाहिये कि पीपे की तरह जिधर ढुलकाया ढुलक गये—बास्तव मे

यह उन लोगों का मानसिक दोष है शिक्षा का ऐसा बुरा प्रति फल हम कभी मानेहींगे नहीं--अस्तु मर्दों तक खैरीयत थी पर अब हम लोगों की लक्ष्मियों के चित्त मे भो बिदेशी स्वच्छन्दता ने स्थान पाया तो अब धाम जिक नियमो की रक्षा ईश्वर ही के आधीन है-जिस बात को हमारे देश मे ज़बान पर लाना भी बड़ा ऐब समझते हैं उसको खुलेमैदान ढिंढोरा पीटना मानो सभ्यता की नाक मरोरना है—थोड़े दिन हुये एक समाचार पत्र मे हम ने यह बिज्ञापन देखा और हम समझते हैं आप भी इस तरह के बिज्ञापन बहुधा देखे होंगे—

"मेरी उमर १८ बर्ष की है और घर से मैं खुश हूं मैं रामायण और ब्रजबिलास पढ़ सक्ती हूं जिस पुरुष को हमसे बिवाह करने की इच्छा हो उसमे यदि ये बातें हों वह लिखे—:

१ उमर ३२ बर्ष से अधिक न हो ॥

२ अङ्गरेज़ी अच्छी तरहऔर संस्कृत भी कुछ पढ़ा हो ॥

३ घर से खुश हो खूबसुरत हो और मर्द हो ॥

वाह ! क्यों न हो ! दमड़ी की हाँड़ी भी लोग दस बार ठोक ठठा के लेते हैं और यह तो ज़िन्दगी भर के लिये गले बँधता है अगर बाल भँबरी से दुरुस्त न हुआ तो जन्म भर झीखना पड़ेगा ॥

का० प्र०

—:0:—

## । वकील ।

इस उन्नीसवीं शताब्दी मे हिन्दुस्तान के हर एक प्रान्त मे नगर २ गांव २ जहाँ ही देखिये ये लोग छिटके हुये पाये जाते हैं

तो क्या इनकी कोई जाति है अथवा ये कोई वर्ण हैं? मनु आदि पुराने धर्म शास्त्रों मे तो कहीं इनका पता नहीं लगता—जो सूर्य्य पश्चिम से उदित हो रहा है उसकी किरणें भारत मे न पड़ी होतीं तो कदाचित् कुछ दिनो के उपरान्त इनकी भी एक जाति या वर्ण कायम हो गया होता हमारे लोभी ब्राह्मण भाई भट्ट एक पुस्तक गढ़ डालते—युधिष्ठिर अर्जुन भृगु बामदेव प्रभृति श्रोता गण एकत्र हो भगवान् कृष्णचन्द्र से पूछते महाराज वकीलों की उत्पत्ति कहिये और महाराज यह कथानक गा चलते - पर अब ऐसी २ कथाओं के गढ़ लेने का समय यूरोपीय बिद्यान और यूरोपीय शिक्षा के असर से न रह गया - तौभी इनकी दिन २ बढ़न्त देख नई बात की खोज करने वाले अचरज मे आय पूछते हैं बकालत क्या चीज़ है और वकील क्या है? आज काल्ह संसार मे सन्यास आदि ग्रहण करने की प्रथा ही जाती रही किसी काफिर को मुसल्मान होते नहीं सुनते ईसू खीष्ट का मत भी बुझते हुये दीपक सा टिम टिमा रहा है पर क्या हिन्दू क्या मुसल्मान क्या क्रिस्तान क्या ब्राह्मण क्या क्षत्री क्या वैश्य क्या शूद्र वकील होने का हौसिला सब रखते हैं और हर साल सुनने मे आता है इतने लोग हाईकोर्ट मे पास हुये इतने ज़िले मे इतने मुख़्तारी मे इत्यादि—न जानिये इस वकालत मे लौकिक अथवा पारलौकिक कौन सा ऐसा अलभ्य लाभ है जिस्के लोभ से यह हरसाल इतने चेले मूड़ लेती है—वकील क्या हैं? यह प्रश्न यदि किसी ग्रामीण से किया जाय तो वह यही कहेगा कि जो बाचाल हो अर्थात् जिसे बोलने बहुत आता हो अपनी बक बक से जो झूठ को सच और सच को झूठ कर सके वही वकील है—सच तो यह है कि इस वकालत का जन्म कर्म सब इसी अंगरेज़ी राज्य मे हुआ है अंगरेज़ी राज्य प्रबन्ध के साथही साथ वकीलों के भी चरण कमल यहां पधारे अगले समय मे फरयादी और राजा तथा न्याय कर्ता के बीच मे

कोई दूसरा न होता था जिसे कुछ अपना दुख या पीड़ा राजा के कान तक पहुंचा देने की आवश्यकता होती थी वह खुद जाकर राजा से या न्यायकर्ता से अपने अपने दुःख का निवेदन करता था और राजा उस्का न्याव कर देता था कोई बिचवई का कुछ काम नहीं पड़ता था—जहांगीर बदशाह के समय सोने की जंजीरों मे घन्टियां लटका करती थीं फरयादी जंजीर हिला देता था घन्टियों के बजते ही जहांगीर जान जाते थे कि कोई फरयादी आया है दूध का दूध पानी का पानी सा ठीक २ न्याव कर दिया जाता था और तरफैन को किसी बात की शिकायत न रहती थी – वही अब एक एक दरजन वकील तरफैन बहस कर जज्ज का मग़ज़ चाट डालते हैं फ़िर भी बहुधा सच का झूठ और झूठ का सच होता है बरसाती क्षुद्र नदियों की बाढ़ के समान दिन २ वकीलों की बढ़ती के कारन कानूनो की बारीकियों पर सान चढ़ती जाती है जिस्का परिणाम यही देखने मे आरहा है कि उन कानूनी के जाल मे फस व्यर्थ को प्रजा का धन लुटा जाता है बेइमानी और बदनीयती का बाज़ार भी खूब गरम जोशी को पहुंच रहा है – सभ्यता जिस्की गाई गीत हम बार २ गाया करते हैं उस्के प्रधान अङ्ग बरन आभूषण होने के अतिरिक्त हम तो कोई बड़ा लाभ देश का इन वकीलों की बाढ़ से नहीं देखते हैं – ॥

—:०:—

## । आल्हा ।

। भा – मि – से ।

लगी लड़ाई है ब्रह्मा मे हाय दैवगति जानि न जाय ।
धोखा दे के छापा मारैं मारैं गड़ु गड़ु सरदार ।
कुली सिपाही साहब जूझे गिर्द मण्डले के मैदान ।
इनके जूझत परले परिगो अब मंण्डला केर सुनो हवाल ।
हम ना रहिबे अब मंडले में चाहे नौकरी रहै कि जाय ।

दे अस्तीफा पार्लिमेंट को अब हम जाय करब ब्योपार ।
दोउ कर जोरे मंत्री बोले साहब सुनो हमारी बात ।
तुर्त बोलाओ तुम डाक्तर को जो है भैया चार तुम्हार ।
करै बहाना बीमारी का सार्टीफिकट तुम्हे मिलि जाय ।
पीछेहट के भारत चलिये नाहक दीजे प्राण गवांय ।
अपर ब्रह्मा मे हम ना रहिबे यारो सुनिलो बात हमार ।
सती सूरमा उठिके बोले साहब धीर बीर बिलखाय ।
हमना हटि हे रन खेतन से चाहो प्रान रहो की जाव ।
कटि २ बोटी गिरै खेत मे उठि २ रुंड लरैं तलवार ।
पांय पछाड़ी हम ना धरि हैं चाहो तन धजी २ उड़ि जात ।
यक बात औरौ कहियत हैं ये राजन के राजकुमार ।
हिन्दुस्तानी फौजें देदो जो ना धरैं पछाड़ी पांव ।
चना चबैना वे चाभत हैं अरु दिन रात धरैं तरवारि ।
चाह बिस्कुट को ये राखैं ना नहिं परवाह है चुरटो क्यार ।
साँझ सबेरे जबही पावैं रूखा सूखा लेहिं चबाय ।
खाली पानी पोके गरजें जैसे बन का गरजे सेर ।
हुकुम मुताबिक ठीक चलत हैं कहंलगि महिमा लिखौं बनाय ।
इनकी तलबै बेगि बढ़ाओ इनकी इज्जत देहु बढ़ाय ।
कह्यो हमारो राजा मानो तुम्हरो राज रखे भगवान ।

## । शतश्लोकी रघुवंश ।



## क्षमा प्रार्थना

अब की बार कई बिशेष कारणों से पत्र छपने मे अति बिलम्ब होगया पाठकजन हमे क्षमा करेंगे आगे से ऐसा न होने पावेगा ॥